

आचार्य श्री प्रवचन

(21.07.2016 से 10.11.2016 तक)

भाग-3

गुरुवर की वाणी,
बने सबकी कल्याणी

संकलन
मुनिश्री 108 संधानसागरजी महाराज

Date: / / / / / /

डबीबगंज भोपाल-चातुर्मास-2016

21-7-16 "गति होती प्रकृति पर निर्भर" प्रातः 9.15

सुनो, आप यात्रा के लिये कहीं जा रहे है। वाहन आपके पास अपना है। सड़क आपकी नहीं किन्तु सड़क सरकारी है। आपलोगो को आज्ञा मिली है। सड़क पर अपने कार्य हेतु चलनेकी आज्ञा है। गाड़ी आपकी बिल्कुल नयी है, सड़क भी नयी है, रोड़ जाम भी नहीं है सब कुछ सुविधा आपको मिली है, किन्तु सब कुछ होते हुये भी गति आपके हाथ में नहीं है। प्रदेश में तो लगेज को भी क्लेश पहुँचता है। गाडी - सडक सब अच्छा होते हुये भी चलते-चलते गाड़ी की गति धीरे हो गयी क्यों की सड़क पर कोहरा था। कोरहा अर्थात को = कौन रहा नाम ही है।

अब क्या करें! दिन में भी रात की भांति लाइट का उपयोग कर रहे है। क्यों की प्रकाश - पूंज सूर्य भी कोरहा ~~भी~~ ढक गया। 3-4 हाथ भी नहीं दिख रहा उसको चीरकर लाइट आगे बढ़ती जा रही है। आप अपनी गाड़ी चला रहे है। आवाज आ रही है, प्रकाश ~~को~~ अभाव में आने-जाने वाले वाहन देखने में नहीं आ रहे है। अपने आप ही गति अवरुद्ध हो गयी। इसके उपरांत आगे चले, बादल बरसना प्रारम्भ हो गये। आप गति देना चाह रहे है, किन्तु दे नहीं पा रहे है। गाड़ी नयी, सड़क नयी किन्तु हमारी तकदीर ही ऐसी है। महाराज ने आशिर्वाद तो दिया था पर वह भी गठिया ही लगता है, बढ़िया से नहीं दिया ऐसा भाव मन में कर लेते हो। आप अपने कर्मो की ओर अवधारणा करे। चाहे गरीब हो अथवा अमीर हो, जवान हो अथवा वृद्ध हो, छोटा हो अथवा बड़ा हो, भारत हो अथवा विदेश हो सब को अपने कर्मो का फल अवश्य मिलता है। जब वर्षा प्रारम्भ हो गयी तो गाडी की गति धीमी हो गयी। उस गाड़ी के

Date

आगे वाइपर लगे होते हैं। उनके माध्यम से पानी साफ करते हुये यहांतक आ गये। आपकी दृष्टि को जो व्यवधान आ रहा था उसे वह वाइपर हटा देता है। वह भी तब जब बरसात कम हो - बौछार तेज हो तो वाइपर को भी बाधा आ सकती है। प्रतिकूल हो या अनुकूल हो उस समय कर्म पर दृष्टि रखें। हर्ष-विषाद नहीं होगा असंख्यात गुणी कर्म निर्जरा होती है।

व्यवधान धर्म के काम में भी हो सकते है। इस व्यवधान को आप धर्म की कमजोरी नहीं अपनी कमजोरी समझें। यात्रा करें - कोई विकल्प न करें। जीवन ही एक यात्रा है - ऐसा यही समझें। प्रसिद्ध ही नहीं वे सिद्ध क्षेत्र है। जहाँ मुनिराज जा सकते हैं। भोपाल में ५ माह के लिये यह यात्रा आयी। हमारी यात्रा रुक नहीं सकती। चलाकर यहाँ नहीं आये यात्रा है - चतुर्मास आ गया - रुक गये। कहीं - कहीं ५ दिन का भी प्रवास अथवा कहीं ५ घण्टे का भी प्रवास हो जाता है।

भोपाल बहुत बड़ा है फिर भी लोग नाराज हो तो हम क्या करें? यह हबीबगंज भी चौक के अन्तर्गत ही है। चौक का ही है तो फिर हमारा - तुम्हारा क्षेत्र का क्या मतलब है बच्चो को समझाया जाता है किन्तु यहाँ कुछ बड़े बच्चे हैं जो समझते ही नहीं हैं। हम तो सदैव चलते ही रहते है। मोक्षमार्ग पर चल ही रहे हैं हम मोक्षयात्री है। पथिक (मार्ग) को देखकर ही चलता है। कोई जल्दी कोई विलम्ब से लेकिन सब पहुँचते है। देखभालकर आप लोग भी चलते रहो। चलना तब तक अनिवार्य है जब तक मंजिल न मिले रास्ते में चले भटके नहीं। यह ऐसा पथ है जो सीधा जाता है - टेढ़ा मेढ़ा है ही नहीं। भटका हुआ कहीं का कहीं पहुँचता है अतः सीधा रास्ता अपनाये तो बहुत अच्छा है। समय हो गया है। जै

22-7-16 "निमित्त बड़ा बलवान – संभालो उपादान" प्रातः 9.15
एक विशेष प्रसंग है। रात में कमल खिल नहीं सकते। रात में खिलने वाले कमल अलग एवं दिन में खिलने वाले कमल अलग होते हैं। ये प्रसंग दिन में खिलने वाले कमल का है। रात पुरी निकल गयी, कमल अपनी पुरी पांखुडियों के साथ खिल गया वहीं दूसरा कमल था वह नहीं खिला, उसकी योग्यता नहीं थी। एक घंटा भी हुआ नहीं की जो कमल खिला था वह भी पुनः बंद हो गया।

प्रश्न हो सकता है, जो खिला था योग्यता तो थी वह बंद क्यों हुआ? सूर्यनारायण भी विद्यमान हैं। फिर क्यों नहीं खिला? उत्तर मिला - सूर्य तो हो उसे ग्रहण नहीं लगना चाहिये। सूर्य तो विद्यमान है, पर राहुग्रह उस बिम्ब के सामने आने से यह घटना घटती है। इसे खग्रास बोलते हैं, राहु उसे निगल जाता है। एक भी ग्रास / भाग बच नहीं सकता है। हम कह सकते हैं निमित्त कितना बलवान होता है। निमित्त मिला तो वह कमल खिल गया, निमित्त के अभाव में वह बंद हो गया।

सूर्यनारायण के सामने घटायें आ गयी, हमें नहीं दिख रही पर कमल को पता चल जाती है, सूर्य है तो कमल खिला है और सूर्य के सामने खुला हुआ कमल बंद हो गया। हमारे जीवन में भी ऐसा होता है। कुछ घटायें आ जाती हैं, कभी ग्रहण भी लग जाता है। राहु बिल्कुल काला होता है। सर्वघाति के रूप में वह कर्म प्रकृति उदय में आने पर हमारी बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है। बहुत अच्छे - अच्छे निमित्त मिल सकते हैं, किन्तु उनसे तभी प्रयोजन है, जब बुद्धि काम करे। आप दूसरों को समझाओ नहीं, उनके जीवन में राहु उदय में आ सकता है। आप इससे कहेंगे कि घोर कर्म

Date

नहीं कर रहे हो? वह पलटकर कहेगा आप क्यों नहीं कर रहे हो। झगड़े में तो बुद्धि लग जाती है, धर्म-कर्म में बुद्धि नहीं लग पाती है अथवा मुश्किल से लगती है। तीन बातें कहीं- कमल का रात में नहीं खिलना अर्थात रात के अभाव में खिलना, सूर्य के उदय में भी ग्रहण लगने से नहीं खिलना एवं घंटाओं के उदय में खिलना।

घोर कर्मोदय में भी महापुरुष अपने उपादान को संभालते हैं। व्यस्त रहते हैं वे अपने में, उसी में अभ्यस्त रहते हैं। उनका पुरुषार्थ ऐसा रहता है कि वे अपने उपादान को छोड़ते नहीं। पंच परमेष्ठीयों का स्मरण करते रहो। बीच-बीच में व्यवधान होता रहता है।

अच्छे कार्यों में ही अड़चनें आ जाती है। उनसे लोग अच्छा कार्य कर रहे हो। उस पर से अपने को हटा सकते हो, अपने को सही कार्य में लगा सकते हो। अरिहंत परमो धर्म की जय!

नूँ

23-7-16 "विषहारक कथा" प्रातः 9.15

कोई रोगी वैद्य के पास गया और अपने आपको दिखाया, इस-इस प्रकार की पीड़ा-वेदना शरीर में होती है। वैद्य जी ने कहा बहुत विलम्ब से आये हो, वह कहता है-वैद्य जी आपको ढूंढते-ढूंढते आया हूँ। कोई बात नहीं। आपने जो भोजन किया है वह विष रूप शरीर में फैला गया है। आपने सेवन तो किया पर उसमें गलती हो गयी। भोजन शुद्ध होते हुये भी वह कई प्रकार से बीमारी उत्पन्न कर सकता है।

वैद्य जी ने उसका रोग जानकर दवाई बता दी। ये दवाई लेना है। इसमें क्या-क्या डला है उसने पूछा। इसमें विष मारने की क्षमता वाला औषध विद्यमान है।

NOTES
Date: / / /

Date : | | | | | | | Mo Tu We Th Fr Sa Su

समय आपका हो गया है। नुस्खा हमारे पास है. विज्ञापन मैं कर नहीं दूँ हूं ऐसा करना यहाँ हजारों लोग बैठे है - जहाँ कहीं भी जाओ उनको भी बता देना - अहिंसा परमो धर्म की जय। नुं

२५-7-16 (रविवार) "लीनता में आता आनन्द" प्रातःव

आज रविवार है, किन्तु आप लोगो का रविवार मध्याह्न में होता है, सुबह क्यों आ गये? आज अभी पाण्डाल में जगह कम पड़ गयी। जल्दी ट्रेन आ गयी क्या? रेल का यह रिकार्ड है समय पर निकलती तो है पर पहुँचती लेट है। आप लोग जल्दी कैसे आ गये? बिना टिकिट के तो नहीं आये ना। सुनलो। आनंद कब आता है।

लीनता का नाम, तल्लीनता का नाम डूबकी लगाने का नाम, अपने आप को डूबाने का नाम आनन्द है। जब तक व्यक्ति अपने आपको बाहरी रेपरेवा से बचायेगा नहीं तबतक भीतर जायेगा नहीं। भीतर जाने की प्रक्रिया कुछ और है। छोटे बच्चे प्रायः करके देखते रहते है ये मिठाई है - ३। वह उसे देखता रहता है, किन्तु उसे वह स्वाद नहीं आयेगा जो खाने में आता है। जिसे देखने में ही स्वाद आ रहा है, वह सही आनंद नहीं ले रहा। ये नृत्य - गायन - वादन सब मौन हो जाते है तब सच्चा आनन्द आता है। अभी बाहरी आनन्द ले रहे हैं - भीतरी आनन्द नहीं।

आपके हाथ में ग्लास है, ग्लास काच का है, उसे दूर से देख रहे हैं। ग्लास भरा है या खाली है, यह ज्ञात नहीं हो पा रहा है। ग्लास साफ - शुभ्र है आर-पार है। पहचान नहीं पा रहे है खाली है या भरा है, किन्तु हमे भरे अथवा खाली की पहचान तब होती है जब उसमें बताशा डालते है। यदि ग्लास होता तो बुरेत नीचे चला जाता किन्तु भरा है इसलिये धीरे-धीरे नीचे जा रहा है। डूबेगा नहीं।

धीरे - धीरे वह बताशा लीन होते जा रहा है। उसकी यात्रा चल रही है, धीरे-धीरे उसका आकार - प्रकार खत्म होता जा रहा है। सफेद पानी में वह सफेद मिठाई (बताशा) लीन - गायब हो जाता है। नीचे जाते - जाते वह समाप्त हो जाता है।

पूछने वाला पूछ सकता है, क्या है इसमें पहले जैसा पानी नहीं दिख रहा, क्या भरा है पानी ही भरा है किन्तु अब वह फीका नहीं जो लीन हो गया उसने इस पानी को भी मीठा कर दिया। वह दिख नहीं रहा। विश्वास तो रखो - तभी आनंद आयेगा। विश्वास आनन्द के लिये होता है। जमाना बदल गया पर विश्वास कभी बदलता नहीं है। बाल - बच्चे हैं अब बड़े हो गये उसी विश्वास के बल पर पूर्वज चले गये, उनके अभाव में भी हम आगे बढ़ेंगे।

उस विश्वास के द्वारा उस पानी का ज्यादा पैसा ले लिया। ज्योंही एक चुस्की लेता है, समझता है पुरी कीमत वसुल हो गयी। भोपाल वालो सुन रहे हो। हम। हमारी स्थापना तो हो गयी है आज आपकी स्थापना होनी है। यह सामान्य रविवार नहीं है, विशेष रविवार है। बहुत - बहुत भावना के बाद मिला है। आनंद को खोने के लिये जो स्थितियाँ हैं, उसमें बदलाव होना चाहिये। जैसे वह बताशा पानी में लीन हो गया - डूब गया तो पानी पानी न रहा बताशा बताशा नहीं रहा। जब पानी पीया तो ज्ञात हुआ कि ये बहुत मीठा पानक है। विश्वास की अनुभूति लेना चाहते हो तो चारित्र की बहुत आवश्यकता है। अन्यथा वह विश्वास आपका चला जायेगा। सम्यक्दर्शन में पहिया भी लगाओ तभी आगे बढ़ पाओगे। हमें बोलना नहीं - आंखें खोलना है। संकल्प से आगे बढ़ने का। अब समय आ गया है - मान विश्वास का ही नहीं चलने का। शुरु हो जाओ। इतनाही। अहिंसा परमो धर्मकी जय।

Date

25-7-16 "रहस्य समझे जीवन का" प्रातः 9.15

आप लोग ये जानते हैं कि एक दादा जी बैठे थे छुट्टि वे घर में रहते हुये अवकाश प्राप्त थे। घर में नाती-पोते भी होते है वे दादा जी की गोद में खेलते रहते हैं। दादा जी के लिये भी समय निकालने का और ज्यादा इससे क्या होगा। वे भी उनके साथ खेलते रहते है। खेलते ही नहीं खिलाते भी है ताकि वह यहीं बैठा रहे।

उसी बीच में उस बच्चे को बुलाया, कुछ खाने की चीज ही - माँ ने कहा दादा जी को भी दे देना। दादा जी को भी दे दिया, वह बालक खाकर नाचने लगा दादा जी ने अपने में से भी कुछ दे दिया - वह और आधिक नाच रहा है, दोनो अवकाश प्राप्त है। एक व्यक्ति नाच रहा है दूसरा खा तो रहा है पर नाच नही रहा है। बल्कि खा रहा है उसमें से भी बचाकर वह बांट देता है।

मैं यह बताना चाहता हूँ कि जिसने खाया-पिया किन्तु रहस्य समझा वह देख लेता है कि इसमें क्या है? कुछ नहीं। दादा जी को लगा कि गृहस्थ आश्रम में क्या है, पंचेन्द्रिय के विषय क्या है ये ज्ञात हो गया। स्व क्या एवं पर क्या ये भी ज्ञात हो गया। ये पुछताछ करेगा - ये क्या है - ३। कहेगा हम देख लेंगे। हमसे वा लेंगे अथवा हम चलेंगे नहीं मानेगा, ठोकर लगेगी नाखुन अलग हो जायेगा। आत्मा की कोई उम्र नहीं हुआ करती। हो सकता है १० वर्ष के दादा जी में तत्त्व ज्ञान हो और आज के बालक में तत्त्व ज्ञान हो। आप लोग सभा में बैठे है, आप बैठे है तभी तो मैं आ गया हूँ। इस पैसे से भी

Date

सीख ली जा सकती है। तत्त्व ज्ञान क्या होता है, भाव समझना क्या लेना और क्या छोड़ना। बेटा समझदार होने पर कहता है आप बैठ जाओ, आपने जीवनभर नहीं कमाया हम एक ही पैकेज में पूरा कर लेते हैं।

आज सारा का सारा जमाना जिसके पीछे पड़ा है - हम उसके पीछे नहीं पड़ेंगे। जिन्दगी खराब कर लेता है। आवश्यकता एवं अनिवार्यता को समझना आपका काम है। छोटा बच्चा है वह भी चिंतक है। हम समीक्षक नहीं। आपको प्रतिदिन चिंतन हेतु विषय देता है। थोड़ा रात में चिंतन किजिये तभी यह चातुर्मास सार्थक होगा अन्यथा कितने चातुर्मास आपके जीवनकाल में बीत जायेंगे पता ही नहीं। बोध होने पर ही पता चलता है। एक बार सही दिशा में कदम उठ जाते हैं तो फिर बार-बार सोचने की जरूरत नहीं है। तत्त्व के बारे में भी ऐसा ही है।

कम उम्र है तो तत्त्व ज्ञानी नहीं एवं अधिक उम्र वाला ही तत्त्वज्ञानी हो - ऐसा नहीं है। दूसरा भी चल सकता है, वो भी उपदेश के बिना। स्व एवं पर के ज्ञान को सम्यक् बनाने का उपक्रम करो। गोद में जो बालक खेल रहा है, उसके प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता विद्यमान है या नहीं - देख लो। दादा जी उसे खिला रहे हैं, कहीं ऐसा तो नहीं वह बालक दादाजी को खिला रहा है। आपका दादा जीवन सकता है। वरिष्ठ (Senior) कौन है, तय करलो। तत्त्वज्ञान के अभाव में उम्र का कोई महत्त्व नहीं, तत्त्वज्ञान हो तो हम छोटे से भी शिक्षा/प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं और लेना भी चाहिये। आत्मज्ञान महत्त्वपूर्ण है, उसी की ओर दृष्टि हो। अहिंसा परमो धर्म की जय। नुं

26-7-16 "अंक के बिना शून्य का महत्व क्या?" प्रातः 9.20
एक मुनिम जी दुकान पर बैठे थे। बही खाते में कुछ लिख रहे थे - देख रहे थे। जितना योग (जोड़) होना चाहिये था उतना नहीं था। लगभग 10 हजार का फर्क मुनिम जी का आ रहा था। एक बार नहीं, दो बार नहीं, तीन बार अब निर्णय हो गया कि ये योग ठीक नहीं। लाइट इत्यादि में भी देखा।

अब सोचना प्रारम्भ कर दिया, अकसर ऐसा होता है जब सोचते हैं तो आंखें बंद कर लेते हैं और पश्मा सिर पर लगा देते हैं। प्रक्रिया बदल दो - साधन बदल दो लेकिन मन में उजाला तभी दिखता है, जब इन्द्रियाँ विराम ले लेती हैं। हमारे प्रभु जब बैठे हैं तो फिर इन्द्रिय व्यापार क्यों? इन्द्रिय व्यापार एक प्रकार से घाटे का सौदा ही है। बस फिर क्या था मुनिम जी का मन एकदम प्रशस्त हो गया, जो 5-5 हजार लिया था वह उसमें था ही नहीं। सांसारिक क्रियाओं में गुणा-भाग के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। संख्या की अपेक्षा 9 का अंक ही Last है अब एक-एक मिलाते जाओ वही पुनरावृत्ति है।

9 में 1 मिलाया 10 हो गया, एक है एवं शून्य है। सौ में एक के आगे दो शून्य हो जाते हैं। आज सभी शून्य बढ़ाने में लगे हैं। आगे एक है या नहीं पहले यह तो देख लो। आत्मा है तो ठीक है, अन्यथा यह शरीर किसी काम का नहीं। संसार को बढ़ाने का ही उपक्रम कर रहे हैं, यह कोई भी नहीं कह रहा कि अपनी आत्मा को देखो। हम सिंघल (Singal) हैं आप भी Singal ही हैं। गृहस्थ में परिवार है, वास्तव में आत्मा अकेली है। किन्तु आप परिवार पत्नि, बेटा को ही सब कुछ मानते हैं। हिसाब-किताब की ओर ध्यान ही नहीं है। सम्यग्ज्ञान के अनुसार हिसाब-किताब होना जरूरी है। जिस पूंजी

से अपना उद्धार नहीं हो रहा है, उस पैसे से व्यापार करने का कोई मतलब नहीं है। सोचा करो - ज्यादा लिखना - पढ़ी की जरूरत है ही नहीं। बच्चे चश्मा से बहुत लगाव रखते हैं और हम हमेशा-हमेशा दूर ही रखते हैं, क्यों कि चिंतन के लिये उसकी आवश्यकता है ही नहीं। बच्चे ज्यादा लिखते रहते हैं पर उसका महत्व उस एक की तरह है अन्यथा शून्य का कोई अर्थ नहीं - कितनी भी बढ़ाते जाओ। कुछ नहीं होगा।

भारत का इतिहास रहा है, रूस जैसे देशों ने भी भारत की गणित को बहुत सराहा है। इसमें भी दशमलव प्रणाली तो जैनाचार्यों की ही देन है। आज इस गणित को विस्मृत कर रहे हैं। ध्यान रहे - शून्य का महत्व तो संख्या से ही है। सुनिम जी प्रसन्न हो गये। 10 वर्ष पूर्व जब सर्दियों में आया था, तब यह लेख पढ़ा था। आप लोग भी इसका अनुपालन करेंगे, अहिंसा परमो धर्म की जय!

27-7-16 "आलस्य रहित संयम हो" प्रातः 9:15

प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान का योगदान विशेष माना गया है। मोक्षमार्ग में भी उसको स्थान दिया गया है, किन्तु उस ज्ञान को बांध दिया गया है। एक तरफ सम्यग्दर्शन को रखा गया है तो दूसरी तरफ सम्यक्चारित्र को, बीच में उसके योगदान को रखा गया है। इन दोनों के अभाव में वह सम्यक् रूप से काम नहीं करेगा। दूध को ही लिजिये।

दूध में घी है, उसमें और भी व्यंजन छिपे हुये हैं। आप पर आधारित है आप उस दूध से क्या काम ले सकते हैं। वह संयम के पक्ष के साथ चलता है तो व्यंजन प्राप्त हो सकते हैं, अन्यथा गड़बड़ी हो जायेगी। जैसे दूध से व्यंजन बनाना चाहते हो तो तपाना जरूरी है। तपाना ऐसे ही नहीं - कितनी अग्नि की जरूरत है, यह देखना कुशल

NOTES

Date : / /

जरूरी है। पैसा खर्च किया - दिमाग भी खर्च हुआ, संयम के अभाव में यह सब व्यर्थ चला जायेगा। अब उस दूध को आग पर रखकर औटाना प्रारम्भ करते हैं, नीचे भी देखते रहते हैं कि ये अनुपात में है या नहीं। तापमान आयेगा - पानी को जलायेगा और यदि सावधानी नहीं रही तो दूध को भी जलायेगा। उस औटाने के समय गति भी रहती है, ये भी देखते रहते हैं कि कहीं बाहर छलककर न जाये। यदि अग्नि ज्यादा हो तो अंदर में मलाई की तरह खोवे का रंग भी लाल हो जाता है। बाजार में उसकी कीमत कम हो गयी।

आश्चर्य है, सम्यग्ज्ञान भी है पर थोड़ी सी सावधानी नहीं रही तो कीमत में नीचे आना ही पड़ेगा। बाद में कुछ मिला देंगे। कुछ भी करो कीमत / भावों में तो अन्तर आयेगा। मिलाने से गंध, स्वाद आदि में भी अंतर आयेगा। साथ ही आप मिलावट का भी काम करते हैं यह विज्ञापन आपके नाम से दूसरे दिन अखबार में आ जायेगा, बिना पैसों के। अच्छाई को दबाना है तो दाम मांगते हैं।

हमारी असावधानी / प्रमाद / आलस प्रतिक्षण हमें खाई की ओर ले जाते हैं। उस खाई की पूर्ति नहीं होती है। काम कर ही रहे हो तो फिर खाना-पूर्ति नहीं करो बल्कि स्फूर्ति से किया करो। झट-पट नहीं करो। मूल्य तभी मिलेगा जब सही करेंगे। क्षण के साथ - संयम के साथ करेंगे। विज्ञान भी तभी काम करता है जब संयम में आलस नहीं होता। ज्ञान में आलस होने से संयम में भी आलस आ जाता है, अल्पा में भी लचक आ जाती है। पैर मोच खा गया, सड़क कितनी भी अच्छी क्यों न हो पैर मोच खा गया। गिरने की संभावना नहीं पर लचक तो गया ही, फ्रैक्चर हो गया, अब मुहूर्त के अनुसार बैठना पड़ेगा। उस समय संयम पालन करते हुये सावधानी रखते। वह सावधानी कहीं बाहर से आने वाली नहीं है।

पैसे वाले ये समझें की हम उसे खरीद लेंगे - ऐसा कभी संभव नहीं। ऐसा करने से आपको घाटा लगेगा। अनेक प्रकार से नुकसान हो सकता है। उस दूध को एक निगाह से प्रमाद छोड़कर देखने पर ही व्यंजन बन पाते हैं। तब मन प्रसन्न होता है। रत्न शरीर को भी तपाओ तभी उस ज्ञान का महत्व है। आपको देखने के लिये यह उदाहरण दिया।

उदाहरण के पहले समय भी देना पड़ता है, ऐसा नहीं यहाँ आकर बैठ गये। 10 मिनिट है दिये उससे पूर्व भी समय दिया है। सम्यक्ज्ञान केवलज्ञान में परिणत होगा तभी जब आलस्य रहित संयम होगा। निरन्तर यह होना आवश्यक है। बैठते - बोलते - चलते समय ही नहीं सोते समय भी इसका होना जरूरी है। बिना ज्ञान के नींद नहीं, निद्रा में भी सावधानी की बहुत आवश्यकता है। आप इन सब बातों का मात्र वाचन या श्रवण ही नहीं पारायण भी करें। सब साइलेंस हो जाये उसका नाम है साइंस। आत्मा की बात है ही नहीं, पहले सीखा है उसे छोड़ दो तब हम सीखाना प्रारम्भ कर देंगे।

स्लेट कोरी हो तभी लिख पायेंगे। आप स्लेट ही नहीं जानते, एक बार जापट्टी स्लेट ले आये कार्बन पेपर उठाया सब गायब - ऐसे में मैं क्या करूं। दर्शन के साथ ज्ञान का सांचा होना भी जरूरी है। आपका विज्ञान तो किसी सांचे में ढला ही नहीं है, इसलिये व्यर्थ है। रचना हो रही है, शोध कर रहे हैं, किन्तु गलत दिशा में। पाश्चात्य भी ऐसा ही है। बालक चाहे या नहीं बस इतना होना चाहिये। बालों से गये - बीते पालक हैं। वह बालक भी पढ़ता है हमें ईश्वर क्यों भेजा? पालक सोचते हैं क्या लेगा। कम आना = अपना 70 वर्ष के बाद भी यह स्थिति बनी हुयी है। ज्यादा समय तो मैं नहीं लेता। खोवे को नहीं अग्नि को भी देखते रहो। अपने जीवन को जैसा चाहे वैसा बना सकते हो बस आवश्यकता सावधानी की है। अहिंसा परमो धर्म की जय। हुँ

Date

28-7-16 "शब्द नहीं - भाव महान" प्रातः 9.20

आप लोगो को यह ज्ञात होना चाहिये कि जो आप सुन रहे हैं, अथवा जो सुनाया जा रहा है वह शब्द है। मैं यहाँ बैठा हूँ आप वहाँ बैठे है, बीच में दोनो के अन्तर में कौन है। शून्य है। पर शब्दो के माध्यम से सम्पर्क हो रहा है। शब्द भावो के वाहक होते हैं। गद्दी पर बैठकर बोलते है आप वाहक हैं इसी तरह शब्द होते हैं। आपने शब्द ग्रहण किया भाव ग्रहण नहीं किया अनर्थ हो जायेगा।

मैं तो अपने आप मे सुरक्षित हूँ-भाव आपने नहीं लिये थे भाव बहुत बड़ा काम करते है, पनघट लोग आते हैं भाव लेकर चले जाते है। अगले दिन पत्रिका में प्रकाशित कर देते हैं। अन्यथा लोग सोचेंगे महाराज जी ने इतना ही कहा होगा। शब्दो का महत्व भावों के माध्यम से ही होता है। भाव शब्द के बिना आत्मा नहीं। बाहरी दृश्य कम आभ्यन्तर रहस्य ज्यादा छिपा रहता है।

आप लोग फोटो ग्राफी करते हैं कोई भी फोटोग्राफी, कैसी भी फोटो ग्राफी क्यो न हो, विदेशी कैमरा भी क्यों न हो, सब के सब बाहरी दृश्य को ही दिखायेंगे, भीतरी दृश्य नहीं। महंगे से महंगा कैमरा भी बाहरी दृश्य की ही फोटो लेगा। मैं इसे महत्व नहीं देता। हमारे अस्पताल में भीतरी भावों की फोटो ले सकते हैं। वो कैसे? आपने X-Ray देखा होगा। अध्यात्म में रहने वाला ही इस X-Ray को कर सकता है। यदि भावो में हलचली नही तो उस अध्यात्म पर भी प्रश्न चिन्ह लग जायेगा। मैं चाहता हूँ कि आपके भीतर भी यह हलचली हो आप भी X-Ray ले सके। प्रश्न चिन्ह न लगे। इन्ही भावो के साथ अहिंसा परमो धर्म की जय।

हूँ

Date

29-7-16 केशलोंच -(दोनों का)

30-7-16 "अनुपात एवं अनुशासन" प्रातः 9.15

आप लोगों की सभा में जो कोई भी गतिविधियां होती है, उन्हें सीमित कर लिजिये, क्यों की मुनिमहाराज भी यहाँ पर है। सुनने का असर भी तभी पड़ेगा। उदाहरण से समझें। एक व्यक्ति वैद्य के पास जा रहा था। उसके पूर्व उसके नाक में सुगन्धी आयी। वह गया उसी के घर में से सुगन्धी आ रही थी। वह कहता है अभी बन रहा है। क्या बन रहा है - अभी गंध आ रही है। जब बनकर सामने आयेगा तभी खायेंगे। सूंघने के लिये पास जाने की आवश्यकता नहीं। स्पर्श से ज्ञान नहीं, न ही आंखों के सामने है, रस तो चखा ही नहीं। मात्र सुगन्ध से ही आप उभावित हो गये, शेष गुण लेने नहीं।

मैं संगीत वालों से कहना चाहता हूँ - संगीत में कर्कश नहीं आती। आजकी ध्वनि तो कर्कशता से आपुरित है। आप क्या बोल रहें है - पता ही नहीं। कई बार देखा एक शब्द भी सुनाई नहीं दे रहा है। उससे कुछ नहीं होगा, उसके अर्थ में सार हो। इससे सृजन करने वाले - सुनने वाले सब वंचित रह जाते हैं। अर्थ के अभाव में कोई मतलब नहीं होता। संगीत से आप इसे सर्वग्राह्य एवं सर्वरुचि के योग्य बना सकते हैं। अभी इतनी ही आवाज है, हम भी बोल रहें है। उदम करोगे तो नृत्य, वादन, गायन, संगीत का कोई लाभ नहीं होगा। दो-तीन दिन में समझ में आ गया, कई लोग कह रहे थे। इसतरह की बातें वहाँ विधानसभा में भी हुयी होगी।

आपने व्यवस्था नहीं की वह विधानसभा थी। माहौल कैसा है उसका तो ध्यान रखो। हमारा यह कहना है कि किसके लिये किया जा रहा है। अनुपात का अभाव हो जायेगा तो आपात हो जायेगा। मात्रा का ध्यान रखो। (एक बार और सुनाओ-)

Date

ऐसा कहें तो अच्छा होता है। आप कर तो रहे ही हैं - भजन आदि क्रिया, पर कैसे कर रहे हैं यह भी तो ध्यान दो। आपका भाव है यह मैं भी कह रहा हूँ। भाव के बिना यहाँ आप आते ही नहीं किन्तु जिस क्रिया का जैसा लाभ होना चाहिये - वैसा नहीं है। आवाज से व्यवधान होता है तो सम्पूर्ण प्रबन्धन पर आरोप आयेगा। यहाँ स्थापना (भजन) हो रही है - उधर दूसरा ही कार्यक्रम चल रहा है।

इसका आनंद नहीं आयेगा। ध्यान रखो। समय तो ऐसे ही निकलता चला जायेगा। आगम - जिनवाणी का आनंद भी तभी आयेगा। मैं भी संगीत को मानता हूँ। बिना वाद्य यंत्रों के भी संगीत और अच्छा लगता है। बिना नुपुर - पांवों से नृत्य, तबला नहीं - चौकी को ही बजाना नाचने लगते हैं लोग। समोशरण में करोड़ों वाद्य यंत्र होते हैं पर कोई भी एक-दूसरे से बाधित नहीं होते। संगीत विरुद्ध न हो।

रसोई बनाते हैं फिर परोसते हैं। कैसे परोसना यह बनाने से भी अधिक महत्वपूर्ण है। मांसा का ध्यान रखा जाता है। नमक की जगह फिटकरी हो तो कहना ही क्या? आप तो सफेद देखकर डाल दिये, परिणाम उलटी होगी। कितनी बातें कह दी - सबका ध्यान भी रखो। हर प्रसंग से पाठ ले सकते हैं। जो भी व्यंजन है उसमें अनुपात का महत्व होता है। ज्यादा अनुपात से भले ही वह घी भी क्यों नहो उसकी सौम्यता - सुरभि - स्वाद सब चले जायेंगे। आज सारे के सारे अनुपात नीचे से लेकर ऊपर तक समाप्त प्राय है।

एक बार और कह देता हूँ, क्योंकि चौके में हम बोलते हैं ही नहीं। हां - हुं करता है - कोई ध्यान नहीं देता। भजन करते हैं - चावल बिखरा देते हैं थाली-गली। हाथ नीचे नहीं रखना चाहिये। थोड़ा सा पानी से हाथ धो लिया क्या है ये। इसी तरह अन्य

Date: | | | | | |

सामग्री भी गिरना नहीं चाहिये। असावधानी हो गयी तो अंतराय हो सकता है। कहीं भी बिना पुछे घुसना नहीं चाहिये। प्रवेश करने से पूर्व पुछो। कुछ तो पहले से ही (सॅम्पो) भीतर ही छीपे रहते है। चौके वाला वंचित ही रहता है। किसी ने पडगाहन - किसी ने शमन - किसी ने गंधोदन - किसी ने आहार ये क्या प्रक्रिया है।

जो देखना चाहता है, उसे देखने भी नहीं दे रहे। होश- हवाश से देखो। अनिवार्य प्रश्न को ही हल नहीं कर रहें। सब सुन रहे हो - व्यंग्य मे - हव। चौके में किसी की नहीं सुनते। ध्यान रखें। जब P.M. से नहीं संभलता तो राष्ट्रपति-शासन लागु हो जाता है। मैं भी अब राष्ट्रपति शासन लागु करूंगा। सब समझ में आ जायेगा। 10-12 दिन हो गये - सब घुस रहे है - गुहतागी कर रहे है। जो बाहर खड़ा है उसे एक नम्बर अलग से मिलेगा। अन्यथा जो घुस रहा है उसे माइनस मार्किंग होगी। सुन रहें हो - व्यंग्य (हव)।

आपकें बस की क्षमता 50 की है तो 50 ही बैठायें। जहाँ पात्र रखा है - दाता खड़ा है - भोजन बना है - हवयं खड़े है ये तीनो ध्यान देखना होता है। इसके उपरान्त मैं बोल नहीं सकता - आप सुन नहीं सकते। और कोई महाराज हो तो - - - आप क्षमा कर देते है)

यह विधी है। इसी अनुसार करेंगे तभी कर्मो की निर्जरा होती है। कैसे ग्रास दिया जा रहा है - कैसे लिया जा रहा है। यह देखकर दर्शक भी कर्मो की निर्जरा कर सकते है। 100 गुणा भीड भी देख सकती है। आप केवल अपने स्वार्थ का ध्यान रखते है। वह ध्यान से देखकर प्रफुल्लित हो रहा है। इतना ही पर्याप्त है। अहिंसा परमो धर्म की जय।

Date :

31-7-16 "लोहा बना सोना" प्रातःकाल

गुरु के सान्निध्य में एक शिष्य ने कुछ बातें सीखीं। उसमें कुछ रासायनिक प्रक्रिया भी सीखी। कौनसे द्रव्य से क्या मेल होता है, ये भी सीखा, किन्तु गुरुजी ये भी कह गये थे कि गोपनीय तरीके से ये काम करना। किन्तु जैसा कहा - वैसा नहीं हुआ था। कई बार - 3 बार किया किन्तु वैसा नहीं हुआ। उसने सोचा- मेरी वर्षों की साधना यूं ही चली गयी, सब गड़बड़ हो गया। जैसा आपने कहा था वैसा क्रिया पर नहीं हुआ। तीन बार किया पर नहीं हुआ। हमारे जैसा धोरवा और किसी के पास न हो। धो - रवा = धोकर खाओं अन्यथा धोरवा साओगे बाजार से लाकर सीधे मत रवाओ धोकर रवाओ।

वहां लोहे का टुकड़ा था हाथ में पारसमणी थी - स्पर्श करा दो तो लोहा सोना हो जायेगा। आपने लोहे को कपड़े में बंद करके ये कार्य किया इसलिये वह लोहा आज तक सोना नहीं बना। वह शिष्य दोबारा गया किन्तु ये क्या फिर सोना नहीं हुआ। गुरुजी ने कुछ विद्या बचा ली होगी - चलो वह फिर से आकर कहता है - गुरुजी पुरा तो दिखो। आपके सामने तो हो जाता है, वहां नहीं होता। उन्होंने सोचा देखो।

गुरुजी कहते है किस क्वालिटी का लोहा चाहिये वैसा नहीं - ये लोहा जंग खाया हुआ है। अतः जंग खाया लोहा भी सोना नहीं बनेगा। सुन रहे हो। लोहे को उच्चस्तरीय बनाओ। श्रावको। श्रावक तो बन जाओ। तभी कुछ सुन पाओगे। 4 माह क्या अनंत काल निकल गये। स्वरूप को समझो। आज वैज्ञानिक थोड़े-थोड़े के लिये मोहताज हो रहे हैं

Date: | | | | | |

हम ऐसे विज्ञान को मानते ही नहीं हैं। शिक्षा-प्रणाली को परिवर्तन करने की आवश्यकता है। लोहे पर जंग लगा है, उसे घिसने की जरूरत है। थोड़ा सा भी हवा-पानी लगा लोहा जंग खायेगा जब की सोना सदैव हवा-पानी में ही डूबा दो तो भी जंग नहीं खायेगा।

आत्मा को शुद्ध बनाना चाहते हो तो-आत्मा को मांजो-धोओ। नहीं तो चौरासी खाते चले जाओगे-3। किसी को जंग लगा लोहा यदि पैर में लग गया तो इंजेक्शन तो लगाना ही पड़ेगा। आपको सुधरना है तो स्वयं को देखना होगा। जो सुधर चुके हैं उनके पास रहो। हम भी ऊपर वालों को देखकर ही सुधर रहे हैं। उदाहरण याद रखना। अहिंसा परमो धर्म की जय।

1-8-16 "गंधोदक सामान्य जल नहीं" प्रातः 7.15

आप लोग प्रतिदिन अष्टमंगल द्रव्य से पूजन करते हैं। उसीका प्रसंग है। एक अपेक्षा से आपके सामने रखता हूँ। आप गंधोदक लेते हैं। जल में चंदन आदि घोल देते हैं और कहते हो गंधोदक ले लो-नहीं लेंगे। क्यों की अभिषेक नहीं हुआ है, रहस्य यह है कि केवल जल एवं गंध नहीं अपितु तीन लोक के जिनेन्द्र जिनमें गुणों का आरोप किया है, उनसे सस्पर्श जल एवं गंध को ले लेंगे।

गंधोदक सामान्य नहीं है, कि घर में घोल-घाल के रख लिया ऐसा नहीं लेंगे। चरणोदक ले लेंगे। केवल उसके मात्र से चरणोदक भी नहीं होगा। उसमें हमारी भावना-धारणा और सम्यक् श्रद्धा जुड़ी हुयी है। फिर

उसका प्रयोजन क्या है? वे आठ कर्मों से मुक्त हैं, संसार से मुक्त हो गये हैं। संसार से मुक्त हो गये हैं। ये सारी अवधारणायें हमारे भीतर आते ही उनके प्रति आस्था / बहुमान बढ़ते हुये चला जाता है। ऐसे केवल ज्ञान के धारी ये भगवान हैं, उन पर ऐसी श्रद्धा अवधारणा हमारी बनी हुयी है इस प्रकार मन में आते ही कर्मक्षय में देर नहीं लगती। अन्यथा गन्धोदक कहो - कुछ नहीं होगा। स्वाध्याय करोगे तब आपको इस गन्धोदक / चरणोदक की महिमा मालुम पड़ेगी।

आज लोग कहते हैं महाराज हमें स्वाध्याय के लिये समय ही नहीं मिलता। समय निकालो तो सब मिलेगा। अभी तो आप से पूछे गंधोदक क्यों लेते हैं, जवाब मिलेगा सब लेते हैं, इसलिये हम भी लेते हैं। ये भी फलदायी तभी होगा जब आस्था के साथ ज्ञान भी समीचीन होगा। इस प्रकार करने पर कर्म निर्जरा और अधीक होती है।

जो भी द्रव्य अथवा साधन सामग्री है लक्ष्य मात्र कर्म निर्जरा का हो तभी मोक्ष प्राप्त होता है। मोक्षतत्व की ओर दृष्टि होने पर ही जो साधक तत्व है उनकी सार्थकता है।

अभी एक सज्जन ने निवेदन किया की विधान करना है। विधानसभा तो यहाँ है ही। अष्टाह्निका में भी विधान होता है। देवता लोग नन्दीश्वर जाकर पूजा-विधान करते हैं। महाराज भी विधान करते हैं। हम तो अभी-अभी विधान करके ही आये हैं। (चतुर्दशी का बड़ा प्रतिक्रमण) विधान तो विधान है। लक्ष्य कर्म निर्जरा का है तो सब ठीक है अन्यथा कोई मतलब नहीं। समय आपका पूर्ण हो गया है। अहिंसा परमो धर्म की जय।

ॐ

Date ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa

2-8-16 "क्या बनना ? हाथ आपके" प्रात: 9.15

जैन दर्शन विज्ञान से बहुत सूक्ष्म दृष्टि रखता है। जैन दर्शन कितना सूक्ष्म है इसे एक छोटे से उदाहरण से बताना चाहता हूँ। किस तरह से द्रव्य पर्याय से पर्यान्तर में चला जाता है - श्रद्धान का विषय है। मेघो से पानी बरसा। सीधा वह पानी मेघो के माध्यम से आया और मोती का रूप धारण कर लेता है। जो जलकायिक थावर पृथ्वीकायिक हो गया। जलकायिक स्थावर का ही भेद है वह मुक्ता हो गया। मुक्ता के रूप मे परिणमन होते ही पृथ्वीकायिक हो गया।

वह मेघ जलकायिक बनने की एवं पृथ्वीकायिक बनने की ही क्षमता नहीं और भी क्षमता रखता है। दो मेघ आपस में टकरा गये। बिजली चमकी। क्या हुआ। वे मेघ अग्निकायिक जीव के रूप में उत्पन्न हो गये। उस अग्नि के गिरने से बड़े-बड़े पर्वत चूर-चूर हो जाते है। ये परिवर्तन कैसे हुआ, वही जल बिजली का रूप ले लिया। जैन दार्शनिक ही इस बात को समझ सकते है। वही जल सीप के मुख में गया तो कुछ दिन में मुक्ता बन सकता। विज्ञान इसे बनाना चाहे तो भी हजारो वर्षो में नहीं बना पायेगा। कोई भी नहीं बना पायेगा।

वह सीप कभी नहीं कहता कि मुझे पुरस्कृत करो। आप स्वयं देख लें यहाँ कृत्रिम चीज कितनी है और अकृत्रिम कितनी है। भोपाल वाले कहते है यहाँ आओ मालुम पड़ जायेगा हमारे पास क्या-क्या है? बम्बई वाला कहता है - भोपाल में क्या रखा मेरे पास आओ पता लग जायेगा। हम कहते है हमारे पास आओ

Date

मालूम पड़ जायेगा। संसारी प्राणी कितना अहंकारी होता है, जब कि अकृत्रिम रचना कितनी सहज है तथा स्वभाविक भी है अहंकार बिल्कुल नहीं। ज्ञान को भी मान का कारण बताया है। ऋषि भी यदि ज्ञान का मद कर ले तो सारा का सारा तप व्यर्थ चला जायेगा।

हमारे सामने हित रूप भी और अहित रूप भी सामग्री विद्यमान है। यह परिवर्तन बड़ा अद्भुत लगा, यह मेघ मुक्ता भी, बिजली भी अथवा पृथ्वी भी बन सकता है। वही जल जब सर्प के मुख में चला जाये तो विष बन जाता है और किसी वृक्ष की जड़ में चला जाये तो तीर्थंकरों के आहार का कारण भी बन जाता है।

आपका जीवन अपना है। आप क्या बनना चाहते हैं। ये 10 मिनिट आपने सुना अपने ऊपर बड़ी कृपा की है। मैं आप लोगों की आवा नहीं बोलता हूँ अतः हो सकता है आपको बुरा लगता हो। आइये! सुनिये! मैं तो सीधा-सीधा बोलता हूँ। आप यहाँ आये, यहाँ आकर आपने अपने ऊपर बड़ी कृपा की है, थोड़ी सी कृपा अपने ऊपर और करो जो सुना है उसे लेने से पूर्व याद भी करना। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ।

4-8-16 "चलें एक एक कदम" प्रातः 9.20

(माइक चल नहीं रहा था) अभी आपने देखा एक माइक हराकर दूसरा माइक - तीसरा माइक लगाया किन्तु नहीं चला। सुनो - माइक आपका हो सकता है, वायर-स्टैण्ड आपका हो सकता है, मशीन आपकी हो सकती है, ऑपरेटर आपका हो सकता है किन्तु करेंट आपका

नहीं हो सकता है। करंट के अभाव में सारी साधनसामग्री का कोई मूल्य नहीं। इसी प्रकार जीवात्मा के बिना इस शरीर का कोई मूल्य नहीं। अपने को वायरलेस बनाओ। बिना वायर के भी काम करता है। अब ध्यान रखना।

नसैनी आप लोग जानते होंगे। कितने पैर होते हैं उसमें। दक्षिण में उसे पैर ही बोलते हैं। जिस पर पांव रख कर चढ़ते हैं। एक-एक कदम रखें, मानो। पैर है। चलते-चलते छत पर पहुँच गये। उस नसैनी को छोड़ देते हैं। उसको छोड़ने से कोई दुःख नहीं होता। इसी तरह जो व्यक्ति लक्ष्य की ओर दृष्टि रखता है, वही उसकी प्राप्ति कर सकता है। कोई भी चीज को नियामक नहीं बना सकते, नियामक मात्र इतना ही है कि हमको इससे काम लेना है।

ज्यादा माथा-पच्ची मत करो। आज युग का पुरा युग/जमाना ही माथा-पच्ची का आ गया है। दिमाग मत लगाओ। मेधावी विद्यार्थी भी पहले सरल प्रश्नों के उत्तर हल करने में लग जाता है। फिर अन्य प्रश्नों को हल कर देता है। आप भी एक-एक काम निपटाते जाओ। उस समय एक साथ करना चाहोगे तो दिमाग भी काम नहीं करता है। दिमाग को ढ़ण्ड रखा करो। पूर्वजों को देखो - वे लोग क्या करते थे, कैसे रहते थे उनकी निकटता प्राप्त करते चले जाओ, शिखर तक अवश्य पहुँच जाओगे।

ज्यादा देखना ही नहीं है - मात्र तीन हाथ ही तो देखकर चलना है। हाथ में टॉर्च है, उसका उजाला आपको मिलता चला जायेगा। निरन्तर चलना चाहिये, शिखर

Date : ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa

तक पहुँच जायेंगे। कदमों को देखते चले जाओ। कुछलोग कहते हैं, महाराज होता नहीं है हमसे। चलना पड़ता है। चलोगे तो रास्ता स्वयमेव मिलता चला जायेगा। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। आपने समय दे दिया - धन्यवाद। अहिंसा परमो धर्म की जय!

5-8-16 "न छोटा - न बड़ा" पृष्ठ: 9-15

काल कभी घुमाता नहीं है किन्तु ये धारणा है कि काल काल घुमता नहीं घुमाता अवश्य है। काल के ऊपर संसार का यह चक्र घुमता रहता है। इसलिये उस पर ऐसा आरोप आ जाता है। "सूरज - चांद छिपे निकले रुत फिर - फिरकर आवे, ए्यारी आयु ऐसे बिते पता नहीं पावे" कैसे बिती! सावधान हो जाओ। उतने ही काल में करना है, जो करना है।

कुम्भकार के चाकको घुमने में कील जैसे सहायक है, वही उपमा काल दीदी है। हम जो घुमते हैं, उसके कारण काल की पहचान हो जाती है क्यों की वह अज्ञान है।

दादा जी - बेटा - पोता बैठे हैं। पोता कहता है आज दादा जी मेरा जन्म दिन है। दादा जी कहते है - मेरा भी आज जन्म दिन है। पोता कहता है - ये ठिक नहीं मेरे जन्म दिन के दिन ही आपका जन्मदिन क्यों है? उसे वास्तविकता का बोध नहीं है। वास्तव में जिस दिन पोता का जन्म हुआ, उसी समय दादा जी का जन्म हुआ, उसी समय पिताजी का जन्म हुआ, उसी समय मामा - मौसी का जन्म हुआ। उसी घड़ी ही नहीं, उसी स्थान पर, हुआ। भारत हो या विदेश हो। जिस दिन पोता हुआ उसी दिन दादा बने। जिस दिन पुत्र उत्पन्न हुआ उसी दिन पिता हुये।

नाती को छोटा, अपने को बड़ा कहने का प्रयास मत करना। वस्तु के स्वरूप का चिंतन करो। संसारी प्राणी रुपये अभाव में इधर-उधर की बातें करते हैं। काल की ओर न सही पर धन के बारे में तो सोचना चाहिये। दिल पर संधान तो होना चाहिये। अहंकार टूट जाता है। ये घुमावदार चक्र न जाने कब से चल रहा है। ये अनादि से चल रहा है।

अब, ये नया आसामी, ये पुराना आसामी की बोलना छोड़ दो। हमें क्या करना है, उसे आप लोग भूल जाते हैं। नाती की जयन्ती नहीं दिखती, अपनी जयन्ती दिखती है। पोता ने ही दादा को बनाया। दादा विशेषण लगाते जाओ - परदादा आदि। बाद में बुंदेलखण्ड में उसे ददा कहते हैं। यहाँ किसी को रहना नहीं। घुमना नहीं कौन घुमा रहा है, कील नहीं कुम्भकार घुमाता है। कील स्थायी रहती है। यदि कील ही हिल जाये तो कुम्भ का निर्माण नहीं होगा।

कितना अदृश्य एवं कितना तरल है। कोई भी समझ ही नहीं पा रहे हैं। हम समझाने की कोशिश भले ही कर रहे हो। घर जाकर कोई पूछे - आज क्या हुआ? अब आप ही बता दो महाराज! कैसे होगा कल्याण। आधार काल रूपी उस कील को रखो तभी चाक - लकड़ी का लोंदा अथवा कुम्भकार का मतलब अन्यथा सब धरे रह जायेंगे। वह लोंदा - लोंदा ही बना रहेगा। घट रूप में परिवर्तन नहीं होगा। घड़ा तभी जब कील वह भी स्थायी हो। कालाणु तो संख्यात है। आचार्य कहते हैं उसमें ऐसी क्षमता है वह उदासीन निमित्त है, जो भ्रमण करना चाहता है उसको भ्रमण कराने की क्षमता है।

Date

वस्तु स्वरूप यही है, हम इधर-उधर की बातें न करें। समय का सदुपयोग करें। इस उदाहरण से समझें की सबसे महत्वपूर्ण है तो वह है काल। जीवन का समय युं ही निकल देंगे कुछ भी नहीं होगा। मात्र बातें ही बातें रह जायेगी, काल कुछ भी शेष नहीं रहेगा। आपका स्मरण काल के साथ-साथ कार्य के ऊपर भी निर्भर है। इतिहास तभी बनेगा।

आयु कर्म का बंध पहले किया था, वही फल मिल रहा है। शरीर के साथ उसका योग है। जबतक काल है तब तक यहींपर है, उसके बाद आप कहते है- फलानाचंद चले गये। अब इसे हटाओ। पहले खुब भगता था, अब लोग आपकी यात्रा करायेंगे। अन्तिम संस्कार यदि परिवार नहीं करता तो सरकार करती है। सरकार ने ही इनका संरक्षण किया था अब अन्तिम संस्कार भी करेगी। मतदान भी तो सरकार को ही किया था अतः इसी की जिम्मेदारी है।

इतना ही कहना चाहता हूँ दादा जी - नाती - पोते - पुत्र - पिता आदि सभी का एक ही समय जन्म हुआ, एक ही स्थान पर जन्म हुआ। अब सब सतर्क हो जाओ। सतर्क होकर आगे की यात्रा प्रारम्भ करें। अहिंसा परमो धर्मकी जय। हूँ

6-8-16 "चले तो कैसे चले" प्रात: 9:15

आप चल रहे है तब आपका ध्यान नीचे की ओर भी जाना चाहिये कि हम पैरों से तो चलते है किन्तु कितने पैरों से चलते है। दोनो पैरों से नहीं। दो ही पैर है। एक पैर चलेगा तब-जब दूसरा पैर जमीन पर स्थिर रहेगा। दूसरा पैर यदि जल्दी उठ गया तो क्या होता है- आपको बताने की जरूरत

Date

नहीं। एक रखा तो दूसरा उठ जाता है। यदि नहीं उठता है तो क्या होगा? चल नहीं पायेंगे। हम एक पैर से चल रहे हैं या दो पैर से चल रहे हैं। ये तो हो गई इतनी बात, इससे आगे भी हम कहते हैं। क्या आप दो ही पैरों से चल रहे हैं। सुनते हैं आजकल mobile सुनते जा रहे हैं - आगे वाला भी - पीछे वाली भी "Horn Please" लिखा है पर कोई ध्यान नहीं अपितु कई बार दुर्घटना घट जाती है।

स्वयं है दिमाग से भी चलते हैं, जब चलने की क्रिया प्रारम्भ हो गयी बोलना-सुनना नहीं चाहिये। कितने पैर हो गये, तीन पैर हो गये। अब कोई व्यक्ति आराम के साथ टहलने निकला उसका पैर केला आदि कोई पदार्थ पर पड़ा वह फिसल गया। दूसरे ने कहा, पैरों से चलते हो, पर सूट में हाथ डालकर चलते हो। मतलब मात्र पैरों से ही नहीं चलते। जब चलते हैं तो हाथों को भी Left-Right - 2 होते रहना चाहिये। जैसे सेना में सैनिक चलते हैं।

मन नहीं चलता तो गड़बड़, हाथ नहीं चलते तो गड़बड़, एक पैर जमीन पर न रहे तो गड़बड़ दूसरा पैर नहीं चले तो गड़बड़ हो जाती है। इसी तरह मोक्षमार्ग में भी जब चलते हैं तो इससे भी कई गुनी सावधानी की आवश्यकता है। सावधानी के अभाव में कोई भी पुरुषार्थ, पुरुषार्थ नहीं शारीरिक श्रम मात्र रह जायेगा। मोक्ष के मार्ग में मात्र मोक्ष का ही वातावरण होना चाहिये, तभी इसे प्राप्त कर सकते हैं। यह कोई छोटी-मोटी दुकान नहीं, जौहरी की दुकान है। जौहरी कभी ग्राहक को बुलायेगा नहीं। एक-आध आ गया बस उसका काम हो गया। जौहरी की दुकान है और मक्का-बाजरा रख लेगे

Date : | | | | | Mo Tu We Th Fr Sa

तो अब उठक - बैठक करते रहो। दोनों दुकान अलग-अलग है उसका स्वरूप भिन्न है। जैसे मक्का - बाजरा का Sample दिखाते हो, कभी वैसे रत्नों का दिखाते हो, पहले सामने वाले को परख लेते हो। आपके पास तो अनमोल रत्न है। इस रत्न के सामने सब फिके है। अब वह व्यक्ति मोठ-बाजरा-मक्का नहीं रखेगा। हीरे का मूल्य क्या है, आज तक किसी को पता नहीं। न खरीदने वाले को - न बेचने वाले को फिर हम तो अनमोल रत्न की बात कर रहे है।

मात्र वितराग की ही बात करो - राग की नहीं। भिन्न - भिन्न बाजार होते है, चाय की दुकान, पान की दुकान उससे भी ज्यादा होती है। किराणा की दुकान, साग-सब्जी की दुकान भी होती है किन्तु जौहरी की दुकान एक-आध ही मिलेगी। जौहरी बाजार में अपनी दुकान हर-कोई नहीं लगा सकता। धर्म का मूल्य तो समझो। हर वस्तु का मूल्य है, पर यह तो अनमोल है।

आज तक इसे खरीद नही पाये। खरीदने का संकल्प पहले करना चाहिये। हमारे पुराण ग्रन्थों के आधार पर पता चलता है एक भील को भी धर्म मिल जाता है, उसने एक ही बार में अपना कल्याण कर लिया। बहुत दुर्लभ है। बहुत दुर से आये है। कहाँ से आये है और कहाँ जाना है पता नहीं। धर्म का रास्ता बहुत सीधा रास्ता है। जो व्यापार किया है, उसी के अनुसार मिलेगा। हम भटक रहे है। आपके इस भोपाल में भी ऐसे ही रास्ते है - Ring दार - घुमावदार। संसार का कोई भी रास्ता सीधा है ही नहीं। एक-आध व्यक्ति उसमें से निकल सकता है, जैसे चने के भाड़ में से एक-आध निकलता है।

Date : ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sat

आप लोग उसी में से निकलकर आये हैं। भगवान / प्रभु उसी को बचाते हैं जो बचना चाहता है। स्वयं का भेदविज्ञान ही स्वयं का धर्म होता है। वही बच पाता है, उसी के उपादान पर आधारित होता है। ज्यादा तो मैं कहना नहीं चाहता। दोनों हाथ आसमान में होते हैं, पर वे दोनों बेरी के लिये सहयोगी होते हैं। आपने बंदर को देखा होगा।

बंदर जब भी छलांग लगाता है, वह पांवों को बाद में पहले हाथों को टिकाता है, हाथों से डाल को पहले पकड़ता है। आप लोगों को बंदर से सीख ले लेना चाहिये। अहिंसा परमो धर्म की जय! धूँ

8-8-16 "~~मन~~ मन की वृत्ति है - अनुकूलता प्रतिकूलता" प्रातः 9.15

ये सुनने में आता है कि यदि फूल न बिछा सको तो कम से कम कांटे तो मत बिखराओ। ये लोकोक्ति भी है। जिनकी दृष्टि में - जिसके लिये कांटे हो उन्हें देखकर विषमता, दुःख - प्रतिकूलता का चिंतन करते हैं, ऐसा क्यों? आपकी दृष्टि में अभी वितरागता का अभाव है। आप लोगों की सोचना है। श्रावक भी है - श्रमण भी है। श्रावक श्रमणों के निकट रहते हैं - फिर भी सन्निकट नहीं आ पाते हैं, क्यों? अभी भेद है। कांटों से बचाव आवश्यक है और फूल से भी बचाव आवश्यक है। कांटों से तो बच जाते हैं, फूलों से नहीं बच पाते।

आचार्यों ने ३२ परिषहों की बात कही। जो परिषह होते हैं, उनसे कभी प्रतिश्रय न रहें। क्यों की कर्मों के संवर एवं निर्जरा में वे बहुत सहायक होते हैं। जिनसे श्रावक बचना चाहते हैं, मुनिराज उसी से बच निर्जरा कर लेते हैं। प्राथमिक दशा में मुनिराज बचते हैं कि निष्पन्न

Date :

दशा को धारण करने वाले उनसे कर्म निर्जरा करते हैं। पंचेन्द्रिय के विषय खाली हो जावें तब मैं साधना करूं, ऐसा संभव नहीं है। प्रतिकूलता एवं अनुकूलता ये हमारे मन की वृत्ति है। मोक्षमार्ग क्या है? चल नहीं पा रहे हैं, कम से कम उसका ध्यान तो होना चाहिये।

बच नहीं पाओगे, यदि मोक्षमार्ग इष्ट है तो अभी से उसकी रुचि के पुरुषार्थ को जगाना होगा। हम जब बैठते हैं तो लोग आगे आकर हमसे नियम लेते हैं- महाराज जी हमारे मीठे का त्याग आदि-आदि। मैं सोचता हूँ, इन्हें पराये (दूसरों) घर जाना है। स्वयं तो जब चाहे तब कुछ भी कर लें, दूसरे के घर में भी इच्छा पालन करते हैं जो रत्नत्रय में सहायक है, उसे स्वीकार करेंगे।

मुनि महाराज के लिये आगम में 22 परिषह बताये, क्यों? वे साधना में स्खलित न हों इसलिये ये बताये, इनसे नम्बर मिलते चले जाते हैं। लेखा बुद्धिपूर्वक हो तो कर्म निर्जरा होती है। मजबूरी में किया हो तो नहीं। संकल्प के अनुसार काम होता है। अब मिले या न मिले हमने तो त्याग कर दिया। अभी से पाठ्यक्रम को अपनी नजर में रखकर चलिये। जिस class में पढ़ रहे हो उसमें भी प्रमाद तो अगली कक्षा का क्या होगा। जब करना ही है तो रुचिपूर्वक करो, विवेक के साथ करो तब आपको पूरे के पूरे नम्बर मिलते हैं। मोक्षमार्ग में काम चलाऊ कुछ नहीं होता। व्रत नियमों से कर्म निर्जरा होती है। आप सोचें कि ये तो बहुत कठिन है, मेरा कहना है परीक्षा तो कठिन होती ही है। सुविधा भी है मोक्षमार्ग में। आपके यहां तो मात्र दुविधा ही

Date: ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa

दुविधा है। आप लोग स्वतंत्र होकर कर रहे हैं। संतोषधारण करना भी एक प्रकार की कमी है। नहीं मिला तो भी लाभ के समान समान समझना तभी कर्म निर्जरा होती है।

श्रावकों को इस ओर बढ़ने के लिये चार शिक्षाव्रत रखें। कैसे सामायिक आदि करते हैं, प्रोषधोपवास - अतिथीसंविभाग कैसे करें। महाराज कभी भी स्नान नहीं करते हैं, हम कम से कम अष्टमी-चतुर्दशी को भी रस अस्नान व्रत का पालन करें। भूख जब मर जाये तब खाते हैं वे उपवास किये हुये व्रती दूसरे दिन भी पारणा के समय कितनी बड़ी साधना है। फिर सामायिक भी करना है इसकारण भी थोड़ा ही ले पाते हैं। महाराज प्रतिदिन करते हैं, हम भी करके देखें।

पारणा - पारणा के दिन प्रोषधोपवास में एकासन करना टेढ़ा है तो कौन कहता है सीधा है। जो वीर होते हैं उनके सुपुत्र भी वीर ही हुआ करते हैं, आप तो महावीर के उपासक हो। आपकी चर्या को देखकर इन्द्र लोग ईर्ष्या करायें। उनको इतना भी नहीं मिलता चाहे क्षणिक सम्यग्दृष्टि ही क्यों न हो। आपके आग्रह को सुनकर दे दिया कल का क्या कोई भरोसा है। अहिंसा परमो धर्म की जय।

9-8-16 पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस प्रातः 9.15

"वितरागता ही परम आनन्द"

आज भगवान पार्श्वनाथ का यह निर्वाण कल्याणक का दिन है। स्मरण में लाया गया। प्रतिक - स्मृति के रूप में लाडू चढ़ाने का कार्यक्रम हो गया। अदृश्य होती है वह समवशरण की महिमा। पर कैसे प्राप्त किया। जिन्होंने एक सप्ताह तक अथक परिश्रम के साथ

पार्श्वनाथ भगवान के सिर पर भिन्न-भिन्न रूप से यहाँ तक की लोह को गलाकर भी अभिषेक किया। वे तनिक भी नहीं डिगे। आखिर केवलज्ञान की भूमिका जो बना रहा था। वह कमठ बहुत कर्मठ था।

सब लोगों ने देखा ये क्या करता है? पहाड़ के पहाड़ उठाकर वर्षा कर रहा है-पुष्पों की तरह। सामने से कोई जवाब नहीं। अब वह कर्मठ कमठ भी हारने जैसा हो गया। सामने वाला उफ करे तब्भी आनंद आता है। इसके बदले में जब केवलज्ञान हो गया- समवशरण की रचना हो गयी, उसी में एक आसन पर कमठ भी बैठा है। वह भी भगवान की वाणी सुनने को आतुर है।

आप सोच रहे होंगे, इसे तो जेल में बंद कर देना चाहिये। पर ऐसा नहीं जिन्हें वैरी के रूप में स्वीकारा उन्हीं के समोशरण में जाकर बैठ गया। अब वैरी के परिवार अथवा वैरी द्वारा विरोध करने वाला कोई नहीं। सब भूल गये। न कोई मित्र है, न कोई शत्रु है, न कोई संयोग है न कोई वियोग है, न दुःख है न सुख है न रागांश है, न द्वेष है। जब तक इस भेद-ज्ञान से वंचित रहते है तभी तक सारी माया है।

सूर्य के ऊपर से घटायें हट जाये प्रकाश स्वयमेव ही सामने आ जाता है। प्रतिक्रिया यदि कुछ भी नहीं हुयी तो समझो वितरागता है। हम अनेक बातें सोचने बहते है ये करेगा - वो करेगा। कमठ क्या करेगा? कुछ नहीं। प्रभु तो तो पहले से ही दिख रहा था। केवलज्ञान होने में ये निमित्त बना है। फिर उसका निषेध क्यों होगा। रात्रि

मैं चंद्रमा आसमान में होता है, सब अपने-अपने अनुसार इसके बारे में सोचता है - और सोचता है रसदी चाँदनी में कोई भी मेरा फोटो ले लेगा। दूसरा कुछ और ही कल्पना कर रहा है। एक माध्यस्थ भाव है। वितरागता इसी पर आधारित है। प्रतिक्रिया की ओर मत देखो अपनी क्रिया की ओर देखो।

अवसर मिला है तो एक-एक पल का करते जाओ। हम करते हुये चले जायें तो ये तेरापंथी की सारी प्रतिक्रिया अपने आप शांत होते हुये चली जायेगी। अग्नि की लपटें आसमान छुती है - ईंधन पाने पर। यदि ईंधन हटा दिया तो अग्नि की लपटें नीचे आ जायेगी और ईंधन के अभाव में अग्नि बुझ्त हो जायेगी।

आठ दिन तक लगातार उन्होंने इस आहुति को स्वीकारा उसका परिणाम असंख्यात देवी-देवता समवशरण में आकर बैठ गये। उनमें वे यक्ष-यक्षणी भी शामिल थे, जिन्होंने उपसर्ग को दूर करने में सहायता की थी। उपसर्ग करने वाले एवं उपसर्ग निवारण करने वाले दोनों के लिये एक ही भावना, तथास्तु! पार्श्व प्रभु स्वस्थ होकर देख रहे हैं, किसके मन में भीतर एवं बाहर क्या झलक रहा है। वर्तमान में सोचने का यह फल है, भूत-भविष्य के बारे में मत सोचो।

जिज्ञासा शांत है, तो तामसवृत्ति भी शांत हो जाती है। उस समय की हमें भी प्रतिक्षा है। यह भावना सबको भाना चाहिये। यह भावना आप परोक्ष में भी भा सकते हैं। साक्षात् भगवान जैसे बैठे हैं - ऐसी भावना करें। सत्ता कोई ली भी व्यों न हो काम तो हमें स्वयं को ही करना होता है। कोई भी आपकी चाबी चलाने वाला नहीं है। एक बार साक्षात् समोशरण में बैठने का सौभाग्य

Date

मिलें, दिव्यध्वनी सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो और इतना पुण्य अर्जन करें स्वयं का समोशरण भी लग सके। स्वप्न में भी ये ही प्रतिक्षा रहे। अनन्तकाल की प्रतिक्षा है। प्रतिक्षा की घड़ीयाँ हमेशा लम्बी-चौड़ी लगती है। अज्ञान दशा में बहुत समय बीत गया।

अतीत को सीमित करते जाओ। श्रावण मास में आज के दिन एक को इस संसार से अवकाश प्राप्त हुआ। अवकाश प्राप्त होने पर पुरस्कार दिया जाता है, इसीलिये अभी उनके चरणों में लाडू समर्पित किया। भावना ये ही रखो, आप भाग नहीं सकेंगे, हम ही आपको एक न एक दिन पकड़ लेंगे। हमें भी भावना रखना है, जबतक उस परम पदकी उपलब्धि न हो। अहिंसा परमो धर्म की जय। हुँ

10-8-16 "राग हो वितराग से" प्रात: 9.15

आग्नेका स्वभाव उष्ण है। अग्नि के सम्पर्क में जो कोई भी आता है, वह भी गरम हो जाता है। प्रत्येक द्रव्य का अपना स्वभाव होता है, दूसरे से वह प्राप्त नहीं होता, हाँ दूसरे पर वह प्रभाव डाल सकता है। स्वभाव प्रभावित भले ही हो जाये किन्तु स्वभाव वही रहेगा - आचार्यो ने ग्रन्थों में इसे पारिणामिक भाव कहा है।

आप लोगों के बारे में हमने सोचा है, आप भी दूसरो के बारे में सोच सकते हैं। भगवान इसकी स्थिति ठीक हो जाये। स्वभाव प्राप्ति की कोई दवाई नहीं होती। पानी ने अग्नि का सम्पर्क कर दिया - गरम हो गया उबलने लगा। पानी घुमने लगा। घुमता-घुमता वह ऊपर चढ़ने लग जाता है जैसे आप लोग प्लेन देखते हैं। प्लेन भागता - भागता ऊपर उठ जाता

Date : ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa ☐Su

है। पानी का स्वभाव शीतलता है। अग्नि का स्वभाव उष्णता है। अग्नि नीचे है, जल ऊपर है। उस अग्नि के माध्यम से जल को गरम कर दिया गया। जल में जो अग्नि आयी/उष्णता आयी वह जल की नहीं है। अग्नि की ही उष्णता है। किन्तु जल में उस अग्नि को बुझाने की सामर्थ्य भी है। अग्नि को बुझाने के लिये जल ही चाहिये ऐसा नहीं जल भी उस अग्नि को बुझा सकता है।

आत्मा में गर्मी आ गयी है, यह गर्मी उसकी अपनी नहीं, बाहर से आयी है। आप उस पर गरम हो जाये क्योंकी गर्मी भी गर्मी को मार देती है। स्वभाव को समझने का प्रयास किजिये। उसके कारण ऐसा हो गया है। सामने वाला ऐसा कर रहा है यह सोचना गलत है। न्यायालय में भी प्रतिपक्षी एवं पक्षी आपस में उलझने लगते हैं। न्यायाधीश कहते हैं अभी उबलो नहीं - निर्णय देकर दोनो को शान्त कर देता है।

जल स्वभाव से तो ठण्डा ही है, पर अग्नि के सम्पर्क से वह गरम हो जाता है। भगवान की भक्ति के लिये केवल वितरागता ही चाहिये ऐसा नहीं, रागी भी भगवान की भक्ति कर सकता है। राग के द्वारा भी भगवान को पहचाना जाता है। माला फेरना, पुजा करना, भक्ति करना रागांश है। जैसे थोड़ा सा पानी भी आग्नि को शांत कर देता है, वैसे ही थोड़ी भक्ति भी कर्म निर्जरा का कारण होती है। इसे समझने के लिये कुछ लोगो को समय लग सकता है। यह सच है स्वभाव की ओर आने से शान्ति एवं विभाव की ओर जाने से अशान्ति का ही अनुभव होता है। उबलता हुआ पानी भी आग्नि पर गिर जाये तो वह शान्त हो जाती है। आग्नि के निमित्त से जल का वह उबाल अशान्त होना

Date:

कथञ्चित् स्वभाविक हो सकता है पर उसमें उस अग्नि को बुझाने की सामर्थ्य तो विद्यमान है ही। भगवान के इसी प्रकार के भक्त बनना है। भगवान को भूलो नहीं। आप अनंतकाल से अग्नि के सम्पर्क में ही रह रहे है अतः स्वभाव को भूले हुये है। दुकानदार तभी तक ग्राहक को बताता रहता है जब वह जान जाता है कि ये खाली समय बर्बाद करेगा - लेनेवाला नहीं तुरंत उस ओर से ध्यान हटा देता है। क्यों? अन्यथा दिवालिया होने में समय नहीं लगेगा। इतना अन्तर आपको रखना जरूरी है कौन से लाभ है और कौन से हानि है। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। अहिंसा परमोधर्म की जय। नँ

11-8-16 "बीज पहले या वृक्ष" प्रातः 9.15

वैसे सब लोग इसका उत्तर जानते होंगे। पौधा था वह वृक्ष का रूप धारण कर लिया। प्रश्न है बीज पहले था या वृक्ष। बीज कहते हो तो, बीज आया कहाँ से। इस प्रश्न का उत्तर इतना आसान नहीं। बड़े-बड़े विश्वविद्यालय एवं शोध संस्थानों में भी इसका उत्तर नहीं मिला। बीज पहले तो आया कहाँ से, वृक्ष तो वह कहाँ से आया। न रुकने वाला प्रश्न है यह। इसका कोई आदि नहीं है, उसका कोई अन्त भी नहीं है, ऐसा नहीं है। यही आज हमारे चिन्तन का विषय है।

आज तक नहीं मिटा तो आगे भी नहीं मिटे ऐसा है ही नहीं। अनादि से धारा प्रवाह रूप में यह चलता आ रहा है। वर्तमान भौतिक युग में इस विषय का चिंतन सिरदर्द ही जायेगा। ऐसे सिरदर्द एक ही विषय में नहीं कई विषयों में है। एक सिर है और दर्द के हेतु बहुत है। न चिन्तन करो न चिन्ता करो। हां ऐसा चिन्तन करो जो सम्यक् हो/समीचीन हो। तभी चिन्ता मिटेगी।

Date

"न आदि इति अनादि" "Beginning Less" । खोपड़ियाँ अलग-अलग सोच रही हैं। इसलिये दर्द हो जाता है। विचारशील व्यक्ति की सीमा बड़ी होती है, जब कि विचारहीन की कथा सीमा। शोध होना चाहिये। पाठ्यक्रम होता है, उसके पूर्ण होने पर शोध प्रबंध होता है। आपके सामने शोध प्रबंधन रखना ही नहीं क्यों कि पाठ्यक्रम एक भी पुरा नहीं किया। आज पाठ्यक्रम में इस विषय को क्यों नहीं रखा जा रहा है, जो अनिवार्य है।

ऐसा अनिवार्य विषय है जो तेल-लूण-लकड़ी की बात करता है। इसके बिना जीवन यापन नहीं हो सकेगा। दर्शनकार भी यही सोचता है कब पेट भरेगा। पेट तो बहुत सज्जन प्राणी है, वह तो भरते ही दूसरे की ओर देखता है उसका भी भर जाये। किन्तु समस्या पेट की नहीं पेटी की है। इस पेटी का न कोई आदि है न अंत है। इसलिये हमने आपलोगों के सामने एक प्रश्न रखा था वृक्ष पहले या बीज पहले।

प्रत्येक व्यक्ति पेट के पीछे भाग रहा है किन्तु वास्तव में वह पेट नहीं पेटी के पिछे भाग रहा है। पशुओं में पेटी नहीं है। पेटी यदि है तो केवल मनुष्यों में ही है। एक हजार की कुबत नहीं चक्रवर्ती का सपना देखते हैं। त्याग भी जब करेंगे जब कुछ होगा। प्लानिंग करते-करते तो बूढ़ा हो जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों की छाया से भी बचना चाहिये। पेट एवं पेटी के चक्कर में दुनिया पीस रही है। जिसकी Size (आकार) का पता नहीं उसकी क्या पूर्ति कर पाओगे। कमर कसकर भी नहीं, बल्कि कसते-कसते कमर ही टूट जायेगी। मन की चादर असीम है। सारा संसार उसी के वश में है। जो कमजोर प्राणी होता है वह मन के इशारे पर नाचता है। उस पेटी का कोई उत्तर नहीं। भरित है सिर पर

Date : | | | | | | Mo Tu We Th Fr Sa

भी यह भूत सवार है। विकास करना चाहता है। किसे देखकर-जो विकसित हो गये हैं। विकसित मानता है रूस-जापान-इंग्लैण्ड ये-वो इन्हें। 70 वर्ष हो गये, बूढ़ा हो गया अभी भी विकासशील ही है। कमर झुक गयी-नाड़ हील रहे हैं। विकासशील है। आप अपने बच्चों को विकासशील राष्ट्र में जन्म दिये हैं, ये भी भूत है।

पूर्व राष्ट्रपति महोदय ने कहा था - भारत को अपने आप में विकसित मान लेना चाहिये। भारत पहले से ही विकसित था। भारत की संस्कृति कहती है। संस्कृति मतलब दद्दा/बब्बा कहते हैं - उतने ही पैर फैलाओ जितनी चादर है। इस नीति से जो बाहर हो गया वह हमेशा-हमेशा पिटेगा।

वृक्ष पहले या बीज पहले कोई पता नहीं - कोई बात भी नहीं किन्तु अब इस बीज का अन्त कर सकते है। ये विधी भारतीय संस्कृति में ही बतायी गयी है। राग कब से है - पता नहीं किन्तु उस राग को समाप्त कर सकते है। इस हेतु चावल का उदाहरण दिया। चावल की खेती नहीं धान की खेती होती है। धान को चावल बना दो। इसीलिये चावल को ही मन्दिर में चढ़ाते है। राग कब से है पता नहीं किन्तु उसे समाप्त कर दो संसार ही समाप्त हो जायेगा। आप सब पढ़े-लिखे हैं, अब चिंतन की धारा प्रारम्भ कर गहराई में पहुँचने का प्रयास करो। अतिल की गहराई में उतरो। हाथ पांव चलाओ तैरकर वहाँ तक पहुँच सकते हो। राग-द्वेष को जब चाहे तब समाप्त कर सकते है। इनके समाप्त होते ही संसार समाप्त हो जायेगा। इसी भावना से अहिंसा परमो धर्म की जय।

नैं

13-8-16 "ब्रेन से नहीं ब्रेन से काम करें" प्रातः 9.15

प्रायः करके हम लोग इस सिद्धान्त को नहीं समझ पाते। इसे देखने से यह ज्ञात हो जायेगा कोई भी चैन कुप्पी के माध्यम से बहुत भारी पाषाण को ऊपर ले जा सकते हैं। वो भी बहुत आसानी के साथ। जिसे 100 व्यक्ति मिलकर नहीं उठा सकते उसे एक बालक हंसते-हंसते उठा लेता है। अब उठा तो लिया यदि उस भारी पाषाण को उतारना हो तो कैसे उतारेंगे?

जैसे उठाया वैसे उतारेंगे अर्थात जिस गति से वह ऊपर की ओर गया उसी गति से नीचे की ओर आता है। वह बालक उस पाषाण को रोकता नहीं, यदि रोकता है तो झटके से वह भार तोड़ सकता है। निरन्तरता जरूरी है। उस पाषाण को धीरे-धीरे ही उतार सकते हैं। वह रुकते-रुकते धीरे-धीरे ही आ रहा है। अभी 1-½ इंच और आना है तो उस चैन कुप्पी के माध्यम से ही आयेगा, ऐसा नहीं इतना सा तो है ही-नहीं आ पायेगा।

आत्मा को ऊपर उठाना है, एकदम से सप्तम में पहुँच गये। चौदह गुणस्थान होते हैं। पहले से सीधे सात में पहुँच गये, इसके उपरान्त वहाँ टिक नहीं सकते। ऊपर की ओर चढ़ने की तैयारी हो तो जाओ। नीचे तो आना ही पड़ेगा। पहाड़ पर चढ़ते समय पैर/घुटने पर जोर नहीं पड़ता अपितु उतरते समय घुटने पर बहुत भार पड़ता है अड़ें-अड़ें जवान भी शिखर जी से लौटते समय लाठिया टिकाते हुये आते हैं। सप्तम गुणस्थान के उपरांत नीचे आना ही होता है। प्रवृत्ति रूप अशुभ कैसे बोलना, कितना बोलना, क्यों बोलना, सामने वाले के अनुसार

वो भी आगम में जो लिखा है उतना बोलना ये इस अवस्था में होता है। एक छठा गुणस्थान भी है। उसे बावला कहते है। अर्द्धपागल भी कह सकते है। यह सीढ़ी रखी है।

जब राजस्थान से विहार करते हुये इधर आ रहे थे तो चाँदखेड़ी के बाद एक पारोता नाम का स्थान पड़ा। बीच में एक चौड़ी नदी पड़ी - पार्वती नदी। उसे रेल पटरी के सहारे पार करना था। सोचा मीरेलू आ गयी तो - दोनों तरफ देखकर पार करने को हुये। रेल आ गयी। हम साइड में थोड़ी देर के लिये रुक गये, रेल निकल जाने के उपरान्त फिर से चलकर पार कर ली। व्यवस्थित ढंग से एक अन्तर्मुहूर्त तक रुक सकते है, ज्यादा देर नहीं रुक सकते है। ऐसा ही है यह छठा गुणस्थान।

ऐसे प्रत्येक मुनिराज सहस्रों बार 6 से 7 एवं 7 से 6 झूलते है। चाहे तीर्थंकर भी क्यों न हो उस झूले में बैठना ही होगा। बैठेंगे भी नहीं तो ऊपर चढ़ेंगे नहीं। युग के आदि में ऋषभनाथ भगवान् 1000 वर्ष तक झूलते रहे। मनोरंजन नहीं है ये। आप लोग आते है, भीड़ आती है, छठे में जाना तो निश्चित है। आधा घण्टा बोल रहे है - स्वाध्याय संयम के साथ बोल रहे है। श्वांस लिया है अब दो बात ले नहीं सकते पहले छोड़ना जरूरी है। प्रत्येक क्रम में यह आवश्यक है। प्रमत - अप्रमत गुणस्थान कहते है। पार्वती की यही व्यवस्था है। नीचे और ज्यादा समय रुक गया तो असंयत की ओर भी चला जायेगा। हो सकता है - दिगम्बरत्व भी चला जाये एवं मिथ्यात्व में आ जाये। ये दशा

परिणामों की रहती है। भावों में यदि गिरे तो दुकान ही समाप्त हो गयी। दुकान खोलकर बैठे हो - ऐसे कब तक लुटाते रहोगे। आप दोनों हाथ से आशीर्वाद दे दो। ऐसे कैसे दे दें? फिर भी यदि चाहते हो तो देखेंगे। माल लेना चाहते हो तो सोचेंगे।

हमारे माल का महत्व कम नहीं, हमारी क्वालीटी है। जाना है तो जाओ। दुसरी दुकान पर देखकर आ जाओ। सब समझ में आ जायेगा। ज्यादा समय तो नहीं लेते। नीचे आते समय गलती नहीं करना, विश्राम की बात करोगे तो गड़बड़ है। मोक्षमार्ग में विश्राम नहीं है। नीचे आये हो तो ताकत लगाकर ऊपर उठना होगा। आपके यहाँ आये आपको नहीं नीचे देखकर आये और चले गये। मुस्कान भी नहीं देंगे। लोग कहते हैं- महाराज आजकल तो मुस्कान के लिये भी बहुत मंदी चल रही है। अहिंसा परमो धर्म की जय! ॐ

14-8-16 "मूल में ही है भूल" प्रात:9.15

संकल्प है एक महाप्रासाद बनाने का। सबका सहयोग आपेक्षित है। सब लोगों ने संकल्प को याद किया। आप कर रहे हैं ना? हाँ, आपका सहयोग है। योग पहले होता है सहयोग बाद में करेंगे। आप कार्य पहले प्रारम्भ कर देंगे तभी सामने वाला सहयोग करेगा। दक्षिण में सहयोग को सहकार कहते हैं। कार पहले फिर सहकार है। जो कुछ भी करता - धरता नहीं है, उसका कभी भी सहयोग अथवा सहकार नहीं होता।

महत्वपूर्ण यही है कि आगे कौन आयेगा। जिसके मन में अटूट श्रद्धान हो वही आगे कदम बढ़ाता है। विश्वविद्यालय बाद में पहले विद्यालय फिर महाविद्यालय

उच्च विद्यालय। इसके बिना आगे का कोई महत्व नहीं होता। आपको वह वृक्ष नजर आ रहा है किन्तु उस पौधे को मत भूलो - उससे भी पहले उस बीज को याद करो। वर्षा के समय धरती में नन्हा सा बीज बोया गया था। कौनसा बीज बोना यह भी ध्यान रखना चाहिये। 70 वर्ष में बीज का परीक्षण नहीं कर पाये। बोना तो दोहरा रहे हैं, किन्तु आप जितना भी परिश्रम करेंगे सब व्यर्थ होगा। कल्पना मात्र कल्पना ही रह जायेगी।

70 वर्ष में मात्र सोचा जा रहा है। सोचते सुबह है वह शाम तक लुप्त हो जाता है। युगो-युगो तक वह जीवित रही है। हमने सुना है कि विश्वविद्यालय ने यह सोचा है कि भारतीय शिक्षा पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन आवश्यक है। मूल है तो चूल है। मूल कहाँ है चूल ही दिखता है। शाखा - परशाखा दिखती है मूल नहीं। मूल के अभाव में कुछ नहीं रहेगा। जिसका मूल मजबूत है उस वृक्ष पर कोई आक्रमण नहीं कर सकता है। बंदर अथवा पक्षी उस चूल पर चढ़ जाते हैं अन्यथा जो चढ़ नहीं पाते तो कहते हैं - ये अंगुर तो खट्टे हैं वह सियार ऐसा ही सोचता है। आप क्या बनना चाहते हो। शियार बन जाओ।

समीक्षा करने के लिये अपनी बुद्धि का उपयोग करें। मूल को भूलने से मात्र चूल को देखने से धूल ही खाना पड़ता है। ऐसे वृक्ष के नीचे बैठने पर छाया भी प्राप्त नहीं कर सकते। अच्छी बात के लिये योग जुटाना होगा। योग शब्द महत्वपूर्ण है, सब जगह काम करता है। जो उपसर्ग लग जाये उसी अनुरूप काम करने लगता है - वियोग, प्रयोग, संयोग, आयोग आदि

Date: | | |

Date : ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa ☐Su

15-8-16 "स्व छेद हो स्वच्छंद नहीं" प्रातः 9.15

"को आस्ते भवान्" ऐसा एक पृच्छा सूत्र मिलता है - आप कहाँ रहते है। कहाँ रहते थे। "आत्मने" हम आत्मा में रहते है। या आत्मा में रह रहे है। केवल दृष्टिकोण बदलो। हम कहाँ रहरहे है? किसी ने कहा हम वहाँरहरहे है। तो रो क्यों रहे हो। पहले भी तो रहे हो। "लोकाकाशऽवगाहः"।

आकाश कहता है, आप जहाँ कहीं भी रहो, हमारी तरफ से आजाद है। हमारे द्वारा बाधित नहीं है नही कभी होंगे। 4 गतियाँ और 8 लाख योनियाँ है, रात में जाओ या दिन में अथवा मध्याह्न में, कभी भी कोई भी, रोते - रोते भी जा सकते है, मूर्छा में हो या होश में, किसी भी वाहन से या बिना वाहन के सभी को सुविधा नहीं होगी। आप सुरक्षित है और सुरक्षित रहेंगे। जितने भी द्रव्य है, वे स्वतंत्र है स्वतंत्रता उनका अधिकार है।

फिर भी रो रहे हो - क्यों? क्यों कि पर्याय की ओर देख रहे है। परतंत्रता में भी रोओ और स्वतंत्रता मिलने पर भी रोओ। रोते रहो। प्रभु से प्रार्थना करते है आपका रोना बंद हो। किन्तु क्या करें। रोना आपका स्वभाव हो गया है। स्वभाव की कोई चिकित्सा नहीं होती। मध्याह्न में भी 15 मिनिट भोगा है, अभी जो आये है उनको तो पुरा देखूं, अब ये मध्याह्न में आने वाले थोड़े होंगे? अभी परोसना शेष है - थाली में रोटी है - खाते जाओ। भोगवार नहीं खाना। स्वतंत्रता की बात है आज। स्व का अर्थ भर मालूम हो जाये।

गीत अथवा छंद होते हैं, उसके माध्यम से भावों को परोसा जाता है। किन्तु स्वछंद होकर मत गाओ। 70 वर्ष हो गये- छंद तो था स्व का पर उसे बांधने का पुरुषार्थ/प्रयास किया। छंद गा तो रहे हैं पर रोते हुये गा रहे हैं। स्व का छंद नही स्वछंद जो हो गये।

उसका रस, उसकी गंध, उसका रूप-लावण्य उसकी महक सबको विकृत बना दिया है। आप लोग दूध को दोष मत दो, गौया का भी कोई दोष नहीं है उसमें तो अमृत भरा है। मंथन - नवनीत की जगह दूसरा ही कार्य कर दिया। योग्यता के अभाव में स्वतंत्रता का कोई महत्व नहीं। कल शिक्षा निति में परिवर्तन की बात आयी थी मतलब अभी तक गलत थी। परिवर्तन करना है ऊपर-ऊपर से नहीं। आमूल - चूल परिवर्तन करना होगा। यदि पहले यह कार्य हो गया होता तो 70 वर्ष में इतने परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं थी।

हम गीत के भावों को गाना चाहते हैं पर सैद्धान्तिक पक्ष को गौण नहीं कर सकते हैं। "स्वनन् शिल्पीकर स्पर्शान्मुरजः किमपेक्षते" आ. समन्तभद्रस्वामी ने रत्नकरण्डश्रावकाचार में कहा है। स्वतंत्रता तो आयी पर विकृति इतनी आगयी भारत-भारत चिल्लाने से कुछ नहीं होगा। भारत-वासीयों के लिये ही भारत कहा जा रहा है। भारत तो काल परिवर्तन के साथ भोगभूमी बनने वाली है। भोगभूमी तो बाद में बनेगी अभी तो कुभोगभूमी हो गयी। आपलोगों को सोचना चाहिये। जिन्होंने स्वतंत्रता दिलायी - बलिदान दिया उनका क्या होगा। स्वतंत्रता ही स्वछंदता नहीं। जिनशास्त्रों में आपका

साहित्य है, पुराण या प्राचीन ग्रन्थ है उसे ही समाप्त कर दोगे तो क्या होगा। आधा ही समाप्त कर दोगे तो इन कवियों का क्या होगा। फिर महाकवियों का तो कहना ही क्या है

इतनी भौतिकी आ गयी है तो अध्यात्म भी क्या काम करेगा। चारो तरफ घासलेट की ही गंध आ रही है- बेचारा इत्र भी क्या काम करेगा। वह इत्र तितर-बितर हो जायेगा। इसलिये अब अपना काम करो। "को आत्मने भुवान्"। क्या आप लोग आपे में हैं। गोद का लड़का भी गोद में नहीं बैठना चाहता। क्या खा रहे है, क्या पी रहे है। अपितु चांटा और मिलेगा। पहले माँ खिलाती थी, मां पिलाती थी, माँ सुलाती थी सब भुला दिया है। माँ का दोष है या लाडले बेटे का दोष है।

स्व छंद तो ठीक है पर स्वछंद होना ठीक नहीं। उसमें गीत छुपा है। स्वछंद वृत्ति वाला व्यक्ति तबला अथवा मृदंग पर अपनी अंगुलिया लगा दे तो आवाज तो आ जायेगी पर सुर नहीं लय नहीं। सब कुछ है किन्तु शिल्पी नहीं, उन्हे पुनः याद करना होगा। आज प्रत्येक व्यक्ति में स्वछंदता आ गयी। सत्याग्रह अथवा सतगुरु ही इस हठाग्रह-दुराग्रह को दूर कर सकते है। स्वछंदता की आंधी मे गांधी की टोपी भी उड़ गयी। अब टोपी की जगह हेट आ गयी। टोपी की सिलाई भूल गये है। Hat, bat और फिर Cat। कहाँ से संगीत लाओगे। क्लासिक्स तो सब ही चला गया है। आज कोई भी जीतगाता

है, वह छंद ही नहीं है, विदेशी गा रहा है। संगीत ही नहीं है, क्या आनंद आयेगा? 70 साल हो गये। मात्र दृष्टि तो है दृष्टिकोण नहीं। अखबार - पत्रिका आदि तो बहुत निकल रहे हैं, किन्तु उनमें एक भी लेख पढने का मन नहीं करता है। हमसे कहते हैं महाराज! लेख दे दो। मैं कहता हूँ भैया मेरे लेख की गंध को और तुम घास लेट कर दोगे। इतर का मूल्य कुछ नहीं रहेगा।

उनसे कह देता हूँ कुछ नहीं करो। जो है उसे सहो। आपे में रहो। ऐसे में पिताजी भी क्या करें। स्वछंद होकर विवाह कर लेते हैं और विवाह के दूसरे सेकेण्ड से विवाद शुरू हो जाते हैं। प्रतिवाद के लिये न्यायालय चले जाते हैं। आज आप कौनसे देश में रह रहे हैं, पहचान ही समाप्त हो गयी है। देश गया - वेश गया सब आवेश में आ गये हैं। सब की सब चर्या चौपट हो गयी।

देश और विदेश का भेद ही खत्म हो गया। हमसे निवेदन कर रहे थे - महाराज स्वतंत्रता दिवस पर कुछ तो बोलो। क्या बोलूं। 70 साल के पूर्व का इतिहास देखना तो होगा। फिर भी कुछ तो बोलो। तो "लोकाकाशावगाह" यही सूत्र है। हम तो हैं। 'तो' क्यों कह रहे हो। मैं के साथ हम ये के साथ वे यहाँ के साथ वहाँ तो लगा ही रहता है। इते के साथ उते लगा ही है। आप लोग 15 मिनिट और मांग रहे थे। आई हुयी जनता को तो पहले भरोस देने दो। स्वछंदता को भलीभांति समझ ले। शिक्षानीति

Date

में परिवर्तन की बात आयी थी। मैं पूछ रहा हूँ ऊपर से, बीच में से या आमूल-चूल परिवर्तन कैसा परिवर्तन करना है। साफ कर दो बर्तन को-माँज दो। अब तुरंत रसोई मत बनाओ। अभी बर्तन को उलटा कर रख दो अथवा उसे आग पर तपाओ तभी रसोई बनाओ।

ये बात तो अवश्य है कि स्वतंत्रता तो आ चुकी है। चाहते हो तो अब समझौता नहीं- उसे जड़ मूल से उखाड़ कर फेंक दो। आपने कविता लिखी है उसमें कुछ दोष है उन दोषों को हटाने से पूरी कविता ही टूट-फूट जायेगी। मैं कहता हूँ टूट-फूट जाये पर पहले उन दोषों को हटाओ तभी उसका प्रकाशन हो पायेगा। कविता आपकी है पर सम्पादन हमारा है।

परिवर्तन लाना चाहते हो तो ऐसे सत्याग्रह शुरू करो सब समाप्त हो जायेगा। किस मुख से स्वतंत्रता का बखान करूं। बोलते जा रहे हो मेरे भारत-मेरे भारत। पर उस भारत की क्या पहचान है। गीत तभी कहलायेगा अन्यथा वह स्व छंद है गीत नहीं। लोग कह सकते हैं-आप तो बहुत मीन मेख निकालते हैं-लेकिन... बहुत हो गया। 70 वर्ष यदि किसी को पढ़ाये तो केवलज्ञान हो जाये। सारी की सारी अपेक्षा समाप्त कर दो। शिक्षा नीति में यदि प्रयोग की बात आयेगी तभी वह उभरेगी। प्रयोग के अभाव में पायी गयी बड़ी से बड़ी शिक्षा अधूरी है। शिल्पी के माध्यम से ही जाना जा सकता है कि लेखनी

का उपयोग कितना और कब होना। स्याही से ऊपर अथवा स्याही से अंदर कितना कब बजाना है यह बिल्ली ही जानता है। गीत तो बहुत अच्छा लिखा है। उस गीत का तब पता चलता है जब गाया जाता है। गायन के समय ही वादन होता है और नर्तन होता है। वाह-वाह होता है। आज तो आह हो रहा है।

ज्यादा आलोचना कि नहीं बहुत हो गया। समालोचना कर सकते हो। जो महफिल में आने वाले हैं उन्हें भी सुनाना है। आप भी आ सकते हो - जगह हो तो क्यों कि आजकल रिजर्वेशन का जमाना है। रईसी आ गयी। एक खड़ा होकर जा रहा है दूसरा लेट-लेट। पहले एक समानता थी। पैसों के माध्यम से अहंकार कर रहे हैं। झाड़ू लगाना जरूरी है क्यों की चारो ओर गन्दगी ही गन्दगी फैल गयी है - किन्तु इतनी झाड़ू कहाँ से लायेंगे। कल्पनी भी फेल हो जायेगी। कुछ नहीं एक घण्टा अच्छी तेज वर्षा हो जाये तो कुछ भी जरूरत नहीं, सारी गन्दगी अपने आप बह जायेगी। अपने विचारों में ऐसी बाढ़ लेकर आ जाओ - पुनः वही भारत आ जायेगा।

70 वर्ष का कूड़ा करकट दूर होने में समय नहीं लगेगा। सच्ची स्वतंत्रता दिलाने वाले उन पंच परमेश्वरों को प्रणाम करता हूँ। हम भी आलस्य एवं अहंकार को छोड़कर स्वतंत्र हो जायें। आलोचना के अतिरिक्त कुछ नहीं दिया। आइने में आपको देखना है, उसकी धूल भी आपको ही साफ करना है। अहिंसा परमो धर्म की जय। हुँ

Date :

"स्वतंत्रता दिवस पर 2.10 घण्टे मिनिट प्रवचन के प्रवचनांश" दोपहर 2.30

15 अगस्त 2016

- कपड़ा नहीं उसके प्रति ममत्व - आकर्षण - आग्रह आपको बांध रहा है।
- इधर - उधर देखना मन का अनियन्त्रण है। मनचलापन है तो तनचलापन तो है ही।
- मन के गले में रस्सी नहीं बांधी जा सकती - तन के गले में रस्सी बांधी जा सकती है।
- शरीर कुछ कहता ही नहीं - रात में देना ही नहीं। मनको काबु में करने से शरीर स्वस्थ रहता है।
- Fast life चाहते हो तो Fast करना सीखो। Fast = उपवास, Fast = तेज गति Break - fast।
- "आधा भोजन लेय के, दुना पानी पीव, तीगुनी [illegible], चौगुनी हंसी - वर्ष सवा सौ जीव"
- राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री दोनो के सलाहकार ने कहा है - रात्रिभोजन त्याग से डाइबीटीज Control होती है।
- दिवार का सहारा न ले - अन्यथा दिवाना बन जाओगे। जो अपने स्वयं के नियन्त्रण में नहीं उसे आशीर्वाद नहीं देते - दे भी देंगे कोई काम नहीं करेगा। निद्रा देवी भी तभी आती है। झुककर बैठने से निद्रा की उदीरणा होती है।
- गरम पानी की थैली में यदि पुरा पानी भर दिया चटका लगेगा और थोड़ा खाली रखा अब अच्छे से सिकाई - आराम मिलेगा। अतः पुरा पेट भोजन नहीं करना चाहिये।
- "निद्रा आवश्यक है अनिवार्य नहीं" पुस्तक पढ़ी थी। बच्चों के लिये आवश्यक बाद में धीरे - धीरे इस पर विजय प्राप्त कर सकते है। 9 बजे बाद सो सकते है।

Date

- आपका बेटा वर्तमान में या तो स्वयं बाहर जायेगा या फिर आपको बाहर निकालेगा।
- वैराग्य के साथ-साथ आरोग्य भी आवश्यक है। वैराग्य न भी हो कोई बात नहीं- आरोग्य होना जरूरी है। पहला सुख निरोगी काया।
- शल्य चिकित्सा एवं प्लास्टिक सर्जरी आज की देन नहीं, भारतीय आयुर्वेद में बहुत पहले से ही है।
- बोध होते हुये भी विरोध क्यों नहीं करते।
- 70 वर्ष का हो गया हूँ - मैं पहले भी स्वतंत्र था- अभी भी स्वतंत्र हूँ और आगे भी स्वतंत्र रहूंगा।
- हमारे पास जब समय होगा तब आना पड़ेगा। आकुलता से काम नहीं होगा।
- Re-cycle अनुपसेव्य है। (बोतल का पानी) पुनः लायक भी नहीं है। नगरों एवं महानगरों के कारण यह समस्या बढ़ती जा रही है।
- भारत भोगभूमी बनेगा - देशवासियों दो बच्चों अन्यथा कुभोगभूमी हो जायेगा।
- स्वाभिमान से जीओ। यही देशभक्ति है।
- मां-पिता- भाई-बहन-परिवार के अन्य सदस्यों से क्या आप अंग्रेजी में बात कर सकते है? नहीं। रोने-हंसने की अपनी भावना होती है। भाषा नहीं। भावाभिव्यक्ति करने के लिये अपनी भाषा हो।
- अब हस्ताक्षर नहीं हस्तक्षेप चाहते हैं।
- कमेटी वालो सुनलो। समय मांगा था। एक इंच भी कम-बढ़ती नहीं करना। पुराका पुरा नेताओं/युवाओं के पास पहुंचाना है

Date

- शैक्षान में कमी वाला क्या राष्ट्र की रक्षा करेगा।
- महाराष्ट्र में एक का नाम - रामचंद्र पाण्डुरंग करमकर
अंग्रेजी → Ram Moon Pandu Colour do Dig do.
- इन्दिरा जी के राज में विदेश नीति पर शोध पत्र हिन्दी में ही लिख
- "मैं और भी कह सकता हूँ पर मेरी एक सीमा है।" आत्मी.
- साधना अहिंसा को वरदान बना देती है।
भावना पाषाण को भगवान बना देती है।
विवेक के स्तर से नीचे गिरने पर,
वासना आदमी को हैवान बना देती है।
- इतिहास को भूलाओ नहीं।
- "णाणं च दुरुपवत्तं पावपदं" - ज्ञान का दुरुपयोग पाप पद है।
- आज से चाहे कड़वी फांकी समझो, काढ़ा समझो अथवा क्वाथ समझो। मुख में जाने के बाद पेट/स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो जायेगा। दूसरी कक्षा में पढ़ा था।
- धर्मपाल की 10 पुस्तकें पढ़ो - इतिहास के लिये। "भारत में विज्ञान एवं तंत्र ज्ञान" उन्हीं की है। आज नहीं 18वीं शताब्दी में विज्ञान शब्द कहा गया। उसी को तरोड़-मरोड़ कर लिख दिया। मोहर लगा दी - Made in ---
- पुबन्ध काव्य भारत की ही देन है। पुबन्धन यहीं से शुरु हुआ।
- अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा ने कहा - भारतीय अर्थशास्त्री इस बोर्ड (Board) में होगा तभी मैं इसे पूरी मान्यता दूंगा।
- इस बात से सीखलो। दयनीयता छोड़ें। भारत का पुबन्धन बहुत तगड़ा है। सुमेरु है। महाकाव्य की रचना इस पुबन्धन काव्य से हुयी।
- प्रभु की विनति छोड़कर इस जड़ धन की गिनती कौन करेगा।

Date ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa

- दिन ढलने से पहले अपने घर आ जाओ / बच्चा / दूसरा पर विश्वास करो।
- आ. श्री ने दक्षिण में कहावत कही। समझ में आ गया भाषा का चमत्कार। इस कहावत का अर्थ है - नमस्कार कर रहा है और पांवो की बिछिया निकाल ली। ये थी अंग्रेजो की चाल। आभूषणों को पहनने के पीछे भी विज्ञान छिपा है।
- मध्य भारत (म. प्र.) में बैठे हो, माध्यस्थ भाव से सोचो।
- संकल्प लेते हैं तो कार्य क्यों नहीं होगा - अवश्य होता है।
- भारत के लिये आपने स्वाभिमान - स्वाभिमान और गौरव की आवश्यकता है। आपके भीतर स्वाभिमान का रक्त होना आवश्यक है। राणा प्रताप में स्वाभिमान था। उनकी मूंछो को देखकर अच्छे - अच्छे भूत भाग जाते थे और प्रताप को देख ले तो देव भी चले जाते थे।
- आप कमर कसिये - धोती से / गांधी जी की तरह / बेल्ट से नहीं।
- संकल्प ले - टाइट वस्त्र नहीं पहनेंगे - जीन्स आदि। इस पहनावे के कारण लोग बिमार हो रहे हैं।
- मांगना अभिशाप है। हाँ जिसके लिये आप आवश्यकता समझ रहे है, उसकी पूर्ति करना हमारा कर्तव्य है। वात्सल्य भावना का विकास होना चाहिये।
- पहले वैद्य बिना पैसे इलाज कर देते थे। अब डॉक्टर आ गये मात्र अर्थ पर ही दृष्टि रखते है।
- शिक्षा - चिकित्सा और न्यायपालिका इन तीनों में अर्थ का समाप्त कर दिया जाय। निष्पक्ष - निश्छल भाव से कार्य किया जाये तो पुनः मेरे सपनो का भारत लौट सकता है।
- ओबामा कह रहा है - भारतीय अर्थशास्त्री पुरे थे, है और रहेंगे। आप विश्वास तो करो।

Date :

16-8-16 "रंग - तरंग नहीं, अंतरंग में देखें" प्रातः 9.15

एक बर्तन है, जिसमें जल भरा हुआ है। वह बर्तन चाँदी का है। उसमें मुँह झांक कर देखा किन्तु कुछ नहीं दिखा। आँखें कमजोर हैं। हमारी दृष्टि बर्तन के भीतर नहीं जा रही है। रंग के कारण दृष्टि भीतर नहीं जा रही।

दूसरे बर्तन में रंग से रहित कोरा। सादा जल मंगाया गया। अब उसमें झांककर देखा। दृष्टि उसमें भी उस पार नहीं पहुँच पायी ? क्यों नहीं पहुँची - क्योंकि जल तरंगायित था। स्पंदन के कारण कुछ भी नहीं दिखा। जब जल में तरंग होती है तो अन्तरंग में क्या है कैसे पता चले। इन दोनों उदाहरण से आप समझें। रंग जो है वह मान कषाय है तथा तरंग है वह लोभ कषाय है। दोनों के कारण आत्मा अशुद्ध है। दोनों का अभाव हो गया आत्मा के शुद्ध बनने में देर नहीं लगेगी।

इधर - उधर की बात करोगे कुछ नहीं होने वाला है। इसके लिये आचार्यों ने सोचा। आप लोगों को परीक्षा में बैठने की ही योग्यता नहीं है। मोक्ष जाने की बात करते हो। मंजील है तो मिल ही जायेगी - ऐसा नहीं है। मंजील कभी घुमावदार नहीं, रास्ते घुमावदार होते हैं। मोह अथवा कषाय को नहीं हराओगे तब तक कुछ भी नहीं कर सकते हो। बीच में व्यवधान नहीं होना चाहिये। काम तो सब लोग करते हैं पर योजना बद्ध तरीके से नहीं करते हैं। क्रमबद्ध की चर्चा करते हो पर क्रमबद्ध कार्यक्रम अपने जीवन में क्यों नहीं करते हो। व्यवस्था तो आपने सब कर दी। माइक भी लगा दिया, दरी भी बिछा दी, झंडी-उंडी। ये सब करने से कल्याण नहीं होगा। एक के बाद एक होते हुये आज 16 अगस्त मात्र

Date : | | | | | | ☐ Mo ☐ Tu ☐ We ☐ Th ☐ Fr ☐ Sa

आ गयी, चातुर्मास समाप्त हो जायेगा, इससे कोई फल नहीं मिलने वाला। ऐसी स्थिति में जो योजना थी - उद्देश्य था उसी अनुरूप कार्य भी हो। अभी तक बातों में ही लग गये। योजना क्या है - आपका बहुत समय नष्ट हो गया। चुनाव हो जाते हैं। ५ वर्ष का ठेका तो ले लिया किन्तु उसके बाद क्या होगा।

प्रयोग जो नहीं करता ऐसा ही होता है। मोह को हटाओ - लोभ को किनारे कर दो। गहराई में उतरकर जो व्यक्ति हाथ डालता है वह सफल हो जाता है। अंतरंग दृष्टि होना जरूरी है। यह एक रूपरेखा रखी - इसके अनुसार कार्यक्रम शुरू करो। जो मोह को हटाने में लग जाता है वही क्रमबद्ध कार्यक्रम करने में लग जाता है।

ये और भी आश्चर्यकारी एवं विस्मयकारी घटना है, कि हम अपने दोषों के बारे में नहीं सदैव दूसरे के ही दोषों को सोचते रहते हैं। हमारी दृष्टि ऐसी ही बना ली है। दूसरे का दोष देखना स्वभाव हो गया है। आंखे लाल हो जाती हैं - कुछ गिरने के कारण नहीं, ज्यादा परिश्रम के कारण भी नहीं। सुख की घड़ियाँ भी आ जाती हैं और दुःख की घड़ियाँ भी आ जाती हैं। प्रयोग के क्षेत्र में मौन होने के कारण ऐसा ही होगा। सरल से सरल कार्य करने के लिये भी परिश्रम तो करना ही होगा। स्व एवं पर दोनो के प्रति ध्यान दिजिये। जो व्यक्ति मात्र सुनकर (प्रवचन) निकल जाता है वह कुछ नहीं कर सकता है। मुझे लाकर बैठा देना, आकर बैठ जाना, माइक चालु करके मंगलाचरण, फिर उठ के चला जाना। वही घोड़ा - वही मैदान। कोई अंत नहीं। आदि है तो अंत भी अवश्य है। आप यदि उस अंतिम छोर को देखना चाहते हैं - वहाँ तक अपनी बुद्धि को ले जाने का पुरुषार्थ किजिये। तभी आगे बढ़ पायेंगे। अहिंसा परमो धर्म की जय!

नुँ

Date : ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa ☐Su

17-8-16 "विश्वकर्मा नहीं सत्कर्मा बनें" प्रातःवाड

जिसको आवाज नहीं आ रही वह उस पार है, आवाज देने वाला इस पार है। वह कहता है तुम भी इस पार आना चाहते हो तो पार करो नदी को। समुद्र के तट दिखने में नहीं आते, नदी के तट दिखने में आ जाते हैं। जो आवाज देता है वह फिर से कहता है- तुम्हें इस पार आना है, मैं इस पार आ गया हूँ, अब इस पार को छोड़ूंगा नहीं।

भगवान सक्षम होते हुये भी आकर के स्वयं ले जाते नहीं हैं। भक्त भी जानता है कि भगवान उस पार है, उन्हें दिखने से ही यह सक्षम हो जाता है। जो समझने योग्य है, सब समझ में आ जाता है। रात-दिन यह कार्यक्रम चलता है। अप्सरायात देवी-देवता उनके चरणों में नत मस्तक होते हैं, उन्हें दिखकर ही समझ जाते हैं कि यहाँ विशेष बात अवश्य है।

जिनके पीछे हम पड़े हैं, वह सब छोड़कर वे खड़े हैं। हाथ जोड़ने के लिये क्यों कहा? हमारे भगवान एक हाथ पर दूसरा हाथ रखकर बैठे हैं। क्यों? हम सभी हाथों से ही सब कार्य करते हैं। हमें विश्वकर्मा नहीं बनना सत्कर्मा बनना है। संसार के सारे दुःखों से छुट्टी चाहते हो तो या तो हाथ पर हाथ रखलो या हाथ जोड़ लो। अर्थात् या तो भगवान बन जाओ या फिर भक्त बन जाओ। हाथ भर जुड़े रहे; भगवान तो बना ही देंगे आपको भी। एक हाथ दूसरे हाथ से जुड़ जाता है तो कार्य होता है। एक हाथ को दूसरे हाथ पर रखने से ऊर्जा का प्रवाह भीतर की ओर होने लगता है। हाँ एक सेमी. का अन्तर

रखना है। सामायिक निर्दोष होगी। बिना निद्रा लिये। यदि सामायिक निर्दोष हेतु ये ही प्रारम्भ कर दो। एक हाथ पर एक हाथ किन्तु थोड़ा सा अन्तर हो, एक-दूसरे से छुना नहीं है, ज्यादा Gap भी नहीं देना है। हम उर्जाहीन होते जा रहे हैं। हमारे पास वह उर्जा है, जिससे उर्जयन्त को पार कर सकते हैं। गिरनार का पहाड़ चढ़ना कठीन है फिर भी हम चढ़ सकते हैं।

हमारी दृष्टि दूसरे की ओर न जाये। हम बहीर्मुखी हो गये हैं, सर्वतोमुखी बनना चाहते हो तो अन्तर्मुखी बने। हम किसी को भी यदि तर्जनी दिखाते हैं, तो सामने वाले को मात्र एक अंगुली शेष चार हमारी ओर होती है। अंगुष्ठ को नहीं माने तो भी तीन अंगुली अपनी ओर होती हो दूसरे की ओर न देखें। हमारी प्रभु दृष्टिनासा पर रखें है, हम दृष्टि आशा पे धरें हैं। तालमेल कैसे होगा।

कोई भी गीत गाता है वह सुर-ताल एवं लय तीनों एकमेक होता है। इसे भूला दोगे कुछ नहीं रहेगा। ये बच्चे गुरुकुल (ऐलारा-महाराष्ट्र) से आये हैं। कौनसे गुरुकुल से आये हैं तो गुरुकुल तो गुरुकुल होता है, कुलगुरु लगभग 150 से आये हैं। महाराष्ट्र से आये हैं। सौराष्ट्र का एक राष्ट्र महाराष्ट्र है। महाराष्ट्र में ह्रस्व को दीर्घ एवं दीर्घ को ह्रस्व बोलते है। वितरागी - वीतरागी। निर्वपामिती - निर्वपामीति। ह्रस्व बोलना चाहिये। अभी श्रवन में ये सुना। आप लोग भी ये ही गलती करते हो।

सामायिक में बैठते समय कैसे बैठना हमने अभी आपको बताया। जो निद्रा देवी तुरंत ही आ जाती है वह नहीं आयेगी जाग्रती देवी आ जायेगी। निद्रा देवी एवं जाग्रती देवी दोनों एक

साथ नहीं रहती। सामायिक में और कुछ नहीं जागृति रखना है। दुष्प्रणिधान न हो। वे प्रभु तो इस ओर नहीं आ सकते किन्तु हमें उस ओर जाना है। अपना पुरुषार्थ जगाना है। प्रयास किजिये उस पार जाने का सब की व्यग्रता समाप्त हो जायेगी सब सुखी हो जायेंगे। सबकी व्यग्रता समाप्त हो इन्हीं भावनाओं के साथ अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

18-8-16 "हो जो वत्स सम प्रीति" प्रातः 9.15

उन्मार्ग से बचाने का एक मात्र साधन मार्ग ही है। मार्ग में चलने पर ही सब सुरक्षित मंजील तक पहुँचेंगे। सरकार एक ऐसी गाड़ी भी चलाती है। 1000 लोग बैठे हैं - क्यों की लाईसेंस है। उसमें बैठने की प्रत्येक की शक्ति तो है नहीं। वह कहता है भैया हमारे पास तो पहिया वाली है। सभी लोगों की दिशा एक है। स्वतंत्र कौन है - समझें।

रेलगाड़ी रुक गयी कोई बात नहीं वहीं पर बैठे रहो। ऊपर जो वायुयान है उसका क्या होगा। बदली आ गयी - घटायें छा गयी। मार्ग नहीं दिख रहा। सम्पर्क समाप्त। कहाँ जाना है कुछ पता नहीं। समय के बाद पेट्रोल भी समाप्त हो गया (क्या होगा। इसलिये मार्ग में दुराग्रह की बात मत करो।

आगम में बहुत ही सरल मार्ग बताया गया है। कर्मों का उदय तो किसी को नहीं छोड़ सकता और यदि उसी भव से मुक्त होना हो तो क्यारे बड़े-बड़े कर्म भी उदय में आते हैं। हमारे अपने ही आश्रित हैं ये। वात्सल्य के लिये आज का पर्व प्रसिद्ध है। जैसे सम्यग्दर्शन के 8 अंग होते हैं वैसे ही सम्यग्ज्ञान के भी अंग होते हैं। अंग नहीं तो विकलांग हो जाता

है। हाथ टूट जाये तो लूला हो जाता है, पैर टूट जाये तो लंगड़ा हो जाता है। अब बैठ-उठ नहीं सकता है। सबने की बात समाप्त हो गयी - शक्ति सीमित है। आचार्यो ने कहा - "वत्सल्य भावो वात्सल्य" । प्रिय विषयों को गौण करना होता है। वात्सल्य के साथ भीतरी भाव सीधा काम करता है। क्या डाला, कुछ नहीं डाला। वत्स= बछड़ा । गाय के बछड़े से बना है वात्सल्य ।

गाय के द्वारा ही वह बछड़ा शक्ति प्राप्त करता है। रक्त का संचार अच्छा होता है। रक्तदान या थे-वो दान नहीं । इसी के कारण सम्यग्दृष्टि जीवित रहता है। मुद्रण बहुत हो रहा है । सम्यग्दर्शन की बातें की जा रही है, पूरी साहित्य बांटा जा रहा है। ये कोई नहीं बोलता की इन आठो अंगो का पालन करें। हमारे वश की बात नहीं । जब वश ही नहीं तो परवश की क्या बात करते हो ।

वह गाय प्राकृतिक रूप से बंध जाती है उस बछड़े से, अब गाय के गले में रस्सी की जरूरत नहीं, बिना रस्सी के भी बंधन संभव है। भावो का बंधन । भावों के माध्यम से भी उसका लालन-पालन हो जाता है। सम्यग्दर्शन सुरक्षित रखना चाहते हो तो इसका प्रयोग करना प्रारम्भ कर दो। इसके प्रशिक्षण की कोई आवश्यकता नहीं है। घर को चलाना है तो पहले घर से बाहर निकलो। घर चला नहीं पा रहे हो चलाने की बात करते हो। आचार्य कहते है स्वयं से प्रारम्भ करें। नियम से बंधो तभी ये होगा। ऊपर-ऊपर से करोगे तो कुछ नहीं होगा। छोटा सा बछड़ा भी जानता है, गाय के भाव कैसे है (वह छोड़ता नहीं

बहुत पुराना आसामी है। पुराने संस्कार लेकर आया है। वह रो नहीं रहा है, अपनी भाषा में समझाता है, गाया भी तुरंत समझ जाती है। यह काम आपका नहीं पर उपदेश दिया जा रहा है। किताबों में चित्र भी नहीं मिलेगा।

प्रभावना करना चाहते हो तो भावना पहले रखो। भावना क्या होना चाहिये, परस्पर में वात्सल्य हो। सम्यग्दर्शन के बिना चारित्र, चारित्र नहीं एवं ज्ञान, ज्ञान नहीं है। सम्यग्दर्शन का क्या स्वरूप है यह भी तो देखो। एक भी अंग के बिना काम नहीं चल सकता है। अनिवार्य प्रश्न है यह आठों अंग, उस अनिवार्य को छोड़ नहीं सकते हैं। वैकल्पिक नहीं है, लेकिन कुछ भी नहीं चलेगा। 15 अगस्त को बहुत कुछ बताया था (अपने-अपने गीत मत गाओ (अपना राग - अपनी ढपली मत बजाओ।

अपना राग होते हुये भी अपनापन हुआ होना चाहिये। दार्शनिक हो (गीत गाओ स्वच्छंद होकर नहीं स्व के छंद हो। धर्म को मात्र किताबों, मन्दिरों या मूर्तियों तक ही सीमित नकरें अपितु गुणों की ओर दृष्टि रखें। गुणों की ओर जिसकी दृष्टि जाती है, वही पा हो सकता है, बहिरंग की ओर दृष्टि न ले जाओ - दृष्टि अंतरंग की ओर हो। आंखों से पानी मात्र दुःख में ही नहीं सुख-प्रेम में भी पानी आ जाता है। दुःख के लिये यह आंख हो और सुख के लिये यह आंख हो ऐसा है ही नहीं। डॉक्टर भी आज तक खोज नहीं कर पाये की आंखों में पानी कहाँ से आता है। यहाँ तक की विज्ञान ने कृत्रिम मनुष्य (रोबोट) पुतला बना दिया। जो बोलेंगे वह करेगा (सब काम करेगा मगर

कभी दुःख हो तो वह रोयेगा नहीं आंख में पानी नहीं आयेगा। ऐसा कभी नहीं हुआ बेटा विदेश में है - रोबोर्ट से देश में काम चल रहा था। अब रोओ मेरे बदले में, ऐसा वह नहीं कर सकता। दुःखानुभूति नहीं है।

किताब मात्र में सम्यग्दर्शन नहीं रखा। सम्यग्दर्शन तो नीजी है। सब कार्य कर सकते हैं - यह नहीं कर सकता। यहां तो पत्थर भी पिघल गया किन्तु इन्हें पसीना भी नहीं आया। संवेदनहीनता के अभाव में ऐसा ही होता है। महयाल में देख लेंगे। ऐसा कोई प्रसंग स्वाध्याय में आ जाये तो। अभी भीड़ देखी तो हमने सोचा - माल बिक जाये तो अच्छा है। मौन रूप से आज का दिवस आज भी प्रेरणा दे रहा है।

इस वात्सल्य पर्व को अपने जीवन में उतारकर प्रत्येक जीव सुखानुभव कर रहा है। सुखानुभव पर के लिये नहीं है, आप सुखी रहेंगे - दूसरा तो अवश्य सुखी होगा। आपसे प्रेरणा ले सकता है। सभी सुखी हो इन्हीं भावनाओं के साथ। अहिंसा परमोधर्म की जय।

दोपहर रक्षाबंधन पर विशेष प्रवचन मुख्य बिन्दु"

दोपहर 3.45

"पर की पीड़ा, अपनी अनुकंपा.. परीक्षा लेती"। सम्यग्दृष्टि का गुण है अनुकंपा। कोई भी प्राणी तभी बाधा पहुंचायेगा जब कोई पूर्वगत वैर हो अथवा आप उसे मारने का भाव कर रहे हो। आप नीचे दृष्टि करके चलते चले जायें कोई भी प्राणी कष्ट नहीं पहुंचायेगा। अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों की पीड़ा देख दूसरे मुनियों को पीड़ा होना स्वभाविक है। लकपा - लकड़ी जैसा हो जाता है। संवेदन नहीं होने से। सम्यग्दर्शन का प्रयोग करें।

Date : | | | | | | ☐ Mo ☐ Tu ☐ We ☐ Th ☐ Fr ☐ Sa

- इसका दुःख दूर कैसे हो ये प्रार्थना तो आप कर ही सकते हैं।
- दिलासा / ढाढ़स / सांत्वना / सहानुभूति दिलाना चाहिये। आज धमकी देते हैं जिससे डर जाय।
- अपना-अपना रोना स्वार्थ है, दूसरे के लिये रोना परमार्थ है।
- मनुष्य तो संख्यात ही सम्यग्दृष्टि है जबकी तिर्यञ्च असंख्यात सम्यग्दृष्टि है।
- स्वदया भी हो- परदया होना तो आसान है। आज न स्व पर न पर पर दया कर पा रहे हैं।
- क्षुल्लक पंचम गुणस्थान वर्ती होते हैं अतः विद्या रख सकते हैं। गुरुजी से पूछकर रखेगा, हाँ किन्तु घर-गृहस्थी के काम नहीं करेगा।
- विष्णुकुमार मुनिराज - दो मत - प्रयोग के बिना भी एवं प्रयोग के साथ भी
- उत्तर पुराण के अनुसार- मुनि अवस्था रखकर भी ऋद्धि का प्रयोग कर सकते हैं।
- जब उपसर्ग दूर हो गया तब मैंने कुछ नहीं किया। गुरुजी जाने मैं तो बिच का Agent मात्र था। प्रायश्चित मांगा। गुरु ने कहा विकल्प किया अतः प्रायश्चित शुद्धिकरण हो गया।
- वही सम्यग्दर्शन सही जो एक-दूसरे के लिये पूरक/सहयोगी बने, तभी प्रभावना होती है।
- कर्म सदैव एक से नहीं रहते - भावना से तो आप सामने वाले को निडर बना ही सकते हो।
- प्रशंसा की भूख सदैव मंदी रहे।
- बाजार में मंदी लाओ दिमाग में नहीं।
- तनाव का कारण चुनाव होता है।
- धार्मिक अनुष्ठान के लिये तापमान बने रहने दो।

Date

19-8-16 "नजर हो वस्तु पर" प्रातः 9:15

जब हम सुनते हैं तो कानों को अपने उपयोग में लाते हैं। उस समय हमारा उपयोग शेष चार इन्द्रियों की ओर नहीं जाता। जैसे तो उस समय एकेन्द्रिय बन गये हो। मतलब बोध तो एक इन्द्रिय द्वारा ही होता है। पांच इन्द्रियाँ होते हुये भी एक इन्द्रिय ही काम आती है। दूसरी इन्द्रिय बाद में काम आती है। जिस समय हमारा उपयोग जिस भी इन्द्रिय पर हो वही काम में आती है इसी में बड़ी सावधानी की जरूरत है।

हाथ में दीपक ले रखा है, सूर्य का अभाव है। आप दिपक को नहीं दीपक के प्रकाश में अन्य वस्तुओं को देखते हैं। प्रयोजन जो हो उसकी ओर दृष्टि ले जाते हैं। मार्ग को नहीं मार्ग में क्या है - ये देखते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि हमारा उपयोग जब स्थिर होता है तब दिखता है। जिसको देखना हो वही दिखता है। मन का स्थिर होना जरूरी है। जैसे दुकानदार ग्राहकों को देखता है। अपने सामान को नहीं देखता। सामान को सजा-सजाकर रखा पर इन्तजार आपका है। दुकान आपकी है पर ग्राहक आपका नहीं है।

आप अरबपती हो सकते हैं किन्तु आपको भी सैंडल पति की प्रतिक्षा करनी होगी, क्यों की आपकी रोजी-रोटी उसी सैंडलपति के ऊपर आधारित है। इस बात को मानने के लिये तैयार हो। "हव"। अड़ही-अड़ही के लिये उठक-बैठक करते हैं। इसमें भी तकलीफ नहीं अपितु आनंद का अनुभव होता है। मतलब अपने आपको अरबपति मानना बेकार है। ग्राहक की प्रतिक्षा तो करना ही है। दुकान तो खोली है पर सोना नहीं तभी वह सुरक्षित रहती है। ग्राहक

Date

भी अरबपति के लिये नहीं माल मिलता है इसलिये आता है। आज नहीं कल अब अरबपति भी ग्राहकों के घर-घर (डोर टू डोर) जाने लगा है। घर बैठे माल मिल रहा है। अब देखें। वस्तुओं का मूल्य हुआ करता है।

वो आपको वस्तु दे रहा है एक हाथ से दूसरे हाथ से कुछ ले रहा है। उसकी दृष्टि मुद्रा पर है और आपकी नजर वस्तु पर है। उसकी नजर में पदार्थ की कितना है। अरबपति होकर के भी क्या खा रहे है, क्या पी रहे है, क्या सुन रहे है बस रात दिन माल नोटों के बंडल ही दिख रहे है। इससे ध्यान नहीं हटायेंगे तो भूख मर जायेगी। क्या होगा। अब खाओ दवाई।

अरबपति डॉक्टर के पास जायेगा डॉक्टर की दृष्टि नोट की ओर है और इसकी दृष्टि दवाई की ओर। ऐसी सम्मोहन शक्ति है इस मुद्रा में। दुनिया इसके पीछे हैरान है, पर ज्ञानी जीव दुनिया को देखकर कभी हैरान नहीं होता। यह हैरानी समाप्त कैसे हो? इसीबारे में सोचता रहता है।

मेरी वस्तु मेरे पास होते हुये भी मैं सारी दुनियां के चक्कर लगा रहा हूँ। जनम के लिये भले ही एयर कन्डीशन लगालो पर मरघट तो सबका एक है। अंत सबका एक है - भले ही अरबपति हो या करोड़पति हो। आइये सबका स्वागत है। कहां से प्रारम्भ - कहाँ अंत है ये लीला है - यही संसार का चक्कर है। जहां बैठे है, वहीं पर आपको आना ही होगा। ऐसे ज्ञान के बारे में आप सबने सोच रखा है, उस ओर देखेंगे तो ये सब गायब हो

Date

जायेगा। सारभूत है तो बस यही है। कान से हमने शुरु किया था – शब्द को सुनने के लिये कान है पर कानों से अर्थ नहीं निकाल सकते। अर्थ तो याद आयेगा तभी निकलेगा। अर्थ का मतलब मूल्य भी होता है। कथा सार निकला जीवन का। अभी तक समझ में नहीं आया। स्पष्ट है मंथन तो कर रहे हैं पर पानी का।

पानी के मंथन से तीन काल में नवनीत प्राप्त होने वाला नहीं है। दही का मंथन करेंगे तभी नवनीत प्राप्त होगा। वह भी दिखता नहीं – नवनीत का गोला उसी में डूबा रहता है थोड़ा सा दिखता है। इसीप्रकार जीवन का मंथन करें वही सार है। सुनने आये हो, देख लेना कहीं पानी तो नहीं है। एक बार दुकान पर बैठते तो सैंकड़ा नहीं हजार मिस जाते। इकट्ठा करने में लगे हैं, किसके लिये कर रहे हैं, ये किसी को मालूम नहीं है। प्रयोजन तो मालूम होना ही चाहिये।

वह ग्राहक वस्तु पर नजर रखता है तथा दुकानदार की नजर नोट पर होती है। सार के अभाव में सब कोरा है। वस्तु का स्वाद तो ग्राहक ही लेता है, दुकानदार नहीं लेता। 10 मीनिट का प्रवचन था, इसे अपने ढंग से सुरक्षित रखियो। सब भद्र होकर सुनते हैं। बाद में सब काम में व्यस्त हो जाते हैं। एक महीना चातुर्मास का व्यतीत हो गया, यह मेरा कहना था। कानों के साथ मन को भी लगाओ और दृष्टि सार की ओर रखें। ये ही मात्र कहना है। अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

Date :

21-8-16 "सीरवें निर्विकल्प होना" प्रवचनसार

आप लोगों ने मुक्ता के बारे में सुना होगा। इसे मोती कहते हैं। वह मोती देखा भी होगा। कैसा होता है। पहले तो वह मुक्ता अखण्ड होता है चाहे मेघ मुक्ता हो या सीप से निकली मुक्ता हो। आपके मन में विकल्प आया इसे कहाँ रखा जाये। आपने सोचा तिजोरी में रख देते हैं। किन्तु तिजोरी में तो कोई देखनहीं पायेगा।

इसका अच्छा हार बनवा लिया जाये तो गले में पहनेंगे (अब गले में पहनेंगे तभी लोग हमारी ओर आकृष्ट होंगे। गले में पहनने के लिये इसमें छेद होना जरूरी तभी तो हार बन पायेगा। सुनार को दिया, सुनार ने कहा हार चाहते हो तो आरपार छेद करना पड़ेगा। अखण्ड को खण्डित एवं अछेद्यता छेद सहित करना होगा। ये सब आप लोगों के विकल्प का ही परिणाम है।

इसी प्रकार आचार्य कहते हैं जबकभी भी विकल्प करते हैं तो हर लोग में इसी प्रकार की बात होती है। विकल्प रहित होने पर ही हम मोक्ष मार्ग में रह सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति तो मात्र अन्तर्मुहूर्त में होगी पर मोक्षमार्ग में लम्बे समय रहना है। उस मार्ग में हमें विकल्प रहित बनने का प्रयास करना है। जीवन पर्यन्त उन विकल्पों को ही छेद के द्वारा दूर करते हैं। मुनि महाराज के अनेक प्रकार के चारित्र होते है- जिनमें सामायिक एवं छेदोपस्थापना चारित्र भी होता है। जो विकल्प हैं उसमें छेद करके छेदोपस्थापना चारित्र का पालन करते रहते हैं।

Date:

श्रावक लोग तो विकल्प करते ही रहते हैं। घर में मैं ही करने वाला हूँ। दुकान भी संभालना है। इन में विकल्प होना स्वभाविक है। घर में खटक-पटक होती रहती है।

खटक-पटख का मतलब चरखा नहीं है। आप लोगों को अनेक विकल्प प्रतिदिन होते रहते हैं। हम लोग अपने छः आवश्यक करते हैं, उसमें भी बीच में आप लोग आकर खटक-पटख करते रहते हो। निर्विकल्प रहना चाहते हैं, पर अवसर प्राप्त नहीं होता। मात्र अन्तर्मुहूर्त का काम है-केवलज्ञान प्राप्त करने के लिये। ऐसे भी मुनिराज जो चातुर्मास में हिलते नहीं, पर योग धारण कर लेते हैं।

आप लोग खटक-पटख से बाहर नहीं निकलोगे तो दुनिया से बाहर कैसे निकलोगे। ज्ञान को निर्विकल्प करने का प्रयास करो तभी सुरक्षित रह सकते हैं। घर में रहते हुये भी धार्मिक कार्यों हेतु समय निकालना अच्छी बात है पर घर को घर पर ही रख कर आया करो। होशियार रहने वाला सदैव विकल्प से बचेगा। नाती-पोतों का भी विकल्प छोड़ो। हमें कहने की आवश्यकता नहीं पड़ना चाहिये। किन्तु आप लोग कहने पर भी नहीं मानते। सुन रहे हो। हवा मोती जो अरबों था, छेद कर दिया खण्डीत हो गया। विकल्प का यही परिणाम होता है। इसीलिये निर्विकल्प रहना अच्छा। अहिंसा परमो धर्म की जय।

Date:

22-8-16 "महत्वपूर्ण उपयोग - योग नहीं" प्रातः 9.15

योग्यता को प्राप्त करना कर्मों के ऊपर आधारित है और योग्यता का उपयोग करना कथंचित् अपने पुरुषार्थ पर आधारित है। जैसे करंट प्रवाहित है, बटन दबाया आप नहीं हुआ। करंट है या नहीं - ऐसे लोग आलस्य के कारण बैठ जाते हैं। पुरुषार्थ नहीं करते कि करंट है या नहीं देखलें। धारणा ही गलत है। समझ लेता है करंट गोल है।

लाइट जल रही है या नहीं। लाइट कभी जलती नहीं लट्टू जलता है। लाइट तो लाइट है लाइट का अर्थ प्रकाश भी है और लाइट का अर्थ हल्का भी है। अपने ज्ञान को हल्का मत बनाओ पावर-फूल बनाओ। लट्टू भी खराब हो सकता है। उसे जानने का दूसरा भी साधन हो सकता है। उसमें भी कमी हो सकती है। सम्पर्क सूत्र गड़बड़ है। सम्पर्क सूत्र की ओर दृष्टि पात करते हैं, उसमें आलस्य का कोई सवाल ही नहीं उठता

जल्दी - जल्दी में बहम हवा कर देखने से अपनी अवधारणा पक्की न बनायें ताकि सही जानकारी हो सके। योग और उपयोग में ये ही अन्तर है। योग का अर्थ संयोग सिद्धान्त की भाषा में लाब्धि कहते हैं। उपयोग कंडक्ट है। लब्धि एवं उपयोग में अन्तर है। योग्यता होने के उपरान्त भी द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के अनुसार अथवा आलस्य के कारण उसका उपयोग नहीं कर पाते हैं। इतना दुर्लभ यह मनुष्य जीवन मिला है इसे खाने - पीने में ही पूर्ण कर

देता है। वह कर्म अपना कार्य दिखायेगा। जैसे जन में लगा दो- उस करंट का उपयोग नहीं होगा, सम्पर्क के अभाव में ऐसा ही होता है। अनेक लोगों के पास योग्यता व उपयोग कितना व अन्य लोग में इसका उपयोग कितना करते हैं। स्वयं का मूल्यांकन करें।

असावधानी अथवा जानकारी के अभाव में ऐसा हो रहा है। उपयोग में नहीं लाते तो पूरी जिन्दगी ही बेकार चली जाती है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जिन्हें जानकारी न होने के कारण भी उसका सही उपयोग नहीं कर पाते हैं। योग एवं उपयोग अथवा लब्धि एवं उपयोग में अन्तर है। आपके पास देखने की क्षमता है देख नहीं पा रहे हैं। यह आलस्य माना जायेगा।

आपके पास ऊर्जा है, पर यंत्र नहीं चला पा रहे हैं, वह दीव नहीं। आचार्य कहते हैं कर्म के योग से मिला लाभ क्या किया। लाभ के बारे में भारत बहुत पीछे है। कर्मठता के अभाव में जीवनोपयोगी होने के बाद भी बर्बाद कर देते हैं। अन्य देशों के बारे में ये ही सुनने में आता है।

एकेन्द्रिय के पास साधन सामग्री कम फिर भी पुरुषार्थ करता है। इन्द्रियादि में बढ़ गयी है वह साधन सामग्री, किन्तु पुरुषार्थ में आलस्य कर सकता है। यह अध्ययन का विषय बनना चाहिये। सदैव सकारात्मकता रखनी चाहिये। निवेदन परन्तु सोचते हैं तो मात्र कमियाँ ही नजर आती है। अन्य देशों के अवकाश व्यक्ति के बारे में जब देखते या सुनते हैं तो अच्छा लगता है। उसके पास अनुभव कितना है। सरकार ने अवश्य अवकाश दे दिया पर जीवन पर्यन्त बैठे- बैठे क्या करेंगे अतः अपने अनुभव का उपयोग करते हैं, जो

ऐसा नहीं करते वह मात्र जीवन काट रहे है। जैसे - करौंत से काटते है। उपयोग करें तो सबसे अधिक लाभ मिल सकता है। अनुभव के बारे में पुरुषार्थ आत्मा को केन्द्रित रख कर करें। वह अवकाश प्राप्त व्यक्ति कर सकता है, लेकिन उसका भी ध्यान वह नहीं देखता।

57 वर्ष में अवकाश प्राप्त किया 80-90 वर्ष तक जीना है, जितनी सर्विस उससे ज्यादा जीना है, पर ऐसे ही चला जाता है। ये योग का सही उपयोग नहीं करने के कारण होता है। ऐसे कई उदाहरण हो सकते हैं। प्रयोग करने से उपयोग करने की शैली भी ज्ञात हो जाती है। प्रयोग के दौरान अलग अनुभूति होती है। इसे ही अनुसंधानप्रक्रिया बोलते है। विदेश वाले आज इसे खरीद रहे हैं और भारत बेच रहा है। क्या खरीदने की योजना बनती है यहाँ बेचने के लिये योजना बनती है। ऐसी बहुत सारी उपलब्धियाँ है भारत के पास। विज्ञान भी विस्मयकारी हो जाता है।

इतना ही हो ऐसा भी नहीं है। जल का प्रवाह होता है, उसे रोक सकते है, लेकिन बहुत खर्चा करना होता है। जहां रोक दिया वहाँ खतरा (Danger) लिख देते है। प्रवाह होता है उसे देखने जाते है (नदी किनारे कितना सुहावना दृश्य है। और उस जगह जहां रोका था - लाल निशान लगा देते है। इसी प्रकार जीवन के प्रवाह को रोक दिया तो Danger होता है।

अभी हाल ही में पुना महाप्रयोग अभी बंद नहीं हुआ। 21 km. अण्डरग्राउण्ड तक जा रहे है। यह प्रयोग बहुत गलत

Date : ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa

है। विघटन का प्रयोग है। प्रायः करके संघर्ष के लिये ही ऐसी विघटन की नीति बनाई जा रही है। जनता के लिये इसका कोई लाभ नहीं है। बुद्ध भगवान के भी विषय होते हैं। आइंसटीन ने स्वयं स्वीकार किया कि मैंने बहुत गलत कर दिया - विस्फोटक का गलत उपयोग करेंगे।

बाद में कहा - मैंने मात्र प्रयोग करने के लिये ऐसा किया था। विस्फोटक कितना भयंकर होता है, वह बाहर नहीं आ सकता। आज उत्पादन बुद्ध नहीं हो रहा जो है उसका विनाश कर रहे हैं। संयोगज सामग्री प्राप्त हो सकती है यदि ध्यान दें तो भविष्यों का सही प्रयोग कर सकते हैं। अपने जीवन काल में उम्र के इस पड़ाव पर आ चुके हो। उसे आलस्य के साथ नहीं बिताओ। यह काया/शरीर मिला है उसे विषयों में नहीं आत्मा के लिये उपयोग करें।

अवकाश प्राप्त करने के बाद यह सौभाग्य प्राप्त होता है। हम अकेले रहकर भी इन्द्रियां एवं मन को वश में करके कर सकते हैं। आत्म संयम के माध्यम से हम क्या-क्या प्राप्त कर सकते हैं इसकी जानकारी/अनुभव होता है। आप श्वांस ले रहे हैं, उसकी ध्वनि सुनाई नहीं दे रही है किन्तु यदि बाहर की ध्वनियों सुनना बंद कर दें तो आसानी से अपने श्वांस की ध्वनि सुन सकते हैं इसी तरह एक-एक इन्द्रिय को वश में कर सकते हैं।

आप आंखों को बंद कर लिजिये - माथे का दर्द गायब हो जायेगा। माथे का दर्द ही नहीं सब दर्द ठीक हो सकते हैं। समय आपका पूर्ण हो गया है। ज्यादा नहीं कहकर विराम लेता हूँ नहीं तो आपके माथे में दर्द हो जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

Date

23-8-16 "जहर या अमृत" पृष्ठ: 114

अपने यहाँ रात-दिन पाक बंध होता ही रहता है आचार्यों ने इसका प्रारूपण अपने ढंग से किया है। इतना अवश्य है कि वह बंध स्निग्ध एवं रूक्ष गुण के कारण होता है। उसमें अनेक प्रकार की गुणवत्ता रहती है। इसको देखकर ऐसा लगता है, कि बांधना आसान है पर बंधन से मुक्ति पाना कठिन है।

आपके यहाँ घृत-आटा बुरा अथवा मिश्री है। इन तीनों को मिलाते है, इनकी संयोजना करते हैं। हलवा बनाना कठिन है- खाना आसान है। मोक्ष जाना तो आसान है पर बाहर निकलना कुछ कठिन है।

आयुर्वेद के नियमके अनुसार इन तीनों का यदि समान अनुपात हो तो विष का निर्माण हो जाता है। अभी हलवा बन रहा था अब जहर हो गया। डॉक्टरों की शरण में जाना पड़ता है, वो भी कहते हैं हमारे बस की बात नहीं है। समान अनुपात से बचने की व्यवस्था होना चाहिये/जरूरी है। बंध की व्यवस्था यही है- संयोग होने से लाभ एवं संयोग होने से हानि भी होती है। ज्ञान होता है तो भी तथा ज्ञान न हो तो भी ऐसा होता है।

सुख सभी को चाहिये। पर सुख की सामग्री क्या है ये नहीं जानते। जो दुःख की सामग्री है उसे छोड़ दो सुख की सामग्री स्वयं आ जायेगी। जिसको आप सुख का हेतु मानते हो वही दुःख का कारण है। सुख के कारण भीतर एवं बाहर दोनों जगह उपलब्ध है। आपकी प्लेट (सूची) में एक भी सुख का कारण है ही नहीं। जिसे आप सुख का

Date : ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa

काम मान रहे हो उससे पहले परहेज करो। मन की बात मत करो, यही विपरित शब्द है। वह आपके लिये सम्भीत ही करेगा। उलझा नहीं सुलझा ज्ञान थोड़ा (तनक) भी हो तो पार लगा देता है। "चाहते हो या नहीं"। "चाहते तो" है, ये तो क्यों लगाते हो। तो के पीछे बहुत बड़ा रहस्य छिपा है। हम वो चाहते, ये चाहते है आदि-२, लो दिन। ये लो दिन क्या है?

लो दिन के बिना वाक्य हो तो स्पष्ट हो जाता है। ऽ० बातें कहीं, लो दिन, किन्तु, परन्तु लगते ही सब हवा हो गयी। ये शिक्षा (सीख) दिलने की। ये निषेधात्मक शब्द सुनकर वह आगे बढ़ ही नहीं पाता। दुःख की सामग्री की पहल बनायी - उससे जो भी परहरत पहले है अर्थात सुख तो उसे छोड़ो।

मीठे जैसी कोई चीज आपको बतायी (हलवा) किन्तु तीनों का अनुपात एक हो जाता है तो विष का निर्माण हो जाता है। हम आज विष ही बना रहे हैं। आप बचना ही सकोगे। इससे भी भयानक स्थिति मनुष्य-काय इन तीनों के मिल जाने से होती है। एक संयोग से अहंत का निर्माण होता है तो उन्हीं भावों के द्वारा संसार का निर्माण हो रहा है। कर्म झड़ नहीं रहे बढ़े जा रहे हैं।

हमारी निगाह मात्र उठने से आपका परिवर्तन हो जाता तो फिर कहना ही क्या? अपने आप की निगाह (नजरों) में वह क्षमता है - जो चाहे कर सकते हैं। हमारी निगाह हमारे अपने लिये है। दिनभर के व्यस्तम समय में से शुद्ध समय के लिये आप लोग आ जाते हैं, हम भी बोल-बोलकर आपको देने का प्रयास करते हैं। वही

Date

खाता अनंतसंसार का चला रहा है- इसे बंद करना होगा। इधर-उधर से निगाह हटाओ, सावधानी के साथ कर्तव्य करोगे तभी यह खाता बंद होगा। मनुष्यभव का एक सेकेण्ड भी आपके भव-भव की डूबती गुल्थीयों को सुलझाने की सामर्थ्य रखता है। उसमें ऐसा भी बंध हो सकता है जो सागरोपम काल तक सुरक्षित रह सकता है।

जीवन पर्यन्त विष का ही अर्जन कर रहे हैं, पर आत्मा के पास ऐसा भी स्वभाव है कि एक अन्तर्मुहूर्त में पुरा का पुरा साफ कर सकते हैं। अतः अपने ऊपर निगाह डालो तो। हमारे भगवान न सुनते हैं, न देखते हैं, तादि आप ही अपनी निगाह अपने ऊपर डाल लो। भगवान तो सागर है। आप भी सागर हैं आप आर्त-रौद्र ध्यान के सागर है। दोनों में सागर है। पर तालमेल नहीं हो सकता। तीनों का अनुपात होने से विष का निर्माण हो जाता है। उनके मुख से तो विष निकलता है और उनके मुख से अमृत झरता है। ऐसा बोला जाता है। दोनों में कितना अंतर है, परिणामों में अन्तर आने से ही यह अन्तर आता है। "तद्भाव परिणाम" ऐसे भी परिणाम कि एक बूंद भी घड़े पर नहीं ठहरती। परिणामों में बड़ी विचित्रता होती है। वितराग विज्ञान ही सार्थक है। रसायन शास्त्र नहीं। कक्षा में पढ़ाया जाता है रसायन शास्त्र। तत्त्वार्थ-सूत्र में भी रसायन-विज्ञान है पंचम अध्याय में। पदार्थ विज्ञान अन्यत्र कहीं भी नहीं है। "स्निग्ध रूक्षत्वाद बंधः" ऐसे ३-३

Date : ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa ☐Su

सूत्र है जो हिंसा टालते हैं। उनका उत्तर कहीं भी नहीं मिलेगा मात्र जैनागम में ही मिलेगा। वहीं की वहीं उत्तर उसी में मिलते जाते हैं। कोई भी नहीं सोच सकता तीनों का मिश्रण जहर बन जाता है।

ज्यादा मीठा-मीठा भी सेवन नहीं करना चाहिये। यदि मीठा ले लेते है तो उसे कडवाहट से ही दूर करते हैं। सुबह-सुबह नीम चबाते हैं। जीभ पर जमें मल को भी साफ कर देते हैं। व्रत-उपवास करने से वह मीठे से आयी परत साफ हो जाती है। ज्यादा समय तो नहीं हो गया, हाँ 2-3 मीनिट ज्यादा हो गये।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

24-8-16 **"धर्म बड़ा या धन"** प्रातः 9·15

आप लोग जानते हैं गृहस्थ को अर्थ याने धन की आवश्यकता है। गृहस्थाश्रम को चलाने के लिये धन को गौण नहीं कर सकता है। गौण नहीं करते हुये भी उसे सिरमोर नहीं करना चाहिये। सिरमोर का अर्थ मोर है सिर पर जैसे वह पंख सुशोभित/सुरक्षित रखता है।

इसी प्रकार आप लोग धर्म को सुरक्षित रखते हुये अर्थ का सहारा ले सकते है। इसमें कोई बाधा नहीं है। किन्तु आजकल की व्यवस्था इससे विपरित हो गयी है। बड़ी-बड़ी लाइन लग गये। बड़ी-व्यवस्था हो गयी। अब मोर को पकड़े। यदि धन को सिरमोर नहीं बनायें तो काम कैसे होगा महाराज। अर्थ के लिये काम आवश्यक है। दुकान तो होना ही चाहिये ना। वो भी मौके पर। अन्यथा पुराना ग्राहक तो आ जायेगा किन्तु नया ग्राहक

Date : | | | | | Mo Tu We Th Fr Sa

तो नहीं आ पायेंगे। नये ग्राहक नहीं बना पायेंगे तो दूकान आगे कैसे चला पायेंगे। मौके की केवल बात ही नहीं होती, मौके का स्थान भी होता है। अब ऐसा स्थान ढूंढ लिया - दूकान भी सजा ही चालु होगयी। कुछ ही दिन में अर्थार्जन होने लगा।

दुकान मौके की थी सो पगड़ी भी दी, अब किराया भी जो एक महिने पर देना था वह पन्द्रह ही दिन में पहुँचा दिया। अर्थात समय से पहले ही दे दिया। घर वालों ने कहा ये क्या कर रहे हो, आकुलता वश आ जायेगा तो क्या करेंगे। मुश्किल हो जायेगी। उखाड़ो नहीं। हमने पास का नहीं, जो मुनाफा आया उसी में से दिया है। उसे सलटा दिया अब निश्चिन्त होकर काम करेंगे।

कई बार बात समझ में नहीं आ रही फिर भी हव कहना पड़ता है। साहुकारी वाले, अथवा बैंक वाले भी ऐसे ही करते हैं। जो भी आये ग्राहक बनाते जाते हैं। वह बना रहता है अब देने में कोई बाधा नहीं है। उसी से कमाकर मुनाफे में से दे दिया। मुनाफा जिस आधार पर करते है उसे तो देना ही होगा। हम भी ये ही हिसाब लगाते हैं। ज्यादा देना है तो उस हिसाब से आना तो चाहिये। अपना-अपना ही मुनाफा देखते हो बाजार को भी देखना पड़ता है। सब परिवर्तन हो रहा है तो दुकान में भी परिवर्तन होना चाहिये। इसी प्रकार धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से कोई करना चाहता है तो उसे बंध ही होता है, ऐसा कहना धर्म नहीं है। इन अनुष्ठानों में जितना खर्च कर रहे है उससे लाभ कई गुना अधिक है। नकद आ रहा है। 10% भी खर्चा होता है तो

Date : | | | | | ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa

वह खर्चा नहीं माना जाता है। एकान्त से बंध मानना ठीक नहीं। यह बंध तो एक ऐसा अनुबंध है जो जीवन पर्यन्त आपकी रक्षा करेगा। घाटे की बात मत किया करो। पहले की अपेक्षा कमाई ज्यादा हो रही है। कुछ खर्चा हो भी गया परन्तु कमाई तो बढ़ ही रही है। दुकान मौके पर है।

इन अनुष्ठानों के माध्यम से जो धर्म से विमुख होता है, वह भी इस ओर आ सकता है। केवल पैसों की ही बात मत किया करो। वह तो आयेगा ही। लक्ष्मी ज्यों ज्यों आगे वह उतनी ही दूर जायेगी तथा लक्ष्मी से जितना दूर होंगे तो वह आपके उतना ही पास आयेगी। पिछलग्गु मत बनो। धर्म को हमेशा सामने रखो, सब अपने आप लाभ होता जायेगा। पैसा तो आयेगा किन्तु उसे सिर पर मत बैठाओ। सिरमौर मत बनाओ। उस मोर की एक आवाज सुन लेते तो सारे सर्प इधर आ जाते हैं। उनकी नींद हराम हो जाती है। धर्म की बात करो। उसी के कारण तो सब हो रहा है। धन की क्यों बात करते हैं - मुड़कर देखो नहीं आ रहा है या नहीं।

मोक्ष मार्ग में पुण्य बंध कभी भी बाधक नहीं है। बाधक पुण्य के उदय में जो भोग हैं, वे हैं। पुण्य बाधक नहीं। पुण्य फल से प्राप्त विषय बाधक हैं। उनसे कह देना - जो ऐसा करते हैं। यहाँ हजारों लोग आकर लाभान्वित हो रहे हैं। उसे भी तो देखो। बहुत खर्चा हो रहा है। ये क्यों देखते हो - लाभ क्या हो रहा है ये क्यों नहीं देखते। इस खर्चे के साथ आपके मोह का भी खर्चा हो रहा है। हमारे पास धर्म रहेगा जब राग में नहीं वितराग धर्म में खर्च करेंगे, निर्मल भी करेंगे। जो नहीं आये उन तक पहुँचाने की जिम्मेदारी आपकी है। हमने अपना काम कर दिया। अहिंसा परमो धर्म की जय। नुं

Date

25-8-16 "सर्वे भवन्तु सुखीनः" प्रातः 9.15

आप लोग चंदन से परिचित हैं। इसके गुणों के अनुसार उपयोग होता है। कुछ लोग इसको घिसकर प्रयोग में लेते हैं। तिलक लगाते हैं। तिलक और कहीं नहीं माथे पर लगाया जाता है क्यों की इसे उत्तमांग माना जाता है। दूसरा ब्रह्मरन्ध्र खुलते हैं तिलक लगाने से। इसके उपरांत अधिक लोग हो तो थाली में इस चंदन को घोलकर काम में लेते हैं।

एक साथ सारी व्याधि कैसे हो तो इसका उपयोग कैसे करें। जिस दरवाजे से सब भीतर आ रहे हैं वहाँ चार चंदन की अगरबत्ती लगा दो। वह प्रतिनिधी के रूप में सबके पास पहुँच जायेगा। राजा-महाराजा का जीवन है। सब तक पहुँचती है उनकी खुशबु। वितराग प्रभु है। राग रहित जीवन है उन प्रभु का। वे पूज्य कैसे बने। ज्ञान तभी पूज्य बनता है जब राग मिटता चला जाता है। वितरागता के कारण विश्व व्यापक हो जाता है। आप भी वह कर सकते हैं।

सिद्धों के स्मरण मात्र से, दर्शन मात्र से, उनके बारे में पढ़ने मात्र से अपूर्व अनुभूति होती है। यदि जीवन में उतर जाये तो क्या कहना स्वार्थ बहुत पीछे रह जायेगा - परमार्थ आ जायेगा। औरों को भी लाभान्वित कर सकते हैं। संसारी प्राणी संसार में रहता है, वह मोह के कारण दूसरों को छोड़ता नहीं है। संकीर्णता-अज्ञान सबसे अड़ोस-पड़ोस को भी महकाने का प्रयास करें।

आप लोग घर में रहते हैं। कोई भी वृक्ष लगा लिया, उसके फूल - फल मात्र आपके ही काम नहीं आते सबके काम आते हैं। पुरे मोहल्ले को वह लाभान्वित कर देता है। प्रत्येक के घर में ऐसा हो जाये तो कहना ही क्या ? वृषभनाथ या कोई भी तीर्थंकर को याद करते ही उनके गुणों का स्मरण हो आता है। औरों को भी लाभ पहुँचाया जा सकता है। यह उपकृम बहुत सराहनीय है। कायसे सब तक नहीं पहुँच पाओ कोई बात नहीं मन से तो सब तक पहुँचा ही जा सकता है।

आगम के प्रसंग से इसे और पुष्ट कर लें। समुद्घात में एक केवली समुद्घात का भी नाम आता है। इसमें केवली भगवान के आत्मा के प्रदेश प्रथम समय में दण्ड रूप, दूसरे समय में कपाट रूप, तीसरे समय में प्रतर रूप एवं अगले समय में पुरे लोकव्यापी जिसे लोकपुरण कहते है, हो जाते है। क्या हुआ ? प्रभु आपके पास आ रहे है। कोई भी जीव उनके स्पर्श से बच नहीं सकता। जिस प्रकार फैले थे आत्म प्रदेश उसी क्रम से संकुचित भी हो जाते है। अखबार वालो - आप लोगों को खबर नहीं।

शिष्य उत्पन्न होना चाहिये। हमारी आत्मा के प्रदेश में उनकी आत्मा के प्रदेश आ जाते है। फिर भी हमारी नींद नहीं खुलती। इससे बढ़कर और क्या घटित हो सकता है। वे स्वयं हमारे पास आकर उपस्थित हो जाते है। इसलिये परोक्ष ज्ञान से कुछ नहीं प्रत्यक्ष ज्ञान होना चाहिये। वे प्रभु हमारे पास आकर चले जाते है। आप लोग संसार की

Date: ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa ☐Su

ही लीला में फंसे रहते हो। छुने पर भी आपको जानिही हो पाता। यह कोरी कल्पना नही समझना, आगम के वचन है।

तीनों लोको में वे केवली भगवान अपनी आत्मा के प्रदेशो को फैला देते है। यह प्रक्रिया इसलिये की अन्य कर्मो की स्थिति अधिक एवं आयु कम तो दोनो का समीकरण बनाना होता है। सीमितसमय में पूर्ण धाम कर देते है। आपका दरवाजा बंद है, फिर भी वे भीतर आकर रह रहे है। अब तो जाग जाओ पर फिर भी उठ नही रहे है। कितने प्रभु चले गये। अनंत और अनंत ही जायेंगे। होश मे आवो। स्वार्थ का विसर्जन करो परमार्थ का भजन करो।

समय पुरा हो गया। प्रवचन भी पुरा हो गया। समय भी आ गया। अपने पास रखीयो नही। सब तक पहुंचाने का पुरुषार्थ करेंगे इन्ही भावनाओ के साथ, अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

26-8-16 "महत्वपूर्ण है आयु बंध" प्रातः 9.15

आप लोग यात्रा करते है। यात्रा करते समय क्या-क्या सामान की आवश्यकता होती है यह सब प्रबंध हो गया। वाहन में पेट्रोल है या नही उसकी आपूर्ति करते हो। प्रतिपल उसमें खर्चा होता है चाहकर भी उसमें कटौती नही कर सकते। हाँ बचत अवश्य कर सकते है। बीच-बीच में ड्राइवर भी पहले से ही-जहाँ उसके मिलने की संभावना होती है-सचेत करता रहता है। इसमें भी आपकी गाड़ी कौनसे तेल से चलती है, उसी कम्पनी पट जाते है। निर्विकल्प बनने के प्रयास करते हो। इसके उपरान्त पेट्रोल हो,

रखते हैं। पेट्रोल हेतु के लिये अलग से एक व्यवस्थित व्यान होता है, वहाँ से एक नली के माध्यम से (सम्पर्कसूत्र) जाता रहता है पुरा डिपार्टमेन्ट व्यवस्थित है।

इसी तरह जीव एक गति से दूसरी गति में जाता है, पेट्रोल लेकर ही जाता है। कभी-कभार वह बीच में ही समाप्त हो सकता है - असावधानी के कारण। आयका वाहन है, यात्रा सुखपूर्वक हो इसलिये व्यवस्था स्वयं को ही करना है। इस व्यवस्था में कोई गफलत नहीं - चाहे वह एकेन्द्रिय हो या नारकी - देव - मनुष्य कोई भी हो। आजकल गफलत की ही बाजार में बात हो रही है। ज्यादा Store नहीं कर सकते इस पेट्रोल (आयु) का, सब कुछ नहीं - इस हेतु से जरूरी है।

यह बंधता कब है? इसका उत्तर है प्रत्येक के जीवन में ८ समय ही दिये जाते हैं। इन ८ समयों में ही अगले भव के लिये पेट्रोल की व्यवस्था हो सकते हैं। जैसे सरकार के जो रूल (नियम) होते हैं उसी अनुसार चलना होता है। सरकार/लोकतंत्र की चलाना वाले को तीन मात्र ८ बार ही मिलता है। प्रारम्भ से नहीं - जब आयु का त्रिभाग २/३ भाग बित जाये १/३ एक तिहाई रहे तब प्रथम बार पेट्रोल की व्यवस्था हो सकती है यदि नहीं किया तो अब जो बचा उसका १/३ बीत जाने तथा १/३ रहने पर दूसरी बार ऐसे ८ बार अवसर प्राप्त होता है। यदि उसमें भी आयु बंध नहीं हुआ तो इस जीवन के अंतिम समय में तो बांध ही लेगा तभी आगे की यात्रा हो सकती है नहीं तो नहीं हो सकते।

गिरनार आदि की यात्रा करनेवाली अंतिम समय में तो आयु बंध होना अनिवार्य है। आप लोग इस

मामले में परतंत्र/अज्ञात हो। अज्ञातवास में भी वो आपको ढूंढ लेगी कि कहाँ - कहाँ रहता है।

सबसे महत्वपूर्ण आयु कर्म का बंध है। जो परिणाम आयु कर्म के बंध के समय किया वह भोगना ही पड़ेगा। उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं कर सकता। एक बार आयु बंध के बाद कोई तिर्थंकर, चक्रवर्ती या भाई-बन्धु कुछ नहीं कर सकते। भोगना ही पड़ेगा। हाँ उसमें तन्दीलो आ सकती है। उसमें हानि-वृद्धि कर सकते हैं। ऐसे कुछ कारण बनते आयु कर्म के। देवों में जब ६ महीने शेष रहते हैं तो वे अगले भव की आयु के योग्य हो जाते हैं।

चाहे सम्यग्दृष्टि हो या मिथ्यादृष्टि। मिथ्यादृष्टि तो सक्लेश परिणाम करता है - अब मुझे मरना है। मैंने सागरोपम आयु भी भोगों में ही निकाल दी। उन्हें ६ माह पूर्व ही पता चलता है। जैसे आपके यहाँ ३ मार्च को Closing होती है। कुछ रोते हैं कि अब तो मात्र ६ महिने ही बचे हैं।

माला मुरझाने के अलावा एक बात और होती है - जो जीवन पर्यन्त उनकी आज्ञा में रहे जब आयु का ६ माह शेष रहता है तो उनकी आज्ञा भंग हो जाती है। सामने - सामने ही अपमान भंग हो जाती है। कुछ भी नहीं सकता। वह अब दूसरे उम्मीदवार की प्रतिक्षा में है। कार्यकाल पूरा हो गया। जो सरकार चलाते हैं वहाँ भी ऐसा ही होता है। हरी झंडी हो गयी आपकी। ऐसी स्थिति में सम्यग्दृष्टि विचार करता है कि - नरकायु

को सुरपति तरसे ..... । सौधर्म इन्द्र भी सोचता है कि मोक्ष मार्ग में सुखाया दो कौन पूछता है। सम्यग्दृष्टि हमेशा - हमेशा वैराग्य को ही अपना आदर्श बनाता है। आज्ञा के भंग हुये बिना आंखे खुलती नहीं। घर में बेटा भी आजकल कह देता है - पिताजी अब जमाना बदल गया। संसार क्या वस्तु है - पता लग जाता है।

६ महिने बचे हैं अब उसे बदला नहीं बढ़ा सकते। स्टेशन पर गाड़ियाँ आती एवं जाती रहती है। झण्डी दिखाते हैं कभी ली तो कभी लाल। ये मौका मिला है - फायदा उठा लें। कभी भी मरण हो सकता है। कहीं भी भेजा जा सकता है। आपकी इच्छा नहीं चलेगी।

दहलाल की एक पुस्तक - जिसमें चित्र बने थे। ऊपर देव भी नीचे एकेन्द्रिय हो सकता है यह सोचकर बहुत चिन्तित है। अब मुझे वहाँ जाना पड़ेगा। जमानत भी नहीं चल सकती। जमना भी आड़े आ जाय - जाना तो पड़ेगा ही। वैभव कहाँ गये - अब जाओगे। मनुष्यगति उत्कृष्ट है; यहाँ से चारों गतियों अर्थात सब जगह जाया जा सकता है।

तिर्यञ्च गति में बहुत से भेद होते है - वहाँ उपदेश का कोई दिवाना नहीं। जो करना है - वो कर लो। पूर्व में ऐसा कोई कार्य किया, जो यह इतना बड़ा सौभाग्य मिला। दो माह और बचे हैं। पंदिन की चांदनी ..... पंमाह की नहीं। चाहे मित्र हो या वैरी हो, अपना काम बिगड़े नहीं, हमारे निमित्त से दूसरे का भी नहीं बिगड़े। भगवान भी उनकी ही सहायता करते हैं

जो सही पुरुषार्थ करता है। भाव ऐसे रखो जो सद्भाव हो। समय का सदुपयोग करना। इस प्रकार आज का यह वक्तव्य अपने कर्म का चमत्कार है ऊपर हुआ। आप इसे अन्य लोगों तक भी पहुँचा दें। अहिंसा परमो धर्मकी जय। नमें

28-8-16 "बर्फ बनना सीखो" प्रातः 9.15

सुनो! सबको मालूम है पानी गरम होता है. शीतलता के साथ-साथ गरम होने की भी शक्ति उसके पास हुआ करती है। किन्तु पानी अपने रूप को अलग स्वरूप में परिवर्तित भी देता है तो यह नहीं कहा जा सकता की पानी गरम होता है।

एक वह भी क्षेत्र होता है, पानी ठण्डा होता है, गरम होने की क्षमता रखने वाला पानी गरम नहीं होता है। कितना ही ईंधन लाओ, शरीर मजाओ वह गरमी लायेगा ही नहीं। कोयला समाप्त हो जायेगा। वह इतना ठण्डा हो जाता है - बर्फ बन जाता है। बर्फ को कितनी भी आग्नि दें वह गरम होगी ही नहीं। यदि बर्फ को गरम कर दिया तो सोचना पड़ेगा - मोक्षमार्ग में भी गड़बड़ी आ गयी।

नहीं ऊपर से जमीं होती है तो गाड़ियाँ भी पार हो जाती है - नीचे - नीचे बहती रहती है। एक बार जमने के उपरान्त उन महाराज को भी तीन लोक की कोई भी शक्ति पिघला नहीं सकती। ध्यान रखियो, कुछ मिलने की संभावना हो वह भी खो जाये। हमें तो करना ही है। प्रकृति के माध्यम से ही ऐसा कर सकते हैं। ज्ञान एक ऐसी शक्ति है यदि वह जान ले तो तीन काल एवं तीन

लोक में दूसरा कोई नहीं जो इसे नीचे ला सके। पिघल जाना हमारी कमजोरी (विकृति) है।

दीर्घ संहनन वाले रहते थे, थाली बुखार आता ही नहीं और यदि आ गया तो तुरंत चूला (मेहमानगीरी) होती ही नहीं। कुछ लोग है - आइये - आइये मेहमानजी - शायद भोजन तो आप करके आये होंगे? आप जो भी लाये हो वह खोल दो हम सब मिलकर खायेंगे। जैसे - एक्शन या रेल आदि में खा लेते हैं। तांता लग जायेगा, अतः सोचसमझकर करना चाहिये।

आज मध्याह्न में लेना था, फिर हमने देखा इतनी भीड़ आयी है, अभी के गृहस्थों को थोड़ा कुछ तो देना ही है। समय पर ही मिलता है हमारे पास बीच में कुछ नहीं मिलता है, हां ये हमारी उदारता है। पहले से ही हमारी बातचीत हो चुकी है। आप भी बर्फ बनने की तैयारी करें तो कभी भी नहीं पिघलना नहीं पड़ेगा। पिघलने के कारण ही बड़ी-बड़ी नदीयों में भी सावन जैसे ज्येष्ठ माह में भी उफान आ जाता है। काल का प्रभाव नहीं।

एक समय तक ही पिघलना, आत्मा की ओर दृष्टि जाते ही यह पिघलना बंद हो जाता है, मोक्षमार्ग की ओर जा रहे तो बर्फ के समान बनना ही होगा। ध्यान रखीयो, एयर कंडीशन में रहने वालों। शीत की वेदना बहुत करीब होती है। गर्मी सह सकते है - बर्फ नहीं। बर्फ में भी चटक होती है। रस चटके से सूजन भी कम हो जाती है। गरम सेंकाई से तो बढ़ जाती है। बर्फ से सेंक कर देखो। सब कष्ट दूर हो जायेंगे। जहां जहां से आये हो इसे बर्फ की सिकाई को पहुंचा देना। नुं

Date

29-8-16 "हाथोहाथ चाहिये" प्रात:9:15

आप लोग सब कुछ हाथोहाथ चाहते हैं। भगवान के पास भी आते हैं - कुछ मिल जाय। निदान नहीं करते किन्तु प्रयोजन तो रखता है। स्वभाविक मानकर चलते हैं। सम्यग्दृष्टि की क्या विशेषता होती है आप लोगों को ज्ञात कराना अनिवार्य है। आकुलता मिट जाना एवं दृष्टि में निर्दोषता आना सम्यग्दृष्टि की ही तो विशेषता है।

सम्यग्दृष्टि होने के उपरांत भी कर्मों का बंध जारी ही रहता है, किन्तु उनमें स्थिति - अनुभाग आदि में बहुत अन्तर आ जाता है। स्वाध्याय कर लें तो आपको भी समझ में आ जायेगा। दुकान चलाते हो तो तत्संबंधी जानकारी लेते रहते हो, इसलिये की कभी भी काम में आ सकती है। पूंजी लगाते हो कि चार - पांच साल में निकाल लेंगे, किन्तु आज तो सुबह लगाकर शाम को निकालने की सोचते हैं।

सम्यग्दृष्टि होने के उपरान्त भी अप्रशस्त प्रकृतियों का बंध होता रहता है। अन्तर्मुहूर्त काल जो बहुत होय समय है इतना जाने पर अपने भावों का लाभ मिल सकता है जैसे साता का बंध किया - अन्तर्मुहूर्त काल के बाद उदय में आ जाता है। हाथोंहाथ आप जैसा चाहते थे - वैसा मिल जाता है। किसी से मांगने की जरूरत नहीं अथवा कहीं जाने की भी आवश्यकता नहीं हैं। हम अपने भावों से बिना मांगे उसकी उदीरणा कर लेते हैं। व्रतों को ग्रहण कर लें तो और ज्यादा ऐसा होना प्रारम्भ हो जाता है। चिकित्सा या औषधोपचार की बात है। प्राथमिक उपचार है यह। अभी बांधा और अपने काम में आ सकता है। अस्पताल जाओ, पैसा

Date :

खर्च करो, ये करो - वो करो. कुछ नहीं। पुण्यानुबन्धी पुण्य बोलते हैं। एक पापानुबन्धी पुण्य भी होता है। वह पुण्य जो हमें पाप की ओर - विषयों की ओर ले जाये। ये तुरंत काम होता है। कर्म सिद्धान्त का इस ढंग से उपयोग करते हैं।

श्रावकों सुनों! भोगों की बात नहीं - संतोष के आधार पर यह होता है। संतोष गुण बहुत बड़ा गुण है। संतोष में ही धैर्य की परीक्षा होती है। सात गुणों में संतोष भी रखो और विवेक भी रखो। ये सारे के सारे हमेशा परीक्षा लेते रहते हैं। आकुलता में ये काम में लेना चाहिये। इससे श्रद्धान - विश्वास और अधिक पोढ़ होता जाता है। आचार्यों ने इसे ध्यान कहा। आर्तध्यान नहीं धर्मध्यान कहा। वह भी तब जब दुकान पर ग्राहक आ जाता है।

ग्राहक पैसा लेकर आया है ध्यान रखो जाये कि इससे हमें कितने प्रतिशत ले सकते हैं। ये तभी संभव हो जब आपके यहाँ संतोषी देवी विराजमान हो। यदि इस देवी को विराजमान कर लिया तो दुकान ४ घण्टे खुली है तो ४ घण्टे का धर्मध्यान हो रहा है। अभी यहाँ सिद्धचक्र विधान की मांग कर रहे थे। चौक मन्दिर में आना है - सिद्धचक्र मांडना है ऐसी विनति कर रहे थे। पहले ३½ महिने का यह विधान अच्छे से करो। भगवान की आज्ञा का पालन अच्छे ढंग से करो।

सच्चे देव - शास्त्र - गुरु की आराधना करना है। आपकी दुकान पर ग्राहक आते हैं - आप चुन-चुनकर माल दिखाते हैं। ये भी कह देते हो देखो किन्तु हाथ मत लगाओ। आपसे ज्यादा कई गुना मुझे व्यस्त रहना होता है। मैं भी देख लेता हूँ ग्राहक कैसा है किसे खाने वाला तो नहीं है न। संतोषी की रट नहीं लगाना - भीतर से संतोष

होना चाहिये। व्यवहार बहुत अच्छा लगता है किन्तु यह व्यवहार "वसुदैव कुटुम्बकम्" के बिना नहीं हो सकता है। यह जानकारी आप लोगों को देना था। कि अन्तर्मुहूर्त में साता आदि प्रकृतियों जिनका बंध किया था - फल देना शुरू हो सकता है। अर्थात चिड़िया प्रारम्भ हो जाती है।

उदय में आना ही है क्यों की अन्तर्मुहूर्त ही टाल है। बाहर आकर ही फल देगा। मांगने की जरूरत नहीं, भगवान जानते हैं या आत्मा जानती है। जिधर जिसका पुण्य होता है, उधर ही मुड़ जायेगा। गाड़ी चलाते हैं तो पहले से ही सारी जानकारी ले लेते हैं। आपको सावधानी के साथ दुकान पर बैठना है। घर - दुकान - जीवन आपका अपना है। संकेत के माध्यम से पहले ही ज्ञात हो जाता है। नहीं जाने की अपेक्षा देर भला"। दुर्घटना में जा भी सकते हैं, नहीं भी जा सकते हैं। सरकार ने भी आपके लिये - संतोषी रहने के लिये ही ये सब (साइन बोर्ड) किया है। अहिंसा परमो धर्म की जय।

30-8-16 "मन से काम लेना" पृष्ठ 3.15

आप अभी ऐसे पूजन कर रहे थे कि अपने अड़ोस-पड़ोस को तो भूल ही गये थे। वो भी पूजन कर रहे हैं। उन्हें भी अपने भावों के अनुसार विशेष ही फल मिलेगा। जैसा योग मिलेगा वैसा प्रयोग करते हैं। एक उदाहरण के माध्यम से समझें।

भावों के अनुसार हमें योग मिलता है। कोई शान पर औजार को धार करने के लिये प्रयोग करता है। वह व्यक्ति कैसा भी हो सकता है। शान तो आपने देखा ही होगा। वह व्यक्ति शान चलाता है, रुकना नहीं चाहिये, घूमना चाहिये वो भी निरन्तर। अब हाथ में औजार लेता है, ज्यों ही उस

Date

औजार को शान पर लगाता है आवाज आती है। वह ताकत से उसे दबाता है। जितना तीव्र गति से उसे दबायेगा उतनी ही उस औजार में धार आयेगी। वह प्रयोग चालू हो गया - जितना जोर होगा - प्रयोग होगा उतनी ही चमक आयेगी।

आनंद की अनुभूति प्रयोग के क्षण में ही आयेगी। ये भक्ति का प्रयोग भी आपका चलता रहे, आप अपने आपको भूल गये हैं - लोकिन अड़ोस- पड़ोस को याद रखें - क्यों की सब लोग अपने प्रयोग के लिये आये हैं। वे भी अपनी भावाञ्जली लेकर आये हैं। हाँ ये हो सकता है कि किसी की अञ्जुली छोटी और किसी की अञ्जुली बड़ी हो सकती है। ऐसा भी हो सकता है कि किसी की बाहर की अञ्जुली छोटी हो सकती है - किन्तु भीतर की भावाञ्जली तो बहुत बड़ी है।

वे भी अर्घ्य चढ़ा रहे हैं - उन्हें भी लाभ मिल रहा है। यहाँ जो दुकान चल रही है - वह गुणित चक्र से लाभ देने वाली दुकान है। ऐसी दुकान है। खसखस के दाने से भी छोटा वह बीज होता है, किन्तु फल बड़ के वृक्ष की तरह विशाल हो जाता है। अपनी शक्ति को बढ़ाइये - शान चलाइये। आपकी शान अर्थात शोभा इसी में है। देवगति में जाकर भी नाचते रहते हैं तीर्थंकर के चरणों में - गुंजन करते रहते हैं। महत्वपूर्ण यह कि वे इतनी भक्ति करते हुये भी असंख्यात गुणा निर्जरा नहीं कर सकते हैं।

जैसे एक रईस का बच्चा होता है, उसे सब सुविधायें प्राप्त रहती है। रईसी के साथ पढ़ाया जाता है। वो कहता है मुझे ये चाहिये - उसकी मांग तुरंत पूरी की जाती है क्योंकि रईस का बच्चा है। इससे विपरित उसके पड़ोस में दूसरा बच्चा रहता है, वह गरीब है। पढ़ाई भी रास्ते में लगे दीप स्तंभ के नीचे करता है। अपना

समय पर करता है। परीक्षा में उसके नम्बर 90 को भी पार कर गये इस रईस को 33 में भी कमजोरी आ गयी।

नवजीवन चाहिये, स्वास्थ्य चाहिये तो श्रम जरूरी है, निरन्तर ज्ञान चखना चाहिये। गहराई में जायेंगे तभी रत्न मिलेंगे है। मिट्टी की खान में हीरा मिलेगा किन्तु पहले आपको बहुत मिट्टी निकालनी होगी। वह हीरे की छोटी सी भी पुडिया करोड़ पति की ही जेब मे रहती है। आपको ज्यादा फल नहीं मांगना है।

योग वही जो प्रयोग के साथ हो। 1½ महीने चले गये - अब 2½ महीने रह गये। अपने हाथ से करो तभी आत्मखर्च होता है। धार तभी आयेगी जब जोर ज्यादा लगायेंगे। पसीना-पसीना हो जाये। सीना तनता चला जाये। लेकिन सही दिशा में। पसीना आ जाता है तो स्वास्थ्य ठीक-ठाक हो जाता है। सभी दूकरे से प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह प्रयोग हमने नहीं हमारे तीर्थंकरों ने बताया। उनके उपदेश से निकला। पहले अपने जीवन में उतारा फिर तारने की बात की। आप तारने की बात तो करते हैं पर जीवन में उतारने की नहीं।

नास्तिक हो या आस्तिक हो, जीवन में प्रयोग अनिवार्य है। थकावट की बात मत करो। श्रम करें - विवेक के साथ करें। आस्था और घनिष्ठ हो जाती है, तभी फल भी मिलता है। शत-प्रतिशत वाला कभी अपने कर्त्तव्य में कमी नहीं रखता है। कर्त्तव्य करें उसमें न स्पर्धा हो और न ही अहंकार। मान करना ठीक नहीं। "मन का काम नहीं करना - मन से काम लेना।" संकल्प तोले लेते हैं - कर्त्तव्य नहीं करते। क्षत्रिय बनो - रावण नहीं। आपका 9:30 बज गया। ये घड़ी रुकी रहती नहीं। काल रुकता नहीं।

Date : ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa

"काल को रोने से कुछ नहीं होता, मन को रोवें तो काम बने।" मन को अण्डर में - नियन्त्रण में रखो - वेतन दे रहे हो। आप आसानी से कर सकते हो, लौदिन अभी सोच रहे हो। कुछ नहीं करेगा। मन को तो जैसा कहोगे वैसा करने को तैयार है। वेतन उतना ही देना, ज्यादा न बढ़ियों। किन्तु वह मन भी देखता है सेठ जी अभी सो रहे हैं, वह मुनिम जी, सेठ जी से भी आगे मन हो जाता है, इसलिये "मन का काम नहीं करना - मन से काम लेना"। याद रखीयों। ओरों को भी बता देना। अहिंसा परमो धर्म की जय। हुँ

1-9-16 "करें पुरुषार्थ कर्म के मंदोदय में" प्रातः 9.15

नदी में पानी का वेग तेज होने को बाढ़ आना कहते हैं। पानी के ज्यादा वेग के साथ हम अपना कुछ प्रयोग नहीं कर सकते। अच्छे-अच्छे नाविक भी उसमें फेल हो जाते हैं। कुशल नाविक ही इस स्थिति में लोगों को इस तट से उस तट तक पहुँचा सकता है। ये बात हुयी श्रावण मास एवं भाद्रपद मास की। फिर बाद में पानी कम हो जाता है।

पानी कम होने के साथ वेग में भी कमी हो जाती है। ऐसा ही कर्मों का वेग होता है, उसके वेग में कमी आ जाती है, उस समय अपना पुरुषार्थ कर सकते हैं। आचार्यों ने सम्यग्दर्शन इत्यादि की प्राप्ति हेतु भी यही कहा है कि देशना का पात्र कौन होता है। कम से कम थोड़ी भूख खुल जाय, रुचि जग जाय। जब रद्दस्ती यदि खिलाना चाहे तो बड़ों की तो छोड़िये, छोटा बच्चा भी नजदीक नहीं आता। इसलिये आप लोग नदी के वेग की भाँति थोड़ा वेग कम हो जाये तब काम कर सकते हैं। आचार्यों ने शास्त्रों में इसे ही उदय और उदीरणा शब्द से

समझाया है। तीव्र उदय में आप कोई काम नहीं कर सकते। मंदोदय होने पर ही कुछ कर सकता है। अभी मानना बहुत दूर है। सुनकर के उसका अर्थ क्या होता है- निकाल लेगा। इतना कर लेगा तो संभव है वह से स्वीकार भी कर लें।

इसमें हानि क्या है अथवा लाभ क्या है इसकी भी समीक्षा कर लेगा। इसी से हम सोचते हैं कि इस मनुष्य जीवन में यह पात्र तैयार होता है। (विशेष रूप से मनुष्यगति में - वैसे अन्यगति में भी होते हैं)। बहुत चीजें अथवा बहुत अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। सामने वाले को समझ में आये तभी बढ़िया या घटिया कही जा सकता है। समझ में आये तो। विज्ञापन से भी कुछ नहीं होता। सारे के सारे अखबार उस विज्ञापन के माध्यम से छपते रहते हैं। संपादकीय तो थोड़ा सा होता है। प्रातःकालीन, मध्याह्नकालीन - संध्याकालीन सब अलग अलग हैं।

ये चलता रहता है, यदि रुचि पूर्वक उसे ग्रहण करते हैं तो कुछ निष्कर्ष निकलता है। निष्कर्ष भी ऐसा जो विधी पक्ष हो - नकारात्मक न हो तभी आगे बढ़ोतरी होती है। अन्यथा अच्छे-अच्छे तैराक भी बह जाते हैं। हाथ-पैर चलाने वाला फिर भी कुछ कर सकता है, यह पुरुषार्थ की भूमिका है। सोडा कहा होता है तब मुड़ता नहीं, गरम करते हैं तो सहज मुड़ जाता है, आत्मा के क्षेत्र में भी ऐसा ही होता है। पुरुषार्थ के द्वारा उसे मोड़ा जा सकता है। लेकिन पुरुषार्थ कब काम करता है जब कर्म का तीव्रोदय न हो। आचार्यों ने कहा कि इस प्रकार के वातावरण में रहे, वेग उत्पन्न ही नहीं। कषायों का वेग उत्पन्न न हो। खान-पान, रहन-सहन, शिक्षा-वातावरण आदि पर यह वेग निर्भर करता

है। वृद्धावस्था में जहाँ बैठ जायें, घंटों बैठे रहते हैं, जवान इतनी देर स्थिरता से नहीं बैठ सकता। वह अस्थिर मन वाला होता है। उसे बांध देंगे/अंकुश लगा देंगे तो वही परिक्रमा लगातारहेगा।

अनंतकाल से आयीइस आत्मा पर इसी तरह अंकुश लगा सकते हैं। असंभव सालगने वाला कार्य भी संभव हो जाता है। आप लोगों के यहाँ बाद आने वाली थी, धीरे-धीरे व्यवस्थित हो रही है। अपने आप ही वह बाधु नियान्त्रित तथा व्यवस्थित होती जाती है। धीरे-धीरे कामहोते हैं, एक बार में नहीं। कोई न कोई आदर्श को सामने रखने से ये कार्य होते हैं। अपने पूर्वजों को आदर्श के रूप में स्वीकार करो जिन्होंनें बाद में भी इसे खड़ा रखा। (मंदिर कमेटी से)

उन लोगों ने जो स्थापना की, वह आज आपके काम आ रही है। पूर्वजों को याद करके उन्हें देखकरके हम अपने वेगों को कम कर सकते हैं। उनके अनुभव-सुझबुझ, विचार, कृतियाँ, संकेत, सूचनाफलक के रूप में काम आते हैं। हम सुबह जंगल जाते हैं, पुलिस लगी रहती है, हमसे कुछ नहीं कहती। भूख खुली तब आपको इतना लम्बा-चौड़ा पूरा स्थान मिला। ½ किलोमीटर अन्दर ही अन्दर जा सकते हैं। यहाँ पर सीधे आ जाते है - वहाँ मुड़-मुड़ कर आओ। कर्मों की भी ऐसी ही व्यवस्था है।

पुरुषार्थ करने पर बड़ा आनंद आता है, एक बार आनंद आने लगा तो फिर देखना। अपनी लाइन में अपनी गाड़ी को कितनी भी तेज चलाओ/अच्छी संगति रखना जरूरी है उसका फल हमेशा-हमेशा मीठा होता है। अब तो संघ (कमेटी) काफी बड़ा हो गया, मजबुती होना आवश्यक है। मजबुती में थोड़ी कमी हुयी अर्थात थोड़ी

Date :

सी असावधानी होते ही घृत से पानी टपकने लगता है। ~~अब~~ कुछ नहीं कर सकते, कुछ भी नहीं लगा सकते। जब घृत डाली थी इस समय असावधानी रह गयी। घृत डालने की जल्दि न करियो। बड़ी सावधानी रखना है संघ बढ़ाने में।

आप लोग सब ऐसे ही वातावरण में पले हैं - बढ़े हैं। पक्के मकान में ही रहे हैं। ध्यान रखना - यहां रास्ते में कोई रुक नहीं सकता। इतने रास्ते हैं - सब चलते रहते हैं। रुकते ही अव्यवस्था हो जाती है। सब बाधक हो जाते हैं। इधर से उधर के लिये रास्ते होते हैं, अनुकूलता से उनका प्रयोग होता है, आपको तैयार रहना है, जहाँ मुड़ना है, जहाँ विश्राम लेना है। उससे भी थोड़ी मित्रता रखियो। अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

2-9-16 "महत्व त्याग का नहीं - त्याग की दृढ़ता का" प्रात: 9.15

सुनो! अपने यहाँ प्राय: श्वांस लेने का उद्यम है, किन्तु आचार्यों ने केवल श्वांस को ही महत्व नहीं दिया। कई बार ऐसा कहा जाता है - श्वांस लिया नहीं जा रहा। श्वास लिया नहीं जा रहा कम से कम इतना विश्वास तो हो। घुटन हो रही है, श्वांस नहीं ले पा रहे हैं तभी अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा बोलना। पहले श्वांस छोड़ो तब तो ले पायेंगे। एक श्वांस है दूसरा निःश्वास। दो चीज है। दो होते हुये भी दोनों अनिवार्य है।

लिया है तो छोड़ना तो पड़ेगा ही। मोक्षमार्ग में भी जो ले रखा है, ओढ़ रखा है उसे पहले छोड़ो। भरोसे के भरोसे मोक्षमार्ग नहीं बनता। भरोसा तो रखना होगा, आशा - श्रद्धा - भावना आदि का बहुत महत्व है, किन्तु छोड़ना भी अनिवार्य है, इसलिये त्याग मार्ग कहा है। राग को मार्ग की उपमा नहीं दी, किन्तु राग को कम करते जायेंगे तो मार्ग

बढ़ता जायेगा। किसका त्याग करते हैं? अच्छाई का नहीं, बुराई का त्याग करें। एक व्यक्ति आये- महाराज आपने हमको व्रत दिया, हमारे पास भी व्रत है। मेरे एक बार ही भोजन करने का व्रत है। हमने कहा- इसे थोड़ा खोल दो। उसने कहा- हम दिन में केवल एक ही बार भोजन करेंगे। रात में तो नहीं करेंगे- हमने कहा। उन्होंने कहा - दिन में तो एक ही बार भोजन करेंगे रात में 10 बजे तक खाते रहेंगे। वह रात्रि भोजन में आ जायेगा। हमने कहा- पहले रात्रि भोजन का त्याग करो।

ये दुकानदार भी बहुत होशियार हैं। ग्राहकों से समझौता करना बहुत कठिन होता है। आपने अनेक दुकानें देखी होगी, हमने अनेक ग्राहक देखें। दुकानदार अन्यत्र नहीं जाता, अन्यत्र घुमघाम कर आने वाले ग्राहकों को अपना लेता है, कह भी देता है- वापस यहीं आना पड़ेगा। चलेगा यह भी चलेगा, आना तो पड़ेगा। मानसिकता आपकी ऐसी है। त्याग धर्म कहने से जो स्वीकारा है, उसका त्याग ही धर्म है, बहुत पवित्र धर्म है।

एक बार का विधान दिन में ही लेने का है, रात में तो दूध लेना ही नहीं। श्वांस लेने की बात करते हो तो छोड़ने की भी बात करो। संग्रह करके रखना, पेट में कुम्भक करके रखना बहुत कठिन हो जायेगा। अभ्यास से 1-2 मीनिट रह भी जायेगा पर लेना नहीं। प्राणायाम में यह सब सीखा जाता है। एक कुम्भक ऐसा भी बाहर का श्वांस बाहर ही रोक देना, भीतर नहीं लेना। इससे आँतों में क्षमता कितनी है, पता लग जाती है। इसीलिये आचार्य सदैव कहते हैं खाली रखो-2। भोजन आदि करने के उपरान्त बर्तनों को मांजकर थोड़े समय तक उलटा करके रख देते हैं, तुरंत काम में नहीं लेते हैं। रास्ता तो वही फकीरी का ही

है, चक्रवर्ती भी हुआ तो क्या हुआ? ऐसे में उपदेश की क्या आवश्यकता होगी होगी? थोड़ा बहुत ले लो सौभाग्य होगा हमारा। इस समय तो मोक्षमार्ग में जो पद है उसको ज्यों का त्यों बनाये रखना है। एक स्थान पर उल्लेख मिलता है त्याग धर्म क्या होता है, इससे समझ में आ जायेगा।

चक्रवर्ती का भोजन कोई भी नहीं कर सकता है। एक लड्डू को आधा करके उसकी पूरी सेना को दिया जाय तो उनका पाचन बदल जाता है। देना ही नहीं, इतना गरिष्ठ होता है - पूरा नहीं आधा लड्डू भी पूरी सेना खा नहीं सकती। कवालीटी इसी प्रकार की रहती है। अब वो चक्रवर्ती यदि भिक्षुक बन जाये/ साधु बन जाये तो एक बार ही भोजन मिलेगा। आर्यखण्ड के बाहर तो जायेगा ही नहीं, वे कैसे करेंगे?

जो आप देंगे उसी में संतोष कर लेंगे। भूख-भूख चिल्लायेंगे नहीं। भगवान का नाम लेंगे। कोई भी संकेत नहीं करेंगे। चक्रवर्ती के पेट की अग्नि/जठराग्नि की तुलना ज्वालामुखी से की गयी है, एक बार फट जाय तो आग उगलती रहती है। कई देशों में ऐसी आग उगल ले रही है। ऐसी क्षुधा को भी वे सहन करते हैं। एक बार भोजन करके। उपवास करने पर तो उनकी असंख्यात निर्जरा होती है। समता से सहते होंगे तब जाकर केवलज्ञान होता है। इसे आप समझो - जो कुछ भी आवश्यक है उसमें से थोड़ा त्याग करना आगे बढ़ना कहलाता है। दूसरों ने क्या किया यह मत देखो। अपने स्वयं को देखो। हमारी आदत दूसरों को देखने की पड़ गयी है। इससे स्वयं का अहित कर रहे हैं।

Date

उन चक्रवर्ती जो मुनिराज हो गये अब देव लोग भी आकर देंगे तो नहीं लेवायेंगे। श्रावक लोग देंगे तो शुद्धिपूर्वक तो पड़गाहन में आयेंगे। निमन्त्रण से नहीं आयेंगे। आप लोग बीच-बीच में एक-आध बार तो कह ही देते हैं। क्या करें! रहा नहीं जाता। जब काफी दिन से कोई पड़गाहन नहीं मिलता तो विकल्प हो जाता है। लेकिन यदि कह देते हो तो न तो कभी ही मिलेगी। निर्विकल्प रहना ही ठीक है।

त्याग का त्याग नहीं होता, यह तब होता है जब संलेखना होती है। निर्यापक आचार्य जो भी होते हैं उनका संकेत पाकर उस अनुसार पालन करने पर यह स्थिति बन सकती है। इसलिये अपनी अधिक से अधिक तैयारी कीजिये जिसे छोड़ना है। जो अनिवार्य रूप से छोड़ना है, इसे अभी से प्रारम्भ कर दीजिये। सब लोग अपने-अपने भाव से अर्थ लगा लेते हैं।

हम जो कह रहे हैं, इसका अर्थ हमारे अनुसार लगायेंगे तो फल मिलेगा। दुकान चलाने की पद्धति होती है, दूसरों को त्याग कराकर आनन्द का अनुभव करते हैं। दिक्का वही है, एक अभी सोच ही रहा है क्या करूँ - क्या नहीं करूं। दूसरा तुरंत उसका त्याग करदे वह पा लेता है जो सोचने वाले को नहीं मिला। आप लोग जो त्याग करता है उसकी अनुमोदना करेंगे नहीं कर पा रहे तो अनुमोदना करके कुछ कमाई तो कर लेंगे। आप सभी इस त्याग के मार्ग में आगे बढ़ें - इन्हीं भावनाओं के साथ। इसे अपने और लोगों तक भी पहुँचाने का त्याग करना। अहिंसा परमो धर्म की जय। हूँ

Date
3-9-16 "आनंद अनुभूति का" प्रात: 9-15

अपने यहाँ जिस वस्तु को प्राप्त करना है, उस वस्तु को प्राप्त करने में कभी-कभी ये भूमिका अवश्य बन जाती है - वो है श्रद्धान। जैसे आप लोगों को घी प्राप्त करना है। आप सब घी से परिचित हैं। कहाँ से मिलेगा वह घी? दुकान पर। नहीं। घर पर पैदा होता है, बाद में दुकान पर आता है। दूध से आप सभी परिचित हैं। उस दूध में विद्यमान घी से भी आप परिचित हैं। विश्वास - श्रद्धान तो करना होगा।

घी जब भी मिलेगा दूध में ही मिलेगा। पक्का है। आप कहते हैं दिख तो रहा ही नहीं है। उस घी की न गंध आ रही है, न ही वैसा स्पर्श अनुभव में आ रहा है फिर विश्वास कैसा है। पक्का है घी उसी से प्राप्त होगा। ये विश्वास होना चाहिये। विश्वास है तो आनंद आना चाहिये। आनंद आयेगा तो विश्वास का आयेगा, अनुभव का नहीं। आनंद घी का आयेगा? आप हव कह सकते हो, हम तो हाँ नहीं कहेंगे।

गंध भी नहीं - स्पर्श भी नहीं - दिख भी नहीं रहा फिर भी आप लोगों को आनंद आ रहा है। ऐसा कर लो, एक गिलास दूध ले आओ। एक दीपक लाओ उससे आरती करना है। बाती को दूध के गिलास में भिगो दो अब जलाओ - आरती उतार लो। ऐसा संभव नहीं। संसार में बहुत से लोग फिर भी आनंद का गटागट ले रहे हैं, स्वाद ले रहे हैं, हमें समझ में नहीं आ रहा ये क्या है? श्रद्धान होने के उपरांत भी आनंद आ जाये। दूध का ही आयेगा, घी का नहीं आयेगा। जब तक उसकी प्रक्रिया से

गुजरेंगे नहीं तब तक आनंद नहीं आयेगा। जो-जो आप चाहते हो उसके लिये समर्पित होकर आगे आना पड़ेगा - तब कहीं जाकर वहाँ तक पहुँचेंगे।

अब आपके पास 10 किलो दूध है। उसमें घी मात्र एक किलो ही निकला। दूध पचासों व्यक्तियों के लिये हो जाता। दूध से ही घी निकला है। आप स्वस्थ तो मान रहें हैं पर गटागट का आनंद नहीं ले रहे हैं। बहुत दूर है अभी तो गतपट चल रहा है। रास्ता दूर है। जो मात्र श्रद्धान की ही बात करता रहेगा अनुभूति जीवन में नहीं पायेगा। इतने ले उतने क्यों आयें। आपको पुरी अनुभूति होती होगी, हमारे लिये थोड़ी बहुत तो आती होगी - ऐसा भी श्रद्धान है।

श्रद्धान में भी जब अनुभूति की ओर कदम बढ़ने लग जाते हैं तब आनंद का स्वाद आने लगता है। आचार्य कहते हैं कोई भी श्रद्धान पक्ष के साथ ही होती है। अनुभूति वर्तमान में होती है, श्रद्धान तीनों काल संबंधी है। अनुभूति जब भी होगी तात्कालीक ही होगी। इसलिये जो घर में बैठे-बैठे वितरागता का अनुभव कर रहे हैं उनसे कहना है अपनी धारणा थोड़ी बहुत तो बदलें। थोड़ी ही क्यों पुरी बदलो। आत्मा का समय हो गया है। पूजन करने में अभी आप लोगों को आनंद आया। प्रयोग में लाइये। जब तक धर्म को प्रयोग में नहीं लाओगे तब तक आनंद नहीं आयेगा। प्रयोग के बिना शिक्षा अधूरी है। वहाँ तक पहुँचा दो इस चिंतन को। अभी आपके चिंतन में ऐसा नहीं आया। ये भी पुरा नहीं है हाँ ये ही पुरा नहीं है। अहिंसा परमो धर्म की जय।

Date : ☐Mo ☐Tu ☐We ☐Th ☐Fr ☐Sa ☐Su

4-9-16 "प्रायोगिक हो शिक्षा" प्रातः 9:15

एक व्यक्ति बनारस के एक विद्यालय से पढ़कर पुनः घर पर आ गये। अब उनके लिये जो प्रासंगिक विषय था उसको प्रयोग करने को कहा। वह पाक शास्त्र में निष्णात होकर बनारस से आये थें। पाक से मतलब पकाने से है - पाकिस्तान से नहीं। उसने सोचा देश एवं विदेश के सब लोग खुश होंगे। जैसे-जैसे लिखा था, वैसे-वैसे प्रयोग करने में लगा। इतना ये - इतना ये होना सब किया किन्तु रोटी गोल नहीं बनी। बार-बार कोशिश करें किन्तु बार-बार बिगड़ जाय। उसमें बहुत सारी आंखे आ गयी। कौन खायें इसे। स्वयं भी नहीं।

वहीं पास में बहन बैठी थी। वह कहती है जिस समय गये थे - उसी समय बना सकते थे। दादी माँ ने हमको सब कुछ सीखा दिया है। अब बोलो। आजकी ये दशा हो रही है। श्रम और प्रयोग के अभाव में ऐसा हो रहा है। मात्र किताबी ज्ञान का लोड लेकर चल रहे हैं - इसी का यह परिणाम है। आज ही सुबह-सुबह किसी ने बताया मध्य प्र० की राजधानी में 80,000 से अधिक इंजिनियर डिफाल्टर हैं। उन्होंने इस प्रकार की मात्र डिग्री हासिल कर ली नौकरी के चक्कर में, वो भी लोन लेकर ऐसा किया।

ऐसी स्थिति में क्या समझ रहे हो कौनसी शिक्षा और कौनसी पद्धति आ गयी है। इतना कि उसका कोई उपयोग नहीं हो रहा है। घर वाले समस्या में, कम्पनीयाँ समस्या में, सरकार समस्या में, स्वयं समस्या में सब कुछ समस्या में है। माता-पिता के घर पर चरखा था, वो अच्छे ढंग से सीख लेते तो आज पूजा होती। (तालीयाँ) कवियों की सभा में तालीयाँ नहीं पर कवी भी ताली

Date :

बजा रहे हैं। ताली बजवाने की भी कला होती है। प्रयोग की ओर दृष्टि रखना पहले आवश्यक है।

एकभाई में बहुत पहले ही लिखा कि पाकशाली भी क्यों न हो - निष्णात से निष्णात की भी पहली रोटी तो कड़क ही बनेगी। पहली रोटी गैया की। गैया भी आपकी समीक्षा कर रही होगी। जिसने यह रोटी बनायी वह ऐसा है। यैस्थिति है। जितना सीखाओं अपनी संतान को सही दिशा में सिखाओ ताकि वह ख्याप्ति हो सके।

गांव वाले ही शहरों में आये हैं। पाठशाला मतपढ़ो करना/प्रयोग चालु कर दो। एक-दो बार में ही निष्णात। विदेशी शिक्षा प्रणाली से ऐसा ही होगा। 80,000 इंजीनियर डिफाल्टर घोषित हो गये। शासन-प्रशासन भी क्या करें। वे सारीसारी सुविधायें कर भी कहाँ पायेंगे। किसने अनुमति दी इनको खोलने की। धड़ाधड़ इंजीनियर कॉलेज खुल रहे हैं। संख्या एक-दो नहीं 80,000 है। इसलिये अब शिक्षानिति में परिवर्तन की योजना बन रही है। क्या योजना बनायेंगे?

इस तरह के पढ़े-लिखे लोगों के सामने - ऐसी स्थिति - अवाक् रह जाते हैं। आप कहेंगे महाराज पंचमकाल है मतलब अभी तक तो चतुर्थ काल चल रहा था। आपका सम्पर्क इतिहास से नहीं रहा इसलिये ये सब हो रहा है। पैसे की अब वेल्यु नहीं अवमूल्यन हो रहा है। आप रुपये कह रहे हो - वो है ही नहीं। मुद्रा का अमूल्यन होना ही बता रहा है कि आपके व्यापार की नीतियाँ सही नहीं हैं। आप अपने प्रत्येक अंग का परीक्षण कराइये। एक हाथ छोटा, एक हाथ बड़ा हो रहा है। हो सकता है वह निरोगी हो पर दोनों हाथ बराबर होना चाहिये। इतिहास का

अध्ययन होना चाहिये। महाराज आप तो बस प्रवचन देती जाओ हम सब संकलित करके चातुर्मास के अन्त-अन्त तक स्मारिका निकाल देंगे, जिसमें सारे प्रवचन होंगे फिर उसे विस्मारिका बना देंगे। ये कोई नहीं जानता की जो पंक्ति छूट गयी है तो क्या होगा। एक-आध तो छूट ही सकती है महाराज इतना तो आप क्षमा के सागर है। ये ही उद्यम है। बार-बार ऐसा करोगे तो क्या होगा? कहाँ रखोगे ये सब चिंतनीय विषय है। इसलिये नीति-निर्धारण की बात आपके सामने आयी है। शिक्षा नीति में परिवर्तन की बात है। लेकिन मत होकर यदि नहीं रहोगे तो इससे भी गये-बीते दिन आने वाले हैं। इतना वह बनारस में पढ़ लिया किन्तु पाकशाला के प्रयोग में तो शून्य है। दादी माँ के पास भी उस महाविद्यालय से ज्यादा ज्ञान मिल सकता है। घर की नहीं, देश की नहीं अब तो विदेश की बात करते हैं। विश्वशांति महायज्ञ करने वालो घर की शांति का यज्ञ पहले करवाओ। फिर आगे देखो। अहिंसा परमोधर्म की जय। नँ

5-9-16 "दीपक नहीं रत्न बनो" प्रात:9.15

सुनते है कुछ वस्तुयें ऐसी जिनकी छाया नहीं पड़ती। प्रायःकरके सबकी छाया पड़ती है। छाया को देखते है तो ऐसा लगता है प्रकाश का अभाव है। आत्मा अमूर्तिक है उसकी छाया नहीं पड़ती शरीर मूर्तिक है उसकी छाया पड़ती है। हमारी छाया जिसपर पड़ती है वह प्रकाश से लुप्त हो जाता है। कहते है-उनकी तो छाया से भी दूर रहना चाहिये। छाया से भी बचना चाहते है ऐसी आपकी और हमारी दशा है। छाया को कैसे समाप्त करोगे। विकास करने पर

संभव है। देवों की कभी छाया नहीं पड़ती, फिर भी उनसे बचना चाहते हो। माया के कारण प्रभावित होते हैं आप लोग। देवी - देवताओं से डरते हैं - डरना चाहिये। अब देखो कोई व्यक्ति कार में आ गया हमारा जीवन बेकार हो गया। कैसे मिले यह कार? बिना पैसे तो आती नहीं तो अब इसे लोन पर लेने के लिये पहले हव कह दो, बाद में देते रहेंगे।

हमने तो पुछताछ करली उसकी वो जाने, अड़ौस - पड़ौस से भी बचियों। माया के चक्कर में आयेंगे तो प्रकाश लुप्त हो जायेगा। "वर्णविकार निमित्ता छाया" ऐसी छाया से धूप/प्रकाश भी लुप्त हो जाता है। ये हमारी छाया का परिणाम है। आत्मा कहाँ है? आत्मा की तो छाया पड़ती नहीं। जीवन का विकास हुआ। मिथ्यादृष्टि से सम्यग्दृष्टि हो गया। इससे कोई फर्क नहीं। आत्मा की नहीं शरीर की ही छाया पड़ती है। उसे मिल गया - वो हमें भी मिल जाये। ऐसी क्रिया करो। दिन दुनी - रात चौगुनी वृद्धि। तभी यह गठित होगा।

रात की कल्पना ही नहीं होती। देवता लोग थकते नहीं अतः सोते भी नहीं। थकावट हो तो सोयें। उनका रूप देखते रहीयो। ऐसे देवता भी धरती के श्त का रूप देखकर लट्टू हो जाते हैं और उस समय भक्तामर की 12वीं कड़ी ये शान्त राग रुचि भी परमाणु . . . . . याद करते हैं। कोई तंत्र नहीं, कोई मंत्र नहीं, कोई यंत्र नहीं फिर भी वे स्वतंत्र होने में लगे हैं। विदेशों में भी भक्तामर - पाठ से बड़े-बड़े प्रयास हो रहे हैं। सदुपयोग करों - बड़ी कठनाई से ये सब प्राप्त होते हैं।

आप लोगों के यहाँ दीपक जलता है। उसके चारों ओर

Date :

प्रकाश होता है, किन्तु उसके नीचे अंधेरा होता है। दिया तले अंधेरा कहावत ही है। ये ही तो है छाया (ज्ञान का सदुपयोग करो, व्यवसाय करोगे तो तुम्हारी छाया को तो तुम्हें छोड़ना ही होगा अन्यथा इस ज्ञान के प्रकाशक भी अंधेरे में रहते है, रह रहे हैं। ज्ञान के प्रकाश को समझ नहीं पा रहे हैं।

उस समय के व्यक्ति प्रकाश से क्या अर्थ लेते थे धीरे-धीरे ज्ञात हो रहा है। देवों में तो दिपक जलते नहीं फिर भी प्रकाश होता है। वहां दीपक की आवश्यकता नहीं क्यों की बहिर्वस्थिता अर्थात नृलोक के बाहर सब अवस्थित हैं। विमान में हमेशा - हमेशा प्रकाश बना रहता है। ऐसा प्रकाश जहां दीपक की आवश्यकता नहीं, फिर भी आनंद लेना चाहते है तो वहाँ दीपक नहीं रत्न-दीपक होते है। रत्नों के दिपक में उसके चारों ओर ऊपर-नीचे, दांये-बांये सब ओर प्रकाश होता है।

ऐसे ही ज्ञान की आराधना करो तो कुछ काम बने। घर को तो छोड़ना है - अब बेघर होना है। (10 दिन) घर, आंगनवाड़, तोरणद्वार भी छोड़ना है, अब भगवान के द्वार आये हैं। 10 दिन के लाने आये हो। रत्न के दीपक के प्रकाश में रहना चाहोगे तो हम देंगे। हम तो रत्नत्रय के प्रकाश में रह रहे हैं। आप लेने आये हो तो हम देने के लिये तैयार है। भीतरी आँखे खोलने की आवश्यकता है। लाने के लिये नहीं आये - आंखे खोल लो तो पर्याप्त है। कल से पूर्व ही यहाँ भर्तीकरण हो गया। प्रबंधन की आवश्यकता है। चर्चा में आओगे - हम तो आयेंगे। सब लोगों के साथ राजधानी

Date :

के अनुसार हो। सब तरफ लाइट जलती है - संयम भी रत्नत्रयी। अविरति बनकर आये हो, सावधानी के साथ रहना होगा। रत्न-दीपक की तुलना नहीं की जाती। आप अपना दीपक देखें। ज्ञान को ही दीपक बनाकर चलना है। इसमें लपटें नहीं किन्तु प्रकाश भरपूर है। हीरा-मोती - सोना - चांदी सब आप लोग भी रखते है किन्तु चारों तरफ प्रकाश नहीं क्यों की रत्नों को झड़कर रखना होता है। जड़ने का काम आपका है। तत्त्व का भीतरी दर्शन हो जाये। दूसरे को देखने से ऐसा होता है। स्वयं को देखें। रत्नप्रकाश से भी ज्यादा चमक है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हैं

दिनांक - 6-9-16 से 16-9-16 पर्युषण पर्व - अलग डायरी में है।

17-9-16 "व्यर्थ न जाये एक भी घड़ी" प्रातः 9.15

एक-एक दिन पूर्ण होते-होते दशलक्षण पर्व पूर्ण हो गये। आज भी सुबह-सुबह ही इतनी भीड़ आ गयी - सोचो प्रबंधकों का क्या होगा। इसी प्रकार सौधर्म इन्द्र आदि 2-2½ हजार सागर की आयु पूर्ण कर लेता है। 170 कर्म भूमियाँ हैं, उनमें सौधर्म इन्द्र प्रत्येक पंचकल्याणक में आयोजक बनकर अपना आधिपत्य रखता है, कभी उसके जीवन में शोक की लहर मात्र भी नहीं आती। वैराग्यप्रद वातावरण तथा अध्यात्ममय वातावरण महान् पुण्य के उदय से होता है, हम इस रूप में नहीं सोच पाते हैं। दुर्लभ क्षण है, जिसको मिलना होता है उसी को मिलता है।

हमारे परिणाम कितने घातक होते हैं और हमारे ही परिणाम सिद्ध अमावस्या की रात में भी उजाले का काम करने लग जाते हैं। यह कर्मों का वैचित्र्य है। मांगने से कभी मिलने वाला नहीं है। भोपाल वालों से पूछो - कैसे मिला है उन्हें। आप लोगों का पुण्य था।

Date

एक-एक कली का उपयोग हो, इसका अपव्यय नहीं होना चाहिये। कठनाइयों की ओर मत देखो, यह तो हमेशा जीवन में बनी ही रहती है। हर्ष के भी आंसू आते हैं एवं शोक के भी आंसु आते हैं। काम ऐसा ही है। आगे का काम भी हमें पुरुषता कर लेना चाहिये। वर्षा तो होगी। पानी आयेगा पर बांध-बांधकर नींव को मजबूत करके बना लो तो उस करोड़ो टन को सहन करने वाली क्षमता का होना है।

ऐसेलीकर्न के लिये बांध बांधना है। जो कार्य करना है उसे कर सकते हैं। एक बार बांध बांध लिया तो अनंतकाल तक वह कार्यक्रम चलता रहेगा। आप सोचो, गरीबो के यहाँ त्यौहार एक दिन, रईसों के यहाँ प्रतिदिन त्यौहार होता है) हमेशा-हमेशा त्योहार के लिये वैराग्य की आवश्यकता है। अपने वैराग्य को बढ़ाइये। दुःख नहीं होता तो सुख में आंखे बंद कर लेते हैं। शास्त्रों में लिखा है, छठें गुणस्थान में आते है पर बाधक नहीं होता, गाफिल नहीं होते। सब कुछ छोड़-छाड़ कर आये हों, वहाँ भी पर्युषण मनाया होगा। पर एक महिने तो यह चलता रहता है। इधर-उधर की बातों में नहीं आना। ऐसे अवसरों में उपस्थित हो अपने परिणामों का सदुपयोग कर आगे की भूमिका बनाते जाना। इस ओर अपने परिणामों को लाने में सहायक बनें, इसी भावना के साथ। भीड़ को निकलने में टाइम लगता है। भगदड़ नहीं मचाना। पड़गाहन वालों की भी चिंता करनी चाहिये। व्यवस्थित कार्यक्रम करोगे तो अधिक आनंद आयेगा। अहिंसा परमो धर्म की जय।

Date : 19-7-16 ..... बता दो रास्ता क्या है? प्रातः 9.15

जिस रास्ते से आप आये है, बस उस रास्ते से नहीं जाना रास्ता आपको मिल जायेगा। ये उसका पता है, लिख लो। जिस रास्ते से आप आये है, उससे तो आप परिचित है ही, बस उस रास्ते भर से बचना है। वो टेड़ा-मेड़ा हो सकता है किन्तु ये तो सीधा रास्ता है। इतना सीधा तो संसार में कोई नहीं है। ऐसा यह मोक्षमार्ग है। जिसपर आपको चलना है।

अभी मैं सोच रहा था, बारह सभायें होती है - समवशरण में। भवनत्रिक देव एवं देवियों की अलग-अलग, कल्पवासी देव एवं देवियों की अलग-अलग। बारह में से 8 निकाल दिजिये। तिर्यञ्चो की एक, मुनिमहाराज के लिये एक, मनुष्यों (पुरुषों) की एक तथा महिलाओं की एक इसी में आर्यिकायें व्यवस्थित रहेगी। इस तरह कुल बारह सभायें है। आर्यिकाओं का अलग कोठा नहीं, यदि अलग रहेगी तो कैसे व्यवस्थित करेगा। अनादिकालीन व्यवस्था है।

देव लोग बहुत व्यवस्थित रहते है फिर भी वहां देवीयों को अलग एवं देवों को अलग रखा। जब धर्मसभा में ऐसी मर्यादा है तो कर्मसभा में तो आपको अवश्य व्यवस्था रखना ही है। लोकतंत्र का मतलब चाहे जैसा नहीं है। देवलोगों की व्यवस्था ऐसी कि सुई भी गिर जाये तो आवाज आ जाये। अतः शिक्षण की व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन किया जावे। ये सबसे प्रथम-चरण में रखें। हम समझेंगे की आपने बहुत अच्छा किया है। व्यवस्था ही गड़बड़ हो गयी है। शिक्षण पद्धति में ये कभी भी लेना ही नहीं चाहिये।

Date :

जब तक शिक्षा का काल है तब तक इन बातों से दूर रहना चाहिये। रोग की चिकित्सा करना चाहते हो तो, रोग के आने के मार्गों को पहले से ही बंद कर देना चाहिये। जो हमसे पूछता है कि रास्ता बता दो तो हम तो इसी प्रकार देंगे।

मात्र दोहा नहीं है यह, रास्ता है। जो भी विद्यालय हो चाहे प्राथमिक - माध्यमिक - उच्चविद्यालय, महाविद्यालय अथवा कोई सा भी हो यदि चलाते हैं तो पहले यह व्यवस्था कर लें। इसमें कोई दोष नहीं हैं। इससे शारीरिक एवं मानसिक चिकित्सा भी हो जायेगी। अभिभावक भोले - भाले बन जाते हैं। विदेश को देखो। यहां न ही हम करना चाहते हैं न ही हम करवाना चाहते हैं। पानी कैसे पीया जाता है ये भी सिखाना जरूरी है। प्याले से कैसे, कटोरे से कैसे अथवा गिलास से कैसे पीया जाता है। खड़े होकर कैसे - बैठकर कैसे पिया जाता है।

ये सब भगवान नहीं-हम ही कान पकड़कर सिखा सकते हैं। कानों को अपने हाथों से रेंचा करो, ब्रह्मरन्ध्र का सम्पर्क ठीक-ठाक हो जायेगा। बुद्धि का विकास होगा। पहले कुण्डल इसीलिये पहनते थे। नाटक में नहीं ब्रह्मरन्ध्र के लिये पहनते थे। तिलक भी इसीलिये लगाते हैं, इससे ब्रह्म-रन्ध्र खुल जाता है। माथा गरम नहीं रहता - ठण्डा हो जाता है। गरम-गरम शब्द नहीं निकलना चाहिये।

समोशरण की व्यवस्था को लेकर हमने अपनी बात रखी। विद्यार्थी जीवन में क्या ग्रहण करना एवं क्या ग्रहण नहीं करना यह जानना जरूरी है। विकारों

को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिये। विकारों को पहले ही प्रारम्भ कर देंगे तो बाद में गृहस्थ अवस्था में कोई काम के नहीं रहेंगे। जैसे वृक्ष को बढ़ाना है तो उसके साइड में शाखा-उपशाखा आ जाती है उन्हें अलग कर देते हैं। मात्र तना को ही खुराक मिले तना का मतलब ही जो तना रहे। ऊपर जाकर फिर वे शाखा-उपशाखा उस वृक्ष पर खूब झूमती है। नीचे का तना ठीक नहीं ऊपर तक जाता है तभी वृक्ष का विकास माना जाता है। उसकी सुन्दरता, उसकी गोलाई, उसकी छाया कॉपी दूर तक जाती है। राजस्थान में ऐसे-ऐसे वृक्ष जिनके नीचे 500-500 गाय भी आराम से बैठ जाती है। यदि पहले ही शाखा-उपशाखा फैला दो तो कुछ नहीं रहेगा। इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में आप सभी को ध्यान देना चाहिये।

आज यहाँ एक-एक कमरे में A.C. चाहिये। कैसे कटेगी जिन्दगी। जिन्दगी काटने के लिये नहीं होती, बनाने के लिये होती है। हमारे यहाँ काटने की बात ही नहीं की जाती। काटना शब्द भी हिंसा का द्योतक है अतः बना लो या बनाकर दो या सुधार लो बोलते है। हमारी संस्कृति में टुकड़ा नहीं बोलते - रोटी का टुकड़ा दे दो ऐसा नहीं कहते - रोटी का ग्रास दे दो। चोर की भाषा को सीख लो। चाकू से काटना नहीं - बना लो कहते है। दलिया बना दो - मतलब बनी हुयी दलिया को व्यवस्थित कर लो। उसमें कितना क्या-क्या मिलाना है अन्दर से ही करके लायें। सीखो तो। अब घर में रहता कौन है। आप लोगों के घर में लक्ष्मी कैसे आये। दिन में भी बंद - रात में तो बंद रहता ही है। धनतेरस आने वाली है, कब आयेगी वह लक्ष्मी। घर में रहते हो तो घर को बंद नहीं रखना

चाहिये। पहले के लोग बंद करते ही नहीं थे - कहते थे लटका दो/ अटका दो। अब ये सब भाषा चली गयी। इस बात में विदेशी बात आ गयी। 15 मिनिट पर्याप्त सम्मति है। इतना ही समय मुझे दिया गया था। रास्ता पूछा तो हमने बता दिया। जिधर से आये हो उधर नहीं जाना है। शिक्षा प्रणाली में यह सुधार करना चाहिये। एक भाषा है। एक से बढ़कर एक संस्कार होना जरूरी है। जब समवशरण में ऐसी व्यवस्था हो सकती है तो विद्यालय में क्यों नहीं की जा सकती। इतना ही। अहिंसा परमोधर्म की जय। बैठे

मंगलवार - प्रतिभा स्थली के बच्चों द्वारा कार्यक्रम

20-9-16 "आवो करें सक्रिय सृजन" प्रात: 9.00

निष्क्रिय सृजन के लिये 10 मिनिट लगते थे - सक्रिय सृजन के लिये आधा घण्टा लगा। (अष्टद्रव्य के बीच-बीच में सारे म्युजिक की प्रतिरूप से अद्भुत प्रस्तुति) ऐसा लग रहा था हम बैठे बैठे पट विचारों से चल रहे हैं। विचारों में ऐसी ही शक्ति है, मूक बोलने लगता है, पंगु चलने लगता है, अंधे को दिखने लगता है। मंगलगीत प्रारम्भ हो गया है। सूरज आसमान में है, नीचे दिपक हिमहिमा रहा है - पुरुषार्थ प्रारम्भ हो गया है। प्रकृति में गति आ नहीं सकती, प्रकृति में गति पुरुष के माध्यम से ही आती है। पुरुषार्थ से ही पुरुष गति लाता है।

प्रभावित करना हमारा उद्देश्य नहीं, भावित करना हमारा उद्देश्य है। तोता और हमारे बिच में अब ज्यादा अंतर नहीं रहा। जैसे तोता रटता है वैसे ही आप लोग रटते जा रहे हैं, इससे परिवर्तन नहीं आ पायेगा। अब फूल की कलियों खिल चुकी है। आपने अभी दृश्य को

Date :

आंखों में भर लिया होगा। भारत में अभी मात्र आधा मीटर में वह ताना एवं बाना के माध्यम से खड़ा करके दिखा दिया। जनता भी आज खुब आयी है।

हम श्रमिक नहीं बन पाये, यही हमारी रुग्णता का कारण है। भारत की जड़े बहुत गहरी है। किन्तु विदेशी यंत्र के माध्यम से सब गड़बड़ हो रहा है। एक ही वृक्ष के ऊपर कलम के माध्यम से आलू-प्याज - बैंगन उगने लगे है। जमीकंद अब आसमांकंद हो गया है। प्रातःकाल हम जब जंगल जाते है तो ऐसे पेड़ मिलते है, जिनका कोई अर्थ नहीं है न ही छाया है, न ही फल है, कोई मूल्य नहीं है। मूल तो वही वृक्ष है जो अनादि निधन है। धरती भारत की है, पर उगाने वाले विदेशी आ गये, इसलिये ऐसा दिख रहा है।

भारत के पूत हो, संभावना नहीं - भावना रखीये। शीघ्र ही वहाँ तक पहुँच सकते हो। अभी आपने एक - एक अर्घ्य चढ़ाया। जैसे प्रभु को अर्घ्य चढ़ाते हो वैसे जन-जन तक पहुँचना है। जीव जब जीव से मिलेगा तो कर्मो का सत्यानाश जरूर होगा। जीव जब अजीव से मिलेगा तो संसार का विकास होगा। मोक्ष तक की यात्रा जीव कर सकता है। कलमी पद्धति ने हमारी कृषि को चौपट कर दिया है। बीज को सुरक्षित रखना बहुत जरूरी है, अन्यथा हमारे लिये बहुत हानिकारक होती है। वक्त के अनुसार समझ सकते है नहीं तो धरती पड़ी रहेगी। विचार के माध्यम से मूर्त रूप दे सकते है। पैर नहीं चलते, विचारों के माध्यम से ही पैर आगे बढ़ते है। आराम नहीं करना है। आराम तो हराम है। आराम करेंगे तो राम नहीं

मिलेंगे। पैरों से चलकर राम के पास जाना है। 24 घण्टे सूर्य भी आपका सहयोग करेगा। यदि सो जायेंगे तो दिन भी रात जैसे गुजर जायेगा। जीवन को व्यवस्थित एवं सुरक्षित करना है तो सोना नहीं है। विचारों को जाग्रत बनायें। अहिंसा परमो धर्म की जय।

20-9-16 "गुरुता गुरुजी की" दोपहर 3.00

गुरुवर का जीवन अध्ययन करने एवं अध्यापन कराने में ही पुरा हुआ। उनके सरस्वती कण्ठ पर विराजमान थी, परोपकार ही उनका संकल्प था। मांगकर जीवन यापन नहीं करना अपितु जिन्हें मांगने की जरूरत थी उन्हें ढूंढकर दे देते थे। एक बार उनसे किसी ने पूछा- आपने पहले बड़े-बड़े ग्रन्थों का सृजन किया फिर बाद में मध्यम श्रेणी अर्थात जीवन निर्माण के उद्देश्य हेतु काव्य का निर्माण किया ऐसा क्यों? उन्होंने कहा- बड़े-बड़े महाकाव्य तो काम करेंगे ही- बाद में जीवन यापन हेतु इन मध्यम श्रेणी के काव्यों का भी महत्व है। प्राय बड़े काव्य के बाद मध्यम काव्य की रचना नहीं करते जब जी आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज ने ऐसा कर सफलता अर्जित की। संस्कृति की यह विशेष बात है, जो आज प्रारम्भ कर रहे हैं उन्हें भी दे देते हैं। बड़ों को पढ़ाते-पढ़ाते आज का बालक भी आ जाये तो उसे भी पढ़ाते थे। लोग कहते - ये कौनसा अध्यापक है, जो किसी को भी पढ़ा सकता है। निष्णात है। शिक्षिकायें एवं शिक्षकों को रहना है बच्चों के बिच तो इसे ध्यान रखना है। यदि ऐसा करेंगे तो दरिद्रता मिटने में देर नहीं लगेगी। हमें बड़े शिक्षक हैं- लघु विद्यार्थी हैं तो उसे गुरु (बड़ा)

बनाना ही हमारी परम्परा है। गुरु वही जो बड़ा हो/बड़ा बनाये। गुरुकुल में कोई लघु होता ही नहीं है।

जैसे धरती में बीज डाल दिया जाता है। अंकुरित होने पर इसमें छोटे-बड़े का भेद नहीं रहता। कोई भी धान्य वहीं पर बनी बीजों अपनी पहचान रखता है। बीज का वपन किया है आपने, कुछ नहीं किया। उसकी जो शक्ति है वह सामने आयी है। छोटा होकर भी बीज बड़ा काम करता है। शिक्षिकाओं को यह ध्यान रखना चाहिये। वटवृक्ष का बीज खसखस के दाने से भी छोटा होता है, पर जब सामने आता है तो एक हजार गायों को भी अपने नीचे आश्रय दे देता है।

एक बीज में ही इतनी क्षमता तो बहुत सारों की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। दिन दुनी और रात चौगुनी वह काम करेगा। वह देश ही नहीं विदेश में भी अपना प्रभाव डाल सकेगा। एक सूर्य जो पूरे विश्व को प्रकाशित करने की क्षमता रखता है किन्तु यदि छोटी सी बादल की टुकड़ी भी यदि सामने आ जाये तो उसके प्रकाश को रोक देती है। वह सूर्य जो ऊष्मा एवं प्रकाश दोनों ही प्रतिदिन देता है। इसमें कभी गड़बड़ी नहीं होती। चाहे कोई सा भी वार हो या कोई सी भी तिथी हो। जब वह डूब जाता है तो जनता थककर शयन करने लगती है। पुनः जगने पर जनता अपना कार्य प्रारम्भ कर देती है।

हम गुरुओं को याद रखें। अंत में गुरुजी ने कहा था- विद्या ददाति विनयं। विद्या लेते ही काम नहीं आती। ये मत समझो की हमारा श्रम बेकार जा रहा है।

नौकरी के लिये ही मात्र विद्या-अध्ययन न हो। विद्या का काम है - अविद्या / भ्रम / विभ्रम / अन्धकार को दूर करना। हमारे पास जानने की शक्ति है पर अन्धकार में वह शक्ति है जो हमारी उस दृष्टि को भी विभ्रम कर देता है। अभी सूर्य का उदाहरण दिया था।

सुबह - सुबह उठते हो आंखों को धो लो या मल लो स्पष्ट दिखने लगेगा। गुरुजी कहते थे - कभी भी हम बड़े है ऐसा कभी नहीं सोचना। प्रत्येक में बड़े होने की क्षमता विद्यमान है - इसे पहचाने। अस्त-व्यस्त जीवन को मस्त बनाने का उपक्रम है ये कार्यक्रम। इस पर विचार / मंथन करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय

21-9-16 "आवों लौट चलें...." प्रातः 9.15

विस्तार और संक्षेप दो प्रकार की विधी हुआ करती है। संक्षेप का मतलब थोड़े में समझ लो। विस्तार मतलब ये कि खाली बैठे है - निठल्ले बैठे है तो ज्यादा सुन लो। कल आपके विज्ञापन को (प्रतिभास्थली की प्रस्तुति) हमने पढ़ लिया एवं देख लिया। आपका उद्देश्य दिखाने का था था कुछ और था पता नहीं।

जो किसान होता है, उसके ऊपर उस युरिया, या अन्य औषध का क्या प्रभाव पड़ रहा होगा। सरकार सुन भी रही होगी। सरकार में आप ही है। सरकार के सामने विज्ञापन दे रहे है। जब आप ही सरकार है तो किसको सुना रहे हो। किसके लिये सुना रहे हो। सरकार बस नाम है। बड़ा अटपटा जैसा लगता है। सब सो गये है, इससे स्पष्ट है।

ज्ञात होने पर भी उस रास्ते को छोड़ता नहीं तो उसका समय एवं श्रम दोनों बेकार गये। ऐसे विज्ञापन भरे पड़े हैं, दिवारों में भी देखते रहते हैं। वही पाठ्यक्रम में पढ़ा जा रहा है। इसे देखकर लगता है यह कैसा देश है। अब पक्का हो गया कि एक भी नम्बर देने योग्य नहीं है।

बच्चों के लिये घड़ल्ले से विद्यालय खोलते जा रहे हो। बच्चों के माता-पिता भी आँखे बंद किये हुये हैं। आपने संक्षेप कहा- इससे ज्यादा संक्षेप क्या करूं। कोई भी ध्यान ही नहीं दे रहा अब और क्या कहूं। शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिये। हमारा विद्यालय अच्छा है-3, सब यही बोल रहे हैं। अच्छा कैसे है। 3-5 मंजीला है, सब सुविधाओं से युक्त है, लम्बा चौड़ा है। सब है, किन्तु शिक्षा के बारे में आपको क्या बतायें। शिक्षा किसको एवं कैसी इसका कोई पता नहीं।

भारत पहले क्या था इसका पता ही नहीं है। इतिहास भूल गये। जिसके खाने से भयानक रोग हो रहा है, फिर भी घड़ल्ले से उसका प्रयोग हो रहा है। किसी भी प्रकार का, किसी का भी संरक्षण ही नहीं है। जहर सिद्ध हो गया फिर भी खाते जा रहे हैं घड़ल्ले से। पशु-पक्षी अच्छे हैं, उनमें कम से कम इतना ज्ञान है। क्यों की उनके लिये कोई चिकित्सालय/अस्पताल नहीं है। कौनसा पानी पीना है उन्हें ज्ञात है। आपको बताना पड़ता है। गटर का पानी पी रहे हो। Re-cycle का पानी खूब चल रहा है। शीशी में भरकर बिक रहा है। बिसलरी का क्या अर्थ है। भीतर क्या है- भगवान जाने या पानी जाने।

NOTES

Date

बिसलरी अब किसलरी हो गया है। ये सब क्या है, ये भी समझ में नहीं आ रहा है। पहले छानकर प्रासुक करके पीया जाता था। आज इस तरह का पानी पीकर बिना छाने, बिना प्रासुक किये पीने से बिमार हो रहे हैं। अब ज्यादा तो मैं नहीं कहना चाहता। ये प्रश्न है? उत्तर आप ही लोगों को ढूंढना है।

सरकार आप ही है, आप ही को सोचना होगा। क्या पढ़ना होता है, क्या लिखना होता है, क्या सोचना होता है आप देखें। आप होनहार है। आपही को उत्तर ढूंढना होगा। विज्ञान के सामने भी यही प्रश्न है। अपने माता-पिता से पुछ लो जिससे उन्हें यह मालुम पड़ जाये की क्या सही है और क्या गलत है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

22-9-16 "प्रासुकीकरण का विज्ञान" प्रतिज्ञा

अपने यहाँ प्रासुक जल का जो विधान है, उसके बारे में समझे थोड़ा सा। त्रस जीवों को दूर करना है - यह छानकर करते है। जलगालन बोलते है। इसके बाद उस छने जल में भी अन्तर्मुहूत के बाद फिर से त्रस जीवों की उत्पत्ति होती है। आपने पानी हण्डा - पीपा आदि में भर लिया पर एकबार छानने मात्र से प्रासुक नहीं होता। अन्तर्मुहूत (दो घण्टे) के बाद फिर २५ घण्टे तक क्या होगा। फिर कैसे प्रासुक किया जाता है - इसे समझे। छने जल में कोई न कोई पदार्थ डाल देते है तो वह कुछ घण्टो तक पीने के काम आसकता है। लोंग - इलायची - सौंफ आदि डाल दो तो कुछ घण्टो तक त्रस जीव उत्पन्न नहीं होंगे। जल विकृत नहीं होना चाहिये। यह

बहुत विशेष बात है। सुन रहे हैं आप। लोंग - इलायची या सौंफ आदि डालने पर कुछ घण्टों तक कोई भी वहाँ आक्रमण नहीं कर सकता है। लौंग कहता है - मेरे रहते कोई आक्रमण नहीं कर सकता किन्तु आप लोग आक्रमण कर लेते हो। इसके बाद भी त्रस जीव उत्पन्न न हो तो अग्नि देवता का आश्रय लेकर उसे उबाल देते हैं। अब २५ घण्टे तक जीव उत्पन्न नहीं होंगे।

जिस जल में सचित्तता है अर्थात एकेन्द्रियपना कहा जाता है - जिससे उसमें बार - बार त्रस जीवों की उत्पत्ति होती है। इसे अचित्त (प्रासुक) करके पीयें तो एक तो रसना इन्द्रिय का संयम होता है दूसरा वह जल भीतर जाकर जीवोत्पत्ति का कारण नहीं बनता है। सचित्त जल भीतर जाकर कभी भी घाव कर सकता है - अनेक बिमारियों का कारण होता है। इसलिये प्रासुक करके पीयें।

जल नीचे भूमी से आता है, आज का विज्ञान कहता है कि ये जीव रहित है इसमें जीव नहीं है किन्तु आंखो से नहीं दिखें तो उसमें जीव नहीं है ऐसा नहीं है। विवेक - अविवेक का ध्यान रखें। उस जल में भिन्न खनिज लवण होते हैं। जिनका पेट पर, लीवर, किडनी पर प्रभाव पड़ता है। जिन्हें छान ही नहीं सकते - मात्र प्रासुकता ही उपाय है। प्रासुक करके नहीं पीने से विभिन्न बिमारियाँ हो रही है। वे धातु किसी भी प्रकार निकाले ही नहीं जा सकते। बोरिंग सेजो पानी आता है उसमें आयेंगे ही। कूप का जल अलग है। सूर्य प्रकाश बोरिंग के जल में कभी नहीं पहुँचता। प्रासुक का एक विधान यह भी कि हवा लगे एवं

सूर्यप्रकाश (धूप) मिले। भाजी आदि को इस विधी से आप तीन्न प्रासुक करते है। जैसे- मेथी भाजी, पालक, वघुआ, पोदीना, कचरिया, ग्वारफली, ग्वार-पाठा, केले की चिप्स आदि सब सुखाकर रख लेते है। सुखने के बाद इन्हें प्रासुक घोषित किया जाता है।

मुनक्का जिसे द्राक्ष कहते है सुखने पर प्रासुक माना जाताहै अब अग्नि में उबालने की जरूरत नहीं पड़ती है। गीला है तो अंगुर कहलायेगा, सुख जायेगा तो किशमिश कोलते है। कैसे वातावरण में रखना यह आप लोगो की सावधानी का विषय है। अग्नि से सुखाओगे तो वह ऐसा हो ही नहीं पायेगा। बिना पढ़े-लिखे लोग भी इसका लाभ लेते आ रहे है। देहात - ग्रामीण लोग भी इसे जानते है।

आप लोग (चौके वाले) पुजन के लिये आये हो, निमन्त्रण के लिये नहीं आये हो। ध्यान रखना आप लोगों ने स्थापना की है। आज इसीलिये भीड़ है-चौके से आये है। विज्ञान हवा से प्रासुकता नहीं मानता है। व्रती लोग प्रासुक भोजन ही ग्रहण करते है - पानी भी सचित्त नहीं अचित्त ही लेना है। वह प्रासुक पानी पेट में जायेगा किसी प्रकार का प्रदुषण नहीं करेगा। चिकित्साल्य/पर्यावरण की बात तो करते हो पर सबसे पहले प्रदुषण से बचना अतिआवश्यक है। डॉक्टर भी बैठे है- वे भी सुने भले ही एक्युप्रेशर वाले हो या पंक्चर वाले हो, किसी भी पैथी वाले क्यों न हो। इसे जानना परम आवश्यक है। हजारों वर्षो से यह प्रक्रिया चली आ रही है। अब प्राय खुल हो गयी है।

पानी एक बार ऊपर टेंक में चढ़ गया तो चढ़ गया। अब वह टेंक स्वर्गवास को प्राप्त होगा तभी साफ होगा। न मांजना, नही कुछ। पहले बर्तन में पानी रखा जाता था। प्रतिदिन साफ - सफाई होती थी। "जब ही जीवन है" कहने वालों की यह परिस्थिति है। कुछ समय निकालकर इसका प्रशिक्षण लेना चाहिये।

आज हवा भी ठीक नहीं है, जल भी ठीक नहीं है। जब दोनों ठीक नहीं तो मन भी ठिक नही है। सबही चला गया। सावधान हो जाइये अन्यथा आपको ही इसका जवाब मिल रहा है। हवा के द्वारा प्रासुकीकरण होता है। अब पंखा घुम रहा है पर हवा नहीं है। इससे क्या होगा। अग्नि के द्वारा प्रासुकीकरण होने पर प्राणों के घातक जो तत्त्व होते है, उन्हें प्रासुक करते है। हवा के द्वारा भी ऐसा ही होता है।

लोग इलायची आदि से भी प्रासुकिकरण करना बताया। विज्ञान कितना भी पढ़ लो पर सावधानी की बहुत जरूरी होती है। ज्ञान कितना ही अर्जन कर लो पर सावधान नहीं तो कुछ नहीं होगा। जिनवाणी पढ़ते है तो कहते है- "सावधान" जिनवाणी पढ़ने का सार तभी जब सावधान हो जाये। चौंक से आये हो- मैंने सोचा क्या दूं। पर तुरन्त याद आ गया। इस पर ध्यान आपको देना है। सावधान होकर सब तक पहुँचा देना। निमन्त्रण देने के लिये आये हो। अहिंसा परमोधर्म की जय।

- शिक्षा बोझ नहीं बोध देती है। एक ताजगी = एक - ताजगी है।
- संघर्षमय जीवन का उपसंहार हर्षमय होता है।
- न भारत चाहिये, न महाभारत चाहिये मात्र प्रतिभारत चाहिये। आ. ज्ञानसागर जी।

23-9-16 "दूसरों का वैभव देख जलो मत" प्रातः 9-15

देवगति में एक प्रसंग में सोच-विचार हो रहा है। इन्द्र की सभा लगी है। सामानिक देव भी हैं, मंत्री, कोतवाल, लोकपाल आदि सभी बैठे हैं। एक सोचता है देवगति में तो बहुत सारी सुविधायें होती हैं, पर यहाँ ऐसा की उसे दौड़कर भाग भी नहीं सकते हैं। बिच में आयु टूट नहीं सकती। सागरोपम आयु तक एक बार फंस गये अब भोगना ही है - ये दुविधा है। इन्हें ज्यादा क्यों - हमें कम क्यों, इन्हें बढ़िया - हमें घटिया क्यों। कहियो नहीं ये सबको होता है।

किसी प्रकार से 4 खण्ड का घर बना लिया, बनकर तैयार भी नहीं हुआ था कि पड़ोसी ने 6 खण्ड का तैयार कर लिया। पहले दूर से दिखता था - अब तो हमारा इसकी ओट में दिखता ही नहीं है। ऐसा वहां इन्द्र/देवलोक में भी चल रहा था। तो कहते हैं अथवा सुनते हैं ये कम-बेसी का कारण आपने दान तो दिया पर हल्के मन से दिया। आप लोग बोलते हैं न हल्के भैया, मंझले भैया। बड़े बनकर देते तो बात बनती। ऊपर - ऊपर से दिया इसलिये घटिया क्वालिटी का हो गया। जाति-स्मरण से उन्हें ज्ञात हो जाता है कि हमने ऐसा किया था तभी ऐसा मिला है।

घटिया मन से करोगे तो घटिया क्वालीटी का ही मिलेगा। एक-एक ग्रास अब गुटकना ही पड़ेगा। वहाँ भी ये सताता है। इसी का दूसरा रूप भी देखो। देवों में सम्यग्दर्शन का एक कारण बताया देवर्द्धि-दर्शन। दूसरों के वैभव को देखकर अथवा दूसरों की सम्पदाएँ देखकर ऐसा भी होता है कि वह विचार करता है कि इन्हें बढ़िया क्यों - हमें घटिया क्यों। ये सब अपने-अपने कर्म का फल है। इससे भी सम्यग्दर्शन हो जाता है।

दोनों क्षणिक हैं किसी को रुकना नहीं हैं। वहाँ पर अकृत्रिम भवन बने हुये हैं। नये सिरे से कोई निर्माण करना ही नहीं है। योग्यता-पुण्य के अनुसार ही सबको मिलता है। जितनी आयु उतने ही दिन रहना - उसके बाद समय पर खाली करना ही होगा। इनके लिये इतने नौकर - चाकर, इनको इतना ऐश्वर्य आदि ये सबको अपने-अपने मिलते हैं। छिना-झपटी का कोई काम नहीं हैं। वो ठीक है या ये ठिक है।

भानपुर वालो पुल बांधो पुल। जहाँ कहीं भी जाओ जो दिख रहा है वह क्षणिक है। इसमें उलझो नहीं, सुलझोगे तो जीवन चलेगा। जहाँ भी जाओ उलझन ही मिलेगी। जहाँ भी गाँव-कसबा आदि में जाते हैं तो भीड़ ही मिलती है, भोपाल की भीड़ तो अलग ही है। छोटे-छोटे रोड़ भी पैक होकर चलते हैं। बिच में से कोई नही जा सकता। महाराज को वहीं से - उतही से - नमोऽस्तु करों। स्वतंत्रता छिन गयी। यहाँ पर भीड़ और ज्यादा। लाइन लगाकर दर्शन करो। २-२ घण्टे देने तो पड़ेंगे।

हम भी क्या कर सकते हैं। बात करना तो दूर। दर्शन भी दूर से करो - दूरदर्शन। लोग कहते हैं मन नही भरता। हमें बता दो - मन को तौल ले फिर उसे भर दें। काहे से भरना है ये और बता दो। पुरे संसार की समस्या है - ये मन कभी भरता ही नहीं। उस मन को ठण्डे बस्ते में रख दो जरूर भर जायेगा। "ठण्डे बस्ते में, मन को रखना ही, मोक्षमार्ग है।" ऐसा करो कल से एक-एक बस्ता लेकर आना है, उसमें मन को रख देंगे। उसे एयर कंडीशनर में रखेंगे। आप गरम बस्ते में मन को रखते हैं इसलिये बात नहीं बनती। मोक्षमार्ग में चलने के लिये मन को पहले ठण्डे बस्ते में रखना चाहिये। आप सब तैयार हैं - हव।

अभी तो पंचकल्याणक की बात कर रहे थे। ऐसे नहीं होता कि एक-दो दिन मन को ठण्डे बस्ते में रख दो फिर एक-आध हफ्ता के लिये छोड़ दो। मन से सबसे ज्यादा असंयम होता है। गाँव में रहने वाले लोगो का जीवन संतोषप्रद होता है, जितना मिलता है उसमें संतोष हो कर रहते है। परम्परा के अनुसार एवं क्षमता के अनुसार धर्म ध्यान करते रहते है।

जब कभी भी गाँवो से गुजरते है तो छोटे-छोटे बच्चे (चिलर पार्टी) भी झाहर-बण्टा, झण्डी आदि लेकर आ जाते है। हमारी मांग पुरी करो पर पहले देखो कितनी वाजिब मांग है। कितनी ठीक मांग है और कितनी ठिक नहीं। खर्च के अनुसार व्यय होना भी जरूरी है। "आमद कम खर्चा ज्यादा लक्षण है मिट जाने का। कुवत कम, गुस्सा ज्यादा लक्षण है मिट जाने का।" आज दोनो हो रहे है। चद्दर के अनुसार ही पैर फैलाओ। ग्रामीण लोग इतना ही करते है। आप लोग नहीं कर पाते है।

आप लोगों को सर्दी लग जाती है क्यों की चद्दर के बाहर पैर रहते है। आप पैसे खर्च करते है। समय पर उठो। वो लोग सब ठीक-ठाक कर देते है। उनके लिये हमें सोचना नहीं पड़ता। आपका मन भरता नहीं। बस्ता लेकर आते ही नहीं। वे मन से काम लेते है। जो मन से काम लेता है वही अच्छा होता है। मन का काम कभी भी अच्छा हो ही नहीं सकता। मन से काम लेन्गे विजयी बनेन्गे और मन का काम करेन्गे नौकर बनेन्गे। यदि सेठ बनना चाहते हो तो ऐसा करें। मन की बात मान रहे हो इसलिये ऐसा है। मात्र शिकायत ही करता रहता है- उसकी सिकाई कर दो। आज उस मन की चिकित्सा आपके पास है ही नहीं। इतनी पढ़ाई है ही नहीं कि आपके मन की चिकित्सा कर सके। संतोष रखेन्गे

तभी मन को काबु में रख पायेंगे। विषम प्यास एवं विषम भूख की चिकित्सा नहीं, समीचिन भूख-प्यास हो तभी दवाई काम करती है। ऐसा ही जीवन है। इतना, की कहता हूं - समय हो गया है। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में दूसरे का वैभव भी काम कर सकता है। सोचो - तभी उत्तर मिलेगा। तत्त्व को स्वीकार करना है, क्षणिक संसार का विषय मानेंगे तभी स्वीकार्य होगा।

अहिंसा परमोधर्मकी जय। बोलो

25-9-16 "है एकता का परिचय" प्रातः 9.15

प्रतिदिन दो-तीन बार भोजन करते ही होंगे। रात्रि में नहीं करना चाहिये। आपके ये सब कार्यक्रम तो चलते ही रहते हैं, भले ही किसी को जानकारी हो या नहीं। ये कार्यक्रम करना है। जब कर्तव्य है तो उसके बारे में विज्ञापन की कोई आवश्यकता नहीं है।

जिस प्रकार विद्युत संचार केन्द्रों से अपने घर के भीतर प्रकाश की व्यवस्था कर लेते हो/उस व्यवस्था में क्या पद्धति अपनाते हो। उनकी लाइन से अपने घर की लाइन को जोड़ भर देते हो। अलग से तो लाइन आती नहीं है। एक ही लाइन से सब विद्युत आ रही है, बस सम्पर्क भर आपको स्थापित करना है। इसको आप सभी मान्यता देते है। हमारा घर तो अमीरों का है, इनका घर अमीरों का नहीं है, ऐसा कुछ नहीं प्रत्येक घर में एक ही व्यवस्था होगी। आखिर केन्द्र से (पावर हाऊस) किसी को भी लाइन नहीं मिलती। इस व्यवस्था के लिये आप तैयार हो जाते हैं। क्यों की वहां का ऐसा ही नियम है। यही नियम यदि यहां लागु हो जाये तो कैसा हो। अभी तभी पूजन कर रहे थे, बिच में क्यों उठते हो। आगे वाले उठ गये, पीछे वालो को दर्शन बंद हो गये। उन्होनें भी टिकिट ले उतना

ही दाम भरा है। आप लोगों को बैठकर उस लाइन का भी स्वागत कर लेना चाहिये। हमारे साथ उनका सम्बंध जब से उन्होंने टीकिट खरीदा है तब से हो चुका है। इनमें चाहे कोई प्लेन से, कोई ट्रेन से, कोई गाड़ी से अथवा कोई पैदल भी क्यों न हो सभी ने अपना-अपना टीकिट पहले ही बुक करा दिया है, तो उनके भावों का आपको भी ध्यान देना चाहिये।

आकुलता में रहने वाले यहाँ निराकुल होने आये हैं। हमारे पास जो भी - जितनी भी व्यवस्था है, उसमें हेर-फेर तो कर नहीं सकते। सुनते हैं समवशरण में तो इससे भी ज्यादा लोग रहते हैं, पर उनकी जो व्यवस्था है उतनी ही रहती है, उसी में रहना होता है। कल नहीं परसों हमने कहा था। बारह सभायें होती हैं - उनमें तीन में भवनत्रिक देव, तीन में देवीयाँ, एक में कल्पवासी देव, एक में उनकी देवीयाँ, एक में तिर्यंच, एक में मुनिराज अब दो कोठे और बचे एक में मनुष्य तथा दूसरे में श्राविका एवं आर्यिकायें रहती हैं। समवशरण में भी श्रावक से ज्यादा श्राविकायें होती हैं। महिलाओं की संख्या ज्यादा होती है, किन्तु यहाँ की तरह नहीं वो अपने ही कोठे में रहती हैं यहाँ रिसते-खिसते पुरुषों में चली जाती है। हमारे समवशरण में ऐसी ही व्यवस्था है।

नियमावली का ध्यान रखा करो। सौधर्म इन्द्र खड़ा रहता है, बाकी सहयोग करते हैं। चक्रवर्ती भी ऐसे ही करता है। विद्युत प्रवाह का उदाहरण देकर कहना चाहता हूँ। लाइन सब जगह एक ही रहती है, बस स्पर्श भर कर दो, सर्वत्र लाइट ही लाइट हो जायेगी, ऐसे ही सृजन के समय पुरुष में एक

महिला में एक खड़े हो गये, आधा मिनिट भी नहीं लगा कि सबने एक-दूसरे के हाथ लगा दिया चाहे वह दूर पाण्डाल में बैठा हो तो भी वहीं से अर्घ्य समर्पित कर सकता है। नारेल का भी खर्चा बच जायेगा। प्रेम एवं वात्सल्य के साथ काम करोगे तो वह काम बहुत जल्दी पूर्ण होगा। आपको वह साक्षात् समयसार भी बहुत जल्दी ही मिल जायेगा।

आत्मा तो भीतर से सबकी एक ही है। पूजन में सब एक रहें, भोजन में सब एक रहें (सामाजिक धार्मिक कार्यक्रमों में सब एक रहे, ऐसा विचार करना चाहिये। धार्मिक अनुष्ठान भी सदैव एक होकर करें, बड़ा आनंद आयेगा। पुद्गो पिछे वालों को कैसा लग रहा है। हमारी ध्वनि सब लोगों के कानों तक आ रही है या नहीं।

भक्ति का सम्पर्क ऐसा ही होता है, वह कहीं से भी हो सकता है। ये तो भावना धर्म है, कहीं से भी तार भर जोड़ दो विद्युत आने में देर नहीं लगेगी। भगवान के पास से हमारे-आप तक ऐसा ही प्रवाह निरन्तर चला आ रहा है, बस इससे सम्पर्क स्थापित करने की आवश्यकता है, कर्मों की निर्जरा रात-दिन चलती रहेगी।

सरकार की बात भी ऐसी ही है। उनके सामने हाथ क्यों फैलाते हो - कटौती का काम ही नहीं है, इस विद्युत प्रवाह में। हां बस सम्पर्क भर बना के रखो। आप ही ने सम्पर्क हटा लिया तो फिर वे कुछ नहीं कर पायेंगे। आज रविवार है। मध्याह्न में आना था, अभी से आकर बैठ गये। हम क्या करें। हमने सोचा इतने लोग आये हैं अभी कुछ तो है दो। अहिंसा परमो धर्म की जय।

तीर्थंकरो की बात है। जब केवलज्ञान हुआ तो उनसे पुछा गया की आपके वंश में वियोग होगा या नहीं। कहा गया अकाल में कोई वियोग नहीं होगा। इस बात को सुनकर सौधर्मइन्द्र बोलने लगा। ऐसा मेरे साथ होगा या नहीं। उत्तर मिला देखते ही देखते तुम्हारे सामने एक नहीं, लौ नहीं, हजार नहीं, लाख - करोड़ - अरब - खरब नहीं नील है नील भी प० नील होगी। अर्थात प० नील बार वियोग जन्य दुःख के घूंट पीने पड़ेगे। चुंकी तुम्हारी आयु बहुत लम्बी है।

इसलिये पहले सोच लो, लम्बी आयु जितनी होगी उसे देखना तो होगा। अभी कह रहे थे लम्बी आयु के लिये। वियोग नहीं होगा क्या। सोच विचार कर हमारे बारे में सोचा करो। भावना ऐसी भावों की वह जग जाये। इस वियोग के बारे में आपका ध्यान नहीं जाता। अभी हमने सोचा कि ये होगा ही नहीं होगा। सुबह से शाम तक खूब धूमधाम हो रही है, शादी-ब्याह में ही नहीं यहाँ भी धूम-धाम चल रही है।

संसार में संयोग है तो वियोग भी पक्का है। जब वियोग होना पक्का है, तो पहले से ही प्रबंध कर लेना चाहिये। दूसरे के लिये है, हमारे लिये नहीं ऐसा भी नहीं है। उस समय कर्मो का खेल है याद रखें। जब करते ही हो तो फिर मजबुरी न हो करना पड़ रहा है ऐसा न सोचे। परवश होकर क्यों स्ववश होकर करो ना। रोकर भी कर्म भोगेंगे, हंस कर भी भोगेंगे। जब भोगना ही है तो हंसकर भोगें तो निर्जरा होगी। संयोग - वियोग के कारणो पर विचार करो, अनंतो बार जनम-मरण हो गया। सौधर्म का परिवार वियोग जो नील तक

पहुँच गया, और भी पत्नि आदि का परिवार का वियोग भी होता ही होगा। हमेशा - हमेशा वियोग चलता ही रहता होगा। इसलिये धर्म-ध्यान करने लायक नहीं रहता है। आप लोग बहुत अच्छे हो, इन सब से बच गये हो। फिर भी हमारे सामने रोते रहते हो, कैसे काम चलेगा।

विपाक विचय धर्म ध्यान करो। मात्र पालथी मारकर बैठने से ही धर्मध्यान होते ऐसा है ही नहीं, एक कोने में बैठ जाओ। दूसरों को देखते ही क्यों हो। हमारे सामने भी आ जाते हैं। फाटक (आंखो की पलकें) को बंद कर दो। सुरक्षा कवच तो चाहिये। मान लो यदि फाटक बंद नहीं करते हैं तो क्या करें? कैसे करें। इसका नाम है उपेक्षा संयम। सामने वाला व्यक्ति निरन्तर रोने लग जाये - सुना रहा है, हमतो सुनाकरही जायेंगे। हम सुने तब तो।

दीर्घ संहनन भी क्यों न हो अन्तर्मुहूर्त से ज्यादा रूदन सुन ही नहीं सकते। आप लोग धन्य हो सुनाते रहते हो। हम महाधन्य है- सुनते रहते हैं। आप सुनाकर हल्के हो जाते हैं, हम भी उसही-उसही सुनकर फाटक बंद कर लेते हैं। बाद में अन्तर्मुहूर्त में पलट जाता है। कहते फिर आराम से उपवास करते हैं। बोलना नहीं मौन है। जब हम मौन रहते हैं तो दूसरे लोग कहते हैं रोना नहीं आज उपवास है। विवेद रखते हैं तो ऐसी बात नहीं है। पर आप उपयोग नहीं करते हैं। आप लोग जैसे ये वस्तु स्थिति है।

प्रत्येक का कर्म उसको फल देगा। कर्ज ले रखा है उसे चुकाना तो पड़ेगा। विवेक के साथ देखोगे तो बहुत कुछ निपट जायेगा। विचित्र बात है। "विपाकोनुभवः" बहुत

बड़ा सूत्र है। छूट भी रहे हैं, बंध भी रहे हैं। विवेक के साथ में बंध रहा है तो उसमें उतनी स्थिति नहीं पड़ती है। जातीस्मरण आदि के माध्यम से जान लेते हैं। बहुत पुराना खाता है, नया खाता नहीं है। समय आ गया हम दौड़ेंगे नहीं।

जो पुराना बंधा है, उसे कम करते जाओ। विपाक विचय धर्म ध्यान करो। दो प्रकार के आंसु आते हैं - एक दुःख के आंसु एवं एक सुख के आंसु। कुछ नमकीन भी होते हैं। बोलो तो। हव। आपको पुरुषार्थ करना चाहिये। सहन करना भी आना चाहिये। हमें भी प्रसन्नता होगी। सीखो अब तो। समझना होगा। अब २½ - तीन महिने निकल गये हैं। अंतिम चरण में पहुंच गये है। ए- एक दिन खिसक रहे हैं। इस प्रकार वियोग की चिन्ता में बात रखी।

स्वर्ग में भी रोना होता है। पानी आता है या नहीं। प्रण तो है ही वहाँ। पानी नहीं- इसलिये सुखा-सुखा है। आप एक पत्नि के वियोग के दुःख की बात सह नहीं पाते ५० नील के वियोग की बात क्यारे ये बात अलग है हमेशा-हमेशा तीर्थंकरो का सान्निध्य प्राप्त रहता है। अमृत की घूंट है। किन्तु आप अच्छे पकवान का उपभोग कर रहे हो - उसी समय वियोग की बात सुन लो तो कैसा लगता है।

इसलिये आचार्यों ने - तीर्थंकरो ने पहले ही कह दिया सर्व संयोग वियोगमय हो। दुःखकी बात हमेशा याद रखो। विपाक विचय धर्म ध्यान होगा।

अरिहंता मंगलं धर्मकी जय। ॐ

Date: | | |

भी चलेगा। उदारता हम भी रखेंगे। हम इतने उधार न बने की उधार ही उधार लेते जायें, स्वयं नकद में बेंचे। दुकान पर लिख दे आज नकद - कल उधार। जो आ रहा है - थोड़ व्यापारी को भी देते रहें। इसी तरह से ऋषभनाथ से महावीर स्वामी तक का तीर्थकाल चला आ रहा है। आप लोगों को भी थोड़ा-थोड़ा में मेल मिलाकर चलना है। जब फिर से तीर्थ आयेगा तो ज्यादा मेहनत नहीं करना पड़ेगा। अपना-अपना काम करके पार हो जायेंगे।

इस प्रकार किसान बैलों को व्यवस्थित करके काम निकाल लेता है। रथ को रोको नहीं। पहले मानव रथ ही चलते थे। उस रथ को हांकते (खींचते) चलो, एक - दूसरे का सहयोग करते हुये। उसी से कल्याण होगा। हमारा कहना था जब तीर्थ का व्युच्छेद होता है, तो कष्ट होता है। घर में वृद्ध माता - पिता है, वे समय पर चले जायेंगे। जाने से पूर्व बच्चों के लिये भी मार्ग प्रशस्त करते हैं। प्रभु के द्वारा बताये मार्ग पर चलते रहो हैं। सारा लेखा - जोखा उसी पर आधारित है।

मिल - जुलकर ही काम करें। एक बैल से रथ नहीं चलेगा। सारथी भी क्या करेगा। उन तीर्थंकरों के अभाव में भी उस आचार्य परम्परा को धीरे - धीरे आगे बढ़ाते जाना है। ज्यादा भाग - दौड़ की आवश्यकता नहीं है। आपको आपका कार्य देखकर ही वेतन मिलेगा। आप इतना कह सकते हो, योग्यता का ध्यान रखोगे। ये तो कर्त्तव्य है। योग्यता के अनुसार जो काम करता है, उतना उसको मिलता ही है। कोई हाथ भी नहीं लगा सकते। उसे

बड़ो द्वारा पुरस्कृत किया जाता है। पुरस्कार की इच्छा न हो, इसी भावना से उस पार जाना है। हाथी के अभाव में भी बैलों द्वारा रथ चलाया जा सकता है। कर्त्तव्य करते जाओ। हाथी तो निकल गये, अब बैल खींच रहे हैं। ताकत कम होते हुये भी ज्यादा काम कर रहे हैं। दोनों बैल भी हाथी के रथ को खींच रहे हैं।

भगवान ये तो आपका ही अतिशय है। ऐसे ही करते हुये आपको ही धीरे-धीरे आगे बढ़ाना है। गाड़ी भी घुमने वाली है। बैल भी घुम जाते हैं। उसे कोई याद नहीं रखता। इस बहाने याद रख लेंगे। अहिंसा परमो धर्म की जय। नुं

28-9-16 "ध्यान को स्थिर करता है- संयत ज्ञान" पृष्ठ: 7.15

कोई भी बात हम अपनी आंखो से अपनी दृष्टि से देखते हैं, और भगवान की दृष्टि से देखते हैं, उसमें बहुत कुछ फर्क नजर आ जाता है। हमारी ही दृष्टि है लेकिन फेर नजर आने लगता है। हम उस फेर को सही क्यो नहीं कर पाते - इसी का नाम अज्ञान है। इसलिये उसी दृष्टि के फेर को दूर करने का पुरुषार्थ करना चाहिये। काम चलाऊ नहीं होना चाहिये।

आंखो के नम्बर निकालना है तो एक आंख को बंद करना होगा। दोनों आँख खोलेंगे तो नहीं होगा। हमारे यहाँ ऐसा ही होता है। जब हम विद्यालय में पेन्टिंग की जाती थी तो दोनो तरफ से पेन्टिंग नहीं बनाया जाता था। इसे बोलते हैं- दर्पण डला। एक दृष्टि से देखते हैं - दूसरी दृष्टि बंद कर लिजिये। तथा एक एंगल। कोण मिलाते जाइये - मिलाते जाइये अपने आप ही ठिक हो जायेगा। यह हमेशा ध्यान रखना है। कदम - कदम पर ध्यान रखना है। थोड़ा सा भी कोण टेढ़ा - मेढ़ा हुआ तो वह नहीं होगा। प्रायः कर हम

अनुभव के अभाव में इस बात को भूल जाते हैं, जो भी बिन्दु दिये गये हैं, उनका अनुपालन करना अनिवार्य होता है। जब हम चलते हैं तो हमारा नियन्त्रण पैरों पर होता है। यह गलत है - हमारी दृष्टि पैरों की ओर बनी होती है, ध्यान में पैर रहते हैं।

तार पर चलते हुये का ध्यान यही होता है कि किस ओर झुकाव ज्यादा है उसकी दृष्टि में रहता है। उसे वाह - वाह की परवाह नहीं है - राह की परवाह है। राह की परवाह है तो आह अपने आप ही चली जायेगी। पैरों की राह नहीं पैरों को तो राह पर रखा जाता है। ये कौन आ गया (ज्योतिराज सिंधिया का आगमन) इनके साथ सेना भी है। बीच में जयजयकार नहीं करना चाहिये।

ध्यान में नियन्त्रण होता है तो ज्ञान में भी नियन्त्रण हो जाता है। फिर आपको किसी किताब की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। भीतर एंगल के माध्यम से ठीक-ठाक किया जाता है। हमेशा - हमेशा हमें शब्द की ओर नहीं अर्थ की ओर देखना चाहिये। जो भी कार्य करते हैं उसके लिये ध्यान करना पड़ता है। इसे ही सिद्धान्त ग्रन्थों में संयत ज्ञान कहा है।

ध्यान को स्थिर बनाना चाहते हो तो ज्ञान को संयत का चोला पहना दो। असंयत ज्ञान आपको डांवाडोल कर देगा। ध्यान घोड़े की तरह है। वह कहीं भी ले जायेगा। लगाम अपने हाथ में रखो, वह हीनहीनाता रहे। घोड़े पर बैठने वाला सतर्क रहे, घोड़ा भले ही कितना भी तेज

Date : | | | | | | ☐ Mo ☐ Tu ☐ We ☐ Th ☐ Fr ☐ Sa

क्यों न हो। सावधान रहना होगा अन्यथा नीचे से भग जायेगा। 7 राजु की यात्रा करनी है, अतः इस पुरुषार्थ में ध्यान रखना जरूरी है। ज्ञान को संयत बनाने की बहुत आवश्यकता है। बनाओ तो आपकी मर्जी नहीं बनाओ तो आपके ही कर्म का उदय है, ऐसा समझना चाहिये।

ज्ञान काम नहीं आता है। उलट-पुलट कर रहा है, उसे चुप बैठाने का काम ध्यान करता है। आप फोटोग्राफी की ओर मत देखो। आप अपने में सावधान रहो - फोटो तो अपने आप ठीक आयेगी। ज्योतिरावसिंधिया के वक्तव्य के बाद-

समय हो गया है फिर भी आवश्यकता जो समझी है। जैनत्व अलग से कोई वस्तु नहीं। समाज का दृष्टिकोण बढ़े इसलिये जैनत्व अपना दृष्टिकोण रखता है। समाज के भी दृष्टिकोण का ध्यान रखना है। नमक को कोई अपने पास नहीं रखता है। नमक अपने पास मत रखो - थुं-थुं करेगा। वही नमक आटे आदि में डल जाये तो। आटे में नमक का स्वाद अपना अलग ही है, एक रोटी ओर मिल जाये - रोटी का स्वाद बढ़ जाता है। 32 साधनों का उपयोग करें तो रसगुल्ला बना देगा। पूर्वजों के पाठ का अनुकरण कहाँ तक हो रहा फिर फल चाह रहे है। फल ओर चाहे तो अनुपात को बढ़ाने की आवश्यकता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय नें

29-9-16 चतुर्दशी "वृक्ष की तरह करो अतिथी संविभाग" प्रातः 9.25

हम आमन्त्रण से जाते नहीं और आमन्त्रण को मानते भी नहीं है। आप मानते है तो हमने तो आमन्त्रण दिया नहीं। (गुना-आरोन समाज से) फिर भी उन वृक्षों की भांति जो राह में अतिथी सत्कार के लिये खड़ा रहता है। जैसे वाहनो पर बिंदु लिखा होता है - "फिर मिलेंगे" ऐसे वृक्षों की भावना

रहती है। अच्छा लगता है। अब कहाँ मिलेगे - पिछे भी लिखा होता है। जैसे आमन्त्रण दे रहे हो। सत्कार- वात्सल्य अंग का निर्वहन इस प्रकार चलता है तो फिर देर नहीं लगाना चाहिये। ब्रह्मचारी जी ने मना किया था आपको आगे आकर अहर्ष समर्पण नहीं करना है। आप लोगों की भावना थी। आज चतुर्दशी थी। हमने प्रतिक्रमण किया थोड़ा लेट हो गये पर सोचा कुछ दे दें।

अहिंसा परमो धर्म की जय हैं

30-9-16 "पुराने रोग की औषध पुरानी" प्रातः 9.15

कई प्रकार के रोग कई प्रकार के लोगो को हुआ करते है, जैसे - शारिरिक रोग, मानसिक रोग, बौद्धिक रोग भी होते है। डॉक्टर भी कहता है, क्यों आये हमें ऐसा- ऐसा हो रहा है। डॉक्टर कहता है - हमारे पास अक्षीण दवाई है। एक पुड़िया दे देते हैं। हम इसीलिये तो आये हैं। (इन्दौर से 20 बस) भिन्न- भिन्न प्रकार के रोगी होते है तो औषध भी भिन्न- भिन्न होता है।

अभी आप लोगो ने नैवेद्य चढ़ाते समय मंत्र पढ़ा - क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा। आपने क्यों चढ़ाया। क्यों की क्षुधा रोग आपको है। हमारा नाम लेकर चढ़ा दिया। बोलो आप कैसा होगा। हमारे निमित्त से यदि आपका रोग ठिक हो जाता है तो कोई बात ही नहीं है। रोग है तो रोग की चिकित्सा भी होनी चाहिये। जब डॉक्टर के पास जाते है तो आप पुछते है कितनी बार कितनी गोली कब-कब लेना है। मात्रा बढ़ाना नहीं- सावधानी से लेना है। हमें तो आज तक कभी पुछा नहीं। आपका रोग बहुत दिन का है। इस रोग की कोई सीमा नहीं है। Cronic diasere (जीर्ण रोग) है। रोग पुराना है तो हमारे पास भी पुराने से पुराना औषध है। ऐलोपेथी में ऐसी

दवा है ही नहीं। हमारे यहाँ एक बार दवाई बन गयी है तो अब रोग को ठीक होकर ही रहेगा। बस इतना परहेज जरूर रखना कि आप अन्य किसी वैद्य को नहीं दिखाना। आप तो ऐसा करते हैं कि सुबह का वैद्य अलग- दोपहर का अलग एवं शाम का अलग चक्रवर्ती की तरह 365 वैद्य होते हैं। आप राज रोगी हैं, राज वैद्य भी मिल जाते हैं। धन के लोभ में आकर डॉक्टर भी घूम जाते हैं। हम रोगी के पिंड नहीं छुमेंगे।

हमारा नाम लेने से ही रोग ठीक हो रहा है तो हो, परम्परा का समर्थन कर रहे हो तो करो। ये आपको देखना है कि भोजन कितनी बार लेते हैं। ताली बजाने से कुछ नहीं होगा। एक बार- दो बार दिन में - रात में कितनी बार लेते हो। रोग तो अनादि काल से लगा हुआ है, हम बहुत जल्दी ठीक कर सकते हैं। संकल्प ले लें कि हम दिन में लेंगे, रात में नहीं लेंगे। तब सार्थक होगा क्षुधा रोग निवारणाय---।

हम आहार को ही औषधि बनाते हैं, ताकि कुपथ्य न करना पड़े। आहार जो ले रहे हैं, उसी को औषधी मानकर लें। इससे आपका प्रतिभा-विज्ञान भी पल जायेगा। हम पहले वैसा नहीं मांगेंगे, यदि आपको देना ही चाहते हैं तो उस धन को उचित स्थान पर दे देना।

इसप्रकार दिन में ही भोजन करें। जब कभी भी खायेंगे तो यह क्षुधा रोग कभी भी शमन को

Date

प्राप्त होने वाला नहीं है। ऊपर स्वर्गों में देवलोग रहते है। संयम है ही नहीं। कुंड से अमृत झर जाता है। फिर भी तृष्णा की खाई ---- कितना भी खाओ यह खाई कभी भरने वाली नहीं है। आप लोग खाते जा रहे है वह खाई भी बढ़ती जा रही है।

भजन की विधी को समझा करो, जो-जो मांग रखी है उसे भी देखा करो। अभी कहा जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय। हमारे पास आते है - महाराज आज हमारी वर्षगांठ है, मतलब गांठ से एक वर्ष जाने पर खुश हो रहे हो। आजकल एक नयी बिमारी और चल पड़ी है। नये-नये रोग हो रहे है। महाराज इन दोनों का सालगिरह है। एक साल गिर गया फिर भी बारात निकालने लगे है। लड़ा तो हुआ ही नहीं। इन सब बिमारियों को समझो।

नयी-नयी बिमारी लग रही है। आप लोगों को बुरा लग रहा होगा। हमारे पास भी समय ज्यादा नहि है। हमारे पास सुगर कोई कुछ नहीं होने वाला, जीवन भर जो सुगर खा रखी है, उसे पहले निकालेंगे (औषध रूप से) भोजन लेंगे तो निश्चित रूप से क्षुधा रोग का नाश होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"भोपाल - चातुर्मास"

"आवों धोयें कषाय"

1-10-16 प्रातः 9.15

बहुत कम समय में एक उदाहरण के माध्यम से समझ में आयेगा। जैसे एक पेन लिया। पेन नया है, अब उसको स्याही में डुबोया। अब कागज पर लिखना प्रारम्भ कर दिया, उसके उपरान्त लिखना बंद कर दिया है। उस पेन की निब (नोंक) पर स्याही लगी है। अब उसको स्याही में नहीं डुबोना है, पुनः लिखना प्रारम्भ किया। अबकी बार एक कटोरे में पानी लिया, पानी बिल्कुल साफ उसमें डुबोया तथा पुनः लिखना प्रारम्भ किया, फिर एक कटोरे में साफ पानी लिया उसमें पेन डुबोया तथा लिखना प्रारम्भ किया। इस तरह से नये-नये साफ पानी में डुबोकर लिखना प्रारम्भ किया।

अन्तिम समय में जब हमें निलिमा देखने को उपलब्ध नहीं हुयी। सफेद पानी से लिखा, सूख गई तो पता नहीं हमने लिखा है या नहीं। इन सारे के सारे कटोरो में निलिमा है किन्तु एकसी नहीं घटती हुयी है। अब एक कटोरा निलिमा वाला लिया उसे एक बाल्टी पानी में डाल दिया। निलापन आया की नहीं - उसमें भी निलापन आया। इस बाल्टी के पानी को एक टैंक में डाल दिया। छानकर डाला। प्रमुकता का नियम भी पालन करेंगे।

उस टैंक में नीलापन आया कि नहीं आया। अब इस टैंक के पानी को भोपाल के तालाब में डाल दो। भोपाल वाले बतायें उसमें नीलिमा है या नहीं। वो तो घुलेगी एवं फैलेगी। अभी हम यहीं पर नहीं रुकेंगे। उस तालाब के पानी को समुद्र तक पहुँचायेंगे। समुद्र में वह

नीलिमा विस्तार को प्राप्त होगयी। तत्त्वार्थ सूत्र में तृतीय अध्याय में आप लोगों ने पढ़ा असंख्यात द्वीप एवं असंख्यात समुद्र होते हैं। वहाँ तक उस नीलिमा को पहुंचा दिया। दिखेगी नहीं पर है या नहीं। सर्वज्ञ के ज्ञान में झलक रहा है। प्रत्यक्ष ज्ञान के द्वारा जाना हुआ है विषय है।

यह नीलिमा एक कषाय का रूप है। कम होती जा रही है वह कषाय की कणिका। नीलिमा तो नीलिमा है, चाहे वह समझ में आये या नहीं आवे। आप इसे बुरा न मानें। आपसे कोई कहता है, क्या कषाय करता है? वह कहता है हमारे खानदान में कोई नहीं करता। अभी तो आंखे लाल नजर आ रही है। दूसरे लिये कषाय को कषाय मानते हैं, आपको भी स्वीकार करना होगा।

अन्यथा स्वम्भुरमण समुद्र में भी वह नीलिमा पहुँचेगी। इसे धीरे-धीरे कम करते-करते पूर्ण समाप्त करना है। तभी सिद्धत्व का अनुभव होगा। मन से-वचन से-काय से, कृत से-कारित से-अनुमोदना से, प्रत्यक्ष से-परोक्ष से यही भाव करें की हे भगवन हमें भी कषाय रहीत होना है।

कषाय चली गयी तो वेदी में बैठ जाओ। बैठ जाओगे तो देव लोग उठाकर पटक देंगे - भोपाल के तालाब में। आप वेदी बनवा सकते हो पर बैठ नहीं सकते। हमने सोने की वेदी बनायी। अभिमान न करीयो। अपने आपको इस कषाय से परेशानी में डाल रखा है। भगवान की वेदी है या तुम्हारी वेदी है। वह देव ठीक कर रहा है- हम आपका पक्ष

लेंगे ही नहीं। आपकी वेदी नहीं। तीन लोक के नाथ की वेदी है - ऐसा कहो ना। भगवान के समक्ष ऐसा ही सोचें। अन्यथा वहाँ क्षेत्रपाल रहते हैं जो भगवान के यक्ष-यक्षणी है। वह प्रशासन है, किन्तु जिनेन्द्र भगवान का ही शासन, जिनशासन माना जाता है।

इन दोनों को नहीं मानोगे तो रोओगे। आपको जो अधिकार दिया गया है, इसका उपयोग करो। नीलीमा को देखो, समुद्र में भी बनी रहेगी। उसे पतला बनाना प्रारम्भ कर दो। तब जाकर वेदी बनाना सार्थक होगा। वेदी में बैठने योग्य बनने के लिये 1008 बनना होगा। 1008 प्रतिमा वेदी में विराजमान होगी सहस्रकूट जिनालय में।

स्थापना कर सकते हैं पर स्वयं नहीं बैठ सकते हैं। सुनने में आ रहा है कि नहीं। हव तो कहो। पूरा समझ में आ रहा है। सूक्ष्म विषय था। उदाहरण इसीलिये दिया की पूरा समझ में आ जाये। जब स्वयं को केवलज्ञान होगा तो देखेंगे कि कषाय का अनुभाग कितना है। कब तक इसे धोते रहेंगे।

यह सब तभी सम्भव है जब "भावों की निर्मल सरिता में अवगाहन करने आया हूँ" को चरितार्थ करेंगे। मैं सोचता हूँ - ये लोग मुझे सुना रहे हैं या स्वयं समझ रहे हैं। मैं भी अभी ऐसी ही लाइन में चल रहा हूँ। उसी को कम करने में लगे हैं। यह कषाय सभी की कम हो इन्हीं भावनाओं के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

टी० टी० नगर मान्दिर जी

2-10-16 "बुराई नहीं अच्छाई देखो" प्रातः 9.15

आपके पास दोनों तरफ से - चाहे आप सुख चाहें अथवा दुःख चाहे उसका सम्वादन कर सकते हैं। आपके पास दोनों प्रकार की सामग्री विद्यमान रहती है। फिर भी हम लोगों के पास आते हैं महाराज जी आशीर्वाद दें- सुख हो। आपके पास सुख उत्पन्न करने की क्षमता है। आप दुःख को चाहते नहीं, फिर भी दुःख आ रहा है, सुख की आरती उतार रहे हैं पर फिर भी वह आ नहीं रहा है। हमें इन दोनों की चिंता नहीं।

आप बाहर की आंखो को बंद कर दें एवं भीतर की आंखो को खोल दें तो अपने आप ही रात हो जायेगा। आप सब ऐसा जानते हैं- सर्प काटता है। यदि जहरीला सर्प हो तो मृत्यु हो जाती है। मैं इसे स्वीकार नहीं करता। आपने कुछ गलती कर दी होगी। आपने उस पर पैर रख दिया होगा, उसे रोकने का प्रयास किया हो अथवा डर के कारण आपने उसको मिटाने का सोचा होगा। उसने सोचा इसने मुझे मारने का संकल्प लिया है, मैं इसे पहले ही समाप्त कर दूंगा।

वही सर्प जो आपके लिये अभिशाप है - वही वरदान भी सिद्ध हो जाता है। जो प्राण लेवा हो सकता है वह प्राण बचाने वाला भी हो सकता है। यह कैसे? क्या उसके दांत तोड़ देंगे। यदि दांत तोड़ दोगे तो वह क्या खायेगा - कैसे जीवन चलायेगा। ऐसा नहीं इसके जिस दांत में जहर है, वह

तोड़ देंगे। नहीं ऐसा भी नहीं है। उसी सर्प के फण में नागफणा (नागफनी) है जो हजारो - हजारो लोगो का भी विष उतार सकता है। आप उस सर्प से वैर रखते हो पर वह सर्प मनुष्य से वैर नहीं रखता। जो वैर है उसको पलटना ही धर्म है।

T. T. का मतलब डबल T है। आप लोग भारतीय हो। भारतीय संस्कृति में किसी को भी मात्र बुरे रूप में ही नहीं देखा जाता अपितु उसके पास अच्छाई भी होती है। अच्छाई देखोगे तो वह अपना फण (नागफणा) छोड़ सकता है। उसकी प्रशंसा करो, वह सोचेगा मैं भी प्रशंसा के लायक हूँ और अपने भीतर की बुराई छोड़ सकता है। दूसरों की बुराई छुड़वाने से पहले अपने भीतर की बुराई छोड़ो। जैसे अभी पूजा बोली वैसे ही बुराई हेतु अर्घ्यं नि० स्वाहा।

ये नहीं करते हैं तो भगवान कभी प्रसन्न होंगे ही नहीं। आज जो मनुष्य है वही महात्मा बनता है। यह पाठ्यक्रम बहुत कठोन है। इसी पाठ्यक्रम से चलने पर आपमें से ही कई लोग निकलकर भगवान् बनते हैं। भगवान् भी जानते हैं, इनको समझाना बहुत टेड़ा होता है। समझो इससे ज्यादा तो नहीं कहना चाहता। आज रविवार है - मध्याह्न में कार्यक्रम चालु होगा। 9 P.M चलना था, आप लोग तो सीटी बजाते हुये आ जाओगे - टी.टी. नगर में रहते हैं। हमने टी.टी. नगर को चातुर्मास के भीतर रखा था, तो काम हो गया। 50 K.M. तक भोपाल है, किन्तु हमने अपने ढंग से सोचकर रखा, हाँ-

कहाँ जायेंगे। ये याद रखना सर्प के पास किसी भी ज़हर को उतारने का साधन विद्यमान रहता है। बस उस नागफणा (मणी) को पानी में रखकर वह पानी पीला दो। ऐसा महत्वपूर्ण औषध उसी सर्प के पास विद्यमान रहता है, इसलिये आप लोड उससे डरो नहीं न ही डराने का प्रयास करो। इतना ही पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्मकी जय हुँ

5-10-16 "स्वाध्याय जिनवाणी से हो मोबाइल से नहीं" प्रातः 9:15

हमारे यहाँ स्वाध्याय के पाँच भेद हैं। उसे आपके सामने रखना चाहते हैं। उसी के साथ आज का जो पाठ्यक्रम है उसे भी रखना चाहते हैं। पहले हमारे काल में 3 माह, 6 माह, 9 माह की भी परीक्षा होती थी। उससे पता चल जाता था कि आगे की परीक्षा के लिये फार्म भरने की योग्यता है या नहीं। इन परीक्षाओं का उद्देश्य था तावि समय खराब न हो।

आज शिक्षा प्रणाली ही बदल चुकी है, सेमिस्टर सिस्टम आ चुका है। 6 माह में परीक्षा होती है, उसे ही अन्तिम मान लेते हैं। 6 माह में पाठ्यक्रम पुरा किया, इन दिनों में मात्र सरसरी निगाह से देख पाते हैं। जिज्ञासायें उत्पन्न होती है। धारा छुट रही है। ऐसा हमें महसुस हो रहा है। कुछ व्यक्तियों ने विरोध भी किया। जो प्रणाली अभी चल रही है उससे न तो विद्यार्थी शिक्षीत होंगे न ही संतुष्ट होंगे। उन्हे विद्यालय से कोई मतलब है ही नहीं। यदि मैं गलत कह रहा हूँ तो वापस ले लेता हूँ। सही है तो मैं और बोल सकता हूँ। यह जान बुझकर धोखा हो रहा है।

उसके 6 महिने बर्बाद हो रहे हैं, उसके हाथ से वह विष निकल जाता है। आपने गाय - भैंस को देखा होगा। चरने जाती है - सुबह जाती है - शाम को लौटकर आ जाती है। आकर अब बैठ जाती है। क्यों। रौंथन क्रिया (जुगाली) करती है, जिससे जो खाया वह दूध एवं अन्य रस रूप परिवर्तन हो सके। यदि वह ऐसा नहीं करेगी तो गैया का जीवन बर्बाद हो जायेगा।

आप लोग स्वाध्याय दिन में दो बार नहीं चार बार करते है। जिनवाणी को सामने नहीं बगल में रखते हो। सामने रहेगी तो याद रहेगी - बगल में रखोगे तो भूल जाओगे। इसलिये जब स्वाध्याय होता है तो सावधान क्रिया जाता है। बगल में तो बच्चा भी हो तो भूल जाते है। "कांख में बच्चा - गांव में ढिंढोरा" ऐसी कहावत भी है।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आज बच्चों का आधा जीवन ही काम कर रहा है। 16 वर्ष तक पढ़ता है तो मानों 8 वर्ष ही पढ़ा है। पुनः - पुनः नहीं कहना चाहता, रविवार को भी प्रवचन में कहा था। जब कभी भी आप स्वाध्याय करते है, स्वाध्याय सदैव पुस्तिका के माध्यम से होता है। वह आज छुट रहा है। आज तो चित्र भी देख रहे हैं, सुन भी रहे है और पढ़ भी रहे है उसके माध्यम से स्वाध्याय हो रहा है। अब किताब की आवश्यकता नहीं एवं आंखो की भी आवश्यकता नहीं। पहले सूर्य प्रकाश में ही पढ़ते थे। अब रात में पढ़ते है।

आलोकित पान भोजन कहा अर्थात दिन में सूर्यप्रकाश में ही भोजन हो, वही पचता है, अन्यथा बचता है। आज यह नहीं हो रहा है। इस पर ब्रेक नहीं लगा तो बच्चे पराये हो चुके हैं। अब आपके नहीं रहें। अभी हमें बहुत पुरुषार्थ

चलना है। ऐसे में आप दुरवेत अवश्य होंगे। हम भी प्रयास करेंगे। आपने अपने ही हाथों से तो सब कर दिया है। आज आंखें खराब हो रही है। शुद्धि का भी अभाव हो रहा है। जिनेन्द्र भगवान की मूर्ति की भी यही दशा हो रही है। किसी भी दशा में (अशुद्धि) उसका अवलोकन हो रहा है। अब शुद्ध धोती-दुपट्टा सब पहले हो गया - सब चला गया।

यह मेरा चिंतन है, मैं रत्ते बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करूंगा। आवश्यकता है तो ज्यों का त्यों बना रहे। आप मानेंगे 10 लोग और मानेंगे। जो हमारी परम्परा थी वैसे ही स्वाध्याय हो। बच्चों का समय बर्बाद हो रहा है। टी.वी. आदि के माध्यम से वे क्या ग्रहण कर रहे हैं। स्मृति अब उन्हें रहने वाली नहीं है। 5 मीनिट अभी शेष है - आप लोग सुनने बैठे है तो हम भी सुना रहे हैं।

स्मरण करने को स्वाध्याय में स्वीकार किया गया है। जो भी देखेंगे - सुनेंगे यदि स्मृति में नहीं रहा तो क्या होगा। ज्ञान का पतन हो रहा है। नये - नये साधनों से ये पतन तेजी से हो रहा है। यह शोध हो चुके हैं कि ये आधुनिक यंत्र कितने हानिकारक है। आप मानो या न मानो। ऐसे बच्चे आपसे विपरित ही चलेंगे। अब वह युग आने वाला है आप रोक नहीं सकते है। विनय - वात्सल्य के साथ उन्हें समझायें कि इससे जीवन उन्नत नहीं अवनत होगा।

स्मृति भंग हो जाने का मतलब मस्तिष्क की बिमारी हो जाना। पागल घोषित करना पड़ेगा। आपका सारा व्यवहार चौपट हो जायेगा। माँ को माँ नहीं एवं पिता को पिता नहीं मानेगा। आपको उसे बताना पड़ेगा - ये भगवान

है ये मंत्र है। कितना भयानक होगा - थोड़ा सोचो तो। घरों में रख रहे हो, इसका क्या उपयोग होता है। एक तरफ तो आप स्वच्छता अभियान चलाते हो और इससे कितनी गंदगी आ रही है भीतर उसे भी तो देखो। युग ही खिसकता जा रहा है। ऐसी गति पर नियन्त्रण रखना हमारे बस की बात नहीं है।

आप चाहे तो इसे रोक सकते हो, आपको दया नहीं करना है। हमारे यहाँ दो प्रकार की साधना मृदु भी - कठोर भी बतायी है। वैद्य जी के पास जाते हैं। वे फोड़े को दबाकर पूरी मवाद बाहर निकाल देते हैं अन्यथा वह गंदगी पूरे पैर में फैलकर पैर भी काटना पड़ सकता है। वे कहते हैं - उधर देखो।

माता - पिता नहीं कर सकते हैं, यह काम तो डॉक्टर ही कर सकता है। आप भी नहीं - हमारे बस की बात नहीं। कठिन से कठिन निर्णय लिये बिना यह कार्य संभव नहीं है। वे वैद्य जी एक ही झटके में उसे निकाल देते हैं। वह रोगी अब कहता है - वैद्य जी महाराज हमें क्षमा करना - हमने आपको लात मारी थी। वैद्य जी कहते हैं - जिसने लात मारी थी हमने उसी को लात मारकर बाहर निकाल दिया है। आज जीवन ही बर्बाद हो रहा है। कैसा लग रहा है आपको।

जिस प्रकार घर में शव को मोह मारकर उठाया जाता है, इसी प्रकार घर में टी.वी., मोबाइल, टेलिग्राफी सबको विसर्जित कर दो। आप गणेश जी को तो विसर्जित करते हो। जिस दिन इन सबको विसर्जित कर दिया फिर देखो। एक बार धारा प्रवाहित चालु हो गयी। चमत्कार हो जायेगा। सही कह रहा हूँ चिंतन की धारा हमने समाप्त कर दी

है। स्वाध्याय के पांच अंग- घोष - आम्नाय सब समाप्त। ये होने लगा तो जिनवाणी का क्या होगा। जिनवाणी का बहुमान देखने लायक भी नहीं रहा।

२५००वाँ निर्वाण महोत्सव के समय देश में एक क्रान्ति जैसा हुआ। पुरी की पुरी समाज दो भागों में बंट गयी। आपको स्मरण दिला रहा हूँ उस समय प्रश्न उठा कि कलेण्डर आदि में फोटो जो छपते हैं, छापखाना में कैसी-कैसी अशुद्ध सामग्री का प्रयोग होता है। अतः ये सब उचित नहीं। आज तो सब कुछ टी.वी. में बताया जा रहा है। कहाँ जायेगा आप विचार करें।

आज मोबाइल छोटे-छोटे बच्चों गुड्डा-गुड़ीयों के साथ में दे रहे हैं। नमोऽस्तु मोबाइल से आ रही है। हम आशीर्वाद नहीं देंगे। जब नमोऽस्तु के लिये झुकते हैं तो वह भी चरणों में चढ़ा देते हो। वह आपके पास नहीं रहना चाहता पर आप उसे फिट से उठाकर पायजामे की जेब में डाल लेते हो। ये खतरे की घंटी है। इस मोबाइल के कारण देशावकाशिक व्रत समाप्त हो गया है। जीवन पर्यन्त नहीं युगों-युगों तक यह तकलीफ देगा। इन साधनों के माध्यम से कुछ भी याद नहीं रहेगा।

पहले पता लगाने पर सूतक लगता था। १० दिन हो गये कुछ नहीं लगता था। आज लगने के पूर्व घण्टी बज जाती है। हमने कंकड़ बांध लिया, जान बूझकर ऐसा कहते थे। विधान पुरा करेंगे। जो आयोजक है उसी के यहाँ भोजन करेंगे वह भी गाजे-बाजे के साथ। समय हो गया है। यहाँ जो ब्रह्मचारी एवं प्रतिष्ठाचार्य जी उपस्थित हैं वे भी त्याग करें। सफेद डेसवालों से प्रारम्भ होती अच्छा है। महावीर भगवान की जय हो

5-10-16 "अभिभावक बनो - अभी भावुक नहीं" प्रातः 9.15

जब हम बाहर से भीतर की ओर आना चाहते हैं अथवा भीतर से बाहर की ओर जाना चाहते हैं, दोनों प्रकार के रास्ते विद्यमान है, जो आप चाहो। अन्तर्जगत में प्रवेश करने के लिये कुछ आयाम करना पड़ता है, आलम्बन लेना पड़ता है। आलम्बन का मतलब और कुछ नहीं, हमें तो भीतर प्रवेश करना है। भीतर जाने के लिये ऐसा नहीं की कोई बहुत बड़ी ईमारत हो, उसमें कोई भवन में कमरा हो, उसमें आसन लगा हो, उस पर बैठना हो, ऐसा कुछ नहीं हैं।

आपको कुछ नहीं करना है, बाहरी वातावरण से सम्पर्क तोड़ने की प्रक्रिया करना है। केवल फाटक बंद करना है। कई बार पहले भी बताया है। जैसे आप ऐसे बैठे है, बस फाटक बंद कर लिया। (आंख बंद करके बताना) हमारी फाटक बहुत अच्छी है, जब चाहे तुरंत बंद हो जाती है। अब आवाज तो दो-उसकी भी फाटक है। वह भी बंद कर लेते है। जब कहीं भगदड़ी मचती है तो उस तेज आवाज में भी आप बारीक आवाज सुन लेते हो, बाकी आवाज सुनाई नहीं देती। कितनी भी आवाज क्यों न हो उसको शून्य कर सकते है।

यही बाहर से भीतर आने का प्रशस्त राजमार्ग है। राजा चले केवल वही राजमार्ग नहीं होता, महाराज चले वह भी महाराजा मार्ग होता है। हमारे पास ऐसा प्रबन्ध विद्यमान है, जब चाहे हमारे मार्ग पर कोई नहीं आ सकता। हम भीतर आना चाहे तो ऐसा

कर सकते हैं। हमारा मन इस ओर है। आपका ध्यान इस ओर आकृष्ट करने का प्रयास किया।

स्वास्थ्य दो प्रकार का होता है, उपयोग संबंधी एवं दूसरा शारीरिक स्वास्थ्य। हम अन्तर्मुखी होकर के आये हैं, मानो हमने किसी एक पदार्थ को रखा। बाहर का वातावरण भी सुधरेगा एवं भीतर का वातावरण भी सुधरेगा। भीतरी वातावरण को सुधारने के लिये यह सब प्रक्रिया बतायी जा रही है।

मानो एक लड़का (विद्यार्थी) अपने उपयोग को लगाता है। वह पाता है उसका बांया मस्तिष्क सक्रिय होता है, आधा दाहिना मस्तिष्क निष्क्रिय है। एक दूसरा विद्यार्थी है, उसे भी विषय दिया - उपयोग लगाया। अन्तर्मुखी होकर वह भी ध्यान लगाता है। सक्रियता की बात है। उसका मस्तिष्क के दांया एवं बांया दोनों भाग सक्रिय है।

चिकित्सक भी देखता है, कौनसा भाग सक्रिय है - कौनसा भाग निष्क्रिय है। निष्क्रियता कहाँ तक पहुँच गयी है। इसी का वे अध्ययन करके बताते हैं। कहते हैं कि जो शरीर का मुख्य भाग है वह निष्क्रिय हो गया। इसे सक्रिय करने के लिये ताजी शुद्ध हवा का उपयोग करें। कुछ भी मत करो। यदि आपके पास पैसे ज्यादा हो गये हो तो हमारे सामने यहाँ चढ़ा सकते हैं, कोई मना नहीं करेगा।

अब इस बात को हम खोलना चाहते हैं, वे दोनों विद्यार्थी कौन थे। पहला विद्यार्थी इंगलिश के माध्यम से सोच रहा था। आप सुन रहे हो। हवा आप अभी

भावुक हो - अभिभावक नहीं हो। जहाँ शोध कार्य हो चुका है। चिकित्सक भी बता चुके हैं। आप अपने बच्चों को Half mind बनाना चाहते हो। minded नहीं बनाना चाहते क्यों कि आप अभी भावुक हो - अभिभावक नहीं। अभिभावक बनना सीखो।

किसमें बच्चों का हित निहित है, कैसे अभिभावक कहलायेंगे, बच्चों की उम्र क्या है, क्या देना चाहिये, क्या पढ़ाना है, कैसे माता-पिता हैं आप। वह कहाँ जा रहा है, किसके साथ रह रहा है, कितनी बार रवा रहा है इन सबकी कोई जानकारी नहीं - कैसे संरक्षक हो आप। यह सब सीखना चाहिये या नहीं। नहीं सीखा है तो दोष आपका है।

बस कमा रहे हो, थोड़ा कम कमा लो, उतना समय बच्चों को दो। सही कमाई तो वही है - उसे छोड़ रहे हो। यह सब नौकरों के भरोसे नहीं हो सकता। माँ है तो धाय के भरोसे क्यों? पत्रकार बैठे हैं - बोलो। उत्तर आपको देना है। जब बेटा (लड़का) बिगड़ जाये तो कहते हो - महाराज ये तो आपका ही लड़का है। न्यायाधिश महोदय सबको न्याय देते हैं, अपने ही बच्चे को न्याय नहीं दिया। यह मेरा अधिकार है। गलती तो गलती है।

इस पर बहुत शोध - अनुसंधान हो चुका है। खुन का संचार नहीं होगा तो मस्तिष्क कुछ नहीं कर पायेगा। मूल में आम्नाय स्वाध्याय कहा था - गुनगुनाना। जैसे भंवरा फूल के ऊपर गुनगुनाता है। के द्वारा यह क्रिया होती है। वैज्ञानिक तथ्य है। इंगलिश में करेंगे तो यह नहीं होगा।

अपने बच्चे को Half mind बनाना चाहते हो तो ऐसा करो। English माध्यम से पढ़ायें। उच्चारण भी स्वाध्याय का हमारे यहाँ अंग है। भीतर-भीतर नहीं बोलो। स्पष्ट उच्चारण हो। उससे तरंगे मस्तिष्क में टकरायेंगी। वह सक्रीय होगा।

ज्यादा बादाम की कतली खाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। उससे तो और ज्यादा तकलीफ होगी, कोलेस्ट्रोल अधिक होता है। चक्का-जाम हो गया, अब हाइवे नहीं रहा। सभी चौक हो गया। चौक में रहने वालों अपने भीतर का चौका संभालो। आगे के लिये भी करो - एक दायित्व को तैयार करके रखो - नहीं रखोगे तो चौपाल बन जायेगा। अपनी संतान को जागरूक करो।

जागरूक वही है जो बच्चों को सही दिशा में तैयार कर रहा है। विश्वास मानो - ये बात मानेंगे तो आगे कम से कम 30-50 वर्षों तक तो ठीक से काम हो सकेगा। मुड़कर देखने की जरूरत नहीं रहेगी। दायित्व से विमुख होकर काम कर रहे हो तो वह व्यर्थ है, किसी काम में नहीं आयेगी। निर्विकल्प होने में इंगलिश भाषा काम आ सकती है। अभी Half mind किया है, धीरे-धीरे पुरा निष्क्रिय कर देगी। इसी का नाम निर्विकल्प होना है। अनुसंधान का विषय है।

इसलिये पहले रविवार दो तारीख को भी क्षमा मांगते हुये अपनी बात रखी थी। जो नहीं सुन पाये थे - आज दूसरे-तीसरे दिन फिर सुना दिया। जैसे आकाशवाणी में आता है मुख्य समाचार एक बार फिर। समय पूर्ण हो गया। कल अधुरा था उस विषय को पुरा कर दिया। आम्नाय स्वाध्याय

करो। एक घण्टे याद करेगा भीतर की नाड़ियाँ खुल जायेंगी फिर न्युरोलीजिस्ट के पास जाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। प्राचार्य - आचार्य - व्याख्यानाचार्य - उच्चारणाचार्य होते हैं वैसे आपको इसी रूप में तैयार करते हैं। यह विदेशी संस्कृति अथवा विदेशी संधान नहीं है।

भाषा ही इसमें सहायक हो सकती है, क्यों की भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। इंगलिश वालो! हम पुछना चाहते हैं - क्या आपने कभी इंगलिश में स्वप्न देखा? मुर्छा आती है। स्वप्न आता ही नहीं। उसे तो इंजेक्शन देकर सुलाया जाता है। आत्मा को मिलेगा ही नहीं - उद्देश्य ही ऐसा है।

मातृभाषा जो होती है, वही चिंतन की धारा को सक्रिय कर सकती है। इस हेतु हिन्दी (देवनागरी) को ही स्वीकार किया गया। इससे भी सूक्ष्म संस्कृत - प्राकृत भाषा है, सारे तंतु खुल जाते हैं। वहाँ तक आना चाहते हो तो यहाँ से प्रारम्भ कर दो, इतना ही हमारा कहना था।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

6-10-16 **"बचो संकल्पी हिंसा से"** प्रातः 9.15

हमने सुना है और पढ़ा भी है। इस ओर आपकी दृष्टि ही नहीं, किन्तु जब यह सिद्ध हो गया तो सोचना पड़ा। इस बात की पुष्टि जब चन्द्रगिरी (छत्तीसगढ़) में था वहाँ ज्ञात हुआ। वहाँ बहुत ऊँचा टॉवर लगाया गया - जो मोबाइल के काम में आता है। उसका परिणाम क्या होता है। ये अनुसंधान भी हो गया है कि चिड़ियों की संख्या बहुत कम हो गयी। मोबाइल के माध्यम से जहाँ तक सम्पर्क करते हैं, वहाँ तक जो चक्कर में आयेगा वह खतम हो जाते हैं। इसी

चिड़ियों की संख्या कम हो रही है।

अभी आपने जैसे ही पसारने की बात की हमें ये बात फलक से याद आ गयी। जाति-स्मरण अथवा स्मृति ज्ञान का प्रयोग इस ओर भी होना चाहिये। आज मोबाइल ऐसा कि ऊपर की जेब में अलग, नीचे की जेब में अलग, पीछे की जेब में अलग शृंगार का रूप धारण कर लिया है। चिड़िया जो संज्ञी पंचेन्द्रिय है वो खतम हो सकती है, तो फिर अन्य की क्या बात। ये हालत हो रहा है। आज विद्यार्थी जो पढ़ रहा है, उसकी कोई आवश्यकता है ही नहीं। वह चाहे तो इसको छोड़ सकता है। mobile

हमने अभी विषय को रखा, जिससे आप जो लेख मालिका बना रहे हैं उसके लिये हो जाये (व्यंग्य) गलाफ से आगे की तरह। संज्ञी पंचेन्द्रिय को नष्ट कर देता है - शोध का विषय हो गया है। मंदिर परिषद् जो पवित्र स्थान है वहाँ भी उपयोग नहीं करें, ऐसा तो कर सकते हैं। आप प्रारम्भ तो करें, उसके बाद पनपता जायेगा। यह भयानक चीज है। उसे रखने वाले व्यक्ति को कितना नुकसान होता है इसे समझें।

गर्भवती स्त्री पर भी इसका प्रभाव होता है। जन्म से पूर्व ही वह अच्छा बच्चा गर्भाशय में समाप्त हो रहा है। यह आग्नि की तरह प्रवेश करता है। इसी से आप लोग समझते होंगे X-Ray का आविष्कार हुआ। X-Ray X या X-Y-Z और Ray यानि किरण। X-Ray के माध्यम से ज्ञात कर लेते हैं। ऊपर पता नहीं चलता - इसके माध्यम से भीतर कैंसर पनप रहा है या नहीं पता लगाते हैं। इसे

जब आकर खड़ी हो जाती है, तो फिर पराबैंगनी - पराबैंगनी से कोई मतलब नहीं। उन किरणों से उन कीटाणुओं को मारते हैं। पहले 0 वाट से काम चल जाता था - अब गोलीबारी की तरह हो रहा है, आँखों पर भी प्रभाव पड़ रहा है। दिन में भी प्रकाश का उपयोग कर रहे हैं।

बच्चों के हाथ में भी चला गया है। इसे पराबैंगनी से छोड़ा क्यों मान रहे हो। X-Ray की किरणों से भयानक विषाक्त किरण को समाप्त करने के लिये वहाँ पहुँच जाती है। आप छोड़ा क्यों मान रहे हो। ऊपर की त्वचा थोड़ी-बहुत विकृत हो सकती है, भीतर से जला दिया - ऊपर असर नहीं पड़ा। विज्ञान का अतिप्रसार हो रहा है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर भयानक प्रयोग कैसे बचोगे।

कल नहीं परसों सुना विशेष रेल, विशेष स्थान की ओर जाती है, कैंसर एवं अन्य प्रदूषण से पीड़ित है, वे ही उसमें जाते हैं। कीटनाशक एवं अन्य बिड़वाव के प्रयोग के कारण जनता में यह रोग व्याप्त हो रहा है। पैसा है तो विष तो मत खरीदो। उस विष का प्रयोग तो न हो। जब मैं पढ़ता था तब औषध का प्रयोग फसल पर करने वाला व्यक्ति समाप्त तक ही जाता था। उसे फौलीडोन कहते हैं शायद। ये समाप्त होना चाहिये।

पराबैंगनी के साथ इस अभियान को भी अपने हाथ में ले लो, मुझे प्रसन्नता होगी। आज विज्ञान के कारण जो अहित हो रहा है, उसे भी सोचो। पशु-पक्षीयों, जानवरों, वनस्पति तक पर जो दुष्परिणाम हो रहा है, विदेशों में इन सबका प्रयोग क्यों नहीं हो रहा है।

वे जान गये है। चाहे जैन हो अथवा जैनेत्तर हो, विज्ञान आज इसका उपयोग क्यों कर रहा है। जैन भी उन दवाईयों को बेच रहे है। घोर हिंसा का कारण है। संकल्पी हिंसा की बात कही - इस ओर ध्यान हो। भारतीय संस्कृति कितनाशक की नहीं कितनिरोधक की संस्कृति है। इसको प्रस्तुत करना चाहिये।

मौसम के कारण जो भी कीट आदि उत्पन्न हो जाते है - उनका असर फसल पर पड़े ही नहीं ऐसा उपाय करना कितनिरोधक है। आज इस पर बहुत अनुसंधान हो गया है, अध्ययन हो गया है। बावि जो मानो बच्चों पर इसका प्रभाव पड़े, उन्हें जागृत करें ये भी बतायें की विज्ञान से कितनी हानि हो रही है। विदेश में इन सबका प्रयोग क्यों नहीं। आपके यहां भेज देते है और आप प्रयोग कर लेते है। इंगलिश में लिखा रहता है। आप उसे जान ही नहीं पाते है।

अब तो खाने - पिने की चीजें भी रसोई घर में आ रही है। See - food को बढ़ावा मिल रहा है इतने तेज धमाके हो रहे है उनका ध्यान ही नहीं है। See का मतलब देखो food यानि भोजन। बच्चों को चाहते है तो अब आवश्यकता छोड़ दो। हमारे यहां का भोजन ऐसा है जो बुद्धिवर्धक है, स्वास्थ्यवर्धक है, पौष्टिक है, गुणवत्तायुक्त है, संस्कृति का संरक्षण करने वाला है। ऐसा ही भोजन आप करेंगे, हमें विश्वास है, विश्वास को सुरक्षित रखेंगे तो हमें प्रसन्नता होगी, हम तालीयों से प्रसन्नता लेने वाले नहीं। समर्थन करना अलग बात है और प्रयोग करना अलग बात है। हम करेंगे - इससे मैं प्रसन्न नहीं हूं। गा लीजिये,

था, थे, थी इसे मैं अच्छा नहीं मानता। जब पढ़ता था तो ये क्रिया पद है - ये ठीक नहीं। वर्तमान में क्या है, इसे देखो। आज नकद और कल उधार हम भी आप लोगों से सीख गये हैं। अब आपकी परम्परा को हमने अपना लिया।

अपने-अपने बच्चों को संभालो। आपके मुख्यमंत्री जी ने एक अभियान चला रखा है - बेटी को संभालो, क्या बेटे को नहीं संभालोगे। बेटी तो चली जायेगी। घर में जो रहेगा उसे भी संभालो। संतान पर संस्कार डालो। See food ऐसा आहार हो गया, उसमें अन्न है ही नहीं। समुद्र में उत्पन्न होता है वह घासफूस भी नहीं। इसे छोड़ देंगे तो अहिंसक क्षेत्र में यह आपद्धर्म माना जायेगा।

वस्तुतः कृषि विज्ञान के साथ आजमोस को जोड़ा जा रहा है। कृषि के साथ अण्डे का उत्पादन (मुर्गी पालन) एवं मछली उत्पादन, मछली दाना का उत्पादन इसमें शामिल किया जा रहा है। भारत कृषि प्रधान देश है। आज इसके लिये सारी की सारी (ज्यादा) सब्सीडी दी जा रही है इससे तो मांस निर्यात को कभी नहीं रोक सकते हो। अहिंसा समाप्त हो गयी है। कृषि एवं इसे दोनों को समान सब्सीडी देकर प्रोत्साहन दिया जा रहा है। कैसे उपदेश दे सकोगे। आपकी क्रियाओं से मुझे प्रसन्नता होती ही नहीं। बुरा नहीं मानना, फुर्सत है ही नहीं वो तो चातुर्मास हो रहा है अतः आ जाते हो। दिन अभी अस्त नहीं हुआ है, अस्त होने वाला है, कुछ कर लो। आहार में - उत्पादन में परिवर्तन करो। प्रयोग करो तभी आप आगे होंगे। इतना ही कहकर विराम लेता हूँ।

अहिंसा परमो धर्मः जय।

7-10-16 "भविष्य का निर्धारण - इतिहास के आधार पर" प्रातः 9:15

यहाँ पर आप भी लोक में हैं और दूसरे लोग भी इसी लोक में हैं, किन्तु देव लोक बोलते हैं उसमें रह रहे हैं। यहाँ से ऊपर जाते हैं उसे देव लोक और नीचे जाते हैं उसे नरक कहा जाता है - आप बीच में बैठे हैं। अब हम ऊपर के सुखों की तुलना करते हैं। संभव है आप उसी के लोभ - लालच में धर्म कर रहे हो। फिर भी पुरुषार्थ तो कर रहे हो।

वहाँ वह देव स्वयं अपने अच्छे भाव कर रहा है। चोरी - चपाटी आदि नहीं करता है। पहले स्वर्ग में चला गया। यहाँ भी अपेक्षाकृत बहुत सुख है। एक स्थान पर लिखा पहले स्वर्ग में अमृत मिलता है। दूसरे स्वर्ग में उस अमृत का स्वाद कई गुना बढ़ जाता है। उसे देख नीचे के स्वर्ग वालों को लोभ आ जाता है। उसने और अच्छा काम किया तो वह ऊपर के स्वर्ग में चला गया।

अब ऊपर - ऊपर के स्वर्गों में मात्रा तो भिन्न - भिन्न होती जाती है। ऊपरी - ऊपरी। मात्रा की दृष्टि से वह अमृत ऊपर - ऊपर कम होता जाता है, किन्तु क्वालीटी की अपेक्षा बढ़ता ही जाता है। बढ़ता - बढ़ता सर्वार्थसिद्धि पर जाकर टिकता है, उससे भी अनंत गुणा सिद्ध परमेष्ठी को होता है। मैं सोचता हूँ। यहाँ पर थोड़ा सा मीठा खाये तो सुगर की बिमारी हो गयी है। देवों में कभी नहीं सुना कि सुगर हो गयी है। यहाँ से कोई डाक्टर बुलवाये गये हो। उन्हें दिखाया गया हो। अपने ही हाथ से इंसुलिन का इंजेक्शन लगाते हो। कभी आपके पास ऐसा केस आया क्या? (डॉक्टर साहब की ओर इशारा करते हुये)

ऊपर - ऊपर कहा है। मीठा तो बहता आता है। ये संभव है यहाँ से गये हैं - जाते समय कुछ करेला - मिर्च साथ लेकर गये हो। आप लोग जो करते हैं, वो कषाय के साथ करते हैं। अतः रोग में वह कषाय कारण बनती है। यह सत्य है वहाँ मिथ्यात्व के कारण नौवें ग्रैवेयक तक जाते हैं, पर कषाय की इतनी मंदता होती है - जो रोग का कारण नहीं बनती, न ही शारीरिक रोग एवं न ही मानसिक रोग होते हैं।

वे लोग अपने विमान की गैलरी तक आते हैं। स्वस्थान - स्वस्थान रहते हैं, अपने विमान को नहीं छोड़ते। अपना आंगन - अपनी बाड़ी। ग्रैवेयक अनुत्तर आदि वाले वहीं रहते हैं। कहीं भी तीर्थ पर जाने का विकल्प नहीं, न ही समवशरण में जाने का विकल्प। कषाय तो जैसे हो ही नहीं, बहुत मंदता रहती है। ऊपर - ऊपर परिग्रह, विषय - भोग, आवागमन में कमी होती जाती है। अपराजित आदि में तो दो ही बार जनम लेते हैं, तीसरी बार में तो मुक्त हो जाते हैं।

जगत काय स्वभावौ... दुःखमेव वा आदि का ही चिंतन करते हैं। जैसे हम आपको सुना रहे हैं - वैसे वे भावना / चिंतन करते हैं। किन्तु आत्म पुरुषार्थ अलग वस्तु है और कषायों की मंदता अलग वस्तु है। चोरी - चपारी तो है ही नहीं। विपरीत कुछ सोचा नहीं जाता। बाहरवीं आते - जाते हैं ही नहीं। कोई भी खटका - पटका होती ही नहीं। खटका - पटका का मतलब जैसे यहाँ पति - पत्नि, माता - पिता, भाई - बहन आदि में होती रहती है, ज्यादा हो जाती है तो फिर ढोक - ढाक करते ढोक - ढाक करलेते हैं

बाहर नहीं आने देते।

इस तरह वहाँ सुख की मात्रा बढ़ने पर भी वह किसी तरह से बाधक नहीं होती। ग्रैवेयक आदि के ऊपर से आने वाले तिर्यञ्च नहीं होते। बारह स्वर्ग, उससे ऊपर चार स्वर्ग और वहाँ से आने वाले ही तिर्यञ्च हो सकते हैं। मनुष्य ही सकते हैं। ग्रैवेयक आदि में जाने वाले स्त्री नहीं बनेगी - भले ही मिथ्यात्व के कारण गये हो। इतिहास का अध्ययन तो करो।

बाप-दादा का इतिहास देख लो। वे कितना आगे थे। आप कितना भी करो तुलना कर ही नहीं सकते। वहाँ का इतिहास मनुष्य बनाते हैं, जो मुनि बने थे। भीतरी खटक-पटक नहीं छुटती तब तक आप न बाहर न ही भीतर परिवर्तन नहीं कर सकते हैं। ये बात अलग है, तीर्थंकर अपवाद है, बाकी 63 शलाका पुरुष वैमानिक देवों से ही आते हैं, न भवनत्रिक से आते हैं, न ही नीचे से तथा न ही तिर्यञ्च से आ सकते हैं।

भविष्य का निर्धारण इतिहास के आधार पर ही कर सकते हैं। कहाँ से आये हैं और कहाँ जाते है, ये सोच लो, आगम में सब बातें बतायी हैं। खटक-पटक से बचो, तब इस पर सोच सकते हो। इधर-उधर टिकिट के लिये खूब प्रयास कर रहे हो। सामाजिक कार्य करो। हाथ जुड़े ही रहते हैं, तभी टिकिट मिलेगा। हम कहते हैं यहाँ पर आ जाओ - आपको टिकिट मिलेगा ही। उस टिकिट से यह टिकिट अलग तरह का है। अलग रंग-रोगन का है। सोच लो - समझ लो। अच्छा चिंतन है। मैं सोच रहा था आज निकलेगा या नहीं निकलेगा।

बहुत अच्छा निकल गया।

सुनते हैं - आजकल ज्यादा डोज दे रहे हैं, हमने कुछ लोगों से सुना है। जो चिकित्सक होता है, वह बहुत समझदार होता है। कई बार दवाई की खुराक (डोज) की मात्रा बढ़ा देता है। फिर मेरे सामने युवा वर्ग भी बैठा है, क्रोनिक डिजीज। पुराने रोग में डोज बढ़ाया जाता है, बढ़ाते-बढ़ाते पुराने रोग ठिक किये जाते हैं। वैसे भी हम चिकित्सा रोगी के अनुसार नहीं करते, रोग के अनुसार चिकित्सा करते हैं।

जो नहीं आ पाये हैं उन तक यह आवाज पहुँचा दो। दुबारा कहुँ - लाल परेड ग्राउण्ड में जो आये थे उन लोगों को भी सुना देना। शासन - प्रशासन को भी। 70 वर्ष के उपरांत भी बिमारी बनी हुयी है। डोज कड़वी है, किन्तु सुगर कोटेड करके दे रहे हैं, हम पुराने वैद्य नहीं पर पुराने शास्त्रों में जो लिखा है, उसे देखकर ही यह डोज तैयार किया गया है। इसलिये हम कभी भी पकड़ में नहीं आयेंगे।

चिकित्सा एक सेवा है, उसी भावना से करें। अभी आप इसे समझ नहीं पा रहे हो। किसी को ज्यादा हो गया है तो एक-आध दिन बीच में उस डोज को नहीं लेना। Gape हो जायेगा तो आप ठिक-ठाक हो जायेंगे। हमने ऐसी डोज तैयार की है, जो वर्षों तक काम करेगी। हमारी दवाई की कभी भी एक्सपायरी डेट नहीं होती, हमारी दवाई (डोज) का तो एक्सटेंशन बढ़ता ही जाता है। वह तब तक बढ़ता जाता है, जब तक कि रोग समूल ठीक नहीं हो जाता है। तब तक वह दवाई काम करती रहेगी। समय हो गया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ ॥

8-10-16 "दृष्टि हो आत्मसुख की ओर" प्रातः 9.15

कल नहीं परसों आप लोगों के सामने देवों के सुखों की बात कही थी। ऊपर-ऊपर के देवों का सुख बढ़ता ही जाता है। किन्तु उन सुखों के सेवन के उपरांत भी उन्हें न ही शारीरिक एवं न ही मानसिक वेदना होती है। यहाँ पर उन विषय-भोगों का शरीर पर प्रभाव पड़ता है। मस्तिष्क में भी उन विकारों का प्रभाव होता है। एक सीमा तक ही भोगा जा सकता है। मनुष्य के पास इतनी क्षमता है ही नहीं कि वह भोग सके।

ऊपर-ऊपर विषयों की मात्रा, कषाय, मुर्छा, अभिमान आदि घटता-घटता चला जाता है। शरीर भी घटता चला जाता है। सात हाथ का शरीर घटता-घटता विजयादिक में एक हाथ प्रमाण रह जाता है। एक हाथ का मतलब ऐसा नहीं कि सूच्यांगुल की तरह पतला रह जाय, लकीर चंद नहीं हो जाता। जैसे दुबला-पतला 6 फीट का लकीर चंद हो जाते हैं कुछ लोग। ऐसे ही गोल-गोल हो जाते हैं उन्हें कद्दुलाल बोलते हैं। ऐसी दशा देवों में नहीं होती।

एक हाथ का होने पर भी पूर्ण सांगोपांग होता है, अलग ही सौष्ठव होता है। विकृतियाँ पूरी की पूरी समाप्त हो जाती है। आप लोगों से कहना चाहता हूँ कि अभी पंचम काल दुःखमा काल है, आने वाला जो है वह है दुःखमा-दुःखमा काल। वह तो असह्य होगा। गरिमा है कि कम से कम अभी अरिहंत-सिद्ध कर रहे हो। यदि थोड़ी सी दुःख की पोटली अभी भी बढ़ जाये तो यहाँ कोई नहीं आयेगा। थोड़ी सी सुख

की मात्रा बढ़ जायेगी तो मैं धर्मध्यान कर लूंगा, ऐसा मानने वाला भी भूल में है। आराम के साथ धर्मध्यान, कभी नहीं। भूल जाओ। उस समय खाने-पीने की बात करेंगे। धर्मध्यान वो तो बाद में देख लेंगे। आप देखते रहो। बब्बा का देखने का काल आ गया। उस समय धर्मध्यान नहीं कर पाओगे। ये काल ही ऐसा है यहाँ सुख मिलने वाला नहीं।

इतना अवश्य है कि अभी सहन करने योग्य दुःख है, धर्म-ध्यान करना चाहते हो तो अभी कर लो। उम्र निकल जाने के बाद कुछ नहीं। फिर तो कहोगे महाराज - कमर में दर्द होता है, घुटनों में दर्द होता है। अतः करते जाओ - करे सो काम एवं भजे सो राम। आतम राम तभी मिलेगा।

देवो जैसे विषय-भोग मांगना चाहो वह नहीं झेल सकते। न ही नारकी जैसी शारीरिक वेदना सहन होगी। द्वि-स्थानीय - त्रि-स्थानीय सहन ही नहीं कर पाओगे। वैक्रियिक शरीर चाहिये - इसतरह के सुख के लिये भी एवं दुःख के लिये भी। इतना अवश्य है कि वे देव एवं नारकी तप नहीं कर सकते। जब कि यदि कोई मनुष्य अपने मन को नियन्त्रण एवं इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है तो देवों से भी ज्यादा आत्मानुभूति सुख का संवेदन करता है। कहा भी - "द्विविध संग बिन शुद्ध उपयोगी, मुनि उत्तम निज-ध्यानी" ऐसे मुनिराज ही शुद्ध उपयोगी कहलाते हैं। दो स्थानीय चाहिये, ज्यादा स्थान बढ़ेगा तो असह्य वेदना प्राप्त होगी।

जबरदस्ती लेकर आओगे तो नहीं होगा, ज्यादा वेदना में। रोज-रोज वही रोटी - वही दाल। वही आत्मा की बात रोज-

रोज करने लगुंगा तो कोई नहीं आयेगा, इसलिये उसी आत्मा की बात को स्वाद बदल - बदल कर प्रस्तुत करता हूं। अतः "सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा, अहमिन्द्र के नाहीं कह्यो" यहां के चाहे कोई नरेन्द्र भी क्यों न हो। नरेन्द्र का मतलब चक्रवर्ती होता है, नरेन्द्र का नाम वाला नहीं।

चक्रवर्ती भी वह सुख का संवेदन नहीं कर सकता है। पंचेन्द्रिय सुख की अनुभुति एवं आत्मानुभुति के सुख की अनुभुति दोनों अलग - अलग वस्तु है। आप लोग क्या स्वाद लेते हो, स्वाद तो मुनिमहाराज लेते हैं। वह स्वाद जब मन एवं पंचेन्द्रियों को नियन्त्रण में रखते है, तब जाकर मिलता है। विषयों का संवेदन एवं आत्मा का संवेदन बहुत अंतर है। दौलतराम जी ने भी खुब लिखा है। बहुत आयाम करना पड़ता है।

कल तो ओर - ओर आयेगा पर उसका कोई अंत नहीं है। उपदेश वाला भी नहीं मिलेगा। चातुर्मास होते हुये कितने दिन हो गये।

गिनो या मत गिनो पर बचेंगे तो उतने ही। रात में दुकानदार बैठकर लेखा-जोखा करता है, आज ग्राहक तो कम आये पर बचत उतनी ही हो गयी। प्रतिदिन यह विचार करो, एक दिन और घट गया। सुख का अनुभव करने के लिये मन एवं इन्द्रिय की जरूरत ही नहीं, आत्मा से ही उसका अनुभव हो सकता है। "उसकी आप बात भर कर सकते है, पर उससे बात नहीं कर सकते," क्या कहा। आप लोग "ध्यान की बात कर सकते है, ध्यान से बात नहीं कर सकते है।" यह आप कहीं भी जाकर कर सकते है, वह स्वादिष्ट ही होगा। समय हो रहा है। ज्यादा डोज देना ठिक नहीं, आज 5 मिनिट पहले चालु हो गया था। प्रारम्भ कहाँ से होता है, उसे देखो - अंत नहीं। आप लो

कह रहे हैं कि अभी समय हुआ ही नहीं। ऐसे ही 9.30 नहीं बजता है, ये बात अलग है कुछ घड़ीयों में ऐसी सैटिंग कर दे कि वह 9.25 पर आकर वहीं-वहीं घुमने लगे। पर ध्यान रखना समय को कोई रोक नहीं सकता एवं न ही समय को भगा सकता। इतना ही पर्याप्त। कल का कल देखा जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

9-10-16 "बोध देते कॉंच और दर्पण" प्रातः 9.15

हम जब कॉंच में देखते हैं तो दो प्रकार के कॉंच होते हैं। एक कॉंच में देखते हैं तो हमारी दृष्टि बाहर नहीं जाती, इसको दर्पण कहते हैं। दर्पण में देखने से हम स्वयं दिख जाते हैं। दूसरे कॉंच में देखने से हमारी दृष्टि टिकती नहीं, किन्तु पार हो जाती है। ये दोनों कांच हमारे लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण उद्बोधन दे रहे हैं।

ऐसा कॉंच जिसमें दृष्टि कहीं टकराती नहीं, रोको नहीं, जाते जाओ - जाते जाओ, रुको नहीं। रोको भी नहीं और रुको भी नहीं। आप लोग रुके हैं और रोकना पसंद करते हैं। पहले दर्पण में दृष्टि रुक गयी। रुकी क्यों? वह स्वयं रुका हुआ है अतः दृष्टि को भी रोक देता है। हमारे पंचपरमेष्ठी में पहले अरहंत परमेष्ठी हैं। उनके स्वरूप को देखने पर ज्ञात होता है, वितरागता झलकती है। जैसे दर्पण में सभी पदार्थ प्रतिबिम्बित हो जाते हैं, ऐसे ही उनके ज्ञान में भी सर्वज्ञता आ जाती है। किन्तु स्वरूप का ज्ञान नहीं हो पाता।

अरिहंत अभी सशरीरी है। शरीर की छाया है। वे अभी रुके हैं, अतः हम उनके पास जाकर रुक जाते हैं। सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप ऐसा नहीं है, उनके पास जाते ही दृष्टि

आर-पार हो जाती है। इसलिये उन्हें हम लोगों ने पहले नम्बर में नहीं रखा। सांसारिक प्राणी उन्हें देखने से किसी प्रकार का राग-द्वेष नहीं करता है। सिद्ध परमेष्ठी हमें नहीं दिखते हैं, क्योंकी हमारा स्वभाव धूमिल हो गया है। शुद्ध द्रव्यों को देख नहीं सकते। परमाणु आदि शुद्ध द्रव्य जैसे नहीं देख सकते वैसे ही सिद्ध परमेष्ठी भी नहीं देख सकते।

आंखों के सामने दर्पण लगाले तो अच्छा दिखेगा, नहीं दिखेगा इसीलिये चश्मा लगाते हैं, दर्पण नहीं। चश्मा में दृष्टि टिकती नहीं, उस पार हो जाती है। कांच का प्रयोग करें दर्पण का नहीं। स्वरूप बोध के लिये तो दर्पण का ही उपयोग करें। चलते समय भी दर्पण का उपयोग करेंगे तो गिर जायेंगे। कर्त्तव्य का बोध करते हुये हमेशा-हमेशा आगे बढ़ना चाहिये। आज रविवार का दिन है। मध्याह्न में बोलना था। बहुत सारी जनता आयी है, अतः कुछ तो देना ही था। यहाँ तो रोज रविवार जैसा ही घटित हो रहा है। सातों वार समान कह रहे हो तो हम फिर रविवार की छुट्टी ले लें तो कैसा रहेगा) रविवार को रवि भी कभी छिपता नहीं। फिर छुट्टी अच्छी मन जाये तो अच्छा है।

हमने कल नहीं परसों एक विषय आपके सामने रखा था। जो व्यापार करता है अथवा आवश्यकता है, वह मोबाइल का उपयोग करे तो कोई बाधा नहीं, किन्तु जो पढ़ता है या जिनके लिये आवश्यक नहीं उनके लिये इस खतरनाक यंत्र की कोई आवश्यकता नहीं। विज्ञान कहता है, हम नहीं कहते। इसे खतरनाक यंत्र घोषित किया जा चुका है। बच्चे न रखें तो अच्छा है। शायद माता-पिता उनके बाध्य करते हो। यदि बच्चे मांगे तो उन्हें समझायें, यह बच्चों

है। नेत्रज्योति, स्वास्थ्य को बर्बाद करने वाला है, समय को बर्बाद करने वाला है। मन को अस्थिर रखने वाला है। सुनते-सुनते वाहन चला रहे हैं, दुर्घटना घट जाती है। आप लोग उन्हें समझाओ। यह बहुत बुरा व्यसन हो गया।

सदुपयोग तो है ही नहीं दुरुपयोग हो रहा है। कुरीतियों को भी सीमा में ही प्रयोग करना चाहिये। देशावकाशिक व्रत तो है ही नहीं, दिग् दिगन्तक तक सम्पर्क बना हुआ है। यह बीमारियों का घर है। बाह्य तो हम कर नहीं सकते। बाह्य करने से इसका महत्व और बढ़ेगा। हानि और लाभ का अध्ययन आप स्वयं करें। विडियो कैसेट पहले सिनेमागृह (चलचित्रगृह) में ही लगाते थे, अब आपका घर ही चलचित्र/सिनेमागृह हो गया है। पांच भाई हैं तो सबके कमरे में अलग-अलग टी.वी. होता है।

इसके कारण मानसिक संतुलन बिगाड़ने में, आपस के संकोच/लज्जा को खत्म करने में, मर्यादा को भंग करने में अब कोई कमी नहीं रह गयी है। पहले और आज में जमीन-आसमान का अन्तर हो गया है। हम कह सकते हैं और अब कहना ही चाहिये। संयम में भी बाधा आने लगी है। कोई घर में इसका त्याग करना चाहता है तो छोड़ नहीं सकता, यह भी बीमारी है, इस बीमारी से भी बचना आवश्यक है। आप सब समझदार हैं पर मझधार में हैं। आप ही ने सोचा होगा कि बेटा कमाऊ हो जाये। वह कमाऊ नहीं खर्चीला है। किसी को कह नहीं सकते। वह स्वयं आपसे कह देता है या तो आप बाहर चले जाओ या हम कह जाते हैं। रक्तबंधन का काम नहीं है। माता-पिता होने

है। तुम भी न जाओ, हम भी न जायें। तुम जैसा कहोगे हम वैसा रहेंगे, बेटा। अभीतक मिलकर रहें है। सामंजस्य बिठाओ। विकारों के कारण अन्तर बढ़ता जा रहा है।

संसार मात्र रह गया, संस्कार समाप्त हो गये है। अब संस्कार के साथ संसार जोड़ना है। मेहनत तो करना ही होगा। कोरी स्लेट हो तो बच्चो को अच्छे ढंग से समझाया जा सकता है। स्लेट देखा हो तो जानो। बच्चे नहीं जानते। जो गुरुजी पाठ देते है, पहले से पाठ नहीं देते साफ सुथरी स्लेट हो तो उसमें कुछ पाठ दे सकते है।

यहाँ पर भी इतनी जनता आती है हमारे पास पर कोरी स्लेट वाले कम आते है। पढ़-पढ़ कर आ रहे है। पढ़ाई का पड़ाव ही नहीं है तो क्या पढ़ायें। क्या पढ़ रहें है मालुम ही नहीं है। आयेंगे तब पता लगेगा। हम इस घर के लायक नहीं है। सब चला गया। घर मे रहना ही नहीं चाहते। इसे बोलते है, कोरी स्लेट की जगह ऐसी ही पढ़ाई हो रही है। प्रतिदिन चिंता बढ़ती जा रही है। रातदिन चिंता क्यों? उपयोग के लिये ध्यान ही नहीं जा रहा है।

पहले ऐसा चित्र/सिनेमा होता था जिससे पाठ मिलता था। आज सब कुछ समाप्त हो रहा है। यहां भी हम आये तब बोला महाराज घर-घर दिखाने का प्रबंध करना चाहते है (Live) हमने मना कर दिया। यहाँ कौन आयेगा। हमें पुजारी चाहिये, जो मन्दिर में अपने हाथ से झाड़ू लगायें। यहाँ पर जगह नहीं मिलनी चाहिये तभी मैं मानुंगा, भगवान भी कहे कि समोशरण रच गया। ज्यादा समय नहीं, आपलोगों को देखने से उदीरणा हो जाती है। अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

10-10-16 "समझदार वही जो समझदार की बात माने" प्रातः 9.15

आसमान से शुद्ध जल की वर्षा होती है, धरती तक वह वर्षा किसी से भी छुती नहीं है। वायुमण्डल के सहारे आ जाती है। इसके उपरान्त एक खेत है, उसमें गन्ना है, नीम का वृक्ष है, वह वर्षा स्पर्श होकर धरती के भीतर पहुँच जाती है। पक्षपात नहीं करती। वह जब गन्ने के भीतर पहुँचता है तो ज्ञात है क्या परिणाम निकलता है, वही बूंद नीम की जड़ों में ज्ञात है क्या परिणाम निकलता है।

हम ऐसे ही शुद्ध परिणाम बनाने की बात करें। भगवान को आदर्श मानकर अपने परिणाम शुद्ध करते हैं। भगवान आप धन्य हैं, आपने अपने परिणाम को शुद्ध कर लिया है। अपने अपराध को स्वीकार कर लिया फलस्वरूप इस प्रकार के परिणाम भी वे गन्ने से स्वरूप हो गये। नीम में इस प्रकार के परिणाम नहीं होते।

एक नीम, इसके उपरान्त कांजीर इसके उपरान्त विष, इसके उपरान्त हलाहल क्रमशः कड़वाहट के बढ़ते हुये क्रम में चार उदाहरण बताये। नीम तक रह जाता है तो आयुर्वेद में औषध के माध्यम से काम आ जाता है। आप लोग नीम की दातुन करते हैं अथवा पत्ती भी ली जाती है। कांजीर की कड़ुवाहट हो तो विषमज्वर आदि दूर करते हैं। विष को चिकित्सक विषाक्त फोड़े आदि में अपने हिसाब से काम लेते हैं। किन्तु हलाहल कोई काम नहीं आता।

हमारे पास दोनों प्रकार की संभावना (गन्ने एवं नीम रूप) रहती है। भावना भवनाशनी कहा है। आप पुरुषार्थ के द्वारा कड़वाहट में कमी ला सकते हो। सर्वतः

मीठे रूप भी परिवर्तन कर सकते हो, आप मीठे हो जायेंगे। कल नहीं परसो दो दिन पूर्व कहा था मीठा खायेंगे तो बीमारी हो जायेगी, किन्तु देव बनेंगे तो हमेशा-हमेशा अमृत ही मिलेगा। सम्यग्दृष्टि यहाँ आते ही अपना कर्त्तव्य प्रारम्भ करेंगे। कई लोग एक से प्रारम्भ करते-करते दीर्घकाल तक युं ही चला गया। आस यह रखो की देवगति मिलेगी। अर्थ यह निकला की हम अपने समय का सदुपयोग किस प्रकार कर पाते है। अभ्यास नहीं होने पर ऐसा होता है।

थाली परोस दी गयी, उसमें भी वास्तु होती है। कहाँ पर क्या रखा जाता है। दांये हाथ से भोजन करते है, अब यदि थाली में दांयी ओर भोजन में नमक रखा तो वही ज्यादा खाओगे। बांये बाजु रखो इसलिये इसे। उठाकर निकालना पड़ेगा, अतः उससे बच जाओगे। ज्यादा मात्रा में कुछ भी खाओगे तो नुकसान ही करेगा। इसलिये बच्चों को अधिक मात्रा में कुछ नहीं देते। खिचड़ी में बीच में गड्ढा करके घी परोसा वो वहीं आजु-बाजु की खिचड़ी खा लोगे, शेष नहीं। अब पूरे में मिलाकर दिया। वो ढूंढता है घी कहाँ मिलेगा। मोकली है अलग से नहीं मिलेगा। वह बच्चा समझदार नहीं है।

जो समझदार है उनकी बात मानना ही समझदार है। इसलिये बच्चो को समझने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। ज्यादा दे दिया तो लीवर की शिकायत से ग्रसीत हो जायेगा, अब वह जीवन में कभी ऊपर नहीं उठ सकेगा। आपका वर्त्तव्य है तभी उसके हितैशी कहलाओगे अन्यथा उसके दुश्मन बन जाओगे। लाड़नात् बहु दोषात् ताड़नात्..... ज्यादा लालन-पालन करेंगे दोष बढ़ जाते है, ताड़न करने से गुण

जाते हैं। जैसे तांगा चलाने वाला हाथ में हंटर लेकर उस घोड़े के ऊपर मारता नहीं मात्र शांतिधारा की तरह उसे छुता रहता है, इतना ही नहीं इससे आगे चाक के ऊपर जो हंटर का डंडा होता है उसे लगाकर आवाज करता है। वह जानता है कि मालिक बैठा है।

गलत दिशा की ओर ले गया तो दोनों ही खतरें में पड़ जायेंगे अतः मार्ग में सावधानी रखना जरूरी है। इसी तरह बच्चों का लालन-पालन करना चाहिये। पुचकारने के समय पुचकारो एवं चांटा मारने के समय चांटा भी मार देते हैं। यह चिकित्सा प्रणाली है। बच्चा रोयेगा - हंसना अच्छा नहीं माना जाता, रोना अच्छा माना जाता है। डॉक्टर यहाँ पर बैठे हैं।

जब बच्चा जन्म लेता है उस समय रोना अनिवार्य है, नहीं तो उस बच्चे की मृत्यु निकट मानी जाती है। आँखों से पानी आना परम आवश्यक है। ईसा के बच्चे या ही मान लेंगे के बच्चे रोटी नहीं खायेंगे, तभी स्वास्थ्य गड़बड़। यहाँ माँ कहती है अभी नहीं है रोटी, वह दो चार बार मांगेगा, जान लेगी माँ तभी वह रोटी देगी। तेज भूख लगने पर खाने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। चुपड़ चुपड़ कर नहीं होगी तो भी खालेगा। हम भी ऐसे ही करते हैं, जगृती में नहीं आयेंगे तो बुद्ध नहीं होगा। 9.30 हो गया है। कहीं से भी आये हो सब लोग इसी में से बोरकट लेना। ऐसा भी नहीं आगे-आगे वालों को देते हैं। अंतिम लाइन अंत में जो है वहाँ तक बिना भेदभाव हमारी ध्वनि जानी चाहिये। आगे तो मान स्थान की अपेक्षा बैठे हैं। बच्चों पर निगाह रखिये। कहीं नहीं रहेंगे फिर भी मैं निगाह में हूँ ऐसा वह जानेगा तो वरदान सिद्ध होगा। अहिंसा परमो धर्मः दीप

11-10-16 — "बिना पुरुषार्थ सब शून्य" — प्रातः 9.10

— हम लोगो के पूर्व में जो कोई भी कर्म बंधे है, वे हमें समय पर अवश्य ही फल देंगे। इन सब के होते हुये भी उसमें हमारे पुरुषार्थ का क्या योगदान है, ये बहुत महत्त्वपूर्ण है। आपलोग प्रतिदिन दियासलाई जलाते है। उस तिनके पर जो 2-2½ इंच बराबर है, एक छोर पर कुछ बारूद / विस्फोटक सामग्री चिपकी हुयी है। इस प्रकार के तिनके बीसो रहते है। आप समय की प्रतिक्षा करो कि हमने ही चिपकाया है, समय पर चिनगारी निकलेगी, ऐसा प्रावधान है ही नहीं।

— बीच में बुझ नहीं सकती, बुझाना चाहे तो भी बुझा नहीं सकते ये भी आपको ज्ञात रहे। हमारा पुरुषार्थ क्या है, डब्बे से निकालते है। घर्षण करते है, अगर नही जिधर नं. लिखा रहता है अपितु आजु-बाजु में करते है। वहाँ यदि कोई पानी लगा है तो कितने भी रगड़ते जाओ सारी डब्बी खाली तो भी उजाला / अग्नि नहीं मिलेगी। उस विस्फोटक के योग्य भूमिका के लिये डब्बी को सर्दी अथवा वर्षा में हफ्वर रखते है।

— हम लोग समय पर प्रमाद के कारण उसे रो देते है। तब समय पर वह काम नहीं आता है, कारण हमारा उसमें प्रमाद ही है। प्रमाद अपने आप में कोई कर्म नहीं है, कर्म के उदय में औदयिक आदि भाव होते है। कर्म के उदय में ही हम प्रमाद कर जाते है, हम यह भूल जाते है। ये वस्तुतः हमारी गलती है। कर्म का उदय न कहकर प्रमाद कहा है। जब सावधानी रहती है तो दीपक को काम लिया बाद में दिपक की बाती को कम कर दिया, जिससे तेल फालतु न जले, ये हमारा पुरुषार्थ है। आवश्यकता

होने पर उपयोग, आवश्यकता न होने पर उसे कम कर देना। लिमिट करते रहना वह बाती। बाती गिर भी न जाये, ये भी पुरुषार्थ जरूरी है। कर्म उदय में हो या उदय में न हो तो भी हमारा पुरुषार्थ ही प्रबल कारण माना जाता है।

अल्प समय में हम खो जाते हैं। भय रहता है तो सजग रहते हैं, भय नहीं रहता तो सो जाते हैं। जिन विद्यार्थियों को स्कूल नहीं जाना होता वे देर तक सोये ही रहते हैं। परीक्षा के समय नींद नहीं लेते। परीक्षा की तरफ आप जायेंगे या आपकी तरफ परीक्षा आयेगी। दुकान खोलने में प्रमाद नहीं करते भगवान का दरवाजा खोलने में प्रमाद कर जाते हैं। ऐसा इसलिये की इसमें प्रतिस्पर्धा आकर्षण नहीं है। पुरुषार्थ के कारण आपके काम अच्छे होंगे।

जागृति - जिज्ञासा - आदि सब इसी पुरुषार्थ से जुड़े रहते हैं। पहले के लोग क्या करते थे, दियासलाई का प्रयोग नहीं करते थे, अपने चूल / सिगड़ी में आग बनाये रखते थे। आग बुझ न जाये, उसका दुरुपयोग न हो इसलिये उसे छिपाये रखते थे। कंडे में आग है, उसे राख के नीचे छिपाये रखते हैं। जब उपयोग में लेना हो, राख को हटाया और काम में ले लेते थे। यदि एक बार आग बुझ गयी तो मांगना पड़ता था क्यों की उस समय दियासलाई तो थी नहीं। चकमक - चकमक बोलते हैं इसे। आपके भीतर भी इसी तरह आग जलती रहेगी तो धार्मिक अनुष्ठान आदि करते रहेंगे, वह आग यदि बुझ जायेगी तो कुछ नहीं कर पाओगे।

इच्छा के अभाव में कोई कार्य नहीं कर पाओगे। आग जब हमेशा के लिये बुझ जायेगी तो पंचम काल भी समाप्ति की ओर होगा। छः कर्म भी समाप्ति हो प्रारंभ हो जायेंगे। फिर धर्म-कर्म कुछ नहीं कर पायेंगे। दूसरी बात हम इस आशा का

उपयोग करें। हम अपने पुरुषार्थ द्वारा उसे बनाये रखें। एक समय बाद वह पुरुषार्थ घटने लगता है, जब की जीवन के आदि में वही पुरुषार्थ विकासशील रहता है। पढ़ाई आदि के समय वह विकासशील रहता है, बाद में कहने लगते हो - महाशय दिमाग नहीं चलता है। दिमाग को जितना चलना था उतना वह चल चुका है।

जिस दिशा में पुरुषार्थ किया, वह उधर ही जाता है। जिस दिशा में पुरुषार्थ नहीं किया वह बुझ जाता है। इसी पुरुषार्थ से बड़े-बड़े शोध प्रबंध भी लिख सकते हैं। गुरु जी उदाहरण दिया करते थे - दादा जी की गोद में नाती पोते बैठ रहते हैं। उन दादा जी को कोई काम तो रहता नहीं था, आजकल के दादा जी अलग ही हैं, उनसे काम छुटता ही नहीं। वह बैठा था गोद में भीतर से आवाज आयी। वह नाती गया। जाने के उपरांत माँ ने उसे जो कुछ भी खाने के लिये दिया और कुछ दादा जी के लिये भी दे दिया। वह नाचता हुआ रहा है। एक हाथ में दादा जी के लिये है।

दादा जी को दे दिया। दादा जी उत्साह के साथ जैसा नाती खा रहा है, वैसे नहीं खा रहे हैं। देखो सब दादा जी ताली बजाने लगे। फिर दादा जी ने अपने हिस्से में से थोड़ा सा नाती को और दे दिया, वह नाती और कूदने लगा। दादा जी कुछ नहीं कर रहे हैं। क्या कारण है। विचित्रता यह है कि जो अवकाश प्राप्त कर चुके हैं, उनकी आग ऊपर की ओर नहीं नीचे की ओर धंसती जा रही है, फिर भी वे अपने आप के बारे में नहीं सोच रहे हैं। नाती को ये समझ में आ गया। इसके लिये भी एक काल होता है।

पुरुषार्थ कर सकता है। गुरुजी कहते थे - "थारी - म्हारी" में ही शक्ति लगा रहा है। थारी का मतलब तेरी और म्हारी का मतलब मेरी। बारूद घिस जायेगी उसके बाद कितना भी पुरुषार्थ करो चिनगारी नहीं निकलेगी।

अभी भी सोच लो येतो बुझने दो है, बाद में तेल कितना ही डालो काम नहीं आयेगी। जब तेल था तो बाती नहीं, जब बाती है तो तेल नहीं। पुरुषार्थ के लिये आपके सामने यह विषय रखा। विषयों के प्रति उदास होने की आवश्यकता है पर यह लोभ ऐसा है कि छुटता ही नहीं। तृष्णा नागिन ज्यों-ज्यों..... तृष्णा को नागिन की संज्ञा क्यों दी है। इसलिये की सर्प के काटने के बाद उसकी औषध ही सकती है, हो ही यह नियम नहीं औषध पर आधारित है पर तृष्णा नागिन एक बार डंस ले तो वह भव-भव में भी उसका जहर उतर नहीं सकता।

जो भव्य सम्यग्दृष्टि होता है वह अपने जीवन के समय को विभाजित कर अपना काम करता जाता है, पहले के लोग धन की अपेक्षा काल का वर्गीकरण कर काम करते थे। उसी के लिये आश्रम व्यवस्था होती थी। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम एवं अंत में सन्यास आश्रम रखा। साधु बने या न बने पर सन्यासी बन सकता है। सन्यास का मतलब अपने आपको गृहस्थी के जंजाल से मुक्त कर देना। इससे उधर-पुलट काम कर रहा है तो निश्चित रूप से वह समय का सदुपयोग कर ही नहीं रहा है। वानप्रस्थ के समय भी वह घोड़ा चश

जाता है। आज आप लोग इसका अध्ययन करते ही नहीं है। प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी परीक्षा के समय पेपर हाथ में लेते ही समय का वर्गीकरण कर लेता है। तीन घण्टों को वह हिसाब में एक रेखा खिंच लेता है कि इतना समय इस प्रश्न को देना है। पैराग्राफ आदि बना लेता है। नहीं तो समय हो जाता है और कुछ प्रश्न छोड़ देता है।

अनिवार्य को भूलता नहीं, यदि जल्दीबाजी में अनिवार्य को ही हल नहीं करता तो उसकी कॉपी जाँच ही नहीं की जाती है। आज आप लोग अनिवार्य प्रश्न के बिना लिखते चले जा रहे हो। इतनी मेहनत की क्या जरूरत है। हम समझ रहे हैं आगे भविष्य क्या होने वाला है। कृपांक की ओर देखते रहते हो। कुछ अंक हो तो कृपांक काम कर सकता है, कुछ अंक ही नहीं तो कृपांक क्या काम करेगा।

सब शून्य ही शून्य मिलता है।

आज विज्ञान में शून्य को अंक मानते है, जैनाचार्यों ने शून्य को अंक स्वीकार ही नहीं किया। शून्य को संख्या माना है तब जब शून्य के पीछे अंक हो। कृपांक तभी जब आपके पास अंक हो। हमारी कृपा भी तभी होगी जब आप पुरुषार्थ करेंगे अन्यथा हे दिनदयाल! हे कृपा निधान! हे दयालु! इन सबसे कुछ होने वाला नहीं है।

अंक बिना शून्य-शून्य ही है। इसे भूलना नहीं है। समय हो गया।

अहिंसा परमोधर्म की जय बोलो

12-10-16 "आलोचना नहीं समालोचना है" प्रातः 9.15

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में अनेक कारण बताये गये हैं। उनमें धर्मश्रवण नाम का कारण चारो गतियों के लिये बताया गया है अर्थात सभी गतियों में यह होता है। देवगति हो या तिर्यञ्चगति हो, मनुष्य गति में तो होता ही है। नरक गति में कैसे धर्मश्रवण को कारण माना? मुनिमहाराज या विद्याधर तो वहाँ जा नहीं सकते। तिर्यञ्च भी नहीं जाते जो मनुष्य में ज्यादा तत्त्व ज्ञानी हो वो अपना मंच वहाँ बनाकर उपदेश देते हो - ऐसा भी नहीं है।

देव लोक से देव आते है, वे आकर धर्म श्रवण करा सकते हैं। हाँ लेकिन इतना है कि तीन ही पृथ्वी तक जाते है। इसमें भी केवल 12वें स्वर्ग तक के ही देव नीचे आते है। 13 से 16 वें तथा ऊपर के देव नीचे नहीं आते है। 12वें तक में भी अहमिन्द्र तो जाते ही नहीं क्यों की वे समवशरण में नहीं जाते तो नीचे क्या जायेंगे। वे किसी भी प्रपञ्च में नहीं पड़ते। ऊपर के देवों में शुक्ल लेश्या ही होती है अतः वे नहीं जाते उससे नीचे (13वें से) वाले देव ही जाते है ऐसा आगम में उल्लेख आता है।

कई जो पुराने मित्र थे अभी ज्ञात हुआ, उन्हें संबोधित करने के लिये नीचे तीसरी पृथ्वी जाते हैं, जिससे उन्हें सम्यग्दर्शन की भी प्राप्ति हो सकती है। अब इससे नीचे भी तो सम्यग्दर्शन होता है। उन्हें कैसे प्राप्त होता है। ये देव वहाँ क्यों नहीं जाते जब की इनके पास तो शास्त्र और सामर्थ्य है। सुरक्षा कवच है।

आगम में आया नहीं उन्हें धर्मश्रवण से सम्यग्दर्शन नहीं होता क्यों कि उनकी कषाय अलग है। उनके पास कषाय का बाहुल्य होने के कारण वे देव वहाँ नहीं जाते। जैसे यहाँ पुलिस होती है।

आप व्यवस्थित होंगे तो पुलिस भी व्यवस्थित रहती है, आप अव्यवस्थित तो वो फिर लाठी-चार्ज भी कर सकती है। देव लोग भी तभी आते हैं, जब कषाय कम हो। कषाय का बाहुल्य होने के कारण धर्मश्रवण नहीं करा सकते हैं। फिर भी सम्यग्दर्शन होता है। कैसे होता है, ऐसा प्रश्न उठाया गया आगम में। सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि को बुला-बुला कर कहता होगा - मंच बनाकर। लेकिन वह मिथ्यादृष्टि कहता होगा मुझे सब मालुम है, ऐसे ही धर्म की लम्बी-लम्बी बातें करता है। ये सब प्रश्न उठाये गये हैं - आप सुन रहे हैं - हव।

पीछे आवाज आ रही हो तो हाथ उठाकर बतायें। हमारा आशीर्वाद वहाँ पहुँचे। (हंसी) आप लोग आगे बैठकर सुन रहे हो वो खड़े-खड़े भी सुन रहे हैं। रेल में जैसे खड़े-खड़े भी सफर तय कर लेते हैं, चलो जमीन तो है, ऐसा मान लेते हैं। वहाँ धर्मश्रवण क्यों नहीं करा सकते - आगम में उत्तर दिया परस्पर में / आपस में हमारे ऊपर उपकार करो ऐसा कहने वाला कोई नहीं है वहाँ। अनुग्रह करने का भाव है ही नहीं।

दूसरे से अच्छा चाहते हो तो स्वयं के पास भी अच्छा रखो। नहीं तो धर्म की हँसी हो जायेगी। सत्य बुलवाना

चाहते हो तो स्वयं एक भी दिन असत्य मत बोलो। इसमें बहुत बड़ा रहस्य है। धर्मात्मा वही हो सकता है जो कभी भी ऐसा न बोले की मेरी बात मानो। वह सदैव गम्भीर रहता है, स्वामित्व जाहिर नहीं करता। सामने वाला इन सभी बातों को मार्क करता है। 10-20 लोग मिलकर हम मार्गदर्शन चाहते हैं। हम देते ही नहीं। वे कहते हैं हम चाहते हैं। हम दोबारा आ जायेंगे। यह केवल जहाँ होता है तभी सम्यग्दर्शन की भूमिका बनती है।

आपस में अनुग्राहक-अनुग्राह्य भाव वहाँ है ही नहीं होता। आप जबरदस्ती करके अपने-अपने शास्त्र का प्रचार करना चाहते हैं। अखबार वाले की तरह कमाई करेंगे। लेख नये कहाँ से लायेंगे वही लेख लौट-लौटकर आयेंगे। बाजार गरम होना चाहिये। आप लोग धर्म-श्रवण की महिमा समझ लो। सम्यग्दर्शन की महिमा तो सुनते हो किन्तु इसरे पर करुणा-वात्सल्य-दया भी होना चाहिये।

कोई मार्गप्रशस्त करना चाहता है तो थोड़ा बहुत संकेत देना तब होता है। आप लोग थोपना चाहते हैं दूसरों पर। आलोचना करते हैं। सम्यग्दृष्टि इस प्रकार के फंदों में पड़ता ही नहीं। उसे तत्त्वज्ञान से मतलब रहता है। कषायों को कम करने के बारे में सोचता रहता है। मेरे उज्जवल भाव और विशुद्ध होते जायें ऐसा ही सोचता है। चेलाकर आता है-बार-बार मांगता है। समय नहीं भी देता तो वह बुरा नहीं मांगता। जब तक अच्छे ढंग से नहीं सेता तब तक नहीं मिलता। यहाँ यही रित है। ऊलही-ऊलही नहीं होना चाहिये। माँ जानती है कि इसे सच में भूख लगी है या नहीं अन्यथा चूल्हा में से लकड़ी निकाल बता देती है। धार्मिक वातावरण बनाये रखो। दूसरों की आलोचना

करने वाला अपनी बात ज्यादा करता है। आज ये ही पब्लीसीटी हो रही है। सही तो वही है - थोपना नहीं चाहिये। बार-बार बुलाना भी थोपना ही होता है। उसके पीछे न रहें, सामने वाला बार-बार नम्रता रखे तभी दिखाना चाहिये। अन्यथा आपको भी दोष लगेगा। लोकतंत्र में किसी को बाध्य नहीं करना चाहिये। किन्तु प्रस्तुति करते रहना चाहिये।

आपके सामने जो ग्राहक आया है, उसके सामने प्रस्तुति ऐसी कर दिजिये कि वह और ग्राहको को ले आयेगा। पुराने ग्राहक को समय न देने पर भी नाराज नहीं होता इसलिये मैं नये ग्राहको को भी समय दे देता हूँ। छोटा बच्चा रोता है तो पहले उसे दूध पिलाया जाता है, बड़े को कह दिया जाता है, बैठ जा तू तो अब रोटी खाने योग्य है। पहले जिसे चाहिये उसे देना चाहिये। आज ये नहीं हो रहा है।

आजादी के 70 वर्ष बाद भी ऐसा ही प्रचार-प्रसार हो रहा है। ये उसकी आलोचना कर रहा है-वो इसकी आलोचना कर रहा है। दोनो के दोनों एक-दूसरे के दोष देख रहें है, तो दोष ही सामने आयेंगे गुण नहीं आ सकते। दोष का तो कोष है संसारी प्राणी। गुणों का आदान-प्रदान होता है दोषों का नहीं। अखबार में दोषों की ही प्रधानता होती है। पूहले आलोचना नहीं समालोचना होती थी। आलोचना एवं समालोचना में बहुत अन्तर है। जैनाचार्यो ने कहा कि अपनी आलोचना एवं दूसरों की प्रशंसा करने से उच्च गोत्र का बंध होता है तथा दूसरो की आलोचना एवं अपनी प्रशंसा करने से नीच गोत्र का बंध होता है। सर्वोच्च बनना चाहते हो तो दूसरों

की आलोचना नहीं प्रशंसा करो। प्रचार-प्रसार का असर घटता जा रहा है। सम्यग्दर्शन धारी इन सब से बचता है। "अप्पाणं णिंदाणं" अपनी निंदा-आलोचना करता है। बहुत विनय रखता है। जो वर्षों से समालोचक है, उनका अनुभव प्राप्त करता है। वह ज्यों का त्यों लाकर रख देता है, जैसे कोरस्पॉन्डेन्स पत्र दे देता है। साहित्यकार समझता है। इससे दिशा मिलती है। निखार भी आता है। बच्चे भी प्रौढ़ हो जायेंगे। इतना ही नहीं जो पढ़े-लिखे नहीं है उनके लिये भी यही रास्ता है।

समालोचना जनता भी कर सकती है। ये बात अलग है जब वोट लेने पहुँच जाते हैं तो हाँ-हाँ कर देती है। वह वोट नहीं नोट की ओर चला जाता है। बुरा नहीं मानना शराब की बोतल कैसे बट जाती है। गलत तो नहीं कह रहा हूँ। बंटती है। चलो अब कोई भी लीडर आकर युद्ध नहीं रुकता। समालोचना आवश्यक है, किन्तु वह समालोचना निष्पक्ष हो कर करें। समालोचना से ही दिशा मिलेगी। इसके बिना कैसे रह सकते हैं।

एक ड्राइवर शराब पीकर गाड़ी कैसे चला सकता है - नहीं चला सकता। इसी तरह एक पुलिस की आवश्यकता है। सम्यग्दर्शन इतना सस्ता नहीं की गाजर-मूली की तरह बेच दो। हमारा समय हो गया है। पांच मिनिट विलम्ब हो गया। सम्यग्दृष्टि बने हो तो उतावली नहीं करना। आचार्य वीरसेन महाराज के अनुसार धवला में जो लिखा है उसे एक बार पढ़ लेना चाहिये। उसका विपरित अर्थ निकालने का प्रयास मत करना।

अहिंसा परमो धर्मश्री जय।

13-10-16 "आओ बनायें सम्यग्दर्शन की भूमिका" प्रातः 9.15

कल हमने धर्म श्रवण की बात कही थी। इसके उपरान्त जो भी सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है वह धर्म श्रवण से नहीं कर सकता अर्थात तीसरे नरक तक ही धर्म श्रवण सम्यग्दर्शन का कारण बताया उसके बाद अन्य माध्यम से प्राप्त करता है। वहाँ की क्या गतिविधियाँ रहती है, कैसा व्यवहार रहता है, क्या करते हैं इसके बारे में आचार्यो ने कहा है, ऐसा क्षेत्र न जहाँ कर्म है, न धर्म है, नहीं कोई सामाजिक व्यवस्था है, न ही समरसता है कुछ नहीं फिर भी वैचित्रता देखो, सम्यग्दर्शन की भूमिका कैसे आगम में उसका चित्रण मिलता है।

ऐसी स्थिति में व्यवस्था की बात करते हैं। [कौन लाइट कर रहा है, सीता में बैठे हैं, मोबाइल सत्तरह में है। सुन रहे है तो सुनना ही चाहिये, यह अनुशासनहीनता है। स्वतन्त्रता नहीं स्वच्छंदता है]

हाँ तो मैं कह रहा था - ऐसी स्थिति में नारकीयों के परिणाम कैसे होते होंगे सम्यग्दर्शन प्राप्ति के लिये। वहाँ धर्म श्रवण नहीं वेदनानुभव के कारण सम्यग्दर्शन होता है। जहाँ तक धर्म श्रवण से सम्यग्दर्शन बताया वहाँ पर वेदना कम होती होगी। उसके बाद कषाय इतनी अधिक होती है कि धर्म श्रवण कर ही नहीं सकता।

जो कोई भी व्यवस्था मिली है वही रहेगी। उसी के अनुसार कार्य कर सकते हो। राजकीय ठाठ-बाठ क्या होते है, मालुम पड़ गया होगा। सुना है यहाँ प्रधानमंत्री जी आ रहे हैं, हर व्यक्ति के यहाँ नहीं आ सकते, हम

सबके यहाँ जा सकते हैं। पता चल जाया उनकी गतिविधियाँ। हर कहीं रवा नहीं सकते, ज्यादा रवा नहीं सकते। महाराज के अनुसार गिनकर रखाओ। हमने जिस गाड़ी में बिठा दिया उसी गाड़ी में, उसी समय जाना है। अनुशासन इसी को बोलते हैं।

स्वच्छंदता के साथ तो सम्यग्दर्शन होगा ही नहीं। व्यवस्था में इतना खर्च क्यों कर रहे हैं क्यों की कभी भी - कहीं भी ऐसे सम्यग्दर्शन प्राप्त नहीं कर सकते हैं। हमारा हित किसमें एवं अहित किसमें ये तो देखना चाहिये। दूसरे की वेदना को देखना सीखो। आप लोग पैर दिखाओ की रवाली है, तभी मुख अच्छी मानी जाती है। किया हुआ भोजन भी तभी पचेगा जब भूखा होगा। जो चाहे नहीं रख सकते, जहाँ कहीं भी सो नहीं सकते। खिड़की नहीं खुल सकती, हाँ लाइट की व्यवस्था हो जायेगी। सब कुछ नपा-तुला। सब पूछना होगा - जो - जितना - जब - जहाँ आप अपनी मर्जी से नहीं कर सकते। आप अपनी चाह को तोड़कर रख दो। आप नरेन्द्र मोदी नहीं अभी देश के पधानमंत्री हैं। आप एक नहीं - 125 करोड़ हैं। सम्यग्दर्शन की भूमिका तभी बनेगी।

वेदनानुभव भी तभी होगा - जब ये लगने लगे कि हे भगवन्! यह सब कैसे हुआ। अतिस्मरण हो गया, उस समय धर्म करने के लिये कहा था पर एक न मानी ऊपर से और बरसे। मैंने घोर अनर्थ कर दिया। अब ऐसा कभी नहीं करूंगा। हे भगवन्! मुझे जल्दी-जल्दी इस दुख से बाहर निकालो भगवन्। किन्तु वहाँ जल्दी कुछ नहीं - अकाल मरण नहीं है। विष भी भक्षण कर लें तो मरण नहीं अपितु छिन्न-भिन्न शरीर भी पारे की तरह वापस जुड़ जाता है। सम्यग्दर्शन की भूमिका इसी

पीड़ा के फलस्वरूप होती है। कब तक बना रह सकता है? शुरू एवं अन्त के अन्तर्मुहूर्त को छोड़कर 33 सागर तक वह सम्यग्दर्शन बना रहता है। हमारी पीड़ा भी सुन लो भगवन्! किन्तु आप मुस्कान ले रहे हो और ऐसा कह रहे हो, कौन सुनेगा तुम्हारी पीड़ा को। इतना कटु अनुभव होता है। फिर वह संकल्प लेता है (हे भगवन्! मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा। किन्तु वहाँ से निकले नहीं की बाहर की हवा लग गयी। ऊपरी हवा लग गयी।

ऐसे में अब यहाँ सम्यग्दर्शन नहीं होगा। वहाँ से आकर संकल्प को तोड़ रहे हो। दुर्लभता होती सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है। गुणस्थान की चर्चा मात्र से गुणस्थान नहीं बढ़ता। सुनना ही नहीं चाहते सुनने की भूमिका भी नहीं बनाते हैं। जा रहे हैं - सब चले जा रहे हैं। जाओ। धर्मश्रवण भी नहीं, जिनदर्शन भी नहीं। मुनि महाराज के दर्शन तो हैं ही नहीं। आप कैसे सोच रहे हो कि हमें मिल जायेगा ही सम्यग्दर्शन। मात्र धर्मश्रवण ही सम्यग्दर्शन का कारण नहीं पीड़ा (वेदना अनुभव भी सम्यग्दर्शन का कारण है।

जहाँ पीड़ा अनुभव भी नहीं तो जाति-स्मरण से हो सकता है। विभंग अवधि ज्ञान से दूसरों को कष्ट पहुँचाने का भाव रहेगा। माला फेरते हुये भी सम्यग्दर्शन की भूमिका बने ये कोई नियम नहीं, जंगल में भटकते हुये भी भूमिका बन सकती है। अपनी निन्दा करें, अपनी आलोचना करें, अपनी गर्हा करें। जितनी बार कर सको उतनी बार करो। जैसे आँखों को जितना स्वच्छ रखोगे उतना ही स्पष्ट दिखेगा। नींद से उठकर हाथों से मलने पर दिखेगा, आंख धोने पर और स्पष्ट, चश्मा लगाने पर

और स्पष्ट तथा कषायों को कम करने पर और स्पष्ट दिखता है। समवशरण में जाने का अवसर मिला तो भी वह भूमिका नहीं आ पायी। क्यों नहीं बनी कारण स्पष्ट था - आ गये पर मन घर पर ही था। मोहमहामद पियो अनादि..... । पीने वाले को निकृष्ट मानते हैं। नसेड़ी बोलते हैं। गाली तो नहीं हैं न। ऐसे नशे वालों का नशा उतारना बहुत कठीन है। प्रभावक मुनि मिले तभी संभव है।

अनेक प्रकार का नशा होता है। अध्यात्म में नशा नहीं जागृति रहती है। दुनिया को भूलाया जाता है, अपने को याद रखा जाता है। ऐसी महक-सुरभि-सुगन्ध में वह प्रफुल्लित रहता है - दुनिया की ओर आकृष्ट होता ही नहीं। उस मस्क को कैसे सुंघाऊँ, कैसे सुनाऊँ, आपकी नाड में साइनस हो गया है। सुन भी नहीं रहा, सुंघ भी नहीं रहा। ये गंध वह नहीं ले पा रहा, सब खो जायेगी, तितर-बितर हो जायेगी। अभी तो हिंगड़े की गंध ले रहा है। ऐसी दशा में सम्यग्दर्शन की भूमिका नहीं तो मैं क्या करूं। आपको अपनी नली साफ करना होगा। हमारे सामने रखकार रहे हो यह गलत बात है। रखकार करके आओ फिर बैठना। तभी नीचे जायेगा। साफ कर लो फिर बोलो।

भीतर किये गये अनर्थों की पीड़ा होनी चाहिये। कर्मों के वेग ऐसे होते हैं कुछ भी करना चाहो नहीं करने देंगे। चेतो और अपने कर्तव्य की ओर अभिमुख हो जाओ। किसी से तुलना मत करो। तुलना से रहित होकर अपने भीतर देखने का प्रयास करो। समय कम था, 5 मीनिट हमने दे दिया अब मांगने की आदत छोड़ दिजिये, फिर भी दे दिया आगे हम कटौती करने की ओर हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ॥

15-10-16 "विश्वास कैसा - नाई जैसा" प्रातः 9.15

सम्यग्दर्शन का प्रकरण और उसकी उत्पत्ति के प्रकरण को पिछले 4-5 दिनों से आपके सामने लाया जा रहा है, उसी विषय में एक छोटा सा उदाहरण लाया जा रहा है। राजा का किसी पर विश्वास नहीं होता, होना भी नहीं चाहिये। नेतृत्व का काम है, दायित्व का भार देने के लिये पहले सोचेगा इससे दायित्व का निर्वहन हो रहा है या नहीं। सुनी-सुनाई बात पर विश्वास नहीं करता। पहले अध्ययन करता है फिर निर्णय लेता है।

एक परीक्षार्थी भी पहले अध्ययन करता है, जब परीक्षा देता है तो अपने शब्दों में लिखता है। छोटे-छोटे वाक्य से अपनी बात को स्पष्ट करता है, बड़े-बड़े वाक्य नहीं बनाता। राजा का किसी पर विश्वास नहीं होता, यहां तक की अपने मन पर भी विश्वास नहीं करता। मन पर विश्वास नहीं करना मतलब वह मन का दास नहीं होता। आप सभी लोग मन के दास बने हुये हैं, अतः मन उदास है।

ऊपर बैठने या आगे बैठने की तो सबकी इच्छा होती है, पर मन के दास बनकर काम पीछे बैठने का करते हैं। राजा किसी पर विश्वास नहीं करता, किन्तु विश्वास जहाँ होना चाहिये वहां तो विश्वास करता ही है यह पक्का है। कैसे? राजा की दाढ़ी बढ़ गयी, नाई को बुलाओ। नाई आता है, वह जैसा कहता है वैसा करता है। कहा- बैठ जाओ राजा बैठ जाता है। औजार निकालकर उसी के सामने धार करता है, धारदार है। एक हाथ में औजार पकड़ लिया, दूसरे हाथ से गर्दन पकड़ लिया युं करो वह युं ही करता है। हाथ में औजार वह भी सान पर चढ़ा हुआ।

राजा कहता है- अच्छे ढंग से दाढ़ी बनाओ। सोचो। नाई कितना विश्वास पात्र होगा। हाथ में औजार है उसकी राजा जो तलवार एवं ढाल रखता है किन्तु अभी कुछ नहीं। बस विश्वास है। भरोसा रखना चाहिये।

भगवान पर विश्वास करो। पंचमकाल है आज तो ऐसा कहकर रोओ नहीं। सम्यग्दर्शन प्राप्त करना कोई हँसी-खेल नहीं है। आज स्वाध्याय तो खूब हो रहा है, बड़ी-बड़ी थिसीस लिखी जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति नाई पर भरोसा करते हैं, वह स्वप्न में भी असावधानी नहीं करता है औजार चलाने में। कुल परम्परा से वही काम कर रहा है। देश-विदेश का प्रत्येक व्यक्ति विश्वास रखता है, मन में सब याद रखता है, ऐसा आप लोगों द्वारा भगवान पर विश्वास हो जाये तो परिवर्तन हो जाये। इनके द्वारा जो बताया जा रहा है, बताया गया है अथवा बताया जायेगा उसे प्रयोग करें। जीवन में ऐसा घटित करो।

आप लोग इतना सुनते हैं फिर सोच लेते हो इससे क्या होगा। जहाँ बुद्धि जा ही नहीं सकती इसी कारण परिवर्तन नहीं होता। समर्पण कर दो। क्यों सोच रहे हो। श्रद्धान करो। जो कहा है वह सम्यग्ज्ञान है। जहाँ बुद्धि के प्रवेश की अनावश्यकता ही नहीं वहाँ बुद्धि का प्रवेश क्यों करा रहे हो। ऐसा मन-वचन-काय से घटित होना चाहिये। इस उदाहरण के माध्यम से/दृष्टान्त के माध्यम से दार्ष्टान्त की ओर ध्यान दीजिये। आपका चातुर्मास तीन चौथाई से अधिक निकल चुका है भले ही मानो या न मानो। वही 7 दिन का ही सप्ताह था

16-16 दिन का सप्ताह नहीं। इतना जल्दी-जल्दी समय कैसे निकल गया। आजकल नोट गिनने का यंत्र आता है इतनी जल्दी से गिनती है कि पता ही नहीं चलता।

किस पर विश्वास करें, ग्राहक पर विश्वास नहीं, मुनिम जी पर विश्वास नहीं, अपनी आँखों पर विश्वास नहीं। जिसे हमने स्वयं ही रखा है उस पर विश्वास नहीं। इस प्रकार संशय में पड़ा व्यक्ति जीवन के अन्तिम पड़ाव में धर्म-कर्म करना चाहता है। अब सब घटिया माल खरीदना चाहता है, फोकट (मुफ्त) में लेना चाहता है। कोई समझाना चाहे तो कहता है तेरा लिया है क्या तेरा। मान लो कहीं गजरथ हुआ। किसी पद पर आसीन हो गये। हाथी चला गया, पालकी भी खुल गया। आप कहते हैं, भैया अभी तो बहुत मंदी पड़ी है।

कर्ज थोड़े ही लिया है हम संकेत पहुँचा देंगे - अगले गजरथ तक देते रहेंगे। घटिया भाव हो गये। नाई पर पूरा विश्वास होता है। बहुत बड़ी बात है यह। विश्वास को ही सम्यग्दर्शन का नाम दिया है। तत्त्वों पर दृढ़ श्रद्धान होता है। कुछ तो मार्जिन रखो, जिससे आपको कुछ दिया जा सके। आज मार्जिन की परम्परा ही खत्म हो गयी। पहले जब पढ़ते-लिखते थे बही-खाता इत्यादी में चार-आना छोड़ा जाता था। यह प्रश्न है इसका यह उत्तर है। आज नहीं छोड़ते, थोड़ी सी असावधानी हो जाये तो दोनों गड़बड़ हो जाता है।

अपने जीवन में कुछ मार्जिन रखना चाहिये। विश्वास के अभाव में हम मार्जिन लेकर

नहीं चल रहे हैं। देखो - परखो इसका नाम विज्ञान है। किन्तु मोक्षमार्ग में विश्वास रखा जाता है। क्या भाव चल रहे हैं क्या पता। वह नाई जिधर गर्दन देखने को कहता है, जिधर देखने को कहता है उधर ही देखता है वह राजा, तभी रूप निखरेगा।

फिर दाढ़ी वाले बब्बा नहीं रहते। मात्र 10 मीनिट में वह रूप निखारकर दे देता है। क्या प्रयोग है। शस्त्र चलाने एवं औजार चलाने में कितना अंतर है। उसमें मारने का ही संकल्प है और इसमें विश्वास किया कि आप 15 दिन तक युवा दिखेंगे। श्रद्धान के साथ चारित्र के लिये जिसको चुना है, फिर स्वप्न में भी सोचो नहीं उसी के माध्यम से होना है। विपरित कर्म आते हैं, उन्हें तोड़ने का मार्ग प्रशस्त होता चला जाता है, अन्यथा वहीं रुके रहेंगे।

इस उदाहरण के माध्यम से यह सोचा कि अधःकरण आदि लब्धियाँ भव्य को ही होती हैं। करण लब्धि को छोड़कर शेष 4 लब्धियाँ "भव्याभव्यासामण्णेसु" सभी को हो सकती हैं। करण लब्धि का मतलब वह सम्यग्दर्शन प्राप्त कराके ही छोड़ेगी। एक बार अधःकरण प्रारम्भ हो गया अब मृत्यु भी नहीं हो सकती। हां अनन्तानुबन्धी उखड़ सकती है फिर भी एक बारतो सम्यग्दर्शन होगा ही भले ही छूट जाये। आपको अभव्य मैं क्यों कहूँ, बस कदम उठाना है। नाई के हाथ में गर्दन देना है (जिससे मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सको। राजा जब रणांगण में कूद जाता है तो किसी पर विश्वास नहीं करता सबको समाप्त करके ही छोड़ेगा ऐसा प्रण करता है।

अहिंसो परमो धर्मः

"दो दिवसीय (15-16 अक्टूबर) मूकमाटी पर संगोष्ठी हुयी आ० श्री द्वारा 4 सत्र में प्रवचन - लाल डायरी में अलग से देखें।"

17-10-16 "कैसे बनायें जीवन को टनाटन" प्रातः 9.15

बहुत सारा कूड़ा-कचरा है, सुमेरु के बराबर किन्तु एक अग्नि की स्फुलिंग मात्र भी प्रमाद के कारण उसमें जा गिरी। आपने सोचा कुछ नहीं-कुछ नहीं-2 कह कर बैठे हैं, वहाँ पर धुँआ चालु हो गया। अब पानी और वाणी कुछ काम नहीं कर पायेगी। अब बचाना हमारे वश की बात नहीं है। ये एक उदाहरण दिया, इसी प्रकार दूसरा उदाहरण और दिया।

घाव हुआ - भयंकर घाव था। औषधोपचार के माध्यम से उसको धीरे-धीरे भरते गया। इसके उपरांत वह थोड़ा सा मात्र रह गया। वृण बोलते हैं उसको। एक दिन प्रमाद के कारण उसे थोड़ा सा खरोंच लिया होगा। अब वह पहले की अपेक्षा और अधिक इरेजित हो गया। आचार्यों ने बड़ी कृपा की दो ही नहीं तीसरा उदाहरण और दिया।

पहले के लोग बहुत सीधे एवं सात्विक प्रकृति के होते थे किन्तु वे भी कर्मों की चपेट में आते ही रहते थे। ऐसी परिस्थिति में किसी से कर्ज (ऋण) ले लिया। अब वह कर्जदार हो गया। धीरे-धीरे कर्ज देता गया-उ थोड़ा सा रह गया। आप लोग सुन रहे हैं। हव। रविवार का सुनना और सोमवार का सुनना उसमें अन्तर तो आता होगा। क्या हो गया, बस वह ऋण थोड़ा सा रह गया। प्रमाद के कारण उसे चुकाना भारी हो गया। इसलिये वृण घेरता है उसमें आलस

मत करो, अग्नि की स्फुलिंग छोटी है उसमें आलस मत करो, ऋण थोड़ा सा रह गया, उसमें भी आलस मत करो। ये छोटे-छोटे तीन उदाहरण हैं पर अच्छे-अच्छों की चोटी हिला देने वाले हैं। नीचे गिरने में समय नहीं लगेगा।

इसी तरह कषाय साफ हो गयी, पुरी माफ नहीं हुयी, थोड़ी सी रह गयी है, जैसे सूई के छेद में से पुरा हाथी निकल गया है, मात्र पूंछ अटक गयी। हम कहते हैं पूंछ भी निकल गयी उस पूंछ का मात्र एक बाल अटक गया है। ये उदाहरण इसलिये दिया गया है कि कषाय को कम मत समझो। वह कषाय जो ऊपर की ओर चढ़ रहा है। जाना ही जाना है थोड़ी सी उदय में आ जायें तो नीचे लुढ़कते हुये आना है।

यह उदाहरण सबके लिये दिया गया है, इसमें मुनि महाराज भी आ गये। मानव - दानव भी आ गये। गरीब - धनी भी आ गये। गरीब धनी का अर्थ गरीबों में भी गरीब नहीं लगाना। हाँ कषायों में गरीबी आ जाये तो अच्छा है। पूर्णतः गरीब बन जाओ, कुछ भी पास न रहे। मूर्छा को परिग्रह कहा है। आप लोग मुर्छा वालों के पीछे रहते हैं, ज्यादा मुर्छित नहीं होना। आजकल बेहोश करके चिकित्सा की जाती है। ऐसा सुनते हैं कितनी देर के लिये बेहोश करना यह भी तो देख लो। अभी २-५ दिन पहले ही एक बहुत सुन्दर बालक को उसके माता-पिता लाये थे। वह ३-५ मिनिट से कोमा में है। उसकी किसी बिमारी को दूर करने के लिये उसे बेहोश किया था। वह वापस होश में नहीं आ पाया। आप लोग होश में सुन रहे हो। आप लोग इन सभी उदाहरणों से मुक्त हैं।

अग्नि, ऋण, वृण इनसबसे मुक्त हैं किन्तु कषाय तो मनो-मन टनो-टन है। जीवन को टनाटन कैसे बनायेंगे। जीवनको टनाटन बनाने के लिये तीनों उदाहरण याद रखेंगे। परिग्रह को मुर्छा नहीं बनायेंगे।

आप लोग लोकतंत्र में जी रहें हैं, समूह को बलवान बनायें। अपनी स्वतंत्र पहचानबनाओ कोई भी हराने वाला नहीं है। अन्यथा आपको निष्क्रिय कर देंगे। सक्रिय होकर समूह में रहते हो तो आपको कोई बांट नहीं सकता। इस प्रकार आप लोग गृहस्थ धर्म का पालन कर सक्रिय बने रहें। ऐसा करें जिसका पालन आपकी संतान भी कर सकें। वृक्ष को रोपना बहुत सरल है, किन्तु पालना कठीन है। उस वृक्ष की रक्षा करना अनिवार्य है तभी उसकी जड़े नीचे की ओर जाकर मजबुती को प्राप्त होगी। आप ऐसे ही बगीचें का निर्माण करें ताकि वह संतान आपको याद कर सके।

फिर से याद दिला दूं वृण मतलब घाव, ऋण मतलब कर्ज और स्फुलिंग मतलब अग्नि की छोटी सी कणिका भी भयानक रूप धारण कर सकती है। कषाय की कणिका भी आपको हानि पहुँचाये बिनानहीं रहेगी। आप परिग्रह से बचें। इतिहास में आज आणविक शस्त्रों का आविष्कार हो चुका है। इस सम्पूर्ण पृथ्वी को पांच बार नष्ट किया जा सके इतना बारूद इकट्ठा कर चुके है, यह मुर्छा का ही परिणाम है। देश को टनाटन बनाना चाहते हो तो सर्वप्रथम अपने घर से ही प्रारम्भ कर दो, तभी इसका प्रभाव पड़ेगा, अपने बच्चों से ही इसकी शुरुआत कर दो। उन्हें कह दो।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"दुर्लभ काम हुआ सुलभ" सायं प.30

बहुत काम कठिन था। क्योंकी नींव भरना आसान नहीं होता। शिखर जब आसमान को छुयेगा, तब आप लोगो को लगेगा, अरे भैया हम तो चूक गये। यह मन्दिर राजधानी में भी राजमार्ग पर है। लाखों व्यक्ति प्रतिदिन इसे देखेंगे। चौकमन्दिर की ओर कोई नहीं जाता। ट्रेन बिल्कुल सामने से, वायुयान भी यहीं से, अलग ही सौन्दर्य एवं वैभव है, राजधानी के इस स्थान का। जिन्होंने चौक मन्दिर का इतिहास रचा, उन्होंने सोचा अब आने वाले समय में जनता बढ़ेगी, वह भिन्न-भिन्न मोहल्लों में पहुँचेगी। इसी उद्देश्य से यह स्थान आज से २७ वर्ष पूर्व आवंटित कराया गया था।

आप लोगों ने विलम्ब किया। कठिन कार्य था, किन्तु आपलोगों ने चातुर्मास के बीच में ही इस काम का शुरु कर लिया। नींव के पत्थर व्यवस्थित कर लिये। दो प्रकार की नींव होती है। एक भीतर भी ऊपर भी। शिखर तक की व्यवस्था कर ली। गाड़ी चालु हो गयी अब रुकने की बात ही नहीं है। एक बार हरी झण्डी हो गयी - अब तो लगातार चलेगी। कमेटी भी बन गयी, चैन खेंचने वाला हमने इसमें रखा ही नहीं। कोई भी व्यक्ति कार्य-कर्ताओं के लिये व्यवधान उत्पन्न नहीं कर सकेगा।

शिलान्यास हो गया। आज का दिन भी विजयादशमी का दिन है। हम खण्डों की विजय यात्रा पूर्ण कर भरत चक्रवर्ती लौटकर आये थे। त्रिमध्दित दान की घोषणा कर ही थी उन्होंने। नौ निधियों के मालिक थे। जो दुर्लभ था, उसे सुलभ बना दिया था। जो बच गये हैं वे भी इसी गाड़ी में बैठ जायें। हुदना ही

को है ही नहीं। अपने इतिहास को गौरवशाली बनाने का काम है। काम के बिना नाम नहीं होता है। काम भी बिना भाग्य के नहीं होता है। जिसका भाग्य तेज होता है, उसी के लिये यह उपलब्ध होता है। (गर्भगृह का शिलान्यास- 11-10-16)

अहिंसा परमो धर्म की जय। हुँ

19-10-16 "व्यवधान का समाधान, अवधान से होता" प्रातः 9.15

आप नीचे रहकर भी पर्वत पर बना हुआ मन्दिर और शिखर को देख सकते हैं। वहाँ एक पर्वत है, पर्वत पर एक मन्दिर है, मन्दिर पर कलश है और कलश पर ध्वजा है। ये सारी की सारी बातें एक दृष्टि में उपलब्ध हो जाती हैं। यह निर्णय कर लिया गया कि हमें वहाँ पर पहुँचना है। निर्णय तो ले लिया पर हम जहाँ वहीं से भी नहीं जा सकते, जहाँ से रास्ता हो वहीं से जायेंगे। वायुयान बिल्कुल सीधे चला जायेगा और रेल पहुँचानी हो तो सीधे नहीं जा पायेगी।

एक साथ सीधे चढ़ने पर जोर आता है, साथ ही हाँफी हो जाती है। कभी इधर- कभी उधर होकर जाने से हवा का दबाव एवं श्रम बंट जाता है। चढ़ाव के समय अब ऊपर मन्दिर - शिखर को देखना बंद कर दो। पीछे की तरफ नहीं झुकना, शरीर का दबाव पड़ता है, किन्तु उतरते समय इससे ठीक विपरित करना पड़ता है। हमने वहाँ तक जाने का संकल्प मात्र कर लिया, अब रास्ता भर देखना है। रास्ते में व्यवधान हो सकते हैं। अवधान पक्का रखो, व्यवधान को समाधान प्राप्त होता चला जायेगा। अपने संकल्प को पूर्ण करने का

लिये उत्साह आदि रखेंगे तभी पूर्ण होता है। फिर भी सोचते हो कि इसमें किसी का सहारा मिल जाये। पथ पर जो कोई भी आने वाला है, रास्ता बनाया हुआ है, चलना तो स्वयं को ही पड़ेगा। छोटी कुलिया भी है सड़क भी बनी है। इनके व्यवधान दूर हुये कि आगे नदी आ गयी, उसे भी पार करना है, वहाँ नाविक है। नाव भी है। आजकल जमाना बदल गया स्टीमर (जलयान) चलते हैं।

वह नाविक जो अपने आप में कर्णधार होता है। इस पार भी वह होता है और उस पार भी होता है। नदी को पार कराने में वह नाविक हमारे साथ होता है। पार कराने के उपरान्त कहता है- उठो नाव में ही बैठे रहोगे क्या - नीचे उतरो पार आ गये हो आप। भोपाल आ गया है। जहाँ का उद्देश्य है वहाँ जाइये।

नाविक के कारण हमारा व्यवधान दूर हो गया। मोक्षमार्ग में ऐसा कोई साधन मिलेगा क्या? नाविक भी वहीं का वहीं, नाव भी वहीं की वहीं, कुलिया आदि भी वहीं की वहीं है। चलेंगे तब साध्य के समीप पहुँचे सकेंगे। केवल सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को पढ़ लेने से कुछ नहीं होगा। तीनों की चौकड़ी से ही काम चलेगा। उससे बाहर नहीं। गृहस्थ तो हमेशा कुलिया में ही रहता है हम हमेशा- हमेशा सड़क पर रहते हैं। न कोई है नहीं कुटिया है।

हम आपकी बात सुनने को बैठे हैं, हम समय अनुसार आपको बताकर ही निकलेंगे। मोक्षमार्ग में जहाँ कहीं भी गड़बड़ियाँ हो जाती है। साधन को ही साध्य मान बैठते हैं जो गलत है। नाव

ने पार लगाया, पर वह मात्र साधन है। व्यवधान होना स्वभाविक है, पर समाधान कैसे हो इसका अवधान होना अति आवश्यक है। अवधान का मतलब ईशारा, जागृती होना। साधन को साधन रूप में स्वीकारिये।

काम होते ही साधन को छोड़ दिजिये। सीढ़ियाँ - सीढ़ियाँ है छत नहीं। दक्षिण में नसैनी बोलते है इसे, उसमें बीच - बीच में पैर लगे होते है। पैर का मतलब पैर रखने का स्थान है। इस नसैनी के पैर कभी चलते नहीं किन्तु हम उनके सहारे चलते है। आज का व्यक्ति सीढ़ियों पर बैशाखियों के सहारे चढ़ रहा है। हम ऐसे विकलांगो को कैसे साथ ले जायेंगे। अपने पैरों को बाहर निकालो। चोट लगी है तो मरहम-पट्टी करलो, ठिक-ठाक करलो तब तो ले चलेंगे।

आगे चलना तो स्वयं को ही पड़ेगा। हम रुकेंगे नहीं। उन सीढ़ियों को उतार देंगे। हमारे यहाँ ऐसी सीढ़ी (CD) या विडियों नहीं जिसमें लाइट की आवश्यकता हो - (व्यंग्य)। सीढ़ी पर बैठ नहीं सकते, चलना और चढ़ना होता है। विकलांगों को देखकर ऐसा लगता है, भगवान कैसे चलेंगे। पहले अपने पैरो को ठिक - ठाक करलो। चार पैर पर आते है, वे वहाँ तक कैसे चल पायेंगे? नहीं चल पायेंगे, कहेंगे इतने से ही कर लेते है। पर्याय चली गयी।

हबीबगंज स्टेशन है भोपाल का। दूर - दूर से गाड़ियाँ आकर चली जाती है, आप वहीं की वहीं है। काहे को बैठे हो, उपयोग तो करो। मोक्षमार्ग तो उसी का जो उपयोग करता है। बाकी तो मोहमार्ग है। असंयम की भूमिका में ऐसा॥

ही होता है। चढ़ने के लिये सीढ़ीयों की आवश्यकता होती है, सीढ़ी के लिये गुरुजी की आवश्यकता होती है। एक पैर उठाओ। गुरुजी कहते हैं। जैसे हमने उठाया। ऐसे मत बकड़ी की दम भी नहीं चल सकें। ऐसी हमारी शरण नहीं है।

पैर ठीक-ठाक कर लो पहले। व्यवधान सामने है। समाधान तो अवधान से ही प्राप्त होगा। उस पहले देख लो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

20-10-16 "विश्वास को मिले अनुभव का पुट" प्रातः 9.15

पूर्व में एक-आध बार कहा होगा। जैसे हम अपने परिणाम बुद्धिपूर्वक किसी ओर से हटाना चाहते हैं, किन्तु बहुत बार प्रयास करने पर भी नहीं आ पाते हैं। ऐसा प्रायः सभी लोगों के दिमाग के साथ होता है क्यों की आप वर्तमान में सोच रहे हैं, पूर्व में किये गये परिणामों के बारे में नहीं सोच पा रहे हैं। आपको विस्मृत हो चुके हैं।

किसके उदय में फल मिल रहा है, यह समस्या बनी रहती है। कोई पात्र मंच पर अपना अभिनय दिखा रहा है, किन्तु कभी-कभी वह अभिव्यक्ति के समय कमजोर पड़ने लगता है, तो वहाँ वह सूत्रधार की ओर देखता है। सूत्रधार वह है जो सामने नहीं आता है। यह उदाहरण मैं इसलिये दे रहा हूँ, वह सांकेतिक होता है, इसे सूत्रधार कहते हैं। वह पात्रों से सम्पर्क रखता है, दर्शकों से नहीं। जब पात्र कहीं स्खलित होने लगता है तो सूत्रधार को देख अपने अभिनय को करता है। अतीत के साथ जो साधक जुड़ना चाहे, वह साक्षात् सामने नहीं आयेगा। पर वह फल अवश्य दिखाता

है, यह मेरी ही करतूत है। जो उत्तीर्ण नहीं हुआ। अखबार आदि में विधी परक ही आता है। इतने - इतने नम्बर वाले उत्तीर्ण हो गये। आपका नम्बर उसमें नहीं आया, इस संकेत का अर्थ यही है की हम उत्तीर्ण नहीं हुये। इसी प्रकार कर्म आकर अपनी छाया नहीं दिखायेगा। हम गाफील होते हैं, अतित को भूल जाते हैं।

सावधानी के साथ वह नाटक होता है। कब किसने सुना या देखा यहाँ नहीं देखता। सूक्ष्म उपयोग होता है, उसे पकड़ नहीं पाता। इसके लिये हरेक व्यक्ति आर्त - रौद्र ध्यान ही करता रहता है। दूसरे पर अंगुली उठाता है। मेरी कमी के कारण ऐसा हुआ, इस शब्दों को स्वीकारने के लिये तैयार नहीं होता।

इसके बाद आपके कितने नम्बर आये, वह देखता है। पहले मात्र उत्तीर्ण / अनुत्तीर्ण की बात की थी। पास तो हो गये, किन्तु कौनसी श्रेणी में हुआ हूँ, यह जिज्ञासा बनी रहती है। वह अखबार में नहीं आयेगा, बाद में आयेगा। अखबार में इतना ही लिखा है उत्तीर्ण हुये। जहाँ लिखा है वहीं लिखा है। मुख्य कार्य भी कभी - कभी गौण हो जाता है, जब की वास्तव में वही मुख्य है। आपका अपना मोबाइल नम्बर क्या है? पता रहता है। यह नं० मेरा है, यह दूसरे का है। अतीत का फल वर्तमान में आ रहा है. यह नम्बर याद रहना चाहिये। किन्तु यह मनुष्य का मन एक सेकेण्ड भी नहीं होता दूसरे के नम्बर को अपने परिणाम एवं अपने नं० को दूसरे के परिणाम में लाद देता है। आप साक्षी तो, किन्तु एकाग्री

है। एकाक्षी होने के कारण दूसरी आँख और चाहिये। सहस्त्राक्षी की जरूरत नहीं मात्र दो आँख चाहिये। मनुष्य होने के नाते, ही नहीं पशुओं में भी दो आंख वाले ही मिलते हैं। एक आँख वाले को देखा आपने कभी?

रुद्राक्ष जो होते हैं, उसमें भी प्राय कर एक आँख वाले मिलते हैं, बहुत दुर्लभ होते हैं। एक आँख वाला श्रीफल यदि मिल गया तो समझो हो गया काम। क्यों की श्रीफल में तीन आँखे ही ज्यादातर देखने को मिलती है। एक आँख से काम करना ठिक नहीं है।

कर्म के उदय में जो सही निर्णय लेता है, उसी को सफलता मिलती है। आनन्द का स्त्रोत तभी मिलता है। विश्वास को भी अनुभव का पुट चाहिये। वर्तमान में जो मिल रहा है, हमने पहले ये काम किये थे, ऐसा विश्वास होना चाहिये। एक आँख से नहीं, दूसरी आँख से भी काम लोओ, तभी सही श्रद्धान होता है। ज्ञान जो हो रहा है, वह सामने वाले पदार्थ का हो रहा है, संवेदन जो हो रहा है वह अतीत का हो रहा है, इस अनुभव के साथ सामने वाले को लगा लेते हैं।

बहुत महत्वपूर्ण एवं बहुत सूक्ष्म है। हमारे भीतर जो कुछ भी हो रहा है, वह अतित में किया उसी के फलस्वरूप हो रहा है। कुछ लोग निमित्त आदि को लेकर ज्योतिष आदि को पुछते रहते हैं। वह इतना पावर फुल नहीं है, क्यों की वह निमित्त-ज्ञान है। निमित्त के साथ निश्चित/नियामक हो ही यह आवश्यक नहीं है। आप लोगों को कुछ दिन पूर्व नीचे की पृथ्वी का (नक्शे) उदाहरण दिया था। वे देव भी जहां कार्य का प्रयोजन नहीं

न हो वहाँ जाना बंद कर देते हैं। ऐसे में ज्ञेय से अपने परिणामों को हटाकर अन्यत्र लगा देना चाहिये। हम पदार्थ से चिपके हुये हैं, पदार्थ कभी चिपकता नहीं। अवधी होती है, उसे हम भूल जाते हैं।

जितने-जितने मोक्षमार्ग में आगे बढ़ते जाते हैं, पर से चिपकन छुटती जाती है। उपयोग लगाने से अनुभूति में गाढ़ता सी आती है। विशेष-विशेष अवसर पर प्राथमिक दशा में इस प्रकार काम किया करो। अतीत की घटनाओं को याद किया करो। पात्र हो आप दर्शकों की ओर नहीं सूत्रधार की ओर देखो तभी अवश्य उस अभिनय में सफलता पा सकोगे। आपके अभिनय से कोई प्रभावित नहीं होगा।

पाठकक्रम को पहले दिखाओं। पाठ भूल जाओगे तो क्या दिखाओगे। कौन दर्शन चुस्की ले रहा है, कौन वाह-वाह कर रहा है, इसे देखना है तो अपने पाठ की ओर देखो, भगवान की ओर देखो। याद करते ही असंख्यात गुणी निर्जरा हो जाती है, वे आते नहीं हैं। जैसे ध्रुवोंस पर विश्वास है, वैसे ही अतित की घटनाओं पर विश्वास करके चलना चाहिये। जितनी आपकी कूवत है, उसी अनुसार मिलने वाला है, ये विश्वास है। तभी संतोष गुण आता है। आपके पास संतोष को छोड़कर सभी गुण विद्यमान है। आपके पास भी वह संतोष गुण आ सकता है बस कौनसे रास्ते से आता है, उसका पता होना चाहिये। हमारे पास तो हमेशा-हमेशा रहता है।

एक व्यक्ति ने आकर कहा, महाराज

बहुत से लोगो ने नमोऽस्तु कहा है। उसे जल्दी थी। हमने कहा जिन-जिन लोगो ने नमोऽस्तु कहा है उन-उन को हमारा आशिर्वाद कह देना। पृथक-पृथक आशिर्वाद दे देना। हो गया काम।

आपलोगों को याद रहना चाहिये, अन्य गुण के साथ-साथ संतोष को अवश्य याद रखना चाहिये। तभी आपका पुण्य क्षीण बढ़ेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

21-10-16 "संयम की रस्सी है : प्रतिभा विज्ञान" प्रातः 9·15

जब हमें अपना और पराया का ज्ञान हो जाता है, जो होना अनिवार्य भी होता है, ताकि पराया जो कुछ भी है वह पराया मानने लगता है। पराया कोई भी/कुछ भी हो उसके प्रति "यह मेरा है" ऐसा भाव नहीं आना चाहिये। इसी का नाम भेद-विज्ञान कहा है ताकि पराये की ओर दृष्टि नहीं जाये। ये पहचान हो जाये कि ये वस्तु हमारी नहीं है। अभी हमारी दृष्टि दूसरे की ओर और दूसरे की दृष्टि हमारी ओर है, दोनों की ही दृष्टि अपनी ओर नहीं आयी।

आप अपने आप को भूल जाओ। आप दूसरे पर अधिकार चलायेंगे तो दूसरा आप पर अधिकार चलायेगा। दोनों ही भूल कर रहे हैं। ऐसे में कैसे चलेगा। दोनो न्याय के लिये हमारे पास आयेंगे। हम क्या करेंगे। दोनों एक दूसरे की ओर देख रहें है। अपनी ओर कोई भी नहीं देख रहा है। इसलिये हमारे आचार्यो ने कहा अकुंश मत रखो - व्रती बनाओ। असंयम के कारण संसार

की परिस्थिति पैदा होती है।

एक किसान एक गाय को चरने छोड़ देता था। वह गाय चरते-चरते दूसरे की सीमा में चली जाती थी। वो किसान परेशान था। वह क्या करे। अब उसने एक रस्सी मंगायी। गाय के गले में रस्सी बांध दी और उस रस्सी की नाप इतनी रखी जितने में वह खेत के सीमा क्षेत्र से बाहर न जा सके। घुमकर के राउन्ड बनाकर वापस आ जाती - सीमा से बाहर नहीं जा सकती थी। खाते-खाते वह गैय्या वहीं तक ही जा सकती है, जहाँ तक अपना खेत है।

इसी तरह आचार्यो ने अणुव्रतों की रस्सी बांध रखी है। अपने-अपने घर में रहियो, दूसरे के घर में जाओगे तो क्या होगा। अपने आपको भेद-विज्ञानी, स्वाध्यायशील मानते हो तो अपने-अपने गले में रस्सी बांधनी होगी। किसान रस्सी के साथ एक घण्टी और बांध देता है। घण्टी इसलिये की मान लो जंगल में गाय थोड़ा इधर-उधर खिसक जाये तो उसे मालुम चल जायेगा, दूसरा यदि गाय दौड़ने लगेगी तो अलग प्रकार की घण्टी बजेगी।

आचार्यो ने इसीलिये अणुव्रतों को धारण करने हेतु रस्सी बांधी। पूरा त्याग कर दोगे तो रस्सी अलग कर देंगे। अणुव्रतों में तो रस्सी जरूरी है। बच्चा जब घोड़ा होता है तो वह फोड़े/घाव को खुजाना चाहता है। मना करने पर भी मानता नहीं तो उसके हाथ में रस्सी बांध देते हैं। बच्चे अनाड़ी जैसे होते हैं। मोक्षमार्ग में अणुव्रती भी अनाड़ी

जैसे होते हैं। हैं खिलाड़ी किन्तु अनाड़ी बने हैं। बार-बार हाथ उधर ही जाता है। ज्यादा खुजायेगा तो उस घाव में पीव (मवाद) पड़ जायेगी - ठीक ही नहीं होगा।

मोक्षमार्ग में भेद-विज्ञान होने पर मोह छोड़ देते हैं कि ये मेरा नहीं हैं। आज भेद-विज्ञान तो हो रहा है पर मोह नहीं छोड़ रहे हैं। वे लोग समता रखते हैं। मोक्षमार्ग की अपेक्षा समता रखना चाहिये, खान-पान के समय समता नहीं रखना चाहिये अन्यथा भक्ष्य-अभक्ष्य बुद्धि भी खो लें। राग-द्वेष नहीं करना है, प्रवृत्ति के समय समता रखना है।

सड़क पर आ जाते हैं तो तीन व्यक्ति से ज्यादा नहीं निकल सकते हैं। धारा - 144 लागु हो गयी। तीन की संख्या का उल्लंघन मत करो। कामचलाऊ - काम के लिये निकलने में बाधा नहीं ऐसा मानना आपका गलत होगा। आप घर में रहो - सड़क पर नहीं निकल सकते। मुनि महाराज किसी भी तरफ से सड़क पर नहीं आते फिर भी अपना काम करते हैं। अभी भी समझ में नहीं आ रहा तो फिर अब ऐसा अवसर मिलेगा ही नहीं की आपकी समझ में आ सके। बाद में जब समझ में आयेगा तब पश्चाताप होगा की हम कर नहीं पाये।

कार्य करना ही है तो प्रारम्भ कर दिजिये। थोड़ा-थोड़ा करने से ही कार्य पूर्ण हो जाता है। उस ओर मत देखो। ड्रीप होती है - ग्लुकोज आदि चढ़ाते समय। बूंद-बूंद करके खाली हो जाती है। अविरल रूप से वह निकल रहा होता है। पाप का गलन प्रारम्भ हो जाता है। पूर्ण होने पर बंद कर देते हैं। ऐसे में साधना होती है।

ये पाठ्यक्रम है। इस विधी से करने पर स्वस्थ हो जाता है वह व्यक्ति। इसी माध्यम से औषधोपचार होता है। सिरिंजी की तरह होता है - ग्लुकोज। औषध के रूप में ड्रीप से दिया जाता है वह पेट में नहीं दिया जाता। सिरिंजी के रूप में पेट में दिया जाता है। भेद-विज्ञान के माध्यम से सीधे-सीधे दिया जाता है, जैसे सीरींज के माध्यम से सीधे नसों में पहुँचाया जाता है।

डॉक्टर यदि प्रशिक्षित हो तो बिल्कुल भी दर्द नहीं होता। आरम्भ के कारण दर्द हो सकता है (ताली) सही बात समझ में आने पर लगती है। वृती का मतलब ही है - एकदम कर्मों पर अंकुश कर देना। उपदेश सुनने में ऐसा नहीं होता। आगे बढ़ना है। थोड़ी दिल दी जाती है तो एक-एक बूंद की जगह दो-दो, तीन-तीन बूंद आने लगती है, किन्तु क्षमता देखकर ही यह कट सकते हैं। पहले दो प्रतिमा थी अब तीन करें, तीन है तो चार करें। प्रतिमा-विज्ञान में इसी तरह क्रमशः बढ़ता है।

यह सहस्त्राब्द की प्रतिभा की बात नहीं हो रही है। केंचकेपी लगने पर कम कर देते हैं उस ड्रीप को। इस तरह से चिकित्सा करते हैं। आज के दोनों उदाहरण याद रखियो। ग्लुकोज-सिरिंजी एवं गैंग्रा को भूलियो नहीं। समय आपके पास भीनहीं मेरेपास तो रहता ही नहीं। सीरींज को भी ज्यादा तेज नहीं करना है। मरीजको धीरे से लेटाकर चढ़ायी जाती है। हमारे पास कम स्थान होतेहुये भी 15 मीनिट में ही सबका एक साथ अच्छा ट्रीटमेन्ट कर देते हैं। सब लोग बिना दक्षिणा दिये ही चले जाते हैं। कोई बाधा नहीं है।

अहिंसा परमो धर्मकी जय

22-10-16 "मत लादो बोझ - छोटी ऊमर में" प्रात: 9.15

आपको ज्ञात होगा, नहीं होगा तो आपको ज्ञात हो जायेगा, इसलिये आपके सामने रख रहा हूँ। बहुत ही सावधानी से सुनिये, इसके उपरान्त उचित लगे तो स्वीकार कीजिये, अनुचित लगे तो हाँ भी नहीं, ना भी नहीं कुछ मत कहिये, बाद में अपने आप से पूछें। रात में चिंतन में विषय को खोलिये पक्षपात नहीं कीजिये। तत्त्व निर्णय में हमेशा-हमेशा पक्षपात पक्षाघात से भी खतरनाक होता है।

बिना सोचे ही तालियाँ बजा दी। अब विषय वस्तु पर आता हूँ। नागौर से महावीर जयन्ती करके सीधे ही विहार कर दिया। गर्मी बहुत तेज थी। तापमान बहुत ज्यादा बढ़ गया था। लोगों ने कहा महाराज तापमान बहुत तेज है, हमने कहा- तप धारण कर लिया है तो तापमान क्या करेगा। हमारा विहार सुकतागिरी की ओर हो गया। वहाँ पर अलग ही कार्यक्रम चलता था। लोग खेती-बाड़ी एवं अपने बाग-बगीचे में व्यस्त रहते थे। गर्मी के कारण 7-8 किलोमीटर बाद विश्राम हेतु बैठना होता था।

एक स्थान पर हम लोग बैठे सामने नारंगी का बगीचा था। उस ओर का विशेष फल माना जाता है। कहीं-कहीं गन्ना होता है, बैठ गये हम भी उनकी छाया में। पहले फलदार वृक्षों की ही खेती होती थी। वहाँ छोटे-छोटे पेड़ थे। इसमें काफी फल लगे थे। खेत का किसान उन फलों को तोड़-तोड़कर फेंक रहे थे। सुन रहे हैं आप। हम। विषय जब आता है, तब जागृति की आवश्यकता होती है।

इधर पानी का सिंचन हो रहा है, बन्दरों से अथवा पशुओं से नुकसान न हो इसकी जागृती है, उधर फल तोड़कर किसान फेंक रहा है। इस किसान को आखिर हुआ तो नहीं गया, यह कौनसा वैराग्य है। पाला-पौसा-बड़ा किया, जब फल लगने का समय आया तो ये क्या किया?

धीरे से एक किसान को बुलाकर पुछा - ये क्या है? वह कहता है महाराज - अभी हमारे पेड़ छोटे हैं, फल पका देंगे तो वृक्ष का विकास रुक जायेगा। अभी समझ में नहीं आया - उदाहरण दे रहा है। ताली बजाकर समर्थन दे दिया। अब हम चलते हैं आप लोगों के बच्चों की ओर - आपकी ओर। बच्चे अभी कच्चे हैं। उनमें प्रौढ़ता नहीं आयी। उनकी मेहनत (श्रम) तो आवश्यक है ताकि बौद्धिक - शारीरिक उन्नति कर सकें। 15-16 वर्ष भी नहीं हुये - माध्यमिक शिक्षा में ही ऐसा बोझ डाल रहे हो। केवल अर्थ की ओर ही भाग रहा है।

आपका निर्देशन - आपका चुनाव ही ऐसा है। वह भी माता - पिता की मन्नत को पुरा करने में लग जाता है। मात्र अर्थ - अर्थ - अर्थ ही नजर आता है। परमार्थ क्या है? यह भूल ही जाता है। 25 वर्ष की उम्र तक जिन्दगी क्या है समझ लेता है। "हम खाने के लिये ही जी रहे हैं या जीने के लिये खा रहे हैं।" वाक्य दोनों समान है, दादाजी - पिताजी दोनो इसी अर्थ में घुसे है। नाति को बाध्य किया जा रहा है। आप ऐसे जीयें जिसमें सुख-शान्ति का अनुभव कर सकें। परलोक क्या है, इसका भी

आभास हो सके। उसके विकास के बारें में नहीं सोच रहें है, वह बच्चा है कभी नहीं सोचेगा। इसमें नादान कौन है? पता लगा लो।

भारी डोज (DOZ) हो सकता है। शिकायत भी आयी थी, आप अधीक डोज दे रहे है, हेवी (Heavy) डोज दे रहे है, मैं रोगी की सुनुंगा नहीं। मैं नाड़ी के माध्यम से ही चिकित्सा करता हूँ, रोगी के माध्यम से नहीं। डोज Heavy भी दे सकता हूँ। युवा है, उसके भविष्य (Future) की चिन्ता आपको नहीं मुझे है। अर्थ का भार आते ही वह परमार्थ से दूर-दूर हो जाता है। भविष्य को आपने अंधकार में रख दिया। वह जीवन पर दुःखी हो याद करेगा।

अवधी ज्ञान लगायेगा, सर्वप्रथम आपको याद करेगा। जो बेटा स्कूल जाना है- उ सब प्रकार का शिक्षण पूर्ण दे दो। भीतर का भी बाहर का भी दे दो। पहले भी कहा था आप ऐसे ही अभिभावक है, अभी भावुक है। उसकी चिंता मत करो चिंतन करो। जो अभी नागरिक नहीं बना उसे निर्णय लेने पर बाध्य कर रहे हो।

मत देना होता है तो पहले सोचना होता है, जिसने नोट दे दिया- उसी को वोट दे ऐसा नहीं है। आजकल दोनों तरफ से नोट लेते है फिर खोट और दिखाते है। मतदान मात्र बौद्धिकी आयाम ही नहीं- आध्यात्मिक आयाम भी है। आपके मत से ही सही धर्मध्यान करने योग्य स्थान मिलेगा। मत का मतलब होता है अभिप्राय। अभिप्राय यदि ठीक नहीं

तो विकास सर्वांगीण नहीं थोपा हुआ रहा है।

वह फटी हुई धोती पहनने वाला किसान ठिक काम कर रहा था क्यों कि उसे भविष्य की चिंता नहीं चिंतन है। हम बिना सोचे समझे क्षमता से ज्यादा भार ढ़ोते रहते हैं। वह विदेश चला जाता है। मेरा बच्चा Foreign (फोरेन) Returned है। फोरेन आजा बेटा। देश के बारे में सोच ही नहीं रहे हैं। न वर्तमान का ज्ञान है न ही अतीत का ज्ञान है, भविष्य का तो है ही नहीं। आत्मा के बारे में सोच ही नहीं रहे हैं।

पढ़ने-लिखने मात्र से नहीं, उद्देश्य के आधार पर काम होता है। जैसा उद्देश्य वैसा ही निर्देश होता है। आज मात्र अर्थ का उद्देश्य रह गया, धर्म से दूर हो गये हैं। बौद्धिक एवं शारीरिक दोनों बोझ से बोझिल हो रहे हैं, किसी भी प्रकार से ऊपर नहीं उठ पा रहे हैं। अध्यात्म का रस चखना है तो पूरी शक्ति लगानी होगी। उस किसान की तरह बच्चों से लोभ मत किजिये। मात्र अर्थ-अर्थ की ओर ध्यान मत दिजिये।

अर्थ के तीन प्रकार से अर्थ होते हैं। पहला अर्थ का मतलब पैसा, दूसरा अर्थ का मतलब meaning/प्रयोजन और तीसरा अर्थ का मतलब के लिये। किसके लिये। भाषा के साथ भाव परक अर्थ भी हो। किसके लिये बेटा ये सब कुछ करना। दादाजी को नाती कहता है मेरी कोई इच्छा नहीं है। दादाजी नाम नाती ने रखा। नाती के लिये ही जी रहे हैं-दादा जी। भूल जाइये, उसको सुरक्षी

बनाना चाहते हो तो अर्थ का दुरुपयोग मत होने दो। अर्थ का अनर्थ मत करो। विगतः अर्थः इति अनर्थः। दूसरा अर्थ का मतलब प्रयोजन कहा। जीने के लिये जितना आवश्यक है उतना ले लेना चाहिये। जीवन के लिये तो वरदान सिद्ध है, किन्तु कितनी मात्रा में लें यह नहीं भूलना चाहिये।

जो जिन्दगी को सुरक्षा पहुँचाये वही भोजन है, अन्यथा भोजन नहीं है। अर्थ - व्यर्थ - अनर्थ ये तीन अर्थ छिपे हुये है एक शब्द में। 16 वर्ष तक के बच्चे की दृष्टि जा नहीं सकती। 18 वर्ष होना चाहिये। फिर इनतक बना दो। तीन कक्षा पार करेगा तभी नागरिक बनेगा। फिर वह बालक नहीं किशोर कहलायेगा।

अर्थ को देख रहे हो किसान से भी गये बीते हो। मैं तो उसे अपना मत देऊंगा। आप भले ही खड़े हो जाओ। न पत्ते है, न फूल है, न फल है ऐसे वृक्ष पर न ही पक्षी आयेंगे। आप सोचेंगे हमने पेड़ काहे को बड़ा कर दिया। किमर्थं। धर्म का यदि संरक्षण करना है तो पहले धार्मिक संस्कार बच्चों को देओ, तभी सुनने का प्रयोजन है। तालीयों बजाने से कुछ नहीं होगा। अब परीणाम घोषित हो रहा है। आप लोग अखबार में देख रहें है कि मेरा क्रमांक उसमें है कि नहीं। उसमें क्रमांक नहीं इसका मतलब ..... । फेल होने का मतलब आपका परिणाम घोषित नहीं करना चाहता हूँ। दिलों तक ही बना रहना चाहिये अन्यथा रात में निद्रा में अन्तर आयेगा। सोचेंगे। हम रोगी की बात सुनते तो है, पर चिकित्सा हमारे अनुसार ही होती है। पुराना जो रोग बना है, उसकी चिकित्सा जरूरी है, डोज बढ़ाना अनिवार्य है। इंजेक्शन से ऐसे देंगे पता भी नहीं लगेगा। फांकी आदि नहीं। आपकी बात नहीं सुनेंगे, अबतो सीधे नसों में घुसना पड़ेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

23-10-16 होनहार कौन? प्रातः 9.15

हम लोगों को कौनसे पदार्थ की कौनसी योग्यता है, इसको जानना अत्यन्त आवश्यक है। क्यों की हमने पढ़ा है पदार्थ-विज्ञान जब तक पुरा नहीं होता, तब तक भावना पूर्ण नहीं होती। जो अनिवार्य है उसको गौण नहीं किया जा सकता। अनिवार्य की अनिवार्यता समझें।

आगम में अभव्य का उल्लेख मिलता है। वह भी जीव पदार्थ है किन्तु अपनी योग्यता का उद्घाटन नहीं कर सकता है। भव्य का अर्थ होता है होनहार, अभव्य का अर्थ होता है होनहार नहीं। आप लोग कहते हो - हमारा लड़का होनहार है। है ही तो फिर होनहार क्या? वह हमारी वंश परम्परा का विकास करेगा। प्रत्येक माता-पिता की यही भावना रहती है। स्वयं के बारे में क्या भावना भाते हैं, इसका पता ही नहीं है। गुरुजी कहते थे - ये ही स्वभाव है।

हमारी भावना करने से होनहार हो जाये, ऐसा नहीं है। यह तो नियोग होता है - टल नहीं सकता। उसके उद्घाटन हेतु अथवा उसके विकास हेतु कितना भी पुरुषार्थ क्यों न करें वह हो नहीं सकता क्यों की होनहार नहीं है। स्वयं जब जीव पदार्थ है, लेकिन जो योग्यता का उद्घाटन करें वही होनहार है। आपके पास ज्ञानावरणीय कर्म का उदय चल रहा है, वह ज्ञान को कुण्ठित कर देता है। इस ज्ञान को पूर्ण रूप से जो विकसित कर देता है, वही होनहार है।

प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है, सुख चाहने मात्र से

सुख ही मिले ऐसा नहीं है। जीव पदार्थ ही मात्र ऐसा है जो सुख चाहता है, बाकी कोई पदार्थ सुख नहीं चाहता। उन्हें तो सुख की गंध भी नहीं आने वाली है। अभव्य भी कहता है, हम तो सुख प्राप्त करके ही रहेंगे। "मुनिव्रत धार अनंत बार ग्रैवेयक उपजायो"

सुख चाहने वाले जीव मात्र को होनहार कहें ऐसा भी नहीं है। ये हमारा लड़का होनहार है। हरेक व्यक्ति छाती पर हाथ रखकर यही बात कहता है। छाती पर हाथ क्यों जाता है? होनहार है हमारा लड़का। ऐसे में कोई भी व्यक्ति इसे स्वीकारिता नहीं देगा। प्रत्येक व्यक्ति हम/मैं स्वीकारिता रहता है। जीव मात्र तो सिद्ध हो जाता है, होनहार सिद्ध नहीं होता है।

दूसरों के बारें में मत सोचो, स्वयं के बारें में भी सोचो। बुद्धि काम कर रही है, इसलिये ऐसा होता है। अच्छाई की ओर उसके कदम कितने बढ़ रहे है, यह देखना है। सब उन्नती की ओर जाना चाहते है, होड़ लगी है, जब की होनहार की परिभाषा हम स्वयं भी नहीं जानते। सुख दिख नहीं रहा, तो भी सुख चाहते है। कौनसी दुकान पर मिलेगा यह सुख, आप सभी से हम यह पुछना चाहते है। चार बजे से आ गये हमारी दुकान पर। हम सुख चाहते है।

सुख चाहते है या सुख चाहते है यह पहले तय कर लें। सूख गये इसी कारण से। चाहने मात्र से सुख नहीं मिलेगा। पदार्थ विज्ञान के साथ आत्म-विज्ञान की ओर भी चलें। जीव विज्ञान अलग वस्तु है और आत्म-विज्ञान अलग वस्तु है। आत्म-विज्ञान

के लिये कितना आतुर हो, कितना निकट अनुभूत करते हो, तभी वह गम्भीर विषय बनता है। स्थूल रूप से आचार्यों ने जो पहचान बतायी है, उस असली सुख की इच्छा भीतर से कि सकी है।

अन्य किसी भी आकर्षण की ओर ध्यान ही नहीं हो, मात्र आत्मा के विश्वास की ही बात हो। निर्वेग भाव - अनासक्ति भाव की ओर दृष्टि दें। कुछ दिन पूर्व ही शायद रविवार को कहा था कि दादा जी की गोद में लड़का बैठा है। दादा जी को तो बैठना ही है। ये बात अलग है यहाँ के दादा जी फिर भी चुनाव में खड़े हो जाते हैं। आप लोगों के द्वारा जोर से ताली बजाने का मतलब अपनी बात आपको समझ में आ रही है।

उस गोद में बैठे बालक को जब खाने-पीने की बात आती है, वह उछलकर कूद जाता है। दादा जी कहते हैं अभी ये होनहार है, हम तो हो चुके हैं। उम्र के अनुसार विकर्षण आ गया, आकर्षण हट गया। भीतर से कुछ होने लग जाता है, सामान्य तौर से यही आत्मा के होनहार की पहचान है। आकर्षण और विकर्षण को अनुपात से देखो, उम्र से नहीं। अपना भान भीतर से होने लग जाता है। दूसरे कर्म के बारे में जब कभी भी जिज्ञासा होने लगती है, पढ़ते हैं - सुनते हैं - फिर भी हमारी बुद्धि का विषय नहीं बन पाता।

अभी रत्नकरण्ड श्रावकाचार में भी आया देव - शास्त्र (आगम) - गुरु, पर यथार्थ श्रद्धान करो। आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा। हम नहीं जानते जो जानकार हुये हैं, उन्हीं से जाना है। देव - गुरु एवं आगम पर सही विश्वास

होने पर ऐसा होता है। बार-बार इस थर्मामीटर में हमको देखते रहना चाहिये। हमारे ऊपर कभी भी कोई अटैक (आक्रमण) न कर दें। बड़े राज्यों में चैक-अप ज्यादा होता है। बड़े सेठ लोग भी अपना चैक-अप बार-बार कराते रहते हैं। वे पर्याय को लेकर चलते हैं।

अच्छाई के बारे में सतत परम्परा बनायें रखना चाहते हो, आनन्द लेओ। मुक्ति के मार्ग में भी सबसे पहले विश्वास जरूरी है। वह मुक्ति कितनी भी दूर क्यों न हो, मार्ग तो यही है। ऐसा दृढ़ विश्वास करने वाला ही भव्य / निकट भव्य होता है। यही विश्वास आपको जब तक केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं होगी तब तक ले जायेगा। पुरे के पुरे स्थान को परिवर्तित कर देता है।

16 वीं कक्षा के बाद अब कक्षा नहीं अब तो वह प्रयोगशाला में जाता है। विद्यालय, महाविद्यालय - विश्वविद्यालय के बाद अब प्रयोगशाला में जाकर अपना शोध कार्य प्रारम्भ कर देता है। तब वह कह सकता है, यह मेरा अनुभव सिद्ध है। विश्वास को ठोस बनाने के लिये अब वह छाती पर हाथ रख कर कहता है। 16 वीं कक्षा ऐसे ही पार नहीं की। विद्यालय, स्नातक विद्यालय, स्नातकोत्तर विद्यालय सब देख लिया। प्राचार्य जी एवं विद्यालय भवन को भी देख लिया है, आज आप वही दिखाना चाहते हो तो क्या करें।

मध्याह्न में रविवार है। आप सभी तो प्रतिदिन प्रातःकाल वाले हो। हमारा आकर्षण - विकर्षण इस लड़के (बालक) की भांति न हो। दादा भी

माध्यम के अनुसार होना चाहिये। उम्र की ओर मत देखना। प्रत्येक व्यक्ति उम्र की ओर ही देखता है। ये हमारे मौहल्ले में सबसे बुजुर्ग है। बुर्ज की भांति बड़े है। शब्द की मीमांसा हम अपने हिसाब से करते है। ये हमारे पूर्वज है। मूल रूप से पहचान भक्त की होनी चाहिये।

जीव पदार्थ विज्ञान तो काफी हो चुका है, अब आत्म-विज्ञान शेष है, उसी तरफ ध्यान देने का पुरुषार्थ करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुं

24-10-16 "कैसे बने चिरायु" प्रातः 9.15

देवो में भी आप लोगों का जैसा प्रतिदिन का कार्यक्रम होता है, वैसे ही करते है किन्तु इन लोगों का कार्यक्रम अलग होता है। आपको सोना अनिवार्य है, वे सोते ही नहीं है। सोना है तो कब सोना। हम लोगो के २८ मूलगुण में एक शयन नाम का भी मूलगुण है। कब सोना - दिन में नहीं सोना। कैसे सोना - ऐसे सोना जिसमें शरीर में किसी भी प्रकार की विकृति न आये। कितना सोना - रात में सोना दिन में नहीं सोना। रात में सोने का मतलब दिन डूबते ही नहीं सोना। उस संधिकाल में सोने से शरीर में अनेक प्रकार की विकृतियाँ आ जाती है। फिर कब सोना और कब उठना।

ऐसे मत सोओ की दिन में 12 बजे उठना पड़े। इतना काम करना ही नहीं है। काम तो करो किन्तु इतना नहीं। दादा जी अब विश्राम कर लिजिये। पिताजी को भी कहते है, अब आराम कर लिजिये। पोते जी को अब सोईये नहीं।

स्वतंत्रता मिली है - सोने के लिये तो यह गलत बात होगी। इस लेट तक सोने के कारण भारत में रोगों का संचार बढ़ा है। दिन डूबते ही सोना नहीं। 3 घण्टे बाद ही सो सकते हैं। उसके बाद मनोहर काल में आपको उठना है। उस समय वातावरण में प्राण वायु का संचार होता है। ऐसे समय में सोते रहेंगे तो कभी स्वस्थ नहीं रहेंगे न ही मन को प्रसन्न रख सकते हैं।

बुद्धि को तेज बनाना है, मन में प्रशस्ता रखनी है तो प्रातःकाल के 3 घण्टे बहुत लाभप्रद होते हैं। 12 बजे के बाद सोना बहुत गलत है, 9 बजे सो जाइये, फिर बाद में 12 से 3 तक का काल गन्धर्व काल इत्यादि माना जाता है। इस प्रकार 3+3=6 घण्टे पश्चिम भाग में तथा 6 घण्टे पूर्व भाग में है जिसमें बीच के 6 घण्टे आपके शयन के लिये है। न ही दिन डूबते ही सोना चाहिये। न ही अन्तिम प्रहर में सोना चाहिये। इसे मनोहर काल / ब्रह्ममुहूर्त काल / सामायिक-वंदना का काल माना जाता है।

वातावरण में बहुत प्रशस्ता रहती है, स्वच्छता रहती है, प्रदूषण शांत रहता है। बड़े - बड़े रईस लोगों का कुत है हम इसे जीवन में आने नहीं देंगे - हवा वहीं के वहीं रहेंगे। एक बार वायु सेवन कर ली उसके बाद वह वायु अशुद्ध हो जाती है सूर्य की किरणों अथवा हवा द्वारा फिल्टर होना चाहिये। बड़े - बड़े शहरों में मल्टी बिल्डिंग में यह नहीं हो पाता है। हमें एयर कंडीशन नहीं चाहिये, कंडीशन एयर होनी चाहिये। ताजी - ताजी हवा की बात करो। ताकि ताजगी रहे। उत्कृष्ट सामायिक के समय आसन टूटना जाये,

मन में बगावत न आ जाये। मन भगोड़ा न बन जाये। यदि संकल्प ले लो तो ये कुछ नहीं होगा। मन प्रशस्त होने के लिये वायु का प्रशस्त होना बहुत जरूरी है। आप लोग अपने बच्चों के लिये गलत कर रहे हो।

जब मैं छोटा था - सिलाई किया हुआ कपड़ा नहीं पहनाते थे। झोला - झबहना टाइप होता था जिसमें बटन आदि नहीं रहते थे, एक नाड़ा सा टाइट आदि करने को रहता था, बाकी ढिला-ढिला रहता था ताकि ताजी हवा मिलती रहे। मर्यादा भी बनी रहे। आज जितने भी विदेशी कपड़े पहनकर आते हो उसमें हवा आती ही नहीं। वेंटिलेशन से युक्त कपड़ा चाहिये, अन्यथा वह सिर दर्द करा देगा। आयु की अवीरणा में कारणभूत वस्तुओं का उपयोग हो रहा है। इनसे बचना अनिवार्य है।

अभी कह रहे थे - जीवें हजारों साल.....। हमें ऐसा वरदान नहीं चाहिये। हम इसे स्वीकार नहीं करते। हमारे ही सामने-सामने सारे लोग चले जायें, हम अकेले बैठे रह जायें, सोचो तो सही क्या कह रहे हो आप। या तो ऐसी भावना करो ही हम मृत्युंजयी बन जायें। अभी तो जो भावना भा रहे हो उसे हम स्वीकारेंगे नहीं। सुधार लो इसे। हम तो सरस्वती के पक्ष वाले हैं। गंगा-जमुना के साथ प्रयाग में वह भी मिलती है। दर्शन-ज्ञान-चारित्र की तरह त्रिवेणी का संगम है। वह पद अविनश्वर है, अमूल्य है, अनर्घ पद प्राप्ति के लिये है। आपकी कामना से नहीं मिलने वाला है।

कब सोना - कितना सोना - कैसे सोना सब अनुपात से होना चाहिये। अपने बच्चों को पाश्चात्य सोच

एवं वातावरण से बचाइये। सर्दी से बचना है तो बचाइये, किन्तु उत्तमांग (सिर) को तो खुला रखीये। प्राणवायु से मत बचो, वह अनिवार्य है। सब बंद कर देंगे तो प्राण कैसे बचेंगे।

आप लोगों को सामायिक का लाभ इसलिये नहीं मिल सकता क्योंकी सुबह तक सोते रहते हो। सोने में 12 न बज जाये। 12 अपने आप बज जाये। इन लोगों के लिये मूलगुण में आया एक बार खड़े होकर दिन में भोजन करो। शयन भी करो। मूलगुण की ओर दृष्टिपात तो हो। बैठकर नहीं खा सकते, मुनिमहाराज के लिये यह बहुत अच्छा रखा। खड़े होकर खायेंगे तो कम खायेंगे। कम खाओ और गम खाओ।

गाड़ी कितना पेट्रोल ले रही है, ये भी तो देखो। पेट्रोल का भी अर्क होता है, मतलब बिल्कुल शुद्ध। प्लेन आदि के वही काम आता है। कीमती वस्तुओं को पेट्रोल के द्वारा धोया जाता है, पानी के द्वारा नहीं। देखा है आपने कभी? ऊपर-ऊपर के देवों का वैभव बढ़ता ही जाता है। तौलकर सब काम करो। अपव्यय - अनर्थ से बचना चाहिये। आप आशीर्वाद मांगते हैं, ऐसे में हमारा आशीर्वाद और बर्बाद (बदनाम) हो जायेगा।

कीमती चीज का उपयोग करना भी आना चाहिये। अनादर नहीं होना चाहिये। बच्चों को भी ऐसा ही अभ्यास करायें, संस्कार डालें। इस प्रकार देवों में निद्रा नहीं, अकाल मरण भी नहीं है। दिन में सोने वाला व्यक्ति अकाल मरण का शिकार हो सकता है। दिन में सोने

वाला रोगी होगा, उसको अभिशाप सिद्ध होगा। चीर आयु की मांग करने की अपेक्षा पूर्ण आयु करके जाये तो अच्छा है। आपके भोपाल में एक चिकित्सालय है - "चिरायु"। पूर्ण आयु जीओ - अधुरी जिन्दगी मत जीओ"। हम पक्षपात की बात नहीं करते आशीर्वाद दे सकते है।

जो आयु बांध कर आये हो उसे किसी भी प्रकार से बढ़ा नहीं सकते। वह उतनी ही रहेगी। अर्थात उसमें उत्कर्षण नहीं हो सकता, हाँ अपकर्षण कर सकता है। अपने खान - पान से, रहन - सहन से, सोच-विचार से अपनी आयु को कम कर रहे हो। विपरित आहार करने अथवा अति मात्रा में आहार करने से यह हो रहा है। मोटापा होने का मुख्य कारण है। कवलाहार में कवल का मतलब ही है कितना लेना। प्रत्येक व्यक्ति इस बारे में विचार करें की जीवन को स्वस्थ रखने के लिये मुझे कितना लेना।

सभी के पेट में घण्टी है। उसे सुनने की कृपा करेंगे। डकार का मतलब ही है - वार्निंग। खाली पेट के डकार की बात मैं नहीं कर रहा हूँ। उसे समझने का विज्ञान आपके पास है ही नहीं। विज्ञान के ज्ञान तो है, किन्तु आपके पास खाने का विज्ञान, सोने का विज्ञान, श्वांस लेने का विज्ञान, पहने का विज्ञान है ही नहीं। समय हो गया। विषय तो अभी और है। परिवार में अपने बच्चो के सामने अच्छा विज्ञान रखीये। दवाई क्यों खाना? भोजन के बाद नींद क्यों आती है? भारी हो जाता है, थोड़ा सा टहल लो। गादी पर बैठकर खाया, वहीं की वहीं लुढ़क गये, क्या होगा (सब जानते हो)

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

25-10-16 "एयर कंडीशन नहीं, कंडीशन एयर हो" प्रातः 9.15

कल आप लोगों के सामने एक विषय रखा था। महत्वपूर्ण तो यह है कि धार्मिक अनुष्ठान के लिये द्रव्य-काल के साथ-साथ क्षेत्र भी अपेक्षित है। निद्रा के समय सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हो सकती। हाँ, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होने के बाद निद्रा आ सकती है। निद्रा में बाधक है, जागृत अवस्था चाहिये। निद्रा के समय हम बुद्धिपूर्वक किसी पर पदार्थ को पहचान ही नहीं पाते। हमारा पुरुषार्थ विफल हो जाता है।

बहुत पुरुषार्थ करने पर भी निद्रा में होश-हवास नहीं (बेहोश) रख पाता। निद्रा अनिवार्य नहीं, जितनी आवश्यक है, उतनी लें। दिन में निद्रा न लें। डॉक्टर कुछ भी कह सकता है, मैं नहीं कह सकता। दिन में सोने से या रात में नहीं सोने से शरीर सम्बन्धी क्रियायें विपरीत हो जायेगी। २५ घण्टे दिन नहीं, दिन तो १२ घण्टे का ही होता है, १२ घण्टे की रात होती है। अहोरात्रि कहने पर एक दिन माना जाता है। आप लोगों के पास घड़ी तो है, कोई-कोई तो दो रखने लगा किन्तु उसमें १२ घण्टे ही होते हैं। हमारा साथ रेल-डिपार्टमेन्ट देता है, वहाँ २५ घण्टे का दिन होता है।

रात में भोजन नहीं करना चाहिये क्यों की दिनकर का अभाव है। दिनकर के अनुसार ही हमारी दिनचर्या/कक्षायें होना चाहिये। दिनमान का भी असर पड़ता है अधिक वर्षा होना या अधिक गर्मी होने पाचन क्रिया बहुत जल्दी असर पड़ता है। दिन अथवा रात पर भी प्रभाव पड़ता है, रात लम्बी होने लगती है ठण्ड में। रात में भोजन करने से पाचन

क्रिया ठिक से नहीं हो पाती। इसलिये दिन का भोजन अलग एवं शाम की भोजन अलग होता है। शाम का भोजन हल्का होना चाहिये - भारी नहीं। रात में भोजन लेने वालों के लिये तो यहाँ तक लिख दिया कि रात्रि 12 बजे बाद किया गया भोजन विष के समान है।

यदि निद्रा पर विजय प्राप्त करना है तो दिन में ही भोजन करना प्रारम्भ कर दिजिये। इससे देवता भी प्रभावित होंगे। कल एक प्रश्न किया था- भोजन के बाद निद्रा देवी आ जाती है। उसके लिये भोजन करके तुरंत गादी पर मत बैठो, कुछ समय टहल लो। दिन में परिश्रम करो रात में शयन करो। ड्राइवर गाड़ी चलाता है, रात मे सोया नहीं हो तो क्या होता है? सभी उसके आश्रित सवारीयों की भी यात्रा समाप्त हो जायेगी। वह ड्राइवर कहता है - मुझे भले ही 2-3 घण्टे का विश्राम दे दो, फिर 12 घण्टे खुब काम में लो।

निद्रा का मन पर बुरा प्रभाव होता है। वह कुछ सोच ही नहीं सकता। स्वप्न में सोचा नहीं जाता, आदत के कारण ऐसा होता है। होश-हवाश से साथ सोच-विचारकर ही चलना पड़ता है। निद्रा की ओर भी देखनी और दिन-रात को भी देखना। दिन में तो पूर्णतः निषेध बता ही दिया है। सूर्य-प्रकाश में ही हमें कार्य करना है। पशु-पक्षी रात में नहीं खाते। जो दिन में खाया है, उसकी जुगाली करते हैं। अपनी नाल में आकर (जगह) खाये हुये का रोधन (संस्कृत में) / जुगाली करके उसे रस तक, सप्त धातु-उपधातु में परिवर्तित कर देते हैं। रात में नहीं खाते फिर भी

वे स्वभाविक शक्तिशाली होते हैं। रात में पशु-पक्षी बोलते नहीं और आप लोग बिना बोले रहते नहीं क्यों की आप मनुष्य है। देव एवं नरक गति में दिवा-रात का भेद ही नहीं वहाँ सुख-दुःख का अनुभव अलग प्रकार से किन्तु आप मनुष्य है। निद्रा पर नियन्त्रण रखें।

रात में विश्राम करें। बेहोशी का नाम विश्राम नहीं। आचार्यो ने कहा - निद्रा को लेओ। स्वीकार करो। निद्रा का अर्थ होता है विश्राम लेओ। भारतीय संस्कृति के अनुसार अब आप थोड़ा सा विश्राम लोगे। सुस्ता लो/आई हो जाओ मतलब खड़े मत रहो (भारतीय भाषा के अनुसार) गतिविधियाँ बहुत हो गयी अब आप विश्राम लो। बैठे-बैठे भी निद्रा लो यह ठिक नहीं - उस समय तो जाग्रती होना चाहिये।

यदि सामायिक में जाग्रती नहीं तो व्रतों का संशोधन नहीं हो पायेगा। रवाना-पूर्ति नहीं करना चाहिये। व्रतों में निर्दोषीकरण होना चाहिये, उसी से कर्मो की विशेष निर्जरा होती है। निद्रा को लिया जाता है। नींद लग जाना ये गलत बात है। एक आसन होता है शवासन, जिसमें प्रायः कर निद्रा आ जाती है वह अच्छा नहीं माना जाता। उसमें शरीर को तो शव की भांति छोड़ दो किन्तु चेतना को शिव से जोड़ दो। शिवासन लगाओ - पूर्ण जाग्रती के साथ। आप लोग दोनों तरफ ही गड़बड़ करते हैं। दिन में मन बौद्धिक श्रम से तथा तन शारिरिक श्रम से थक जाता है। बच्चों का भी परीक्षा के दिनों में ऐसा ही होता है। जो अच्छी मेहनत करता है परीक्षा का तीन घण्टा कब बीत गया पता ही नहीं, जो मेहनत

नहीं करता वह इधर-उधर देखता रहता है। अंत में गुरुजी के लिये ही लिख देता है अब आप ही कृपाक देने की कृपा कर दीजिये। पढ़ने वाला बुद्धि की एकाग्रता के कारण थक जाता है।

रात्रि के प्रथम पहर में कोई नहीं सोइयो। रौद्र पहर माना जाता है। फिर राक्षस पहर में विश्राम करें। मनोहर पहर में सोयें नहीं। चाहे विद्यार्थी हो या मुनि महाराज हो मनोहर काल में उठना चाहिये। वे प्रातःकाल के तीन घण्टे सात घण्टे बराबर होते हैं। शौचस्नान - ध्यान आदि का इस काल में लाभ लें।

जो इनसे वंचित रहता है वह रोगग्रस्त रहता है। रात में भोजन नहीं करने से निद्रा पर विजय प्राप्त होती है। दिन में संतुलित एवं सात्विक - शाकाहार लें। बार-बार सोना ठीक नहीं। गोली खाकर निद्रा लेना तो और गड़बड़ है, वह मुर्छा है नींद नहीं। दवाई खाकर हम अपने सोचने की क्रिया को ही विराम दे देते हैं, इसका संतान पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

कुछ दिन पूर्व बताया कि माता - पिता ने बच्चों को सुलाने के लिये टेबलेट दे दी, वह दोबारा उठा ही नहीं (मृत्यु हो गयी)। इसी तरह वातानुकूलित प्राकृतिक वातावरण/प्राणवायु मिले अन्यथा कुछ भी हो सकता है। बंद कमरे में गैस के कारण प्राणों पर आफत हो सकता है/होता है। एक बच्चे को उसके परिजन कार में बंद करके चले गये, प्राणवायु के अभाव में वह इकलौता बेटा

इस दुनिया से चला गया। प्राणवायु का संचार होना अति आवश्यक है। बैठे-बैठे भी नींद ले सकते है पर शरीर पर विपरित प्रभाव न पड़े। कुछ लोग दोनों घुटनों के बीच सिर रखकर सो लेते है। यह माइग्रेन का कारण होता है, गर्दन की नसें इससे दब जाती है, नाड़ीतंत्र खराब होने का कारण है।

शवासन में नींद लेना अभिशाप माना गया है। छाती पर हाथ रखकर कभी नहीं सोना चाहिये। ये सब बातें मात्र आरोग्य के लिये ही नहीं वैराग्य के लिये भी कारण है। निद्रा में सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं, सम्यग्दर्शन प्राप्त होने के बाद निद्रा ले सकता है। किन्तु दिन में कतई न लें। चिंता छोड़कर बैठियें सबसे उत्तम होगा।

आप जब गाड़ी चलाते हैं तो स्वस्थता का अनुभव कब करते है। जब गाड़ी पहले-दूसरे गैर में हो तब नहीं अपितु जब Top में हो तब स्वस्थता का अनुभव करते है। उस समय न ही ज्यादा तेल जलता है न ही यंत्र पर जोर पड़ता है। मन पर जब टेंशन पड़ता है तब सहजता नहीं रहती है। सहज रुप से निद्रा हो। सहजता ही बहुतभाग्यविशद है। आधा घण्टे में दो-तीन झपकी आ गयी बस पर्याप्त है। विज्ञान ने भी इसे स्वीकारा है, ऐसे लोग भी ऐसे ही काम करते है। इतिहास में पढ़ा- घोड़े पर बैठकर भी झपकी ले लेते थे ऐसे भी लोग हुये है। (नेपोलियन) विदेशी क्यों देशी बोलो वे थे - शिवाजी।

पशुओं में भी घोड़ा ऐसा ही प्राणी है, जो कभी नींद के लिये बैठता नहीं है। हाँ खाज-खुजाने

के लिये एक ही बार में चारों पांव ऊपर करके खड़ा हो जाता है। घोड़े को मालिक मानते हैं। मन को घोड़े के समान रखो। थोड़ा सा विश्राम दीजिये।

सामायिक में और कुछ नहीं तीनों सामायिक में मन रूपी घोड़े को जागृत रखने का आयाम है। कुछ भी नहीं करना यह महत्त्वपूर्ण है। मन को लगाना ही नहीं। भागकर जो घोड़ा आया है अब उसका स्वामी उसकी लगाम को छोड़ देता है, थोड़ी ही देर में वह घोड़ा स्वस्थ हो जाता है। सामायिक TOP गेर है आप उसी को फुलस्टोप कर देते हो। जागरूक रहना चाहिये। व्रतपंचाशत्पुरण ..... आचार्यों ने मन को स्वस्थ रखने के लिये कहा।

दिन में नहीं सोना, रात में भी कब सोना, कितना सोना यह सब विधी आपको आना चाहिये। स्वाध्याय से नहीं आयेगा। पर्याप्त समय हो गया। रविवार आ गया हमने सोचा। इस रविवार को तो सब सीजन में व्यस्त थे। अगला रविवार को मक्सीर भगवान का मोक्ष कल्याणक है। जो बिन्दु बताये उन्हें समझने का प्रयास करो। जीवन में प्रयोग करो और अपने समय का सदुपयोग करो। इतना ही।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

कुछ हट के ....

- "दुर्लभ काम सुलभ (संभव) हुआ गुरु आशीर्वाद से"
- राजा कोश से उन्नत होता, कवि भी कोशसे उन्नत होता है।
- अलसी से बहुत सारी बिमारीयाँ दूर होती है। ॥

26-10-16 "कैसे बचें खरपतवार से" प्रातः 9.15

प्राचीन भारतीय किसान वैज्ञानिक का काम करता था। हमने प्राचीन किसान कहा - आज का किसान नहीं कहा। आप हमारा हाथ ऐसे ही समर्थन में नहीं उठवा सकते हो। उस प्राचीन किसान को वैज्ञानिक की कोटी में गिना गया है। वह किसान बीजों को भूमी में बोता है। कई प्रकार के बीज होते हैं। (एक श्रोता ने कहा - फेंकता है) फेंकना शब्द अच्छा नहीं - जो बिखराते हैं गली-गली। भाषा का प्रयोग तो सही से करो।

दक्षिण में भी उन बीजों को बोने का तरीका होता है। तीन ताल - पांच ताल की व्यवस्था। पांच स्थानों से एक पाइप के माध्यम से वे बीज धरती तक पहुँचते हैं। मान लिजिये जिस पाइप से बीज नहीं डालना उसे बंद कर देते हैं तो एक भी बीज नहीं आता, जो खुले हैं उन्हीं से बीज आते हैं। बीज भूमी में डालकर सोता नहीं है, चौकन्ना रहता है। चारों तरफ से निगाह रखता है, वर्षा होते ही बीज अंकुरित हो जाते हैं।

उस अंकुरण के साथ जो नहीं बोया था वह भी दिखने लगता है। किसान सतर्क रहता है क्या बोया था - बीज। क्या नहीं बोया था उसे खरपतवार कहते हैं। बैलों के द्वारा भी बीज खेत में बोया जाता है। किन्तु वह किसान 10-12 दिन में ही जब वह खरपतवार (छोटी) 3-4 अंगुल होने पर ही उसे अलग कर देता है। जो बोया है उसे नहीं उखाड़ता, अपितु जो नहीं बोया उसे उखाड़ देता है। इसके साथ ही कहीं-कहीं एक से ज्यादा बीज पड़ गये। उनमें जो पौधा अच्छा दिखता होता

है, जो तेजी से बढ़ रहा है उसे रख लेता है तथा जो कमजोर है उसे भी खरपतवार के साथ ही अलग कर देता है।

किसान इस बात का बहुत विवेक रखता है क्यों की जो बोया था वह भी उसी आकार-प्रकार वाला है तथा जो नहीं बोया था वह भी उसी आकार-प्रकार वाला है, ऐसे में पहचान करना बड़ा मुश्किल होता है फिर भी वह मूल बीज को सुरक्षित रखता है, उसमें खाद-पानी आदि सब करता है। अतः क्या-क्या काम में कब-कब आता है इन सब पर निगाह रखना जरूरी है।

जो इसका ध्यान नहीं रखता वह कभी स्वस्थ नहीं हो सकता। स्वयं तो उसकी चिकित्सा कर ही नहीं सकता, संसार में भी उसका कोई औषध नहीं होता है। जो आवश्यक नहीं उसे वह पहले हटाता है, तब माल बाजार में आता है यह कितना बड़ा विज्ञान है। उसका स्वाद-वर्ण, उसका गुणधर्म आदि-आदि सबको सुरक्षित रखता है, यह कोई खेल नहीं है।

आज आप बीज के साथ खेल रहे हो। अब पुराने बीज का स्वाद आ ही नहीं सकता। बस याद भर करते रहेंगे। याद कर अपना माथा ठोकते रहेंगे। हमारे जीवन में ऐसे भाव होने चाहिये। पूर्वजों ने जो बीज हमें दिये हैं उन्हें सुरक्षित रखना चाहिये। वे बीज रूपी संस्कार ही हमारी धरोहर है। आज विज्ञान रूपी खरपतवार ने विनाश का काम किया है। बच्चों की आंखों में पानी है, संस्कार सारे के सारे नष्ट हो गये हैं। अब तो ये घास है गेहूं आदि के साथ खरपतवार भी खरीद रहे हो। किन

तो बढ़ता ही जा रहा है। नीति-न्याय, धर्म-कर्म सब चौपट हो ही गये। लाखों देने पर भी वह इतिहास नहीं मिलेगा। पद-चिन्ह ढूंढने पर भी नहीं मिलेंगे। भजन गाते हो हमें रास्तों की जरूरत नहीं है..... हमें पैरों के निशां मिल गये हैं।

चलेंगे तब तो मिलेंगे। आत्मा की कथा अब कहाँ मिलेगी। चारों ओर वो ही वो है। हम क्या करें। अभी हमने चर्चा के लिये बुलाया। जिन्हें नहीं बुलाया वो भी घुस गये। यह सब खरपतवार का प्रभाव है। हंसो नहीं - गंभीर बनो। हँसने से इस बात का महत्व खत्म हो जाता है। समय मेरे पास उतना ही रहता है। वह भी कटौती निकालकर देता हूँ, इससे ज्यादा तो नहीं दे सकता।

आप लोगों के जीवन में खरपतवार की माला बढ़ गयी है, रास्ता कैसे बताऊँ। आपका कोई रास्ता है ही नहीं। आज इतना अधिक नया-नया साहित्य निकलता जा रहा है कि अब पाठ्यक्रम को सुधारना ही मुश्किल हो गया है। भावों (परीणामों) की ओर ध्यान है ही नहीं। मूल हो तो कुछ बतायें, अब तो सब भूल में जी रहे हैं। भाषा विदेशी हो गयी है। संस्कृति भी इसके साथ विदेशी हो गयी। भाव क्या आ पायेंगे। अंग्रेजी में वो भाव आयेंगे ही नहीं। हम किसका Reference (उदाहरण) दें। जीवन इतना विषाक्त हो चुका है। आप ही बीज हैं, आपकी ही फसल है क्या बतायें और क्या परोसें। गत रविवार या दो-तीन रविवार पूर्व भी कहा था। कहीं से तो प्रारम्भ

करना होगा। जो इसे अभिशाप मानते हैं वे ही दौड़ सकते हैं। कौन है जो इन्हें बाहर निकाल रहे हैं, अभी तो आपने अपने घर को इस ढंग से सजा लिया है। उपयोगी एक भी चीज नहीं है - हम कैसे कहेंगे। आप सोचिये - सोच सकते हैं आप।

अपने परिणाम स्वरूप तक जाने के लिये खरपतवार को फेकोगे नहीं तो, जो पौधा बहुत अच्छा दिखता है, उसमें ज्वार/बाजरा/गेहूँ नहीं आने वाला है, मात्र घासफूस ही आयेगा। उखाड़ कर फेंक दो उस खरपतवार को मोअपने आप आ गया है। आज २५ वर्ष से ऐसे साहित्य का उपयोग कर रहे हो, जो २५ वर्ष में रस बनकर रक्त में घुल रहा है, मन भी उसी तरह का बन रहा है, जिसके द्वारा बच्चों का शरीर कमजोर एवं मन खराब हो रहा है।

भोजन रच नहीं रहा है। भोजन बनाना महत्वपूर्ण है लेकिन भोजन करवाना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। उस भोजन का ऐसा योगदान हो जो रस, आदि में परिवर्तित हो सके। बहुत दुर्लभ है यह। आज का व्यक्ति बहुत सारी ऐसी चीजें खा रहा है, जिनसे सही फंक्शन नहीं हो रहा, पूरी मशीन को ही खराब कर रहा है। जी मचल रहा है, क्यों की जी मचलने का स्वयं ही कारण बना हुआ है। पहले की माँ बहुत समझदार होती थी। वह जानती थी जब तक बच्चा होता है तब तक मेरी ही जिम्मेदारी है न ही पिताजी की न ही धाय की। धाय पर भी विश्वास नहीं रखती थी। उसे मात्र अपवाद के रूप में रखती थी। आज पुरा का पुरा मार्ग ही बदल दिया।

क्या करें। वापस आना ही पड़ेगा। जहाँ जाना हो सो जाओ ऐसा भी कहते हैं तो हमारा समर्थन हो जायेगा। शेज चार-पाँच बच्चे बच्चियाँ ऐसी ही आती हैं। उन्हें में समय तक नहीं दे पाता, आपको पसीना तक नहीं आता।

आपकी संवेदना, आपकी दया, आपके नाते-रिश्ते सब समाप्त हो चुके हैं। नये सीरे से क्या दे आपको। आपने ददहा को चिकित्सालय में भर्ती करा दिया और वैद्य जी को कह दिया अब हमारे ददहा आपके हाथ है, आप जो भी करो बस बच भर जायें। वैद्य जी भी कह देते हैं, भगवान की ओर देखो, हमारे हाथ में कुछ नहीं है। जो हानिकारक है उससे तो बचना ही चाहिये।

खरपतवार से खतरनाक आ गयी कलम पद्धति। आम का वृक्ष है उसी में अमरूद, उसी में नारंगी, नींबू, केला सब के सब लग रहे हैं, ये और अधिक खतरनाक है। ये तहनीयों की उपज है, मूल की उपज नहीं है। उन तहनीयों को उखाड़ कर फेंक दो। मूल तो कम से कम बच ही जायेगा। आज का विज्ञान 6 महिने में ही फल खाने की बात करता है कलम के माध्यम से, क्या वे गुणकारी होंगे? अब तो फूलों में भी यह बैशयती आ गयी है। बड़े-बड़े फूल आ रहे हैं, पर गंध नहीं है।

प्रदूषण दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। गंगा तो वह रही है, पर काली गंगा है। उस साफ-स्वच्छ गंगा को जो गंगोत्री में निर्मल था उसे काला पानी बना दिया है। आश्चर्य की बात ये है कि ये सब विकास के नाम पर हो रहा है। अंधाधुंध फैक्ट्रीयाँ एवं मिलों का परिणाम है। गंदे पानी

को नदी में नहीं डालेंगे, ऐसा संकल्प लें। इस कलिकाल में यह सब कुछ हो रहा है।

भावों का प्रकरण है, मैं यह कहना चाह रहा हूँ। आप सुन रहे हो। हम। किन्तु २५ बरस और भी बहुत कुछ सुनते रहते हो। आखिर इसका कितना प्रभाव पड़ेगा। आप सोच रहे होंगे आज तो महाराज जी खूब डाँट रहे हैं। जो विद्यार्थी होता है उसी को डाँटा जाता है ताकि सुधार हो सके। आप तो Regular (नियमित) विद्यार्थी है हम आपका नाम भी हटा सकते हैं। छोड़ भी सकते हैं। अब तो वैसे भी छोड़ने का समय आ गया है। इतना पर्याप्त समझता हूँ। जो नहीं आये उन तक तुम लोग पहुँचा देना। ५०० व्यक्ति हैं यहाँ स्वयं के सुधार की बात है, बच्चों की भी नहीं छिटआड़ोस-पड़ोस की तो बात ही नहीं है।

चातुर्मास के लिये तुम्हें लेआये, क्या प्रयोजन सिद्ध किया। खरपतवार की पहचान बहुत कठीन है। हमारा नीजी पौधा कौनसा है, दोनों में भेद नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में आप कैसे बच पायेंगे क्यों कि बिन जानन के दोष गुनन को कैसे तजिये गहिये ..... । क्या करें। आपको विश्वास ही नहीं है कि खरा क्या है।

जो संस्कार मिले हैं उन्हें स्वयं ग्रहण करो तभी वे सुरक्षित रह पायेंगे एवं जो आने वाले हैं उनको दे पायेंगे। खरपतवार की जगह यदि बीज ही चला गया तो क्या करेंगे, इतना दुर्लभ हो चुका है। जो-जो कार्य स्वास्थ्य एवं धर्म की दृष्टि से हानिकारक है, उन्हें एक-एक करके छोड़ते चले जाओ। जब माँ को बच्चों को दवा देनी होती है तो

फिर वह दवा चम्मच में लेकर दोनों हाथों से पांवों को पकड़कर उस बच्चे के मुंह में डाल देती है। ज्यादा करता है तो एक-दो चांटा मार देती है वह बच्चा रोने लगता है। रोने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इस बात का ध्यान रखती है बस उलटी भर न हो बाकी तो वह गले से नीचे उतार देती है। फिर मन बहला देती है। आध-एक घण्टा बीत गया बस माँ का काम हो गया।

उसके बाद भावना की औषध दे देती है। भावना से उस रोग को समाप्त कर देती है। आज बच्चों की पढ़ाई समाप्त हो गयी। वह पढ़ता नहीं अपितु मात्र T.V. / मोबाइल को दिन बार हाथ में लेते रखता है जैसे वही व्यापारी हो। यें कौनसा जमाना आ गया एवं कौनसी पाठ्यक्रम में है। इनके द्वारा वह इधर की बातें ही सीखेगा। सर्वप्रथम मोबाइल को पाठ्यक्रम से बाहर निकाल दो। बच्चों के पास तो रहे ही नहीं। इस कारण न आज दया है, न ही अनुकम्पा और न ही आतिथ्य है। वात्सल्य अंग दूर-दूर तक नहीं है।

इस स्थिति में विषय (Subj.) क्या काम करेगा। सम्यग्दर्शन के अभाव में सॉफ्टवेयर नाम को भी नहीं बचेगा। आपस में वात्सल्य रखना चाहिये। मानता हूं कहीं है। लेकिन इतना भी कहीं नहीं लंगड़ाते-लंगड़ाते चाँटा दो तो निकाल देगे। एक बार चिल्लायेगा, उस चिल्लाने से इतना नहीं है क्योंकी काँटे निकालने का दर्द नहीं, कांटा घुसने (लगने) का दर्द है। नहीं मानता तो कह दो एक पड़ेगी। भूल गये तुम। विवेक शून्य दया का कोई महत्व नहीं। जैसे श्रद्धा से रहित ज्ञान का कोई मूल्य नहीं

दया हो लेकिन विवेक के साथ। आज के बच्चों को माता-पिता अतिरिक्त दया करके बिगाड़ रहे हैं। आज आप लोगों को 10-15 मिनिट ज्यादा दे दिया, भाग्य तो आप लोगों का अच्छा है। ताली मत बजाओ, हमें अच्छा नहीं लगता।

आगे का जीवन क्या होगा, इसे देखना जरूरी है। Ten में तो आ गया किन्तु संस्कार के बिना Under Ten हो गया। अब तो गर्भ से ही सब कुछ सिख कर आ रहा है। पैदा बीमारी हो गयी। क्या-क्या होने वाला है, आपको देखना है। सबसे अच्छा इश्वर वह माना जाता है जो पहले से ही जान ले वहाँ एक्सीडेन्ट हो सकता है तो यहीं से Repair लगाना प्रारम्भ कर देता है। ऐसा नहीं करे तो सवारी चिल्ला रही है रोको-रोको, इश्वर को पता ही नहीं है क्या हाल होगा। आज यही हो रहा है।

आयुर्वेद का तो मरण जैसा हो रहा है। विदेशी चिकित्सा प्रणाली फैलती जा रही है। कौन क्या कर रहा है उसे स्वयं को पता नहीं। कहाँ जा रहा है-ये भी पता नहीं। इस प्रकार जीवन रूपी पेट्रोल समाप्त करके विकास की बात कर रहे हो। उसी शब्द को सुनना जो अपने काम का हो। अब इन सब से Rest लो। आपका बच्चा है। पाठशाला के लिये समय नहीं, पुरा का पुरा समय इसी में (mobile) जा रहा है। दूसरे के बारे में नहीं कम से कम अपनी संतान के बारे में तो सोच लो। सोचने के उपरान्त आपको सोचना पड़ेगा आपका नाता-रिश्ता है तो वह भी तोड़ दिया आप फिर भी प्रवाह कर रहे हो। अपनी आत्मा की बात कोई नहीं कर रहा है। हमारे परिणाम अनेक प्रकार की रस्पतपार से सुरक्षित हैं

आगम अथवा गुरुओं के सहारे से ही बचा जा सकता है। मूल आम्रवृक्ष को बचाइये। जिस-जिस टहनी में कलम है उस-उस टहनी को बिना खेद अलग करते जायें तभी मूल वृक्ष बच पायेगा। मूल वृक्ष ही हमें संस्कारित फल दे सकता है। इन्हीं भावनाओं के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

27-10-16 "मत करो उदीरणा कर्मों की" प्रातः 9.15

अब हम आगे की बात न करें। वर्तमान की बात करें। वर्तमान कहने से कोई भी बात वर्तमान के साथ लगा कर करें। आज कहने से कल की बात आती है। इनमें परस्पर संबंध है। हम दूसरे स्थान पर लेकर चलना चाहेंगे ताकि आप समझ सकें।

एक जंगल में एक बड़ा सा वृक्ष है, उस वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ मुद्रा में मुनिराज विराजमान है। मूर्ति/भगवान की भांति बैठे हैं। एक सिंह आया उन्हें देखा - वहीं शांत बैठ गया। एक के बाद एक अन्य सिंह तथा जानवर आये उनके सामने बैठते गये। लगता है यह मनुष्य कि क्रिया नहीं है। क्रिया होती है तो प्रतिक्रिया स्वभाविक है। कुछ क्रिया होती है प्रारम्भ हुआ नहीं की प्रतिक्रिया होना शुरु हो जाती है। किन्तु यहाँ प्रतिक्रिया रहित क्रिया है।

एक सिंह उठा उसने उन मुनिराज के शरीर से खाज-खुजाना प्रारम्भ किया - दूसरा भी उठा वह भी उसी तरह से खाज-खुजाने लगे। मुनिराज हट्टे-कट्टे (लगड़े) थे, हिलना-डुलना नहीं। जैसे मूर्तिवत थे वैसे ही बैठे रहे। अब आपलोग आकर कहते हैं- महाराज हमारी कक्षा बहुत खतरनाक है। उस सिंह

बराबर तो नहीं होगी। वह तो क्रूर प्राणी है, मांसाहारी है किन्तु सोच-विचार में वे भी सोच सकते हैं। आप नहीं देखेंगे वे भी नहीं देखेंगे। आप देखेंगे वे भी देखेंगे। ध्वनि है तो प्रतिध्वनि है। हां एकरहट नहीं हो तो नहीं होगी। आरोपण है तो प्रत्यारोपण है। प्रत्यारोपण मतलब रोपा।

शरीर में किसी अंग का प्रत्यारोपण कर दिया, ऐसे भी सुनते हैं। उस जंगल में उन मुनिराज के सामने सब जानवर शान्ति के साथ बैठे हैं। ऊपर से देव लोग यह दृश्य देख रहे हैं। सिंह ने ऊपर नहीं देखा, उन लोगों ने नीचे देखा इसलिये उनके मन में प्रतिक्रिया हो रही है। आम पकने के बाद टपकता है, इसी तरह ऊपर वालों हिम्मत करके बैठ भर है, पर भीतर से पूरे हिल गये हैं।

हम भी कुछ ऐसे ही करते हैं, जो वातावरण देखते हैं अथवा जो कहीं भी देखते पूर्व में घटित हुआ है उसको याद कर उसकी उदीरणा करा लेते हैं। उदीरणा से विषय ताजा हो जाता है। क्यों की आजकल मंदी चल रही है, उसे याद कर आप लोग विकथा में लग जाते हैं। आप अपने में व्यस्त हो जावें तो अग्नि जो ऊर्ध्वमुखी हो रही थी, अधोमुखी होने में समय नहीं लगेगा। बस उसमें ईंधन देना छोड़ दो। इसके विपरीत ईंधन नहीं भी डाले थोड़ा सा रगड़ दो फिर देखो उदीप्त हो जाती है वह अग्नि। कर्म भी ऐसे ही आते हैं। जैसे ही अतीत का प्रयोग कर उदीरणा होती है वे उदीप्त हो जाते हैं।

यह कार्य अपने आप नहीं होता। मात्र एक एक सेकण्ड लगता है व्यवस्थित होने में चाहे तो। वर्तमान का महत्व समझना चाहिये। बहुत महत्व रखता है वर्तमान। कल विषय रखा था, आज कुछ नये व्यक्ति आये हैं, एक उदाहरण

भी मिला है। ऐसा विषय सामने आता है जो हमारी उदीरणा करा देते हैं।

अमेरिका में 64 हजार व्यक्तियों पर प्रयोग किया गया। कहा आज के बच्चे out of course जा रहे हैं, अभिभावक भी जिम्मेदार हैं। आधुनिक साधनों में ही अधिकांश समय जा रहा है। इस प्रकार की वस्तुओं का उपयोग करने वाले बच्चे अपना होमवर्क कभी कर ही नहीं सकते। जो बच्चे बहुत सीमित समय के लिये इन वस्तुओं (T.V. मोबाइल, कम्प्युटर) का उपयोग करते हैं वे ही शियार होते हैं। जो नोर्मिनल (सामान्य) हैं उससे हानि नहीं है। यह शोध भारत में नहीं अमेरिका में हुआ।

यहाँ के बच्चे ऐसे बैठते हैं इनके सामने जैसे शोध के लिये बैठे हो। अब दर्पण देखना तो कम हो गया किन्तु इन साधनों में इतने व्यस्त हो गये कि पुरा का पुरा धन ही लुट गया। इन परिणामों से कितनी उदीरणा होती है - पता है आपको। सिद्धान्त ग्रन्थों में आचार्यों ने कहा - "परिणाम पच्चयेण"। परिणामों के कारण ही ऐसा होता है। चित्र देखकर निश्चित कितनी उदीरणा होती होगी। परिणामों का पता लगाकर शोध करते हैं तो किताब पढना, लिखना, देखना इन सबकी आवश्यकता ही नहीं है।

अतित को बंद कर दो आज संभलना है तो वर्तमान को संभालो। उन विषयों से बचें जो अतित की ओर ले जाते हैं। अग्नि में इंधन को मत डालो। सिंह जैसे जीव भी उन मुनिराज को ढूंठ, मूर्ति, प्रतिमा या स्टेच्यु समझ कुछ नहीं किया। आज के बच्चे इन आधुनिक वस्तुओं से अभ्यस्त हो गये, उन्हें इन हानिकारक यंत्रों से दूर रखना जरूरी है। उनके सामने ऐसी वस्तु रखो जिससे बुद्धि शांत रहे, कषाय शांत हो जाये, परिणाम निर्मल बने रहें।

परोसने वाले पर भी निर्भर है। कषाय उत्पन्न न हो ऐसी सामग्री रखो। अपरीचित वस्तु के सामने वितरागता हो जाये। सामने कुछ भी आये ये क्या है? यह जानने की इच्छा ही नहीं होना चाहिये। मान लिजिये एक कक्षा में 5 बच्चे बैठे हैं, एक ने 5 मीनिट जानने में बर्बाद किया कुल 25 मिनिट युं ही निकल गये। हिसाब तो लगाइये।

यहाँ पर 2-3 हजार में मान लो जनता बैठी है, मूल्य समझ लो कितने कर्म की निर्जरा हो रही है अथवा कितने कर्म का बंध हो रहा है। लोकतंत्र में मात्र मानसिक ही नहीं कायिक भी होना चाहिये। भारत में भीतर से भी एकात्मता है। अपरीचित से सम्पर्क नहीं। अड़ोस-पड़ोस बना रहे हो। निद्रा को उपशमित करना चाहते हो तो इन साधनों से दूर रहो।

दिवाली सामने है- पटाखा मत फोड़ना। यहाँ शान्त बैठे हैं, भीतर विस्फोटक सामग्री है। सेकेन्ड नहीं, सेकण्ड से बहुत कम समय में बस अगरबत्ती को बाती से लगाया विस्फोट हो जाता है। विस्फोट नहीं होगा मैं तरीका बताता हुँ। हम जब छोटे थे तो ये करते थे। उस बाती का सम्पर्क बारुद से हटा दो। अगरबत्ती लगाया बाती पर सम्पर्क न होने से फुस हो गया। फिर लगाया फिर फुस हो गया। ऐसे करते वह सामने वाला छोड़ देता (हम पुनः बाती फिर करके अपना काम कर लेते। हम कभी पैसा से ये सब सामग्री नहीं खरीदते थे, अपना काम निकाल लेते थे। बारुद से सम्पर्क कभी मत रखो। माहौल कितना भी गरम क्यों न हो, अगरबत्ती का सम्पर्क भी बाती से क्यों न हो बस बारुद से सम्पर्क मत रखो विस्फोट होने से बच सकते हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

28-10-16 "फण्डा कर्म निर्जरा का" प्रातः 9.15

आज की तिथी तेरस है। लेकिन इस तिथी के पीछे कुछ विशेषण लगा है धनतेरस। आप लोगो को ज्ञात होगा कि हम नेमावर से विहार कर रहे थे - संघ बुंदेलखण्ड की ओर मुड़ गया। ऐसा लगा जैसे बहुत दूर वर्षा हो रही हो। बिना बारहा के आजु - बाजु में कुछ गाँव हैं - झमारा, एक झामरा भी है, गोरझामर भी है। अब उम्मीद बढ़ गयी।

संघ आगे यहाँ आयेगा। जिनके यहाँ पंचकल्याणक की तैयारी थी वे लोग आये, हमसे निवेदन किया। हमारा तो एक ही उत्तर - देखो। उन्होंने कहा महाराज आधा हो ही आये तो ठिक होगा फिर आधा तो हम करा ही लेंगे। बुंदेलखण्ड है - योग ऐसा ही बन गया। उसी समय होली का समय आ गया। उन लोगो ने होली को दिवाली में बदला दिया। होली थी - पंचकल्याणक भी हो गया। सब लोग शामिल हुये। बड़े - बड़े नगरों के आयोजन में भी इस प्रकार जनता शामिल नहीं होती। आस - पास के ढेर सारे गांव थे, फिर राजमार्ग भी है। जो सीधा दक्षिण (बैंगलोर) से जुड़ा है। सब सानंद सम्पन्न हो गया।

पहले उन्हें पंचकल्याणक होना मुश्किल सा लग रहा था किन्तु उस पंचकल्याणक में खुब बरसा। इतना बरसा की वहाँ बांध बना लिया। फसल भी तैयार हो गयी। क्या उपयोग करना - जो आप कहो। ऐसे ही यहाँ भोपाल में हम पहले भी आये। पंचकल्याणक का माहौल था। चौकमन्दिर ही नहीं पुरा भोपाल शामिल था। एक महिना पहले दिया फिर अभी 4 महिने (चातुर्मास) दिया। उस समय भोपाल के सभी उप नगरों

(कालोनियों) में गये। सबने मिलकर सम्पन्न किया। और यहां से एक नहर बड़े बाबा तक गयी थी। भोपाल में बड़ा तालाब है - हम यहां से जल्दी ही नहर निकाल देंगे। वो मुझे याद आता है है, बड़े बाबा के प्राचीन मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिये सर्वप्रथम एक करोड़ की बड़ी राशि इस भोपाल जैसे बड़े नगर से गयी थी।

वो समाज जो मुट्ठी भर भी नहीं, छोटी सी समाज ने पंचकल्याणक में बढ़चढ़कर भाग लिया। लगभग तीन (करोड़) तक राशि भिन्न - भिन्न स्थानों पर भेजी थी। उम्मीद नहीं थी इतनी किन्तु संकल्प लेने के बाद ऐसा ही होता है। बोली भी कभी - कभी आसमान छु जाती है। छोटे से समाज ने पंचकल्याणक वो भी गजरथ के साथ सम्पन्न किया। मंदिर भी व्यवस्थित कर लिया। हमने पहले ही कह दिया - संकल्पित होने के बाद लोभ नहीं करना।

मुंह में पानी नहीं आसकता, नहर में पानी छोड़ दिया, वहां तक जायेगा। इस प्रकार से राशि का सदुपयोग होता है। दे भी दिया। वह दान तो काम में लाने की वस्तु है। दान तो दान होता है, असंख्यात गुणी कर्म निर्जरा होती है। इसमें कभी भी गडबड़ नहीं करना चाहिये। एक बार दाल बोल दिया अब वह हाथ का मैल है। जितना जल्दी हो उस मैल को अलग कर हाथ धो लो। चिपकाना चाहो तो उस मैल को चिपका लो, पर ऐसे न चिपकाइयो की मिट्टी का तेल लगाने पर भी न उतरे। हबीबगंज वाले भी समझो, कमेटी वाले भी समझे। जहां चिपकाना वहीं पर चिपकाना। ऐसा चिपकाना की हजारों वर्ष तक के लिये चिपक जाये। पहले के लोगों

ने ऐसा ही धर्म-कर्म किया, मोह को घटाने का प्रयास किया। बुंदेलखण्ड में यह प्रथा / मोह पर प्रहार करने की आज भी अविरल रूप से चली आ रही है। छोटे-छोटे गांवो में भी इस प्रकार का आदर्श है। बड़े शहरों का अलग है। आज भी यह क्रम चल रहा है।

युग भले ही बदल रहा हो पर गांवो में कोई फर्क नहीं पड़ता / बांध बन रहे हैं, गांवों के कुओं की फिर आज भी कायम है। वह झीर छोटी / पतली है फिर भी अविरल है। इसी तरह अविरल कर्मों की निर्जरा करना है / असंख्यात गुणी कर्म निर्जरा करने के लिये वह झीर सम्यग्दर्शन से देश संयम एवं देश संयम से सकल संयम की ओर चली जाती है। सुनते हैं भोपाल का तालाब सीहोर तक फैला है / भोपाल वाली ध्यान रखो - यह भोपाल का तालाब नहीं सीहोर से भी पानी आता है। इधर-उधर का पानी मिल जाये वह भोपाल का नहीं माना जाता / नाम भोपाल का हो रहा है।

आचार्यों ने कहा है अपने पास नहीं रख सकते इसको / निर्माल्य कहा है माला नहीं / जिसका त्याग कर दिया वह आपका नहीं / पंचम गुणस्थान वर्ती देशावकाशिक व्रत लेता है / अब वहाँ व्यापार करने में दोगुना नहीं चारगुना लाभ हो रहा है, किन्तु वह नहीं जायेगा / असंख्यात गुणी कर्मो की निर्जरा हो रही है / महाव्रती को जो निर्जरा हो रही है उस स्थान के लिये देशव्रती को भी वही निर्जरा क्यों की संकल्प है / संकल्प के कारण सूक्ष्म पाप की भी निर्जरा कर देता है / देखो तो त्याग के साथ पुण्य कितना गुणा होता है,

आपको पता ही नहीं है। विषयों की ओर दृष्टि नहीं रखोगे तो आप पाप को निर्मूल कर सकते हैं। पुण्य मोक्षमार्ग में आवश्यक होता है। पाप की निर्जरा एवं प्रशस्त कर्मों का बंध अगले भव में मोक्षमार्ग हेतु कारण बनता है।

आप लोगों के सामने निर्माल्य की परिभाषा बताई। जैसे एक बार माला पहन ली अथवा फूल को सूंघ लिया अब दूसरे को नहीं देते अपितु फेंक दो अब किसी काम का नहीं। उसी प्रकार जो भी दान का भाव हुआ है, वह दे देने के उपरांत मत देखो। अपूर्व पुण्य का बंध एवं पाप की निर्जरा करायेगा। धोना चाहते हो मैल को तो वर्षा हो गयी है धो लो। अन्यथा वाशलेट से भी नहीं धो सकते। हाथों हाथ साफ होता जाये ऐसा प्रयास करो। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। जो ले रहे हैं वे भी समझें, जो दे रहे हैं तथा जो अनुमोदना कर रहे हैं उनके लिये भी यही है। जो भी शिक्षा है, उन सब लोगों के लिये है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नूँ

30-10-16 कार्तिक कृष्ण अमावस्या (दिवाली) प्रातः 9.15

"कब बनेंगे हम दिवालीया सिद्ध समान"

आषाढ़ सुदी 14 से स्थापना होती है। इस वर्ष आपके यहाँ श्रावण बदी एकम को स्थापना हुयी। शुरु पूर्णिमा भी बीच में आ गयी। आज कार्तिक बदी अमावस्या हो गयी। भगवान को मुक्ति हो गयी, हमें भी चातुर्मास से मुक्ति हो गयी। अभी-अभी निर्वाण की भक्तियाँ करके ही आये हैं।

जो व्यक्ति बहुत ऋण ले लेता है और दे नहीं पाता है। वह तीन-चार दीपक जलाकर, दरवाजा बंद करके

चला जाता है। इसे दिवालीया कहते है, आज के दिन भगवान भी संसार के वैभव से दिवालीया हो गये। अनंत सिद्ध परमेष्ठी हुये, उन्होंने संसार की चमक-दमक से दिवालिया होना ही ठिक समझा। यहाँ भी इतनी भीड़ नजर आ रही है, यह सब असंयमियों की जमघट है।

आपलोग कम थोड़े ही हो, एक-दूसरे के समर्थक हो। ऐसे में पार्टी के सदस्य नहीं बनीयों अपितु निर्दलीय रहना ही ठीक है। देश के बारें में आप कभी नहीं सोचते। अपने आत्मा के प्रदेश होते है। किन्तु पार्थिव जड़ सम्पदा के पिछे आपने अपनी चेतन सम्पदा को भूला दिया है। आप लोगो की नैय्या मोह, अज्ञान लोभ-लालच के कारण डगमग कर रही है।

चारों ओर लोभ-लालच का साम्राज्य फैला है। आंखे बंद कर लेनें पर भी मन बंद नहीं होता, वह तो दूर-सुदूर उड़ता ही चला जाता है। सबको बंद कर सकते को पर मन को बार-बार प्रयास करने पर भी हार जाते हो। मन का स्वभाव जानना बहुत कठीन है। वृषभनाथ तीर्थंकर को भी एक हजार वर्ष लग गये। महावीर भगवान को भी (२ वर्ष लगे) श्रेणी बांध ही नहीं पायें। इसलिये आप लोग अरिहंत-सिद्ध, अरिहंत सिद्ध किया करो। पश्चात् कुछ नहीं कर पाओगे, यह संधी काल है।

चौपात पर हो, पहले पुछताछ कर लो। पुलिस भी है, लिखा भी है सूचना पट्ट पर। इन संकेतो के माध्यम से ही आगे बढ़ते है। अभी चौपात है बाद में तो पगडंडी मिलेगी। ऐसे में मधुवन न आकर के और कहीं घुम जाओगे। निमियाघाट उतर जाओगे। नीम का वृक्ष भी नहीं मिलने वाला उधर निमियाघाट

की तरफ। अतः पहले जाने से पूर्व पुष्टता लो।

इस मनुष्य गति के अलावा मुक्ति अन्य गति में मिलती ही नहीं। एक बार कम से कम देवगति में जाना ही पड़ेगा। वहाँ की भीड़ इस हबीबगंज भीड़ के सामने कई गुना अधिक है। करोड़ो-करोड़ों रानियाँ रहती है, विक्रिया करलें तो चमक-दमक का क्या कहना। वहाँ खो गये तो गये। संकल्प लेकर जाना है, भगवान को नहीं भूलियो। वहाँ क्षायिक सम्यग्दर्शन का टिकिट मिलेगा ही नहीं। क्षायिक सम्यग्दर्शन का टिकिट तो जब भी मिलेगा यहीं से मिलेगा। ये पक्का है।

बहुत सारे चातुर्मास जीवन के बीत चुके किन्तु यह चातुर्मास अलग ही क्वालीटी का चातुर्मास हुआ। यहाँ तो रविवार भी भूल गये। सातों दिन रविवार जैसे रहे, गत दो रविवार से कोई नहीं आ रहा है। अर्थात ये भी सान्तर मार्गणा हो गयी। यही दिवाली मनायेंगे। मनाओं कौन मना करता है। मना करके हम क्यों अन्तराय कर्म का बंध करें। देवशास्त्र गुरु रूप शिलान्यास करें नींव मजबुत करो अपने सम्यक्त्व को पक्का करो। अणुव्रत लेना है तो लेलो।

बहुत जल्दी है तो उस अनुरूप भूमिका बना लो। मकान बनाना चाहते हो तो उस अनुरूप भूमिका बना लोगे तो। करौती बिना महाप्रसाद कैसे बनेगा। पंचेन्द्रिय विषयों की करौती करो, उसे महाप्रसाद की नींव में डाल दो। पंचेन्द्रिय विषयों का त्याग ही मोक्षमहल की भूमिका का निर्माण है। थोड़ा-थोड़ा निकालकर जमा करते गये, उस एक वर्ष में एकत्रित बड़ी राशी को महाप्रसाद हेतु लगा देते हो। इसी तरह पंचेन्द्रिय विषयों में थोड़ी-थोड़ी करौती की उससे पुण्य का अर्जन हुआ।

और पाप की निर्जरा हो सकती है। बीच में एक भव मात्र रह सकता है। देव बने और वहाँ से आकर अपनी आत्मा का कल्याण कर लिया।

छोटे बच्चे होते है वे गुल्लक रखते है, उसमें अपनी बचत जमा करते रहते है, जरूरत पर खोलकर काम कर लेते है, ऐसे ही देव गति से आते ही गुल्लक खोल लो एवं अपना काम बना लो। इसे पहचान लिया तो मात्र दो-तीन भव में ही आप मुक्त हो सकते है। इस प्रकार से आप बड़ी-बड़ी राशि एकत्रित कर सकते हो।

आज चातुर्मास का निष्ठापन हो गया है, ध्यान रखना! अब कोई अर्जी नहीं लगेगी। हमें बाहर जाने के सभी रास्ते मालुम पड़ गये, आप नहीं भी बतायेंगे तो भी हम जा सकते है। आज रविवार है। मध्याह्न में देख लेंगे, हम तो अपनी कहा लगायेंगे ही। निर्वाण कल्याणक भी है, आओगे तो लाभ मिल सकता है।

यहाँ भीड़-भाड़ बहुत रही। व्यवस्थाओं के दौरान हमने डांटा हो। कई बार बच्चों की तरह समझाना बहुत कठीन होता है, फिर डाँटकर भी समझाते है, आप लोगो को बुरा लगा होगा किन्तु उसे वात्सल्य ही देना। वैसे हम डांट नहीं पाते। डांटना चाहते है किन्तु चहरे पर मुस्कान आ जाती है तो फेल हो जाती है। आप इसे याद रखेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

31-10-16 "एक हो आवाज सबकी" प्रात: 9.15

दिवाली हो गयी और होती रहती है। मिट्टी के सीकोरा होते है। दिपक भी है उसमें घी है। सभी सीकोरों एक से है। अब उसमें ये पहले रखो, ये लास्ट (अंत) में रखो ऐसा तो है नहीं। किसी भी मंजील में रखो अथवा किसी भी हाथ में रखो सब एक से है। आगे-पीछे क्यों सोचते रहते हो। समूह में जो आनंद आता है, वह एक-आध में कभी नहीं आयेगा।

महत्व सदैव समूह का है। एक व्यक्ति दिवाली मनाता इतना आनंद नहीं आता जितना अनेक व्यक्तियों के होने से आया। जहाँ अनेक है वहाँ बहुत है। मात्रा और संख्या दोनों में बहुलता आ गयी। बहुलता इस शब्द का प्रयोग संख्या के साथ भी एवं मात्रा के साथ भी दोनों में करना। अनगीन का अर्थ होता है उसके पीछे जितने गोले लगा दो उतने ही कम है। एक के बिना गिनती होती ही नहीं, आगे जितने गोल लगाये एक का निषेध हो जाता है। बाद में अनेक आयेगा।

दूसरा-तीसरा-चौथा ऐसे संख्या बढ़ती जा रही है। पहले क्रम में आने की होड़ छोड़ दो। अभिमान को छोड़ना चाहते हो या मान रहीतता को जोड़ना चाहते हो तो प्रत्येक के साथ में जुड़ना/जोड़ना प्रारम्भ करो। आगे की संख्या के बिना एक नहीं और एक के बिना आगे की संख्या नहीं। आगे की संख्या बढ़ नहीं सकती। आप सभी तो वैसे ही दुनिया में रहकर अल्पसंख्यक है। एक में एक जोड़ने पर दो फिर तीन, चार इस तरह संख्या बढ़ती जाती है. आप लोगो की संख्या घट रही है। इसलिये दिपावली के

दिन महावीर भगवान दिवालिया हो गये। इसलिये आपलोग मुक्त तो हो ही नहीं जो मुक्ति पाना चाहता है उसमें भी दिक्कत पैदा कर रहे हो। मैं आगे (पहले) - मैं (आगे) पहले... ऐसे में एक भी व्यक्ति आगे नहीं आ सकता।

जो दूसरों को आगे करेगा सबकी नजर उस ओर स्वभाविक ही चली जाती है। उसने अपने आप को पीछे रखा - अन्य को आगे किया। रेल तो देखी होगी आपने। यातायात में इसका योगदान रहता है। बहुत से डिब्बे लगे रहते है, आगे में एक यंत्र लगा रहता है, कभी-कभी जरूरत हो तो दो यंत्र भी लग जाते हैं। नियन्त्रण हेतु पीछे भी एक ~~यन्त्र~~ और लगा रहता है। ये रेल का अधुरा वर्णन है।

आपने देखा होगा रेल में अंत में ध्वजा हाथ में लिये संकेत करता रहता है, गाईसाहब कहते है। वह पुरी की पुरी रेल पर नियन्त्रण रखता है इसके अलावा आगे कौन सा स्टेशन - पीछे कौनसा स्टेशन चला गया पता रखता है। आगे-पीछे सबका ध्यान रखता है वह गाई। पुरा का पुरा भार पीछे रहता है आगे नहीं (उस गार्ड के डब्बे का कभी दरवाजा नहीं होता, वह दिगम्बर डिब्बा है। बस हरी - लाल ध्वजा (झण्डी) दिखाता रहता है।

चैक खेंचने वाले ने रोक दी

अब जब तक वह हरी झण्डी नहीं दिखायेगा गाड़ी चल नहीं सकती। आप ही जान लो कौन किसका संरक्षक होता है। उस डब्बे की बनावट संरचना भी अलग ही होती है। पचासों डिब्बे भी लगे है पर अंत में वह तो लगेगा ही। आप लोग बिना बोले तो आते है और भोजने के उपरान्त भी जाते नहीं हो। एक का नाम लिया

दस उसके साथ चले आते हैं। पीछे वाले सब के सब शान्ति से बैठे हैं, वो काहे के आगे आयें हैं। वो सोचते होंगे की हमारा कोई काम नहीं है क्या? वचनों से लाभ मिलेगा इस हेतु आये हैं। किन्तु आप यह नहीं समझते। हम भी आप जितना आगे आते हैं, हमारी दृष्टि उतनी ही पीछे की ओर जाती है। उनकी साधना / धैर्य / समता / निरभिमानता तो देखो। सभी बातें घटित हो जायेंगी।

धार्मिक वातावरण में आगे आना है तो दूसरों से कहिये, पहले आप आइये। ऐसे को संस्कृत में पुरोधा बोलते हैं। बुंदेलखण्ड में बइड़े कहते हैं। आप लोग ज्यादा पढ़े लिखे हो किन्तु आगे आये बिना काम का मूल्य नहीं। उन्हीं के हाथ में माला / श्रीफल इत्यादी देना। बइड़े को आगे करना चाहिये। काम होना चाहिये - ये महत्वपूर्ण है। ऐसा नहीं कि हमारे बिना काम नहीं हो सकता। ऐसा व्यक्ति कभी पुरोधा नहीं बन सकता।

वह कहता है (बड़ा व्यक्ति) कि आप सब के सहयोग के बिना यह काम नहीं हो सकता। पहले भी कहा था, जिन्होंने 4 महिने में कभी भी इस मंच की ओर आने का प्रयास ही नहीं किया। भोजनशाला आदि में लगे हैं। अतिथीयों की सेवा में लगे हैं। अतिथी भी उनकी सेवा से प्रभावित हो पुरे समाज की प्रशंसा करके जाता है। उन लोगो को आगे आने की आवश्यकता ही नहीं समझते। भोजन करने के उपरांत डकार स्वत: आती है, आवाज हेतु माइक की जरूरत नहीं। सीखना चाहिये अपने समाज को भी उस गाई की भांति बीच में कोई गडबड़ होती है तो पीछे वाले पर ही

पुरी जिम्मेदारी आती है। दायित्व का भार किसी कोने में नहीं रहता, सर्वांगीण रहता है। एक एंगल में ज्यादा भार होने पर आप उठा नहीं पायेंगे। मान लो कोई वस्तु उठाना है, तर्जनी या अंगुठा से थोड़ा सा जोर लगा दिया एक तरफ से, अब नहीं उठा पायेंगे। ऐसे में दायित्व का निर्वाह ठीक नहीं हो सकता। ज्यादा शक्ति की आवश्यकता है ही नहीं।

सोच - विचार की बात है हाथ तो लगाओ, हजार व्यक्तियों ने एक अर्घ्य की थाली में हाथ लगा लिये करंट की भांति। करंट (current) का मतलब तत्काल फल मिलता है इसका। ताजा - ताजा मिलता है। भावों में उठाव का कभी मूल्य नहीं माप सकते आप। विचारों में एकता होने से हजारों व्यक्ति मिलकर कम श्रम में, कम समय में काम कर सकते हैं। पसीना भी नहीं आयेगा।

एक ध्वनि - एक आवाज बहुत महत्त्वपूर्ण है। विचारों में बिखराव है तो हजारों - लाखों भी महत्त्व नहीं रख सकते। आज दिवाली के उपरान्त यह विचार रखा। प्रथम नम्बर नहीं होता। एक का निषेध करो। अनेक में दो भी है - बहुत भी है, असंख्य भी हो सकते है। न एकः इति अनेकः। संख्या को महत्त्व देओ एक को नहीं। आ० उमास्वामी जी ने भी कहा नाणो = अणु के पास प्रदेश नहीं है। एक को हम गिनते ही नहीं, जो व्यक्ति अकेला होता है, उसका कोई नहीं। अगुआ - अगुआ होने की बजाय आगे करते है तो बहुत अच्छा। याद रखोगे तभी होगा। आप सभी लोग विस्मरणशील न होकर स्मरणशील हो जाये तभी ताजा रहेगा। हम देख लेते है। सामने वाले का परिणाम कितना आता है। आशीर्वाद दिया नहीं करोगे तो हम देख लेते है। हम देश के है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

1-11-16 "जो अकड़ता वह टूटता" प्रातः 9.15

ये बताओ अभी जय बोल रहे थे, वे नारे लगाने से पूर्व अजी-अजी लगा रहे थे। (Dr. A.K जैन) ऐसा करने से शब्दों में जान आती है। इसीलिये लगा रहे हो।

जंगल में दो पेड़ हैं। एक बड़ का पेड़ है, एक दूसरा बिल्कुल पास भी नहीं और दूर भी नहीं दूसरा पेड़ बेत का पेड़ है। बड़ का पेड़ कहता है, हमारे पास आते तो छाया मिल जाती, बहुत कुछ खाने वगैरह भी दे देते। वह बेत का पेड़ मना कर देता है- आपके साथ रहूँ यह फिट नहीं लगता है। फिर मैं भगवान की कृपा से बिल्कुल ठीक हूँ। बड़ का पेड़ पुनः कहता है- मेरे पास छाया मिलजायेगी वह कहता है अजी- छाया की मुझे आवश्यकता नहीं। अबकी बार बड़ का पेड़ कुछ व्यंग्यात्मक लहजे से कहता है- तुम दुबले-पतले हो हवा आ जाये तो गिर जाओगे, हवा को सहने की कुबत (क्षमता) भी चाहिये। वह जवाब देता है- मैं गिर भी जाऊँ तो किसी के उठाने से नहीं उठता।

आप सुन रहे हो। आप अपने आप नहीं उठ सकते हो। जाते हो तो चार चाहिये, आ हो तो और अच्छा है। ऐसे उन दोनों वृक्षों में प्रतिदिन संवाद हो रहे थे। बड़ का पेड़- फिर भी जब आवश्यकता पड़ जाये तो देख लेना। इतना संवाद हो ही रहा था कि एक बहुत बड़ा तूफान आ गया, देखते ही देखते बेंत का पेड़ गिर गया। वह दण्डवत् हो गया। बड़ का पेड़ने हंसी भी कहा- देखा न मैंने पहले से ही कहा था। तूफान लगातार बढ़ता ही जा रहा था। इतने में वह विशाल बड़ का पेड़ धराशायी हो गया। यह दण्डौत कर रहा था, वह तो शीर्षासन कर गया। मात्र जड़ से नहीं उखड़ा अपितु ऊपर का नीचे एवं नीचे का ऊपर हो गया। पैंही

ऊपर आ गयी। जब तुफान थम गया - बेंत का पेड़ धीरे से पुनः खड़ा हो गया। वह कहता है - क्यों सेठ जी, कैसे हो? वैद्य जी रोज कहते है - शीर्षासन लगाया करो। इस तुफान ने शीर्षासन सिखाया है। सीख तो गये पर पुनः दोबारा तुफान आना पड़ेगा। आपके पास रहता तो शीर्षासन के भरोसे मेरे ऊपर आ जाते।

भारत को चाहिए की व बेंत की शक्ति में रहें, बड़ की में नहीं। दण्डौत् लगाओ। देव-शास्त्र-गुरु के सान्निध्य में रहो। ऐसे में गुरु सबको योग्यतानुसार दे देंगे। धरती की तरह गुरु भी क्षमाशील होते है। बेंत के पेड़ ने ऐसा ही किया। मान कषाय के कारण व्यक्ति गिर जाता है। यों परिवर्तन पुरे करें..... छहढाला कार ने बहुत ही सुन्दर कर दिया। सब दिन एक से नहीं। विनय के द्वारा हम अभिमान को कम करें। विनयशील बनने से दूसरे को पाठ मिलता है - हमें सीखाना नहीं है। किन्तु स्वयं ही पाठ्यक्रम का काम होता है।

पुस्तिकाओं में विनय को पाठ्यक्रम में रखा गया है। पहले के लोग गुणों से भरे रहते थे अब द्रव्य गुण से खाली-खाली हो गये हैं। पत्ते भी उड़ जायेंगे एवं लापता हो जायेंगे। आप लोगों को कोई पता नहीं रहेगा। आज से पूर्व आप लोगों की स्थिति अपने निज धाम से दूर ही हो रही है। इसलिये चारों ओर त्राहीमाम्-3। यहीं देखने से ज्ञात होता है। दाम बिना निर्धन दुःखी..... । न ही दान है, न ही धाम है और न ही ग्राम है। घाम (धूप) में रहा है अतः बड़ के पेड़ की छाया में रह रहा है। आपके दुःख का मुख्य कारण है - तृष्णा - लोभ - लालच। दो शब्द इंगलिश के हैं

मात्र उदाहरण हेतु समझना। अंग्रेजी का समर्थन नहीं है। End और Find। आप लोग Find (और) के समर्थक है और हम End (समाप्त) के समर्थक है। आशीर्वाद की मुद्रा आप जानते है, हाथ उसी तरह उठा है मात्र डायरेक्शन Change हो गया अर्थ है हाथ दिखाना (मारने का इशारा) एक अभय का प्रतीक है. दूसरा अर्थ का प्रतीक है।

हाथ बिना निर्धन दुःखी .....। लड़का (बच्चा) रोता है, भूख के कारण - भूख शांत हुयी वह खेलने - खेलने में लग जाता है। आप ज्यादा ज्ञानी हो गये, आगे बढ़ गये। सुनना नहीं रहे हैं। वह मुक्ति रूपी लक्ष्मी ऐसे में आपको कभी नहीं वरेगी। जिसके लिये आवश्यकता है उसके लिये भेज दो। इसी प्रकार पूंजीपति बने रहना चाहते हो। कई लोग युं-युं (मांगने की मुद्रा) करते रहते है, हम एक बार युं करते ही 10-20 हाथ आ जाते है। हम रखते ही नहीं। आप सदैव उधर ही नजर रखते है। हम नजर दिस ओर है, उस पर नजर रखते है।

हाथ पसारने की भावना छोड़ दो। निदान छोड़ दो। निदान का अर्थ भण्डार होता है। आज इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। आज दूसरा दिन है - महावीर भगवान के दिवालीया होने के बाद। आप लोग अलग तरीके से दिवालीया होते है, पहले घर बसाते है। फिर दिपक जलाकर ताला बंद करके चले जाते है। दिवालीया घोषित हो जाते है। सभी लोग धन को इकट्ठा करने में लगे है।

मात्र अर्थ नीति को ही न समझे - परमार्थ नीति को भी समझना परम आवश्यक है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

2-11-16 "लगाओ डुबकी आनंद में" प्रातः 9.15
(अशोकनगर से डा. बसें)

ऐसा लग रहा है - कैसा लग रहा है। ये लोग सब कुछ भूल चुके हैं। ये भूमि बहुत दुर्लभ होती है। जब स्वर्ग के सौधर्म इन्द्र को इस आनन्द की गहराई नहीं मिली तो सोचता है कि हम कहाँ भटक कर आ गये। स्वर्ग के वैभव का अनन्तवां हिस्सा भी यहां नहीं, जिनके मुकुटों में रत्न जड़े हो। वह इन्द्र जब धरती को देखता है तो उसे सम्पूर्ण धरती ही मुकुट जैसी लगी। स्वर्गों में वह कहां, यहाँ देव भी पानी भरते हैं।

पगडंडी आपको सुरम्य मार्ग पर पहुंचाती है, किन्तु वह पगडंडी भटका न दे इसलिये उसे तलाश के साथ ही सुरक्षित भी रखना है। पगडंडी ऊपर-ऊपर ले जाने वाली है, पर प्रलोभन न आ जाये। पैर बहुत जल्दी गलत दिशा में पड़ते हैं किन्तु नृत्य करने वाले के एक-एक पैर थिरकन के साथ पड़ते हैं। ताण्डव करने वाला इन्द्र भी इतना आनंद नहीं ले पाता है। युवाओं की ही बात नहीं - वृद्ध भी उस नृत्य में भाग लेने को उत्सुक रहता है। सौधर्म इन्द्र बहुत पीछे रह गया।

आनंद जब भीतर से उत्पन्न होता है तो अंगोपांग शिथिल होने पर भी मुख कमल सदैव खिला रहता है। लेकिन यह बहुत कुछ अंश में ही योगदान है। इसी में आनंद की डूबकी लगाओगे तो कितना आनंद आयेगा। तैर अभी तो भीतर गये ही नहीं। तैरने का आनंद तब जब भीतर पानी में जाओगे। डुबकी लगाओगे तब अलग ही अनुभूति होगी। त्याग के लिये कोई जगह नियुक्त नहीं की जाती। त्याग के साथ कोई भी

अनुबंध मत रखो। त्याग की बात जब आती है तो बोली लगाने वाले भी पीछे रह जाते हैं। जो बोलियाँ लिखते हैं वे भी पीछे रह जाते हैं। स्याही भी कम पड़ जायेगी। अभी बोली बोल रहे थे - मैं यहाँ की फ्रेमों की ओर देख रहा था। कोई भी सदस्य नहीं बचा जिसके मुख पर अपार हर्ष / मुस्कान के भाव न हो। मुखकमल खिले भी क्यों न हो, यह वही स्थान जहाँ तीन मंजिला विशाल जिन मन्दिर का निर्माण होने जा रहा है।

यह हस्तकरघा का मंगलाचरण उसी नींव में जा रहा है। ये सोचो कितनी जनता आ रही है। सबका पुण्य आपको भी प्राप्त हो रहा है। एक नाम जो अन्यत्र कहीं नहीं मिला। राजस्थान में मिला या फिर अशोकनगर में है। धमण्डीलाल जी यहाँ आये हैं। धमण्ड का आना मुश्किल है। फिर भी चलकर आना अच्छी बात है। सब याद रखना। इतना ही। भोजन कर रहे हैं, पच भी जाये। प्राणों तक पहुँच जाये।

परिणामों को सुरक्षित रखना जरूरी है। जिन्होंने मोह के त्याग का संकल्प लिया है, उनकी भावना बलवती बनी रहे। बैठे-बैठे सोचता हूँ - गुणस्थान ऊपर न जाये किन्तु नीचे भी न जाये। मन-वचन-तन से वह उद्देश्य कभी ओझल न हो। स्वप्न में भी बरकरार रहना रहे। महाव्रत लेते हैं, प्रमत्तविरत का अविरत नहीं होना है। उसका गुणस्थान एवं संयम लब्धि स्थान रात में भी बना रहता है, यह संकल्प का ही फल है। आपकी सीमा रेखा संयम का संकल्प कभी टूटे नहीं। आपको एक उदाहरण दे देता हूँ। भारत में ऐसे-ऐसे

धनी जिन्होनें स्वप्न में त्याग किया था। वह स्वप्न टूट जाने पर भी याद रखता है कि मैंनें त्याग कर दिया है। महाराज से जाकर पुछता है, मैंनें स्वप्न में त्याग किया था। त्याग को निभाने वाले आप मुझे नियम देकर संकल्पित और कर दें।

कृत कारित अनुमोदना से भाग लेने वाले बड़े सौभाग्यशाली होते है। यह ऐसा बीजारोपण है, जो हमेशा अमृत तुल्य फल देने वाला है। इसके संवर्धन में अपना धन लगाया। संयम लब्धि स्थान एवं त्याग तपस्या के भाव बड़े ही दुर्लभ होते है। रेत के ढेर सारे कणों में एक-आध हीरे की कणिका बहुत दुर्लभता से मिलती है। इस हीरे को आप संभालकर सुरक्षित रखीयेगा। जहाँ चोर आदि का जाना न हो। सेठ-साहुकार सोचता है- मैं सोने जा रहा हूँ - आप ध्यान रखना। इसी तरह प्रति समय संयम का भी ध्यान रखना चाहिये। भावों को ही महत्व दिया जाता है।

रात स्वप्न में भी असंयम न आये। धन क्या है, उसे सब जानते है। अनमोल भावों को सदैव सुरक्षित रखते है। भावों को कभी धक्का नहीं लगे। भाव क्षणिक होते है, संकल्प कभी भी क्षणिक नहीं होता है। आप लोग बड़ी दूर से आयें है, हम सो ही दूर से आयें है। हम भी अशोक नगर की तलाश में है। जहाँ कोई भी रोने वाला न हो, उसी का नाम अशोकनगर मानते है। हमारे साथ आना है तो आओ, हमारा भी अशोकनगर है। आप गलत अशोक नगर को चुने हुये हैं। हम इस प्रकार के अशोक नगर को लेके बैठें है, जिसका इन्द्र भी पता पुछने आता है।

अभी अर्घ्य चढ़ाया। अब अविनश्वर अशोकनगर को अर्घ्य चढ़ाना प्रारम्भ कर दो। ये छुटेगा तभी वह मिलेगा।

अभी लिखवा रहे थे। मैं पूरा का पूरा अशोक नगर का त्याग करता हूं, ऐसी बोली कम होती है। इस प्रकार मैंने कहा उसी अशोकनगर को याद करो। अनर्घ्य पद प्राप्तार्घ्य चढ़ाते हैं।

अनमोल चाहते हैं और पूरा संसार चढ़ा रहा है। हम तो मोक्षफल पाने हेतु फल चढ़ाते हैं। हम तो अशोकनगर को सदैव याद रखते हैं। यहां के लोग भी कहते थे - सभी ताल-तलैया एक ओर भोपाल की ताल - तलैया एक तरफ। सब भूल जाते हैं। सब जगह ऐसा ही होता है। याद रखियो इस अशोकनगर को।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

3-11-16 "आवश्यकता ज्ञान की नहीं ध्यान की" प्रातः 9.15

आप लोग सूर्य को देखते हैं। बहुत दूर है किन्तु उनके पास इतना प्रताप है कि धरती तप जाती है और उनके पास इतना प्रकाश है धरती का एक-एक कण आलोकित हो उठता है। प्रताप-प्रकाश के अतिरिक्त तीसरी कोई चीज है तो उसे दूसरा सूर्य, तीसरा सूर्य भी बुला लिया जाय तो भी पूरा नहीं हो सकता। असंख्य सूर्य भी आ जावे तो भी काम नहीं होगा।

आज के विज्ञान ने भी मान लिया की सूर्य एक नहीं अपितु अनेक है। पहले तो स्वीकार किये फिर तारामण्डल आदि की तरह माना। आगम को आगम के बल पर अनुमान लगा सकते हैं। असंख्य सूर्य होने पर भी तीसरा काम नहीं कर सकते हैं। यह कार्य उनके बिना भी नहीं होगा, उनके द्वारा साक्षात् नहीं होगा, इसमें हम लोगों की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति का एक बल होना चाहिये। वही कहने के लिये हम बैठे हैं - वही सुनने के लिये आप यहाँ बैठे हैं। हमें खुशी तब होगी जब आप की समझ में आजाय।

मुझे तो अभी भी खुशी है। आपको मालुम नहीं उसे बताने की कोशिश कर रहा हूँ। सूर्य में इतना प्रताप होता है कि धरती फट जाती है। तप जाना अलग वस्तु और जलना प्रारम्भ कर देना अलग वस्तु। ज्वाला मुखी में जलना होता है, भूकम्प आता है तो फटना होता है।

सूर्य की किरणों से हम जला नहीं पा रहे हैं। ज्यों ही उन किरणों को एक काँच के माध्यम से डालते हैं, तो वे सारी किरणें केन्द्रीभूत हो जाती हैं, नीचे रखा पदार्थ जलने लगता है। अद्भुत भावना है। इसी प्रकार ज्ञान होना अलग बात है। किन्तु उस ज्ञान को बाँधते हैं, इसी का नाम ध्यान है। विद्वानों के पास ज्ञान है, बाँधने की प्रक्रिया हमारे पास है। ध्यान से सुनिये - ज्ञान में जुटने वालों।

ज्यों ही वे किरणें एक बिन्दु पर केन्द्रित हो जाती हैं। कांच के माध्यम से उन्हें नीचे कुछ रखे हैं, वे किरणें कण्डे के भीतर गयी। मुहूर्त के पहले-पहले अन्तर्मुहूर्त में जल उठते हैं। प्रतिदिन सूर्य प्रकाश में नहीं जल पायें। क्या सूर्य के पास क्षमता नहीं है? आगम के माध्यम से उन किरणों को एक स्थान पर लाकर (कांच के माध्यम से) जला दिया। प्रवचन सुनते-सुनते कान थक गये आपके असर नहीं पड़ा कितने ही चातुर्मास हो गये। समयसार को कण्ठस्थ करना मुखाग्र करना, mind में भर लेना किन्तु यदि हृदयंगम नहीं हुआ तो क्या होगा।

हृदय कभी आज्ञा नहीं देता। एक तरंग मात्र से ही कल्याण हो जाता है। ध्यान लगते ही वह प्रताप बाहर आ गया। इसी को बोलते हैं कि ज्ञान को ध्यान

हो गया अब ध्यान की आवश्यकता है।

जिनवाणी को उठाते हैं तब "सावधान" बोला जाता है। इसका अर्थ है अब बाकी चर्चा बंद करो। परम गुरु ने यह लिखा है। एक पर हमारा ध्यान आने पर सब कुछ समाप्त हो जाता है। अब सोचना बंद कर दो।

"सुनो तो सही, पहले मत सोचो, पछताओगे"/वरना रोओ, ये हाइकु है। अब रोना प्रारम्भ कर दोगे तो कोई नहीं सुनेगा। चातुर्मास समाप्त हो गया। आज दिवाली के बाद तीसरा/चौथा दिन है। हमेशा-हमेशा जिज्ञासा प्रयोग की होनी चाहिये, योग की नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

5 एवं 6 नवम्बर "शिक्षा एवं भारत" परिचर्चा अलग से (आ. श्री प्रवचन - 4 सत्र में) चाल डायरी में देखें

6-11-16 "बहिर्जगत से अन्तर्जगत की ओर" प्रातः 9.15

आप लोग जो कुछ भी देखते हैं, सुनते हैं, यह बहिर्जगत का कार्य है। सुनने वाला सुनता है, देखने वाला देखता है। यह सब प्रदर्शन बहिर्जगत में होता है। अन्तर्जगत में क्या-क्या परिवर्तन सुनकर अनुमान/आभास कर सकते हैं। उस पर श्रद्धान कर सकते हैं। एक उदाहरण से स्पष्ट करना चाहूंगा।

जैसे मेघों से बूंद निकली। वह जल रूप होते हुये भी व्यवस्थित है। हवा-तापमान आदि के माध्यम से वह जल जो ऊपर उठा था - आसमान से नीचे की ओर आता है। ऊपर रुकना असंभावी हो जाता है, यह यात्रा महीनों की हो सकती है। यह जल अभी जलकायिक योग्यता वाला है। अब वह जल सीधा सीप के मुख में गया। सीप पृथ्वीकायिक है। वह

जलकायिक जीव सीप के आधार पर गिरा, सीप ने अपना मुख बंद कर लिया। ऊपर पृथ्वीकायिक है, जल अन्दर भीतर है। कुछ समय बाद वह बूंद तैयार हुयी मोती के रूप में। मोती पृथ्वीकायिक है। यह अन्तर्जगत की लीला है।

जल से पृथ्वी और पृथ्वी से जल बनना यह आप लोगो के लिये परोक्ष हो गया। आप-हम आये कहाँ से-पता नहीं, माता-पिता, अड़ोस-पड़ोस किसी को पता नहीं। फिर भी साथी-सम्बंधी आदि बनते गये। बिछुड़ भी रहे हैं। आपको कैसा अनुभव होता है, संसार का यह वैचित्र्य है। परीक्षा में तो बैठ गये - अब रिजाग नहीं चल रहा जब कि पाठ्यक्रम के भीतर का ही है, बाहर का नहीं।

आपको ही पता नहीं कहाँ से आये चौक वाले, चौपाट वाले अपना-अपना पता लिखवा देते हैं किन्तु हम आपसे मिलेंगे तो कहां मिलेंगे। हमें भरोसा नहीं होता आप लोगो के ऊपर। सारा का सारा जगत संदेहास्पद ही है। कुछ काम का नहीं - सब विस्मृति हो गया फिर भी लेन-देन चल रहा है। विश्वास के आधार पर चल रहा है - कितनी उदारता रखते हो। माल ले रहे हैं - बाद में मिलेंगे या नहीं - पता नहीं। पहले से ही मुक्त रखा। दुकानदारी है तो उसमें देन के साथ लेन भी रहता है। बिना प्रयोजन के कैसे हो रहा है, लुटा देंगे ये लोग।

प्रभु ने क्या-क्या जाना आपको पता ही नहीं है। उन्हें सब कुछ पता है। फिर भी उनका कोई प्रयोजन नहीं होता इसलिये परम शान्ति का अनुभव करते हैं। आप लोग पता लगाते रहते हैं, उन्हें सारे के सारे परिवर्तन होते हुये भी नजर में नहीं आते। कहाँ-कहाँ तक नजर में रखें। जो-जो दिमाग में आता है, वह निकलता ही नहीं। ऐसे में कभी शान्ति नहीं मिलेगी।

औषध हमारे पास भी नहीं हैं। कल की बात भूल गये तब आज आये हैं। ज्यों का त्यों पड़ा रहे तो दूसरा काम ही नहीं कर पायेंगे। पुण्य की ही बात है। एक अक्षर बोला एवं भूल गये तब आगे का अक्षर याद आया। आपने एक अक्षर बोला स्म... र... ण... । बीच में इतना अन्तराल होता गया कि पूर्व में क्या बोला समझ में ही नहीं आया। एक मीनिट का अन्तराल होगा तो महाराज भी भूल गये ऐसा आपके मन में आ सकता है।

बोलने वाले का ही नहीं सुननेवाले का भी दिमाग तेज चलता है। स्मरण नहीं रहेगा तो कल - परसों - आज, अथवा मुझे - हमें - उन्हें इन सब क्रिया पद के बिना अर्थ ही नहीं निकलेगा। ये सब क्या है, इस यंत्र में इंजीनियर कौन है। यह कर्म पर आधारित है। Raw material कौन डाल रहा है। तीन लोक में इसका निर्माण कोई नहीं कर सकता है। पुद्गल कर्मों / भावों के कारण यह संचालित हो रहा है।

आज दिवाली के बाद प्रथम रविवार आया है। बिच में 7 दिन निकल गये। स्मरण में रहा या नहीं रहा ये आप जाने। जीवन में संबंध होने वाला ही नहीं है। वापस कोई नहीं आता, आपने - हमने देख लिया, भरोसा देना अलग वस्तु है। आ गये यह अलग वस्तु है। आप कहो हम आये ये भीड़ थी पहुंच नहीं पायें। इसलिये हम किसी को बुलाते ही नहीं। बाद में सुनना पड़ेगा, जैसे ऋण लेने वाला सुनता है। पत्र में तो लेकर आया नहीं, किसी को देना नहीं हम पढ़ना - लिखना नहीं जानते, आपकी भाषा अलग है। न लेन की बात करते हैं, न देन की बात करते हैं। समझ कर दे देते हैं। एक हफ्ता आपके पुण्य से और मिल गया। गया वो गया। एक के बाद एक रविवार आयेगा। रविवार तो आयेगा ही यहां हो या अन्यत्र हो, देश में हो या विदेश में हो रविवार तो सर्वत्र रविवार ही होगा।

हमारे लिये अब कभी भी बंधन नहीं है, मैं क्या कर सकता हूँ। एक दिन में दो ही बार खुराक देते हैं।

कुछ वैद्य लोग चलते-फिरते भी रहते हैं। कुछ स्थायी होते हैं वहाँ वैद्य जी को जाना पड़ता है आप लोगों की स्थिति अलग ही है - ICU से बाहर निकाल दिया है, अब सिरियस पेसेन्ट के लिये रखाली कर दो, वाईदल दो। डॉक्टर बता देता है - इस-इस प्रकार करना है, हमने भी पुरा कोर्स बता दिया है। लेना या न लेना आपके ऊपर है। उपयोग नहीं करेंगे तो हम क्या करेंगे।

हम जबरदस्ती नहीं करते हैं। दवाई पर विश्वास रखो। रोग के अनुसार दवाई लेना होता है। आगे के क्या कार्यक्रम है, आप लोगों को अवगत हो जायेगा। रोगी को बिमारी के कारणों से बचना चाहिये। डॉक्टर के निकट रखना जरूरी है। किन्तु डॉक्टर से भी कहा कि ऐसा सम्पर्क मत रखो की आप ही बिमार हो जाओ। रोग अपने ऊपर नहीं आना चाहिये। आपने देखा होगा डॉक्टरों का पहनावा, परहेज के साथ रहते हैं। मैं तो ये ही देखता हूँ।

दो-तीन बार अच्छे से हाथ साफ करते हैं। छुते भी हैं डाईरेक्ट नहीं इनडाइरेक्ट ही। निकटता नहीं आ पाती है। डॉक्टर तो हमारे पास है। निकट है ऐसा मानकर चलोगे तो सदैव ठिक रहोगे। उन दृश्यों को याद करने से भी असंख्यात गुणी कर्म निर्जरा होती है। यह बहुत पावरफुल दवाई है। भगवान भी यहीं से मोक्ष गये हैं। ऑरबंद करते ही निर्जरा चालु हो जाती है।

इसीका नाम ध्यान है। हमेशा ध्येय

सामने उपस्थित ही हो ऐसा नहीं है। दुरी होने के उपरांत भी उतना ही काम करते हैं। बिमार लोग जिन्हें कभी ठिक नहीं होना वे हमेशा- हमेशा शिकायत करते रहते है, यह स्वभाव हो गया है। जो बाते बतायीं सब तक पहुँचा देना।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हुँ

7-11-16 "प्रज्ञापराध से बचें" प्रातः 9.15

अभी कुछ दिन पूर्व सभी चिकित्सों की संगोष्ठी यहाँ हुयी। उस संगोष्ठी में "प्रज्ञापराध" शब्द हमने दिया था। आज प्रातःकाल एक डॉक्टर साहब मिले उन्होंने पुछा महाराज, ये प्रज्ञापराध क्या है? उसी विषय को आपके सामने रखना चाहते है। अभी डॉक्टरों को सुरक्षित रख रहें है। रोगी अपने भावों से बाहर हो जाता है, तब क्या गठित होता है, ये देखना है।

वेग उत्पन्न होता है। वेग के कारण वह संतुलन खो देता है। जब गाड़ी वेग से चलाते है तो वह भी नियन्त्रण से बाहर हो जाती है। इतना वेग नहीं होना चाहिये। कुछ वेग ऐसे जो स्वभाविक होते है। कुछ शारीरिक वेग होते है। संयम के माध्यम से इन वेगो पर नियन्त्रण लाया जा सकता है। संयम के भाव नहीं होने से वे वेग आपको कई प्रकार से प्रभावित/परेशान कर सकते है।

सुनते है आजकल रक्त संचार से संबोधित बिमारी बहुत हो रही है। रक्त संचार का नियन्त्रण अथवा रक्त-संचार ठीक न होने से बहुत गडबडीयां हो रही है। डॉक्टर लोग भी उसे ठीक नहीं करते। बस कह देते है जीवन पर्यन्त आप यह गोली खाना है,

आपका रक्त संचार ज्यों का त्यों बना रहेगा। आपके जीवन को हम नियन्त्रण में नहीं रख सकते आपको नियन्त्रण में रखेंगे। ये कार्यक्रम दोनों तरफ से चलता है।

इन सबका कारण चिंता है। चिंता के कारण रात का भी और दिन का भी संचार गड़बड़ा गया है। जहाँ होना चाहिये वहाँ पहुँच ही नहीं पाता। यंत्र को भी ज्यादा नियन्त्रण में रखने से समाप्त हो जायेगा, ये जीवन भी ऐसा ही है। यंत्र की भी एक सीमा होती है। हमारी सोच हमारी धारणा पर नियन्त्रण है। धारणा में उत्साह आदि नहीं रखेंगे तो संतुष्टि कैसे आयेगी, ऐसे में जीवन बेकार सा लगने लगता है। संतोष रखना परम अनिवार्य है।

संतोषी देवी इसीलिये आयी है, उसी की आराधना करो। नाम तो संतोष है, किन्तु हमेशा - हमेशा रोते रहते हो। जो पढ़ा - लिखा है उसे भी संतोष नहीं। दुकान चल रही है तो भी असंतोष, इस बात से की मैंने भोपाल मे दुकान खोली यदि Bombay में खोलता तो ठिक रहता। इसी साल खोली और इसी साल (आ० श्री० का) चातुर्मास हो गया। वो छोड़ूं तो ये गड़बड़ ये छोड़ूं तो और गड़बड़। डाक्टर साहब सुन रहे हैं? महाराज जी का आना और दुकान का खुलना एक साथ क्यों हुये। पाप की उदीरणा में लोभ काम करता है।

संतोष आ जायें तो कहीं भी - कोई भी फर्क नहीं है। मन पर भावों का बहुत प्रभाव पड़ता है। सेना मे यहीं कहा जाता है। धैर्य रखो। हमारी सीमा है - हम आपकी सीमा में नहीं आयेंगे किन्तु तुम इधर आओगे तो हम नहीं आने देंगे

हवा को भी आने से रोक सकते हैं। पानी (जलमार्ग) से भी नहीं आने देंगे। ऊपर वायुमार्ग से भी नहीं। सूर्य को भी अपने अयन पर ही/सीमा में ही चलना पड़ता है। जैसे - दक्षिणायन या उत्तरायन सूर्य भी सीधा नहीं आ सकता।

हमारे पास बहुत प्रताप है, तब कहीं जाकर राज्य करते हैं। कर्ज देंगे तो कहाँ तक देंगे। इतना ही देंगे इसकी भी सीमा होती है। भावों की सीमा कहाँ तक रखेंगे, यही रखेंगे। इतना नहीं है। कल मरना है तो डर के मारे आज क्यों मरें? मौत से भी कह सकते हैं- थोड़ी देर बैठ अभी समय नहीं हुआ है। हम तैयार होंगे तभी तो लेकर चलेगी। ये एक कालजयी पुरुष का ही काम हो सकता है, कायर-डरपोक का नहीं।

मौत से कह देना- अभी दूर है चलते-चलते थक जायेगी समय पर ही आना। चलते-चलते आयु पूर्ण नहीं होती। अब तक आयु पूर्ण नहीं तब तक जाना नहीं है। ये स्वाभीमान है। आज बच्चों को ये नहीं सीखाया जा रहा है, परिणामस्वरूप पूर्णआयु नहीं अल्प आयु में मर रहे हैं। नागरिक बनें हो धर्म-अधर्म को जानना आपका कर्त्तव्य है। छानबीन किजिये। दुनिया को बहुत छाना - अपने लोटे को छानो तब काम होगा। संतोष ऐसे नहीं आ पायेगा।

बाकी सभी असंतोष को पहले विदा कर दो। चुनाव के बाद ही प्रायः ऐसे परिणाम होते हैं। विपक्ष तो दुरहो गया किन्तु पक्ष में ही फड़फड़ाने लग गये। ये सारे के सारे परिणाम संतोष के अभाव में होते हैं। आप मनुष्य है, संतोष के प्रति निष्ठावान बनो। तराजु की ओर मत देखो,

गुरु के धर्म-कांटे की ओर दृष्टिपात करो। कर्म को ही भूल जाओगे तो "प्रज्ञापराध" का अर्थ कभी भी समझ में नहीं आयेगा। डॉक्टर होकर दे भी रोगी क्यों बन रहे हो। मरीज तो रोगी है ही उसकी कोई बात नहीं।

दोनों को संतोष होना जरूरी है। कौन से वेग को रोकना, कौनसे को नहीं रोकना इसका विवेक होना बहुत जरूरी है। हिचकी - जंभाई आदि के वेग को कभी भी नहीं रोकना चाहिये। मक्खी आदि न चली जाये इसका ध्यान अवश्य रखिये। कुत्ते / जानवर आदि को भी जंभाई आदि आती है, वे रोकते नहीं। पूर्ण होने के पहले बीच में रोकना खतरनाक है। मुख को खोलिये किन्तु इतना नहीं कि चाप बंद ही न हो पाये।

कान के पास हाथ लगा लीजिये, किन्तु कहने वाले भी नहीं कर पाते। उस समय पर ध्यान ही नहीं जा पाता है। ये कठिन है पर असंभव नहीं। ध्यान नहीं जाता तो वह दुविधा बन जाता है। "प्रज्ञापराध" का अर्थ यही है कि खाते समय, बोलते समय, पीते समय, व्यायाम आदि करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिये, यदि नहीं रखते तो वह प्रज्ञापराध माना जायेगा। और ध्यान रखने पर कर्मों का आस्रव रुक जायेगा अपितु कर्मों की निर्जरा भी होगी।

मन प्रशस्त रहेगा। कहा भी है मन चंगा तो कठौती में गंगा। मन जब प्रसन्न रहता है तो तन भी सदैव प्रसन्न रहेगा। रक्त का संचार भी अच्छा होगा। किसान को देख लें। संतोष भी रहता है उसके पास। वैसे भी

संतोष कहीं नहीं देखनें में आता संतोषी प्राणी देखनें में आता है। उस किसान से पुछ लो क्या खाते आप, कैसा जीवन जीते। वह यही कहता है कि हम कुछ नहीं बस दूसरे का दिमाग नहीं खाते। आज सभी एक-दूसरे का दिमाग खाने मे लगे है। रोगी डॉक्टर का एवं डॉक्टर रोगी का।

संयम तो लेते है, पर ध्यान ही नहीं रहता। पिच्छी-कमण्डलु के बिना भी संयम होता है। जब जंभाई आती है तो सुनना बंद हो जाता है। वेग आये तो सर्वप्रथम बाहर की आवाज को बंद कर दो। रोड़ पर चलते हो तो सर्वप्रथम साइलेंसर भी देखा करो। सुनाते चले जाओ तो सामने वाले का क्या होगा।

आचार्यों ने कहा- प्रज्ञापराध क्या है? सामने वाला इधर-उधर की बात करे तो बहरे बन जाओ। कुछ दिखाने लगे तो अंधे बन जाओ, लुले बन जाओ यहाँ तक की पागल बन जाओ। सीखो तो इस विद्या को। पागर किसी के बारे में कुछ नहीं सोचता। संयम आपका हो गया।

हम प्रज्ञापराध के ऊपर बोलना अथवा लिखना प्रारम्भ कर दें तो पोथी तैयार हो जायेगी। कुछ लोग कल वहाँ मंच पर भी आये, पुछ रहें थे महाराज चातुर्मास पुरा हो गया कुछ लिखना चाहते है। एक सज्जन ने तो भेंट ही कर दिया। वहीं हमारे सामने लाकर रख दिया। हमारा तो एक ही वाक्य हम कुछ नहीं जानते। "प्रज्ञापराध" के बारे में डॉक्टर साहब जान गये होंगे, सभी डॉक्टरों तक भी इसीको पहुँचाने का काम कर सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

8-11-16 "आवास ही नहीं भोजन भी देखें" प्रातः 9.15

कल आपके सामने प्रज्ञापराध के संबंध में चर्चा हुयी। उन्होंने कई डॉक्टरों को भी बताया होगा। जो भी बनता है, वह खाने योग्य ही जाये, ऐसा मानने के लिये हम तैयार है ही नहीं। वह पदार्थ न ही शारीरिक स्वास्थ्य में कारण है, नही बौद्धिक विकास में कारण है। नशा करने लग जाये, बिमारी हो जाये तो वह सेवन योग्य नहीं है।

जैसे शराब है, वह किसी भी रूप में छूने लायक भी नहीं है। फलों के रस से निर्मित होते हुये भी वह सेवन योग्य नहीं है। आप घर पर कोई भी पदार्थ बनाते है, तो वह विश्वसनीय हो जाता है। बाजार के पदार्थों का कभी भी विश्वास नहीं किया जा सकता। आज रसोई घर में इन चीजों का प्रवेश चालु हो गया है। इसमें मैं बच्चों को कम दोषी अभिभावकों को ही दोषी मानता हूँ। बच्चे तो नादान थे, उन्हें आपने जो दिया उसी को खाने लग गये।

आप लोगों ने पैसा दे दिया, अब वह क्या-क्या खायेगा, जो खाने योग्य नहीं वह भी खा लेगा। आप बच्चों के प्रति सावधान नहीं है, गलत रास्ते ले जा रहे हो। आप उनके लिये प्रेरक सिद्ध हो रहे है, साधन-सामग्री जुटाने में लगे हो। यहाँ (हबीबगंज/भोपाल) सुनते है - 50 हजार से भी अधिक बच्चे छात्रावास में रखकर पढ़ रहे है। हबीबगंज छात्रावास में ही बन रहा है। आप केवल आवास व्यवस्था में ही लगे रहते है, भोजन के बारे में भी सावधान रहना चाहिये।

माता-पिता ने आवास हेतु व्यवस्था कर दी किन्तु भोजन के बारे में क्या सोचा। इस व्यवस्था में आप

लोगों का योगदान होगी वह महत्वपूर्ण माना जाता है। आपके घर में महमान आते है तो आप केवल उन्हें भोजन भी कराते है। अभी स्थान ही नहीं वह होनहार बच्चा है।

हम देख रहे है, प्रतिदिन एवं रविवार को तो कितनी भीड़ लगा रही है। सबकी अच्छी व्यवस्था करते है। आप यह व्यवस्था प्रतिदिन आगे भी कर सकते है। कुछ लड़के जिन्होंने IIT किया, उन्होंने इसे महसुस किया। बड़ा पैकेज पाने वालों ने भी यह शुरुआत की। एक छात्र जो बुंदेलखण्ड का था - संस्कार थे। पहले यहा ये ही खाना पड़ेगा। वहाँ दोनों व्यवस्था थी शाकाहार भी एवं मांसाहार भी। उसने शाकाहार सबके लिये चालु करवा दिया। आज आशीर्वाद मांगने आते है - विदेश के लिये। हम ऐसे आशीर्वाद नहीं देंगे। वहाँ की भोजन व्यवस्था क्या है? इस व्यवस्था के साथ हमारा आशीर्वाद नहीं है।

ऐसे आशीर्वाद के लिये हमें मना करना है। दोष हमें भी लगेगा - कृत - कारित - अनुमोदना से दोष लगता है। उस बच्चे को बहुत अच्छा मानता हूँ, उसने एक आदिशेष स्तुत किया। आप राजधानी में रह रहे हो। वह बच्चा जो पढ़ने आया है। दो बार भोजन लेता है, रात का भी त्याग हो सकता है। माता - पिता को सोचना चाहिये।

जहाँ मांसाहार बनता है, वहीं पर बच्चे खायेंगे तो क्या होगा। वही बनाने वाले - वही बर्तन / स्थान आदि है। क्या कर रहे हो। ये बिन्दु अभी तक रखा ही नहीं, आप लोगों का कर्तव्य है। इसे पूर्ण व्यवस्थित रूप से करें। कर्तव्य मानकर करें। यहाँ बहुत से उपनगर बने हुये है, इस ढंग से करने से आप बहुत कुछ आगे बढ़ सकते है। वह बच्चा 5 वर्ष रहेगा यहाँ पर इतने

समय के लिये आरोग्य भी रहेगा एवं संस्कार भी बने रहेंगे। समय पर नहीं मिलेगा तो वो बच्चा क्या करेगा। लाचार होकर करना पड़ता है।

औलियों की इस दशा में जागृति अभी कम है। कम कहेंगे तभी आप लोग करेंगे। छात्रावास के बच्चे रहेंगे तो सब कार्य अच्छा होगा। भगवान तो इतने बनाने जा रहे हैं; पूजन-अभिषेक सारे के सारे बच्चे करेंगे। दूसरों के लिये ही तो कर रहे हो। सौधर्म इन्द्र बनें और चले गये किन्तु ये बहुत बड़ा कार्य है। व्यवस्थित काम करें यह मुख्य काम है। प्रतिदिन यह कार्यक्रम चलना चाहिये।

दूसरों के लिये नहीं अपने लिये कर रहे हो। वक्त सही है तो स्वीकार कर लो। महिला समाज में भी इस प्रकार की क्रान्ति आई जा सकती है। मुम्बई का उदाहरण है- वहाँ टिफिन व्यवस्था द्वारा शाकाहार का प्रचार-प्रसार बहुत सराहनीय है। 5 वर्ष तक उसने नियम निभाया। 6 बच्चों की व्यवस्था आप करेंगे एक बच्चे का पुण्य आपके लिये आ जायेगा। समझो तो कमाई का साधन (व्यापार करना सीखो।

हमारा ऐसा ही व्यापार प्रतिदिन चल रहा है। कोई 6 उपवास करता है - हमारा एक उपवास हो जाता है। यह परमानेन्ट है। जहाँ-जहाँ चलेगा हमारी तो पक्का है। यहाँ दर्शन - स्वाध्याय - भोजन - आवास की व्यवस्था हो गयी। रात में भी इधर-उधर घूमने नहीं जा सकते हो यह अच्छा है। 5-6 साल संभल गये तो बहुत कुछ हो गया। यह बात भी अभी ऐसा ही है। संतोषी देवी भी पता नहीं कहाँ चली गयी। कल छात्रावास की बात आयी थी। फाउण्डेशन पूरा हो गया। एक-एक दे दे में पाई-

पाई का उपयोग होना चाहिये। व्यवस्थित होना चाहिये। 250 बच्चे रहेंगे यहाँ पर तो अलग से देखने ही बनेगा। स्तरीय नहीं उच्च स्तरीय काम हो।

स्वाध्याय होना चाहिये। इसके लिये बाहर से विद्वान त्यागी भी आने को उत्सुक रहेंगे। अपव्यय न करें। पाई-पाई का इस्तेमाल हो। जिस स्थान के लिये यह स्थान दिया गया उसी के लिये उपयोग करना है। इतना ही पर्याप्त है। समय को बचाना परम आवश्यक है। यह भाव आया था। आप सभी के सामने रखा।

मुख्य रोड - यातायात - स्टेशन आदि से सम्पन्न है। सुविधाजनक है। आप एक डाक्टर साहब सुबह-सुबह आये। जो बच्चे बोल नहीं सकते, 5 वर्ष तक के मूक-बधिर बच्चों के सफल आपरेशन कर ठीक कर सकते हैं। हमने कहा ये तो उनकी बात जो सुन और बोल नहीं सकते। हम तो जो सुन-बोल सकते हैं उन्हें गुंगे-बहरे बना रहे हैं। भाषा की ओर ध्यान दीजिये। प्रयोजन को भूलकर अर्थ और समय की सार्थकता को सिद्ध नहीं कर सकते अतः प्रयोजन के साथ समय एवं अर्थ का सदुपयोग करलो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

9-11-16 "अन्न और धन: प्राण भी विष भी" प्रातः 9.15

आत्मा का स्वभाव ज्ञान है, किन्तु आत्मा उस ज्ञान के द्वारा अपने आप को जान ही नहीं पा रहा है, उस ज्ञान का प्रयोग वह हमेशा हमेशा पर को जानने में ही कर रहा है। यही उसकी कमी है। बहुत कुछ है उसके पास लेकिन अभी कंगाल है। कंगाल को मालामाल बनाना चाहते हो तो जो कमी है उसे दूर कर दो। इस

कमी को निकालने का आत्मा ने कभी पुरुषार्थ नहीं किया। विद्या का अर्जन तो कर लिया किन्तु उसको उपयोग अथवा अभ्यास में नहीं लाया गया। अनन्त काल निकल गये किन्तु इसका अभी समय नहीं आया।

समय आता तो जरूर अभ्यास करता। अनन्तकाल निकल गये लेकिन यह आज तक सड़ा-गला नहीं। काम में नहीं आया तो इसमें ज्ञान अथवा स्वभाव भी कमी नहीं आत्मा की कमी है। यही हाल प्रत्येक संसारी प्राणी का हो रहा है। आप मुझे नहीं कह सकते, मैं आपको नहीं कह सकता। अब भगवान भी जान गये कि यह अपनी ओर तो कभी देखता ही नहीं, हम किसकी बात करें। स्वतंत्र है यह और जान भी लिया है कि अब स्वतंत्रता की क्या आवश्यकता?

विद्या का अभ्यास/प्रयोग करें तात्कालिक परिणाम मिलेगा। प्रयोजन को नहीं पहचाना, निष्प्रयोजन को दौड़ लगा। ये गलती छोटी नहीं है, चींटी के विद्वानों की गलती है। अनंतकाल से जान लिया, अभी तक नहीं आया, आगे कैसे आयेगा। बाहर का प्रभाव है। सुना है देवों की छाया नहीं पड़ती लेकिन देवों की हवा तो लग सकती है। देवों की हवा लग गयी तो फिर वह भगवान से भी हट नहीं सकती। अनंतकालीन हवा लगी है - देवों की।

देवों को भगाने के लिये ज्यादा परिश्रम की आवश्यकता नहीं है, जो चाहते हो वह सोचना प्रारम्भ कर दो। कौन से काल में सोचना? इसका मुहूर्त देखना ठीक नहीं। आत्म पुरुषार्थ प्रारम्भ करो देवों की हवा जो लगी है वह निश्चित दूर होगी। एक बात और की सम्यग्दर्शन द्वारा

कर्मों की निर्जरा होती है। तत्त्वार्थ सूत्र आदि में हम भी बताया, सम्यग्दृष्टि विरतान्तवियोजक ..... । अर्थात सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणी निर्जरा करता है, उससे असंख्यात गुणी देशव्रत (संयमासंयमी) करता है उससे असंख्यात गुणी... आगे-आगे बताया । प्रश्न है कि सम्यग्दृष्टि की जो असंख्यातगुणी निर्जरा बतायी वो किस अपेक्षा से है, उससे पूर्व का तो कहा नहीं।

उससे पूर्व भी कोई है, जिसकी निर्जरा चालु है। उसकी निर्जरा ऊपर वालों से नहीं नीचे वालों से लेना है। वह कौन है? जवाब दिया - मिथ्यादृष्टि है जो अनिवृत्तिकरण परिणाम के द्वारा सम्यग्दर्शन प्राप्त करने में लगा है। उससे सम्यग्दृष्टि की असंख्यात गुणी निर्जरा कही। उस हवा से बचना चाहते हो तो देवों की छाया से नहीं देवों की हवा से बचो। अब तो एक रात की भी आवश्यकता नहीं, एक बात की आवश्यकता है। दोनों तरफ अर्थ लगा सकते है। (आज रात से ऽ०० एवं 1०० के नोट बन्द होने की खबर पर इशारा)

"अनभ्यासे विषं विद्या" अभ्यास के अभाव में विद्या विष है और "अजीर्णे विषं अन्ने" अजीर्ण होने पर अन्न भी विष का काम करता है। जो खाया वह ज्यों का त्यों पड़ा रह गया, अजीर्ण हो गया। अब जो बनाया है उसे भी नहीं खाने देगा। जो खाया है उसे भी निकाल देगा। बैठने नहीं देगा। चिकित्सालय की ओर ले जायेगा। जो अन्न खाया है उसे बाहर निकालेंगे क्यों की वह विष बन गया है।

अन्न कभी भी विष नहीं हो सकता। 1० प्राण कहे गये, अन्न को 11वाँ प्राण एवं धन को 12वां प्राण कहा गया। आप सुन रहे हैं। हम तो वर्षों से

कह रहे हैं। एक रात में ये क्या हो गया। हवा लग गयी। बड़ा महत्वपूर्ण है यह। अन्न को भी विष और अन्न को प्राण भी कहा है। शरीर को चलाने के लिये तीर्थंकरों को भी अन्न लेना अनिवार्य है। प्राणों की रक्षा के बिना हम-तुम कोई भी कार्य नहीं कर सकते।

मोक्षमार्ग की रक्षा करना भी महत्वपूर्ण कार्य है। आगम में बताये अनुसार श्रावक के यहाँ जाओ, प्रमाण से, प्रासुक एवं शुद्ध द्रव्य लेकर आते हैं। विश्वसनीय होना चाहिये। अन्न को अन्न के रूप में रखो, धन को भी धन के रूप में रखो। धन को यदि इक्ट्ठा करोगे तो ये ही बात आयेगी पुनः लौटकर के। देव उठनी ग्यारस हो गयी। दिवाली को दिपक जलाये थे किन्तु अबतो देव स्वयं ही उठ गये। ये मुहूर्त बहुत अच्छा है।

हमने दिवाली से भी पवित्र मुहूर्त माना। वहाँ दीपक जलाना पड़ता है, यहाँ देव स्वयं अपने से ही उठ जाते हैं। इससे स्पष्ट हो गया कि हमने अन्न को विष बना दिया वैसे धन को जो प्राण माना विष बना दिया। ऐसे में आत्म पुरुषार्थ कैसे होगा? नौकर मालिक हो गया। मालिक कुछ नहीं बना। क्यों की नौकर ने पुरुषार्थ किया मालिक बन गया, आपने प्रमाद किया तो कुछ नहीं बने। क्या होगा? आप नौकर जैसा काम कर नहीं सकते अतः कुछ भी नहीं रहे। आत्मा की यही हालत हो रही है। दिशा-बोध के अभाव में यह दशा हो गयी। हमने आज सोचा कि अब दिवाली बाद में क्यों

दें। बार-बार भोजन देना ठीक नहीं है। पहले जो दिया वह अभी तक पचा नहीं है। अब अजीर्ण नहीं बनाना चाहते। अतिमात्रा में अन्न भी काम का नहीं, अतिमात्रा में धन भी काम का नहीं। धन तेरस भी चली गयी।

धन तेरस नहीं वह धन्य तेरस है। जिस दिन भगवान को निर्वाण हुआ उसी दिन सांयकाल में गणधर स्वामी को केवलज्ञान हुआ। प्रातः निर्वाण शाम को केवलज्ञान, क्यों की अनुबद्ध केवली है। परम्परा टूटती नहीं महावीर स्वामी तक यह परम्परा टूटी नहीं। इस प्रकार अपने आप को सुरक्षित रखने की बात स्तुत्य है। सम्यग्दृष्टि को कर्म की निर्जरा हो रही है, मिथ्यादृष्टि को भी निर्जरा हो रही है, किन्तु उसे असंख्यातगुणी हो रही है। तभी आगे के गुणस्थान/निर्जरास्थान को और प्राप्त कर सकेंगे और आगे की ओर बढ़ सकेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

10-11-16 "धन का सदुपयोग - तप का फल" प्रातः 9.35

9.00 बजे हतकरघा केन्द्र की स्थापना - महापौर अलोक शर्मा द्वारा

ये महानगरी है - राजधानी है और आज महापौर साहब भी उपस्थित हैं। सर्वांगीण विकास उसी को कहते हैं, जिसमें बुद्धि का और शरीर का दोनों का विकास हो। सारी सामग्री ऐसी ही हो जो हमारे विकास में सहयोग प्रदान करें।

कोई भी कार्य आधार स्तम्भ पर निर्भर करता है। हम किसी भी महाप्रासाद का निर्माण करते हैं, उसके लिये दिवारें उठाते हैं, फिर छत की व्यवस्था होती है किन्तु क्या बिना नींव के ये सब सम्भव है - नहीं। इसी प्रकार नदी आदि का पानी रोकने

के लिये बांध बनाया जाता है। उसकी नींव की व्यवस्था कुछ अलग प्रकार से होती है। बहते हुये पानी को रोकना खेल नहीं होता। पहले नीचे से चौड़ाई में नींव भरते हैं जैसे 20×20 या अन्य। अब जैसे-जैसे ऊपर आते जाते हैं, वैसे-वैसे कम करते जाते हैं, शीर्ष तक आते-आते 4-5 feet चौड़ाई रह जाती है। लोक के नक्शे के अधोभाग की तरह।

पानी को रोका गया, इसलिये की उसे वहाँ तक पहुँचाना है, जहाँ आवश्यक है। चलने वाला व्यक्ति रुक कैसे गया। रुका नहीं है, जो आगे की ओर बढ़ रहा था, अब ऊपर की ओर बढ़ रहा है। नीचे से इस तरह चौड़ा बनाया गया कि वह पानी को भी रोकने की शक्ति रखता है। एक बहुत बड़ा बांध जो नेहरू जी के कार्यकाल में बनाया गया था- बाघड़ा बांध। उस समय अमेरीका के राष्ट्रपति केनेडी भी आये थे। उसके संरक्षण के लिये शीशम की लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठों का प्रयोग किया गया। पानी नीचे से निकलता रहता है, निकलने का प्रबंध होना चाहिये। नहरों के माध्यम से वह संचित पानी प्रत्येक गांवों के प्रत्येक खेत तक पहुँचाया गया। उसका पानी पंजाब सहित उत्तर-प्रदेश, हरीयाणा आदि राज्यों के लिये भी उपयोगी सिद्ध हुआ।

पंजाब का मतलब ही पांच आब वाला प्रदेश। पांच जल संरक्षण के उपक्रम है। वहां खेतों में सिंचाई के लिये परिश्रम नहीं किया, अपितु उसको एकत्रित कर सही दिशा में प्रयोग किया। "जे कम्मे सूरा-ते धम्मे सूरा" इसी से चरितार्थ होता है कि पहले के राजा सूर होते थे। वे अपने पास एक पाई भी नहीं रखते थे, पर प्रजा के लिये संग्रह करते थे। उसका वितरण सही-सही ढंग से हो इसका सदैव ध्यान रखते थे। वे अपनी

बुद्धि एवं शारीरिक शक्ति का उपयोग सही-सही करते थे। कर्म के उदय में वैसे ही भाव हो जाते हैं। पूर्व में जो बांधा वही आज उदय में आ रहा है। उदय में आने पर भाव वैसे ही हो अथवा इस कार्य करें ही यह नियम नहीं है।

इष्टोपदेश (हितोपदेश में आया धन-पुण्य के बंध से ही आता है। किन्तु अच्छे कार्यों में धन का उपयोग पुण्य का फल नहीं अपितु महान तपस्या का फल है। अपना घर बसाना आसान है पर नगर बसाना बहुत कठिन। फिर महानगर बसाना तो और बड़ी बात है। आप महानगर के महापौर बने हैं - अब कुछ कर गुजरना है। दूसरे का सहयोग चाहिये, इसके लिये कुछ योग होना जरूरी है।

अपने वित्त का सही उपयोग करना चाहते हैं तो तपस्या की मांग करता है। अच्छे कार्य / धर्म कार्य में यदि वित्त लगाते हैं तो गणित से नहीं गुणित क्रम से आता है। कुछ ही सैकेण्डों में कागज भर जायेगा। (हतरक्षा की घोषणा पर कहा) लिखने की जरूरत ही नहीं। चोरी बंद करना पड़ता है, बंद नहीं करो जहाँ पर जरूरत है, वहाँ तक पहुँचादो। सुना था म.प्र. में फसल बहुत आने लगी है। जितना फसल के उत्पादन में खर्च होता है, उसका तीनगुना खर्च उसके संरक्षण में होता है, यह इसलिये की समय पर उस फसल का उपयोग कर सकें।

इसी प्रकार अपने वित्त का सही एवं सही समय पर उपयोग करें तभी काम हो पायेगा। चातुर्मास पूर्ण हो चुका है। अभी पानी और ऊपर से गिरेगा तो संग्रह हेतु नींव बहुत मजबूत तैयार करनी होगी। मरना है तो मर जा - जीते जी कुछ कर जा अन्यथा करना तो मत कर जा। बहुत कम क्षण मिले हैं, एक-एक क्षण का सदुपयोग होना चाहिये। महापौर महोदय पाठशाला में

पढ़े। जैन पाठशाला - चौक मन्दिर में पाठ पढ़ा और यहीं के महावीर बन गये। बड़ी नदी तब बड़ी बन पाती है जब सभी सहायक नदीयाँ उसमें मिल जाती है। आप भी श्रावक जनता के सहयोग से बने हैं।

कुछ काम करते हैं इसी तरह से - खाने-पीने की बातहीं नहीं, वहाँ तो खिलाने - पीलाने की बात आती है। एक में कर्म बंधा है तो दूसरे में महान पुण्य का बंधा होता है। हमारे तीर्थंकरो ने महान कार्य किया। महान इसलिये कहा जिस तरह सूर्य - चन्द्रमा सम्पूर्ण जगत को आलोकित करते है, वे भी बिना भेदभाव के सभी का कल्याण करते हैं।

हमारा जीवन जगत के प्रत्येक प्राणी के कल्याण के लिये होना है। स्वार्थ छूटे - परमार्थ हो इसी भावना के साथ। लोक है तो आलोक होना चाहिये। मंगलाचरण अच्छा हुआ है, किन्तु अभी ज्यादा प्रशंसा नहीं करूंगा - भोपाल के अनुरूप नहीं। कार्य पुरा हो - संकेत के बिना पूर्ण हो तो और अच्छा माना जाता है। संकेत के अनुसार तो सभी करते है आप बिना संकेत समय पर पुरा करें तो अच्छा होगा। इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

दोपहर 2:30 बजे विहार चौक मन्दिर हेतु।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	21/07/2016	गति होती प्रकृति पर निर्भर	भोपाल चातुर्मास	1
2.	22/07/2016	निमित्त बड़ा बलवान - संभालो उपादान	भोपाल चातुर्मास	3
3.	23/07/2016	विषहारक क्या	भोपाल चातुर्मास	4
4.	24/07/2016	लीनता में आता आनन्द	भोपाल चातुर्मास	6
5.	25/07/2016	रहस्य समझे जीवन का	भोपाल चातुर्मास	8
6.	26/07/2016	अंक के बिना शून्य का महत्व क्या?	भोपाल चातुर्मास	10
7.	27/07/2016	आलस्य रहित संयम हो	भोपाल चातुर्मास	11
8.	28/07/2016	शब्द नहीं - भाव महान	भोपाल चातुर्मास	14
9.	30/07/2016	अनुपात एवं अनुशासन	भोपाल चातुर्मास	15
10.	31/07/2016	लोहा बना सोना	भोपाल चातुर्मास	18
11.	01/08/2016	गंधोदक सामान्य जल नहीं	भोपाल चातुर्मास	19
12.	02/08/2016	क्या बनना? हाथ आपके	भोपाल चातुर्मास	21
13.	04/08/2016	चलें एक-एक कदम	भोपाल चातुर्मास	22
14.	05/08/2016	न छोटा - न बड़ा	भोपाल चातुर्मास	24
15.	06/08/2016	चले तो कैसे चले	भोपाल चातुर्मास	26
16.	08/08/2016	मन की वृत्ति है - अनुकूलता प्रतिकूलता	भोपाल चातुर्मास	29
17.	09/08/2016	वीतरागता ही परम आनन्द	भोपाल चातुर्मास	31
18.	10/08/2016	राग हो वीतराग से	भोपाल चातुर्मास	34
19.	11/08/2016	बीज पहले या वृक्ष	भोपाल चातुर्मास	36
20.	13/08/2016	क्रेन से नहीं ब्रेन से काम करें	भोपाल चातुर्मास	39
21.	14/08/2016	मूल में ही है भूल	भोपाल चातुर्मास	41
22.	15/08/2016	स्व छंद हो स्वछंद नहीं	भोपाल चातुर्मास	44
23.	15/08/2016	स्वतंत्रता दिवस पर 2 घंटे 10 मिनिट प्रवचन के विशेष प्रवचनांश	भोपाल चातुर्मास	50
24.	16/08/2016	रंग-तरंग नहीं, अंतरंग में देखे	भोपाल चातुर्मास	54
25.	17/08/2016	विश्वकर्मा नहीं सत्कर्मा बनें	भोपाल चातुर्मास	56
26.	18/08/2016	हो गो-वत्स सम प्रीति	भोपाल चातुर्मास	58
27.	19/08/2016	नजर हो वस्तु पर	भोपाल चातुर्मास	63
28.	21/08/2016	सीखें निर्विकल्प होना	भोपाल चातुर्मास	66
29.	22/08/2016	महत्वपूर्ण उपयोग - योग नहीं	भोपाल चातुर्मास	68
30.	23/08/2016	जहर या अमृत	भोपाल चातुर्मास	72
31.	24/08/2016	धर्म बड़ा या धन	भोपाल चातुर्मास	75
32.	25/08/2016	सर्वे भवन्तु सुखीनः	भोपाल चातुर्मास	78
33.	26/08/2016	महत्वपूर्ण है आयु बंध	भोपाल चातुर्मास	80
35.	28/08/2016	बर्फ बनना सीखो	भोपाल चातुर्मास	84
36.	29/08/2016	हाथोहाथ चाहिये	भोपाल चातुर्मास	86
37.	30/08/2016	मन से काम लेना	भोपाल चातुर्मास	88

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
38.	01/09/2016	करें पुरुषार्थ कर्म के मंदोदय में	भोपाल चातुर्मास	91
39.	02/09/2016	महत्व त्याग का नहीं - त्याग की दृढ़ता का	भोपाल चातुर्मास	94
40.	03/09/2016	आनंद अनुभुति का	भोपाल चातुर्मास	98
41.	04/09/2016	प्रायोगिक हो शिक्षा	भोपाल चातुर्मास	100
42.	05/09/2016	दीपक नहीं रत्न बनों	भोपाल चातुर्मास	102
43.	17/09/2016	व्यर्थ न जाये एक भी घड़ी	भोपाल चातुर्मास	105
44.	19/09/2016	बता दो रास्ता क्या है?	भोपाल चातुर्मास	107
45.	20/09/2016	आवों करें सक्रिय पूजन	भोपाल चातुर्मास	110
46.	20/09/2016	गुरुत्ता गुरुजी की	भोपाल चातुर्मास	112
47.	21/09/2016	आवों लौट चलें...	भोपाल चातुर्मास	114
48.	22/09/2016	प्रासुकीकरण का विज्ञान	भोपाल चातुर्मास	116
49.	23/09/2016	दूसरों का वैभव देख जलो मत	भोपाल चातुर्मास	120
50.	25/09/2016	दें एकता का परिचय	भोपाल चातुर्मास	123
51.	26/09/2016	सर्व संयोग-वियोगमय है	भोपाल चातुर्मास	126
52.	27/09/2016	संगठन में शक्ति	भोपाल चातुर्मास	129
53.	28/09/2016	ध्यान को स्थिर करता है - संयत ज्ञान	भोपाल चातुर्मास	131
54.	29/09/2016	वृक्ष की तरह करो अतिथी संविभाग	भोपाल चातुर्मास	133
55.	30/09/2016	पुराने रोग की औषध पुरानी	भोपाल चातुर्मास	134
56.	01/10/2016	आवों धोयें कषाय	भोपाल चातुर्मास	137
57.	02/10/2016	बुराई नहीं अच्छाई देखो	टी.टी. नगर मंदिर, भोपाल	140
58.	04/10/2016	स्वाध्याय जिनवाणी से हो मोबाइल से नहीं	भोपाल चातुर्मास	142
59.	05/10/2016	अभिभावक बनों - अभी भावुक नहीं	भोपाल चातुर्मास	147
60.	06/10/2016	बचो संकल्पी हिंसा से	भोपाल चातुर्मास	151
61.	07/10/2016	भविष्य का निर्धारण - इतिहास के आधार पर	भोपाल चातुर्मास	156
62.	08/10/2016	दृष्टि हो आत्म सुख की ओर	भोपाल चातुर्मास	160
63.	09/10/2016	बोध देते काँच और दर्पण	भोपाल चातुर्मास	163
64.	10/10/2016	समझदार वही जो समझदार की बात मानें	भोपाल चातुर्मास	167
65.	11/10/2016	बिना पुरुषार्थ सब शून्य	भोपाल चातुर्मास	170
66.	12/10/2016	आलोचना नहीं समालोचना हो	भोपाल चातुर्मास	175
67.	13/10/2016	आवों बनायें सम्यग्दर्शन की भूमिका	भोपाल चातुर्मास	180
68.	14/10/2016	विश्वास कैसा - नाई जैसा	भोपाल चातुर्मास	184
69.	17/10/2016	कैसे बनायें जीवन को टनाटन	भोपाल चातुर्मास	188
70.	17/10/2016	दुर्लभ काम हुआ सुलभ (सांय 4.30 बजे)	भोपाल चातुर्मास	191
71.	19/10/2016	व्यवधान का समाधान, अवधान से होता	भोपाल चातुर्मास	192
72.	20/10/2016	विश्वास को मिले अनुभव का पुट	भोपाल चातुर्मास	195
73.	21/10/2016	संयम की रस्सी है : प्रतिभा विज्ञान	भोपाल चातुर्मास	199

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
74.	22/10/2016	मत लादो बोझ – छोटी ऊमर में	भोपाल चातुर्मास	203
75.	23/10/2016	होनहार कौन?	भोपाल चातुर्मास	208
76.	24/10/2016	कैसे बने चिरायु	भोपाल चातुर्मास	212
77.	25/10/2016	एयर कंडीशन नहीं, कंडीशन एयर हो	भोपाल चातुर्मास	217
78.	26/10/2016	कैसे बचें खरपतवार से	भोपाल चातुर्मास	223
79.	27/10/2016	मत करो उदीरणा कर्मों की	भोपाल चातुर्मास	231
80.	28/10/2016	फण्डा कर्म निर्जरा का	भोपाल चातुर्मास	235
81.	30/10/2016	कब बनेंगे हम दिवालीया सिद्ध समान	भोपाल चातुर्मास	238
82.	31/10/2016	एक हो आवाज सबकी	भोपाल चातुर्मास	242
83.	01/11/2016	जो अकड़ता वह टूटता	भोपाल चातुर्मास	246
84.	02/11/2016	लगाओ डूबकी आनंद में	भोपाल चातुर्मास	249
85.	03/11/2016	आवश्यकता ज्ञान की नहीं ध्यान की	भोपाल चातुर्मास	252
86.	06/11/2016	बहिर्जगत से अन्तर्जगत की ओर	भोपाल चातुर्मास	254
87.	07/11/2016	प्रज्ञापराध से बचें	भोपाल चातुर्मास	258
88.	08/11/2016	आवास ही नहीं भोजन भी देखें	भोपाल चातुर्मास	263
89.	09/11/2016	अन्न और धन : प्राण भी विष भी	भोपाल चातुर्मास	266
90.	10/11/2016	धन का सदुपयोग – तप का फल	भोपाल चातुर्मास	270